अंक-99-100
अप्रैल 21-जून/2022

भोजपुरी-निबन्ध विशेषांक

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

डा0 विद्यानिवास मिश्र, शिवप्रसादसिंह, महेश्वराचार्य, आचार्य नन्दकिशोर तिवारी, अनिल कुमार 'आंजनेय', झड़प जी, सत्यवादी छपरहिया, अरुणेश नीरन, विवेकी राय, प्रभुनाथ सिंह, गदाधर सिंह, शारदा पाण्डेय, राजेश्वरी शांडिल्य, डा0 शुकदेव सिंह आदि के तीस निबन्ध कहानी खण्ड–4 में चौ0 कन्हैया प्रा0 सिंह, रामनाथ पाण्डेय, नीरज सिंह आदि का साथ बाइस कवियन के काव्य, आलेख, आलोचना आ सामयिकी हस्तक्षेप

''पाती -आजीवन सदस्य/संरक्षक''

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई) डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुघ्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात),राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ), कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपाध्याय (कुंवर सिंह वि० वि० आरा), अजय कुमार (पी०एन०बी०, आरा), रामयश अविकल (आरा), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' (भोजपुर), विजयशंकर पाण्डेय (नारायणी विहार, वाराणसी), डा० अमरनाथ शर्मा (बलिया), कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा (एसबीआई, बलिया), डा० दिवाकर पाण्डेय (पकड़ी, आरा), गुरूविन्दर सिंह (नई दिल्ली), डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), डा० नीरज सिंह (आरा), विक्रम कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारन), नागेन्द्र कुमार सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली), जलज कुमार मिश्र (बेतिया पं० चम्पारण), श्रीमती इन्दु अजय सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० संजय सिंह (करमनटोला, आरा), आनन्द सन्धिदूत (वासलीगंज, मिर्जापुर), नगेन्द्र सिंह एवं राकेश कुमार सिंह, (राजनगर, पालम, नई दिल्ली), डा० हरेश्वर राय (जवाहरनगर, सतना, म० प्र०), केशव मोहन पाण्डेय (कुशीनगर), गुलरेज शहजाद (मोतीहारी), शशि सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), जितेन्द्र कुमार (पकडी, आरा), योगेन्द्र प्रसाद सिंह (बोकारो, झारखंड), डा० प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात, विद्यापीठ), महेन्द्र प्रसाद सिंह (रंगश्री, नई दिल्ली), अजीत सिंह (इलाहाबाद), संतोष वर्मा (साधु नगर, नई दिल्ली), संजय कुमार सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर, बिहार), सत्येन्द्र नारायण सिंह, (नारायणा, नई दिल्ली), श्री रविन्द्र सिंह, (मेहरम नगर, नई दिल्ली), ई० रामचन्द्र सिंह, (श्रीरामनगर कालोनी, वाराणसी), हीरालाल 'हीरा' (रामपुर उदयभान, नई बस्ती, बलिया), दिनेश पाण्डेय (शास्त्रीनगर, पटना), शिवजी सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० जनार्दन राय (भृगुआश्रम, बलिया), विनय कुमार (भाटपारा, छतीसगढ़), अजीत कुमार (बैंक आफ बड़ौदा, पालघर), विपिन बिहारी चौधरी (बूटी मोड़, राँची, झारखंड), अशोक कुमार श्रीवास्तव (गाजियाबाद), शिवपूजन लाल विधार्थी (वाराणसी), डा० पारसनाथ सिंह (चन्द्रशेखर नगर, बलिया), डा० आशारानी लाल (काका नगर, नई दिल्ली), आलोक पाण्डेय अनवद्‌य (दिल्ली), कुबेरनाथ पाण्डेय (परसा, गाजीपुर, हीरालाल 'हीरा' (बुलापुर, बलिया) विनोद द्विवेदी, (वाराणसी), अरविन्द कुमार सिंह, (आइ.ए.एस, लखनऊ), डा० प्रेमप्रकाश पाण्डेय (वैशाली, गाजियाबाद), डा० दिवाकर प्रसाद तिवारी (देवरिया), शशि प्रेमदेव सिंह (कुं० सिंह इंटर कॉलेज, बलिया)

भोजपुरी-साहित्य के नया पठनीय सृजन/प्रकाशन

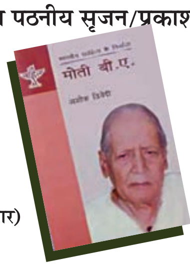

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)

अशोक द्विवेदी

₹ पेपर बैक-50/-

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

(रामजियावन दास 'बावला')

अशोक द्विवेदी

भोजपुरी रचना आ आलोचना

(पृष्ठ संख्या-404)

डॉ0 अशोक द्विवेदी

मूल्य-500/-

विजया बुक्स

नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

किताब मिलल....

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या

एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019

Mobile: +91-8004375093, 8707407392, 8373955162, 9919426249,

Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

अंक: 99-100 (संयुक्तांक) अप्रैल 21-जून 2022

(तिमाही पत्रिका)

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

ग्राफिक्स
जितेन्द्र सिंह सिसौदिया

कंपोजिंग
अरूण निखंजन, सत्यप्रकाश

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

आवरण–चित्र
आशीष पी. मिश्रा

पुण्य-स्मरण आ श्रद्धांजलि

श्रीमती राजेश्वरी शांडिल्य, डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव,
प्रो0 अर्जुन तिवारी, प्रो0 ब्रजाकिशोर, डा0 केदारनाथ सिंह,
सतीश प्रसाद सिन्हा, नगेन्द्र प्रसाद सिंह, कन्हैया पाण्डेय

संपादक

डॉ0 अशोक द्विवेदी

'पाती'- परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) डा० अरूणमोहन 'भारवि', श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर), कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, दिनेश पांडेय (शास्त्रीनगर, पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), गंगाप्रसाद 'अरुण', (जमशेदपुर), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

सहयोग:
एह अंक के–100/-
सालाना सहयोग-300/- (डाक व्यय सहित)
तीन वर्ष के सहयोग-1000/-
आजीवन सदस्य सहयोग:
न्यूनतम-2500/-

e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com,

संपादन-कार्यालय:-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001 एवं
एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19
मो0– 08004375093, 08707407392, 91–8373955162

[अशोक कुमार द्विवेदी के नाम से चेक/डी०डी० अथवा SBI A/C No. 31573462087, IFSC Code-SBIN0002517 में नकद/ऑनलाइन सहयोग जमा करके हमें सूचित करें]

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन निजी हऽ दायित्व लेखक के बा, ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में...

हमार पन्ना — ● बदलत समय आ ''पाती'' के सउँवाँ अंक/3

शुभकामना—सनेस — ● श्री सतीश त्रिपाठी, डा0 अरूणेश नीरन, श्री अजित दुबे/4

सामयिकी — ● देस आजु बैचारिक जुद्ध के रनभूमि बनल बा/सौरभ पाण्डेय/5—8

हस्तक्षेप — ● खुदा के बन्दा! क्तेना फन्दा ?/शशि प्रेमदेव/10—13

कविता/गीत —
- रामजियावन दास 'बावला'/9
- माहेश्वर तिवारी/27
- इन्द्र कुमार दीक्षित/34
- जगदीश ओझा 'सुन्दर'/39
- पी. चन्द्र विनोद/58
- अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी'/72—73
- प्रकाश उदय/74—75
- कमलेश राय/75—76
- दिनेश पाण्डेय/77—78
- अशोक कुमार तिवारी/79, 113
- योगेन्द्र शर्मा 'योगी'/79
- ओम धीरज/80
- सत्य नारायण/116
- भगवती प्रसाद द्विवेदी/118

निबन्ध —
- बतरस आ पाती/अनिल कुमार राय 'आंजनेय'/14—16
- चेयर—चिपकेरिया/मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध'/17—19
- अगस्त के महीना भइल बड़ा सोर/श्री सत्यवादी छपरहिया/20—27
- भोजपुरी भाषा के बल—बेंवत/डॉ0 शुकदेव सिंह/28—32
- सुभाव/महेश्वराचार्य/33—34
- इमली के बीया/विद्यानिवास मिश्र/35—39
- शहर में गाँव/अरुणेश नीरन/40—45
- पेट—पहाड़/अशोक द्विवेदी/46—47
- कोजागरी/शिव प्रसाद सिंह/48—50
- दसवाँ ग्रह/कुलदीप नारायण 'झड़प'/51—52
- कि बरधे कि मरदे/डॉ0 नन्दकिशोर तिवारी/53—58
- भड़ेहरि/डॉ. विवेकी राय/59—61
- आखिरी चिट्ठी/डा0 प्रभुनाथ सिंह/62—64
- कलियन करी पुकार/श्रीमती शारदा पाण्डेय/85—90
- गूलर के फूल/राजेश्वरी शान्डिल्य/91
- दाढ़ी चरित्तर/डॉ. गदाधर सिंह/97—101
- अंचरा में अंगार/राम प्रकाश शुक्ल 'निर्मोही'/102—104

कहानी खण्ड—4 —
- बड़प्पन/कन्हैया प्रसाद सिंह/120—121
- आजादी के दुसरकी लड़ाई/रामनाथ पाण्डेय/122
- चउका बइठल महादेव/डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव/125—129
- आगि/अशोक द्विवेदी/130—131
- थाती/नीरज सिंह/132—137
- अकथ कहानी/तुषारकान्त उपाध्याय/138
- नौ हाथ के पगहा/कृष्ण कुमार/144—148

आलेख/निबन्ध —
- हँथवा लफावेले केवन दुलहा/चन्द्रेश्वर/65—66
- आजादी के पचास बरिस आ लोकशाही/अशोक द्विवेदी/67—68
- 'एक मुठी सरसो' के बहाने/केशव मोहन पाण्डेय/69—71
- उगे रे मोर सुगना, माटी में सोनवा!/भगवती प्रसाद द्विवेदी/105—106
- 'बाकी चइत के झकोर जनि माँगऽ'/बलभद्र/107—110
- भाव, अभाव आ भोजपुरिया समाज/प्रमोद कुमार तिवारी/111—113
- संस्कार संस्कृति अउर आजु के परिवेश/जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/114—116
- बतकुच्चन के पाती/डा0 ओमप्रकाश सिंह/117—118
- भोजपुरिया के भारी शोर.../ब्रजभूषण मिश्र/149—151

लघुकथा —
- मेहनती के सम्मान/विनोद द्विवेदी/61
- निर्बल वर्ग के घर/विनोद द्विवेदी/101

बुझवल कथा — ● घायल के बानि/राजगुप्त/155—156

कविता—खण्ड —
- कन्हैया पाण्डेय/151,158
- हीरालाल 'हीरा'/157
- मिथिलेश गहमरी/154
- गुरुविन्द्र सिंह/154
- कादम्बिनी सिंह/158
- सुभाष पाण्डेय/169
- आनन्द कुमार सिंह/170—171

उपलब्धि — ● विश्व भोजपुरी सम्मेलन के योगदान/जगदीश उपाध्याय/152—153

सांस्कृतिक—गतिविधिः— पृ0. 81—84

बदलत समय आ ''पाती'' के सउँवाँ अंक

बदलत समय में हमनी का संग, देश-समाज खातिर सोच-विचार आ 'मत' के जबर्दस्त द्वन्द चल रहल बा। देसवे ना, बलुक दुनिया में ई द्वन्द आपुसी खेमाबाजी आ आक्रामकता के हद तूरि रहल बा। भौतिक विकास, समृद्धि आ वर्चस्व एक ओर बा त दुसरा तरफ सोच-विचारधारा आ संस्कृति के संघर्ष।

हमनी किहाँ सैकड़न बरिस के गुर्चियाइल गुलामी वाली मानसिकता, आजादी का सात दशक बादो रहि-रहि उफनति बा, बाकिर एसे छुटकारा खातिर जनचेतना नवजागरन का स्थिति में बा। जातिवाद, खानदानवाद, भाई-भतीजावाद आ एही में सउनाइल नकली प्रगतिशीलता आ भरभावे वाला समाजवाद आदि के मुखौटा उतर चलल बा, बाकिर एह वादी लोगन का पुर्वाग्रह आ अहंकार में कमी नइखे आइल। जनजागरन के एसे बड़ सबूत दोसर का होई कि हर क्षेत्र में अनधिकार दखल राखे वाली कथित बुद्धिजीवी-बपौती, कब्जा, अतिक्रमण आ मठाघीशी के गहिर नेवं हिले लागलि बा। देश के इतिहास-परम्परा, आस्था आ संस्कृति से खेलवाड़ करे वाला कथित प्रोग्रेसिव सेकुलर राजनीतिज्ञ, बुद्धिजीवी लोग सत्ता, पावर आ लाभ के सोर्श' छिना गइला का क्रोध आ इरिखा में बीखि ढकचत, गोलियाए सुरु क देले बाड़ें। जनचेतना भारत का आत्मा के जगा चुकलि बिया, अतने ना अब ऊ खुल के विघटनकारी आसुरी शक्तियन आ भेद-भाव वाली नकारात्मक राजनीति का खिलाफ लामबन्द हो रहल बिया। अपना मूल आ मूलधारा से जुड़ला के ललक आ ओकरा दिसाई सचेत भइला के लच्छन साफ लउक रहल बा।

■■ आज से 43 बरिस पछिले अपना मातृभाषा भोजपुरी के साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रिका ''पाती'' निकाले का पाछा हमार मंशा इहे रहे कि सही दिशा का साथ लोगन के एकर वर्तमान बोधो रहे। लोक से जनमल-जुड़ल एह भाषा के मान-सम्मान आ प्रतिष्ठा बढ़े। हम ओह लायक त एकदमे ना रहनी कि कवनो पत्रिका निकाल सकीं। हिन्दी में लिखत-पढ़त रहनी आ बेरोजगारे रहनी। मेहनताना के रूप में हिन्दी पत्र-पत्रिकन से मिले वाली मामूली सहायता से निबुकावल मुश्किल रहे। ओह दारुन-स्थिति में पत्रिका निकाले के संकल्प आ ओके सौ अंक तक ले जाए के जिद आजु पूरा भइल तऽ आँखि लोरा गइलि बिया। एह कठिन मंजिल तक पहुँचावे वाला सब नेही-छोही भोजपुरिया लोगन के आभार का दरसाई? निहोरा जरूर करब कि रउआ सब एह जरत मशाल के संवाहक बनीं।

डॉ० अशोक द्विवेदी

शुभकामना–सनेस

सतीश त्रिपाठी

(भू0 पू0 अतिरिक्त मुख्य सचिव महाराष्ट्र) अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष,
विश्व भोजपुरी सम्मेलन एवं अध्यक्ष ''सेतु'' चैरिटेबुल ट्रस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)

भोजपुरी साहित्यिक पत्रकारिता के कीरति बढ़ावे वाली पत्रिका ''पाती'' सन् 1979 से निकल रहलि बिया। भोजपुरी भाषा–साहित्य संस्कृति के रचनात्मक प्रसार आ संवर्द्धन में जीव–जान से लागल रहे वाला रचनाधर्मी संपादक डा0 अशोक द्विवेदी, भोजपुरी–रचनात्मक आन्दोलन के पताका उठवले अजुओ दउर रहल बानें। भोजपुरी के स्तरीय अकादमिक स्वरूप बनावे–बढ़ावे वाली पत्रिकन का पाँती में ''पाती'' के प्रकाशित होखे वाला ई सउँवा अंक उछाह बढ़ावे वाला सुखकर समाचार बा।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन का ओर से ''पाती'' के यशस्वी संपादक अशोक द्विवेदी के बधाई आ हार्दिक शुभकामना!

अरुणेश नीरन

अन्तर्राष्ट्रीय महासचिव, विश्व भोजपुरी सम्मेलन

तमाम तरह क असुबिधा आ आर्थिक संकट से जूझत कवनो साहित्यिक पत्रिका सौ अंक प्रकाशन तक पहुँच जाव, ईहे बहुत कठिन बा। अइसना में भोजपुरी पत्रिका ''पाती'' के सौवाँ अंक अपना विशिष्ट साज सज्जा, ताप–तेवर से निकल रहल बा : भोजपुरी जगत खातिर ई समाचार सराहनीय आ सुखकर बा। अशोक जी के हार्दिक बधाई आ शुभकामना!

अजीत दुबे

(मैथिली भोजपुरी अकादमी दिल्ली के पूर्व उपाध्यक्ष,विश्व भोजपुरी सम्मेलन संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भोजपुरी समाज दिल्ली के अध्यक्ष)

'पाती' रजिस्ट्रेशन के साथ बरिस 1979 से निकले शुरू भइल रहे। एकर प्रकाशन के, 43 वाँ साल हो चलल। भोजपुरी भाषा –साहित्य के रचनात्मक आन्दोलन के आगा बढ़ावे आ हर विधा में भोजपुरी के स्तरीय– लेखन के प्रकाशन–सवर्द्धन में क्रियाशील पत्र–पत्रिकन में' पाती' के विशिष्ट योगदान रहल बा । विविध विषयक दू दर्जन विशेषांक प्रकाशित करे वाली एह पत्रिका के सउँवाँ अंक भोजपुरी के रचनात्मक लेखन से जुडल लोगन खातिर उछाह बढ़ावे का साथ साथ हर्ष के विषय बा। 'पाती' पत्रिका भोजपुरी साहित्य संस्कृति के जंन जन तक पहुँचावे में आपन महत्वपूर्ण भूमिका निभावत निभावत आपन सौवां अंक के यात्रा तक पहुँचल बा, ई हमनी खातिर बहुत खुशी के क्षण बा।भोजपुरी साहित्य में लोक धारा आ शास्त्रीय धारा दूनो के रचनात्मक दूत बन के अपना पाठक लोगन के निमन कविता, कहानी, आलेख, संस्मरण, रिपोर्ट से अतना लम्बा समय तक एगो बौद्धिक आंदोलन के जमीन तैयार करे में पाती के अनमोल योगदान बा। गम्भीर आ सुघर भोजपुरी साहित्य के संवाहक 'पाती' पत्रिका के शतांक खातिर एकर सम्पादक डॉ. अशोक द्विवेदी जी आ उनकर समूचा टीम साधुवाद के हकदार बा। विगत चार दशक में जे भी भोजपुरी के रचनाकार भइल बा उ पाती के मंच से आपन अभिव्यक्ति कइले क मोका पवले बा। सबसे खास बात हमरा ई लागल कि पाती के रूपसज्जा में हमेशा भोजपुरी के गांव, मनई, पेड़, खेत, खरिहान, लोक परम्परा,के छवि दिखाई पड़ल। आलेख के माध्यम से आधुनिक सन्दर्भ के छुवत पाती हमेशा अपना भाषा, साहित्य, शब्द, काव्य में भारत के गाँवन के पैरोकार बन के खड़ा रहल बा।ई पत्रिका जतने अकादमिक लोगन खातिर संग्रहनीय आ उपयोगी सिद्ध भइल ओतने सामान्य जन खातिर भोजपुरी के प्रति अनुराग पैदा करे में सफल भइल बा।आजु के समय में जब देश आजादी के अमृत महोत्सव मना रहल बा पाती के 'शतांक' खातिर हमरा तरफ से, भोजपुरी समाज दिल्ली के तरफ से, आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन संस्था के तरफ से कोटि कोटि अभिनन्दन, शुभकामना बा आ भोजपुरी साहित्य संस्कृति जगत के साधुवाद बा। पाती क झंडा बुलंद रहे, भोजपुरी क ध्वज ऊंचा रहे!!

देस आजु बैचारिक जुद्ध के रनभूमि बनल बा

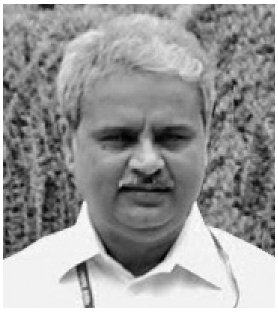

✍ सौरभ पाण्डेय

एह में कौनो संदेह ना, जे लोकसभा के 2014 के चुनाव से, आ फेरु 2019 के आमचुनाव में दोहरियाइ के, एगो अइसना केन्द्र–सरकार के गठन भइल बा, जवन अबतक ले चलल आवत सरकारन (मुख्य रूप से कांगरेसी सरकार) के मूलभूत बिचार आ बनल सोच से निकहा फरक बिचार के अनुसार काम करे में बिस्वास करेले। अपना कार्य–प्रक्रिया आ देस के लोगन के लेके आपन बेवहार में ई सरकार पूरा देसी बिचार के हामी बिया। भारतीय बहुवर्गीय, बहुपंथीय समाज के साधे खातिर अब ले जवन बिन्दुअन के मानक मान लियाइल रहे, बूझीं त, ओह कूल्हि बिन्दुअन से फरका सोचे आ मानक पर बिस्वास करे वाला लोग आजु ना खलिसा केन्द्र के सत्ता पर काबिज बाड़े, बलुक दूनो बेरी के आमचुनाव में पूरा–बहुमत से जीत के आइल बाड़े। कायदे से कहल जाव त आजाद भारत में अइसन इस्थिती पहिला हाली आइल बा। बलुक बीच में अटलबिहारी बाजपेयीजी के गठबंधन सरकार के ना गिनल जाव तब। बाजपेयीजी आपन सरकार के बचावे आ चलावहीं में आपन सउँसे राजनीतिक काबीलियत आ बुद्धी लगा देले रहनीं। अपना मत आ सोच के हिसाब से सरकार चलावे में उहाँ कबो अस्थिराह ना भ पवनीं। एह से पहिले, उनइस्सौ सतहत्तर में कांगरेस सरकार के पराभव का बाद ई जरूर भइल जे कांगरेसियन से अलहदा एगो जुटान से सरकार बनल। जवना जुटान के नाँव 'जनता पाटी' धराइल रहे। बाकिर, एह पाटी के जवन हाल भइल तवना प अतने कहल जा सकेला, जे 'घर के खा गइल दियरखा पर के ढिबरी'।

जनता पाटी के ओह सरकार के समाज प का कहे के, ओह घरी के सियासते प कायदे से कवनो परभाव ना पर सकल। एगो बड़हन कारन ईहो रहे, जे ओह गठबन्धन–सरकार में अइसनो पाटी आ सियासी दलन के जुटान भइल रहे जे बिचार, मत आ सोच के हिसाब से फरीक (भिन्न) रहे। ओह सरकार में जहवाँ एक ओर जनसंघ रहे त दोसरा ओर वामपंथी दल रहले सन। अब केर–बेर के बनल सङ कबले निबहित ? कांगरेसी बिचारधारा से फरिका सोच वालन के ओह सरकार से जनता के जवन अथाह उम्मेद बनल रहे, ऊ उम्मेद फरे–फूले के पहिलहीं सुखा–बिला गइल। एह सियासी घटना के बाद अगिला गैर कांगरेसी सरकार बनल अटलजी के। आ जइसन उपर लिखाइल बा, ऊहो सरकार 'कतहीं के माटी, कतहीं के ईंटा' सभ बिटोर के बनल रहे। ओह सरकार में सभ संगठन, सभ दल, अपना–अपना फेरा आ आपन–आपन सोआरथ के लेके जवन ना घींच–तान मचवलन स, ओह के साधहीं में आ 'कामन–मिनिमम प्रोग्राम' के अनुसार चले–चलावहीं में बाजपेयीजी के निकहा ऊर्जा खरच भ गइल करे। एह कूल्हि के परिनाम ई भइल जे ओह सरकार के क्रिया–कलाप के आ एकर राजनीति के देस–समाज पर गहिर के कहे, इचिको

परभाव ना परल। समाज के नजर में सियासत के माने–मतलब आ ओकर बेवहार कांगरेसिये चाल–चलन आ परिपाटी के अनुसार बनल रहल। बाकिर सन दू हजार चौदह से बनल नरेन्द्र दामोदरदास मोदीजी के अगुआई में जवन भाजपा के सरकार बनल, आ, सन उनइस में ईहे सरकार दोहराइ के आइल, त एह सरकार के देस–समाज पर एकर बेवहार, चाल–चलन, बिचार आ मत के परभाव परत सोझ लउके लागल। एक त मोदीजी के काम करे के ढंग, जवन भारतीय सियासत में कबो ना देखल रहे, आ एगो प्रधानमंत्री के तवर पर उनकर बेक्तिगत जीवन आ उनकर पारिवारिक पृष्ठभूमी, जवन एगो शास्त्रीजी के छोड़ दियाव त आजु ले खइला–पियला–अघइला प्रधानमंत्री लोगन के सोझा एकदम से फरक रहे, के आमजन के जीवन आ सियासत के लेके उनकर सोच–बिचार पर गहर परभाव परल बा। भारतीय राजनीत के इतिहास में ई पहिले–पहल भइल बा जब केन्द्र में गठबन्धन सरकार भइला के बावजूद प्रमुख पाटी पूरा बहुमत से सत्ता प काबिज बिया।

आज सरकार के प्रमुख पाटी घोषित रूप से दक्खिनपंथी बिचार वाला दल ह। एहसे, आजु के बिपक्षीदल खलसा राजनीतिक रूप से बिपक्ष में नइखन स, बलुक बैचारिक रूप से बामपंथी भा मार्क्सवाद के पच्छधर भइला के कारन भा बामपंथी सोच–बिचार से सहानुभूती रखला के कारन सरकार आ बिपक्ष दूनों निकहा दू छोर प बाड़न स। जहवाँ एक ओर भारत भूमी के परंपरा के लेके भाव राखे वाला, भारत के लमहर इतिहास आ एकरे लगले देस के मानसिक, आर्थिक समृद्धी प अकूत गुमान करे वाला दक्खिनपंथी बिचारधारा बा, त, दोसरा ओर स्थापित परंपरा के चुनौती देवे वाला, भारतीय बिचार–सभ्यता के लहान बतावे के फेरा में घटिहा अस्तर तक जाये में कवनो संकोच ना करे वाला बामपंथी बिचारधारा बा। ई कहे के नइखे, जे अजादी के बाद से केन्द्र पर सबले ढेर कांगरेस के सत्ता रहल बा। जेकर एक सुरुये से एकही बिचारधारा रहल, कवनो उत्जोग काँहें ना करे के परो, सत्ता पावल मुख्य बा। शासन करे के उत्जोग में एह पाटी खातिर बौद्धिक वर्ग के सङे ले चलला के हरमेस बाध्यता बनल रहल। एही कारने, कांगरेस सुरुये से अपना कोरा में बामपंथियन के बइठवले रखलस। ई एहसे, जे पहिल प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरूजी के बैचारिक झुकाव बिसेस तरी के समाजवाद का ओर रहे। नेहरूजी के समाजवाद आ सोच ठाुर समाजवादी राममनोहर लोहियाजी के समाजवाद आ सोच से निकहा फरका रहे। नेहरूजी तनि अधिका प्रगतिशीलता के पच्छतर लउकला का फेरा में राष्ट्रीय स्वयं संघ आ अइसने सभ दक्खिनपंथी बिचारधारा वाला लोगन आ संस्था से दूरी बना के चले में भलाई बूझत रहले। एकर फल ई भइल, जे देस के लगभग हर छेत्र में, लगभग हर संस्था में, बिसेस तवर पर बामपंथी सोचवालन के कब्जा हो गइल भा कब्जा करवा दियाइल। का सियासत, का साहित्य, का शिक्षा, का कला, का प्रशासन सभ जगहा बामपंथी बिचार के डंका बजावल गइल। साहित्यिक, शैक्षणिक संस्थानन प एकर अतना करेड़ पकड़ बनि गइल, जे आजाद देस के तीन–चार पीढ़ी देसिला सोच से कटल, निकहा अनजान, बड़ भ गइल। दक्खिन बिचारधारा वालन के, उनकर शोध आ मत के, भारतीय विधा–विध् ाानन के तार्किक बूझत सार्थक बहस कइला के कहे, ई सभ के खुल के खिल्ली उड़ावल गइल। सत्ता के आजू–बाजू बनल रहे वाला दल, कूल्हि संस्था, सियासी पाटी अबले जवन दक्खिनपंथी बिचारधारा के खुल के हवा–हवाई साबित करत बहस–मुसाहिबा आ बिचार के धरातल प हाशिया प ठेलले रहले स, ओही दक्खिनपंथी बिचारधारा के लोग, उनकर कूल्हि दल, अचके हाशिया से उठि के आजु केन्द्र में आ गइल बाड़न जा। तवना प अतने ना, बलुक पूर्ववर्ती शासक–समूह, जे कथित सेकुलरिजम के अनुयाइये ले ना, बलुक पुरोधा कहत ना अघाला, आ ओह शासक–समूह के कान्हे चढ़ल वामपंथियन के गोल सन दू हजार चउदह से पहिले करीब बारह–तेरह बरिस ले जवन मनई के एगो बिसेस नजरिया से देखत आ देखावत मार कुफुत कइले रहलन स, जबकि ऊ मनई ओह पूरा काल–खण्ड में गुजरात के मुख्यमंत्री रहे, आजु ऊहे आपन पाटी के पोस्टर–ब्वाय बनल निकहा धूमधाम–धमक से प्रधानमंत्री के तवर प आपन दूसर पाली खेल रहल बा। सेकुलरन आ बामपंथियन गोल खातिर ई अइसन कुछ जीयत माछी घोंटला से कम नइखे। तवना पर केन्द्र–सरकार के सङे–सङे राज्यन में शासन आ जनता के मुखर पच्छधरता से दोसर पच्छ के भक्की मरले बा। सबले बड़हन बात ई, जे सेकुलर मत के अनुसार जनता मतलब खलसा

अल्पसंख्यक जमात होला। जवन अब सोझ मुसलमान हो गइल बा।

आजु के केन्द्र–सरकार आ भाजपा शासित राज्यन के कारन जवन दक्खिनपंथी बिचारधारा के आपन तथ्य आ कथ्य दम खम से राखे के अवसर मिलल बा, तवना पर, उत्तरप्रदेश भा असम अइसन राज्यन में बेखौफ मुख्यमंत्रियन के शासन सेकुलर, लिबरल आ बामपंथियन लोगन खातिर ढेर मथबत्थी भइल बा। कहे के माने ई, जे देस में आजादी का बाद से पहिला हाली हो रहल बा, जे दक्खिनपंथी बिचारधारा वालन के खलसा केन्द्र ना कतान जगहा राज्यन में सरकार बनावे भा वजूद में आवे के माहौल बनल चुकल बा। दक्खिनपंथी आ एकरा समर्थन देत दलन के मुखर भइला के कारन बामपंथियन, सेकुलर आ लिबरल लोगन के एक समै के खुला बिरोध आजु उनकर बेइंतहा कुण्ठा के सबब भ गइल बा। सही कहल जाव त स्थिती बैचारिक जुद्ध के भ गइल बा। एक समै के आरोप–प्रत्यारोप अब सियासी भर ले ना रहि के बेक्तीगत लानत–मलामत होत सोझ गारा–गारी पढ़े के आ एक–दोसरा के सरापे आ भाखे के माहौल बना रहल बा। अतना, आकि कौ हाली सियासी दलन के आपसी बिरोध बैचारिक ना होके खलसा बेक्तीगते ना बनावटी लांछन तक ले बुझाए लागेला। कहाला नू, जे जुद्ध आ प्रेम में कूल्हि दाँव जायज होला। एही से, दक्खिनपंथियन के फासिस्ट कहे वाला कांगरेसी, बामपंथी भा बामपंथ से परभावित दल आजु अपना कुण्ठा, जिद आ डाह का मारे घोर फासिस्ट अस बेवहार कर रहल बाड़न स। तवना प जनता–जनार्दन, बिसेस क के हिन्दू जनता, जे अबले सियासी मामिला में निसङ के भा निर्लिप्ती अस बेवहार करत रहे, आजु खुल के आपन पच्छ राख रहल बिया।

हालिया कूल्हि चुनावन के परिनामन प कवनो बिचार राखला से पहिले ई जानल जरूरी बा, जे कांगरेस आ बामपंथियन के हर जगहे से लगातार उपटत गइला के मुख्य कारन का बा ? अइसन हावा बहल त काँहें ? देखल जाव, त जइसन उपरा कहाइल बा, परम्परा–बिरोध के नाँव प देस के बहुसंख्यक अबादियन, माने हिन्दू जनता, के सोच, परिपाटी आ बिचारधारा के बिरोध प आके रुक गइल बा। अल्पसंख्यक के माने ऊन्हनीं खातिर खलसा मुसलमानन बा। आ एह कौम आ जमात खातिर हर जायज–नजायज माँग मानल–मनवावल सेकुलरन सोच वाला दल खातिर सियासत भ गइल बा। ईहे बेवहार कांगरेस होखो भा सेकुलर दल, इन्हनीं के निष्ठा आ आचरन पर सवाल उठावे के कारन बन रहल बा। आजु केहू इन्हनीं से पूछे जे मुसलमानन के उन्नति आ समाजिक उत्थान के लेके का बिचार बा, त सोझ उत्तर ना मीली। मुसलमानन के भावनात्मक दोहन के जवन ना भदेस रूप सोझ आवत जा रहल बा जे मन थोर हो जाता। चूँकी, भारत में मुसलमानन के जनसंख्या करीब पच्चीस करोड़ ले हो चुकल बा, जवन पाकिस्तान के सउँसे जनसंख्या से बेसी बा, त एह कौम के एकवटिये वोट कवनो सियासी दल के सरकार बनवा सकेला। से, मुसलमानन के पच्छधरता उन्हनीं के प्रगती खातिर नइखे, बलुक आपन सोआरथ साधे के जुगत बड़ुए। जुगत भिड़वला के ई भाव अतना चोख भइल जाता, जे, कतना सेकुलर दल हिन्दू समाज के रिगवला से बाज नइखे आवत। माने, कसहूँ मुसलमान कौम के हितैसी लउकीं। दिल्ली बिधानसभा में दिल्ली के मुख्यमंत्री के 'द कश्मीर फाइल' के हवाला से भासन कइल आ उनका पाटी के सभ बिधायकन के बेसरमी से ठहाका लगावल एही रिगवला के भदेस आ फूहर ढङ रहे। अब ई कश्मीर के पुरान माहौल होखो, केरल में आरएसएस के कार्यकर्ता लोगन के लगातारे कइल जात हत्या होखो, बंगाल में हिन्दुअन के अबादी पर हिंसा कइल होखो, ई सभ मुसलमानन के अपना ओरि बनवले राखे के उत्जोग बाड़न स। एही से सोझ कहाव, त मुसलमान के बड़हन अबादी देस के लेके निकहा भाव में कबो ना रहल। कारन ईहे, जे केन्द्र में सभ पूर्ववर्ती सरकार होखो भा राज्यन में भाजपा के अलावा कवनो सरकार एह जमात के मन बढ़ावत रहला में हरमेस आपन फायदा देखलस। ई आजु देस के जीउ–जान साँसत कइले जा रहल बा। भाजपा एही सोच के खिलाफ माहौल बना के बिना मुसलमानन के पच्छ लिहले सत्ता बनवले जा रहल बा। कांगरेसी आ बामपंथी दल के बड़हन मोस्किल ई बा कि हिन्दू समाज के बड़ वर्ग भाजपा का ओर एकवटियाइल जा रहल बा।

जवना देस के नागरिक आपन देस के संप्रभुता आ राष्ट्रीयता के लेके जागरुक ना रहेले, ऊ देस ना खलसा उन्नती के राहि प पिछड़ जाला,

बलुक आपन वजुदओ के मेटात देखे लागेला। आजु पाकिस्तान के हाल सभ के लउक रहल बा। श्रीलंका के हाल आँख खोले वाला बा। हालत ई बा, जे जवन बामपंथ राष्ट्रीय अवधारना के खुल के बिरोध करेला, चीन आ रूस के नाँव प एकरा गूँगी मार देला। चीन के विस्तारवाद आ रूस के धमक प बामी लोगन के बिरोध में हाल्दे बोल ना फूटे। चीन में मुसलमानन के का हाल बा ई अब अलोत नइखे रहि गइल। बाकिर रोहिंग्या भा पाकिस्तानी मुसलमानन प हाहो–दइया करे वाला मुसलमानी भा सेकुलर जमात चीन के बिरोध प गुम्मी कछले रहेला। बाकिर ईहो ओतने साँच बा जे दक्खिनपंथी बैचारिक जमात के बुद्धीजीवी आ पत्रकार लोग चीन के मुसलमानन के लेके निकहा बिरोध मे सवाल तक नइखन उठावत जा। बामपंथियन के बिचार में चीन के पच्छधरता कइल ढेर जरूरी बुझाला। परसाल लद्दाख में चीन के घुसपैठ प कांगरेस आ काम्युनिस्ट दल जतना खुल के चीन के समर्थन भा भारत के बिरोध में मुखर रहले स, ऊ कवनो राष्ट्रभक्त खातिर अचंभा से कम ना रहे। चीन से आवत घटिया समानन प सेकुलर जमात के कवनो बिरोध ना रहे। जबकि एह पर वर्तमान सरकार द्वारा लगावल जात रोक प सेकुलरी–बामपंथी जमात चीखमचिल्ली मचावे लगलन स। बजार प नियंत्रन सरकार ना आमजन करेला। जइसे–जइसे आमजन शिक्षित होत जाई, सही आ बाउर के फैसला करे में सच्छम होत जाई। बे शिक्षित आ जागरुक जन के लोकतंत्र कामयाब ना हो सके। ई आमजन के जगरुकतवे ह, जे आपन देस में का सही बा, का बाउर बा, एह प सोझ आ निकहा सवाच सकऽता।

सही बात ई बा जे दक्खिनपंथी बिचार के पत्रकार होखसु, भा बुद्धीजीवी वर्ग, अपना बात के ढङ से राखे में बामपंथियन से निकहा पाछा बा लोग। ई कुशलता इनकरा लोगन खातिर सीखे जोग बा। दक्खिनपंथी संगठनन के बैचारिक दरिद्रता के एगो बड़हन रूप अपना बीच के प्रतिभा के नकारल आ अपना लहान सोआरथ में घटिया गुटबाजी में आझुराइलो बा। एकरो मजगर मनोबैज्ञानिक कारन बा, जे दक्खिनपंथी जमातन के सत्ता के लगे बनल रहला के संजोग नइखे भेंटाइल। से, अपना जमात के सीढ़ी अस बना के आपन सुथरल समूह बनावे के लकम ले नइखे सिखले लोग। ईहे कारन बा जे पत्रकार लोग भा साहित्यिक आ शैक्षणिक संस्थानन के मुखिया के तवर पर आजुओ बामपंथियन भा छद्म–राष्ट्रवादी लोग भेंटाले। ई ना भुलाए के चाहीं, जे आजु के देस आ आजु के पीढ़ी अपना हक के लेके निकहा सचेत बा। आजु के युवा 'स्पून–फीडिंग' से समाचार ना घोंटसु। ना एह लोगन के ढेर बहकावल जा सकेला। आजु देस के सियासत जनता साध रहल बिया। एही परभाव के चरचा एह आलेख के शीर्षक बा। एही से बामपंथी युवा संगठनन के खिलाफ में दक्खिनपंथी सोच के संगठनन के उभार चकित क रहल बा, 'न दैन्यं न च पलायन के सूक्ती प। जनता के मनभाव बदल रहल बा। आजु ले जनता के मन–बिचार में जवन एहसासे कमतरी पगावे के लकम बनल रहे आ अपना राष्ट्र के लेके लगातार नकारात्मक भाव बनावल जात रहे ओह के खिलाफ लोग बोलल सुरू क देले बाड़े। एह बात के नेता, प्रवक्ता आ पत्रकार जतना हाल्दे बूझि जासु ओत सही होई। एहके एह संदर्भ से बूझल जा सकेला जे जवना देसन में बामपंथ अपना धमक से उभार में रहे ओहू देसन से हकालल जा चुकल बा भा हकालल जा रहल बा। फेटेंसी के मुलम्मा ढेर दिन ना चले।

कहे के नइखे, जे भारत सहअसतित्व के सोच वालन के देस ह। एजुगा के समाज आपरूपी सेकुलर बिचार वाला ह। एकरा पच्छिम के देसन से बनावटी सेकुलरिजम नइखे सीखे के। एही भाव के जबरदस्त परभाव आ समाज प पड़ रहल बा। भारत कबो राजनैतिक इकाई नइखे रहल। बलुक ई एगो आध्यात्मिक भौगोलिक इकाई रहल बा। जबले एह बात के निकहा ना पतिया लियाई देस के बहुसंख्यक वर्ग के बामपंथी वर्ग से भिड़ंत बनल रही। बामपंथी लोगन के हर भारतीय अवधारना से बनल धिना आजु के सियासी सर्किल में बवाल के मुख्य कारन बा।

एम–2–ए–17, एडीए कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद, पिन – 211008 संपर्क – 09919889911

आजादी पउलस के?

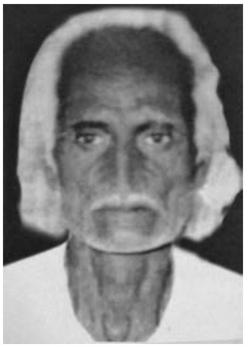

✍ रामजियावन दास 'बावला'

देश भयल आजाद मगर रण कै बरबादी पउलस के,
सोचा आजादी पउलस के ?

के के आपन खून बहावल,
के आपन सर्वस्व लुटावल,
केकर लड़िका बनै कलक्टर ई ओस्तादी पउलस के,
सोचा आजादी पउलस के !

केकरे बदे किरिन मुसुकाइल,
धरती केकरे नाम लिखाइल,
के तरुनी सँग मउज उड़ावै, बुढ़िया दादी पउलस के,
सोचा आजादी पउलस के !

केकरे आह से परवत टूटल,
सिव ब्रम्हा के आसन छूटल,
के जोगी बन अलख जगवलस, पर परसादी पउलस के,
सोचा आजादी पउलस के !

सक्ति दीन कै अबहीं बाय,
जवने से सुरपति डर खाय,
लोहे क बिटिया के ब्याहल, मगर दमादी पउलस के,
सोचा आजादी पउलस के !

खुदा के बन्दा! केतना फन्दा ?

शशि प्रेमदेव

दीया–दियारी का दीने मोबाइल पर सबेरहीं उहाँ के फोन आइल ।अकसरहा हर तिवहार भा जनमदिन का मोका पर फोन का जरिए हमके 'शाकिब सर' के बधाई आ असीरबाद हासिल होत आइल बा। ई अलग बात बाटे कि उहाँ के बतकही चिर–परिचित संदेस भा असीरवाद से शुरू होके फट देने आर० एस०एस०–भाजपा विरोध , हिन्दुत्ववादियन के अत्याचार से होत इस्लाम के गुणगान तक पहुंच जाले ! हमहूँ बेर–बाँगर पोरफेसर साहब के फोन करत रहेलीं । एकही नगर के बासिंदा होखला का चलते बेर–बाँगर हमनीं क मुलाकात होखते रहेला य कबो कवनो साहित्यिक कार्यक्रम में, कबो कवनो गोष्ठी–सेमिनार में, कबो कवनो आउर मोका पर ...। शाकिब सर भा उनका नियर उनकर मुरीद वामपंथी बिचारधारा क अधिकांश लोग हमरा के पुरहर सनेह आ सम्मान देबेला । हम बहुत दिन तक एह् भरम में रहलीं कि ऊ लोग हमरा पर एह् कारन से नेह–छोह लुटावेला कि जिला–जवार में हमार छबी एगो अच्छा टीचर आ गजलगो के बाटे। बाकिर असली कारन हमके कुछ दिन बाद पता चलल कि ऊ लोग हमरा के एगो 'अच्छा' हिन्दू (आ, एह् लेहाज से एगो उदार 'सच्चा' हिन्दू) मानि के अपना जमात में उठे–बइठे के जोग समझेला । दोसरा शब्दन में, एगो अइसन सेलेक्टेड हिन्दू जवन बेध ड़क – बिंदास अखलाक आ पहलू खान के लिंचिंग के खिलाफ लिख–बोल सकेला ... उर्दू भाषा आ साहित्य के प्रसंसक हउवे ... गरीब–गुरबा का बारे में सोचेला–बिचारेला ... सेकुलरिज्म आ कौमी–एकता क पक्षधरता करेला !

शुरु–शुरु में शाकिब सर से हमार नजदीकी कई परिचित लोग के नीक ना लागल । हमके हिदायत दिहल गइल जे मियँवा बहुत बड़ लीगी हऽ ... जहँवे मोका पावेला हिन्दू धरम क उपहास उड़ावे लागेला ... ... आदि–इत्यादि । बाकिर हमार एगो नीक भा बाउर आदत हऽ । हम तबले कवनो इन्सान से परहेज ना करेलीं जबले बुझा ना जाव कि ऊ समाज आ देश खातिर सचहूँ खतरनाक साबित हो सकेला ! साँच कहीं त पहिले बातचीत , लबो–लहजा से पोरफेसरो साहब हमरा के अपने नियर संवेदनशील , पाखंड विरोधी , समावेशी संस्कृती के हिमायती आ ईश्वर–अल्लाह–गाड में फरक ना करे वाला एगो इन्सान प्रतीत भइलीं । ई बात दोसर बा कि जस–जस समय आगा बढ़त गइल , एक बेर फेर ई तथ्य उजागर होखे लागल कि शायद ˙ जतनम डनेसपउ ˙दक ˙ हववक भ्नउंद इमपदह बंद दमअमत बव–म•पेज पदेपकम जीम ˋउम चमतेवद (एक सँगे सच्चा यानी कट्टर मुसलमान आ अच्छा इन्सान भइल मुसकिल बाटे)!

एह् अप्रिय तथ्य के भाँप लिहला का बादो सर से हमार सम्बन्ध टूटल नइखे। हँ , एतना जरुर कहब कि अब हमरा दिल में उनका प्रति उत्साह आ श्रद्धा–भाव पहिले जइसन नइखे रहि गइल। बाकिर हम आजुवो उहाँ के जोश, निर्भिकता आ अध्ययनशीलता के कायल बानीं । उहाँ के बेशक अपना विषय के एगो बहुत बढ़िया शिक्षको हउवीं। अपना आस–पास मौजूद लोग के हमेसा उत्प्रेरित करत रहेलीं । ई

शाकिब सर से नजदिकिए क फल हऽ कि आज हमहूँ थोर–बहुत उर्दू पढ़ – लिख लेत बानीं। पोरफेसर साहब कई बेर कहलीं ––– 'शशी, जब तुमको उर्दू के अल्फाज की इतनी अच्छी जानकारी है ... अपने गीतों – गजलों में भी उर्दू भाषा के शब्द खूब प्रयोग करते आए हो ... उर्दू शायरों के प्रशंसक भी हो, तो फिर उर्दू लिखना–पढना भी क्यों नहीं शुरू कर देते ? यहीं बैठे–बैठे सीख जाओगे !'

उहाँ के सुझाव हमरो नीक लागे बाकिर काम कठिन बुझाव। बहरहाल , कोरोनाकाल में जवना घरी कालेज में पढ़ाई–लिखाई बन रहे , एक दिन 'सर' के बुलावा आइल आ हम आपन बाइक निकाल के सीधे उहाँ के मकान पर पहुँच गइलीं । पहुँचला का बाद देखलीं कि उहँवाँ हमेसा की तरह कुछ जनवादी , कुछ प्रगतिशील , कुछ छोट–बड़ लेखक – कवि आ कुछ चाटुकार लोग पहिलहीं से हाथ में कापी–कलम लेके मौजूद रहे। दू जने अपरिचितो रहलन। परिचय का बाद पता चलल कि दूनो जने उर्दू के टीचर हउवन । फेरु पता चलल कि ओह् दिन हमनी के उहँवाँ उर्दू सीखे खातिर बोलावल गइल रहे । तहिए से लगभग हर तीन दिन पर हमनीं क जुटान उहँवाँ नियमित रूप से होखे लगल । कई जने बीच–बीच में गैरहाजिरो होखे लगलन् । कारन ई रहल कि जेभी होमवर्क पूरा करे में चूकि जाव , पोरफेसर साहब सबका सोझे बे–मरउत ओकर खिंचाई करे लागस ... करीब–करीब एक महीना का ओह् बइठकी में हमके खाली कामचलाउ उर्दुए लिखे–पढे ना आ गइल , मुसलमान आ इस्लाम के भितरी झाँकहूँ के मोका मिलल । एकबेर फेरु हमके अहसास होखे लागल कि हमरा नियर इन्सान के प्रगतिशील , उदार आ सेकुलर समझि के शाकिब सर लेखा जेतने लोग हमके आदर आ सनेह देत आइल बा , ओह् में से अंठानबे फीसद लोग खाल के नीचे अपना मजहबे–इस्लाम , कौम , भाषा अउर परम्परा का ममिला में ओतने अधिक कट्टर , सचेष्ट आ दकियानूसी होखेला ...! एह् माने में का अशिक्षित , का अर्द्ध–शिक्षित आ का सुशिक्षित ––– कमोबेस सबकर मानसिकता एक्के लेखा बुझाला। हम ईहो बात भांप लेले बानीं कि भारत में रहे वाला बाकी धरम–पंथ के लोग त आम तौर पर 'नेशन फर्स्ट' के आपन मोटो बना सकेला बाकिर (एकाध फीसद मुसलमान लोग के छोड़ के) एह् कौम खातिर हमेशा देश आ देश के गौरव ले जादे महत्वपूर्ण अउर पूजनीय आपन इस्लामे रही । लिहाजा अब हमहूँ गते–गते कुछ बिचारक लोग के यह बात क समर्थन करे वालन में शामिल हो गइल बानीं कि एह् देश में सेकुलरिज्म भा समावेशी संस्कृती क बोलबाला खाली एही कारन से बाटे कि एहिजा इसलाम धरम के अनुयायी लोग अबहीं अल्पसंख्यक बाड़न। जहिये संख्याबल बराबरी का अस्तर तक पहुंचल कि एहिजो सेकुलरिज्म क बैंड बजा दिहल जाई। अगर केहू के हमरा एह् दलील से साम्प्रदायिकता भा कवनो दुराग्रह के दुर्गन्ध आवत होखे त ऊ हमरा एगो सवाल के जबाब देव –– काहें सबले अधिका दंगा–फसाद ओही प्रान्त, जिला भा इलाका में होत आइल बाटे जहँवाँ एह् कौम क लोग बहुसंख्यक बाटे ? काहें अलगाववादी आ साम्प्रदायिक तत्व अकसरहा ओही जगहा फरत–फूलात आइल बाड़न से जवन क्षेत्र या ते विरोधी देश का सीमा से सटल बाटे भा जहँवाँ बहुसंख्यक समाज के लोग यानी हिन्दू अल्पसंख्यक बाड़न ... काहें एह् कौम के अधिकांश लोग आपन नेवता, पम्पलेट, साइन बोर्ड , विजिटिंग कार्ड आदि उर्दू आउर अँगरेजी में ते छपवावे–लिखवावेला बाकिर राजभाषा हिन्दी से तबले परहेज करेला जबले आर्थिक नुक्सान के अंदेशा ना होखे ... ? आखिर हिन्दी से अतना नफरती बिलगाव काहें?

गिनवावे शुरू करब ते फेहरिस्त बहुत लमहर हो जाई । दरअसल इस्लाम के आधारभूत सिद्धांते हउवे कि येन–केन–प्रकारेण संसार के चप्पा–चप्पा तक एकर प्रभुत्व आ बिस्तार होखे के चाहीं ! दोसरा शब्दन में , धरती पर रहे के अधिकार खाली मुसलमान लोग के बाटे। शाकिब सर बड़ा घमंड से अकसरहा कहेलीं कि मुसलमान खुदा का अलावा आउर केहू से ना डेराला , ना खुदा के सिवा दोसरा के एह् दुनिया में पूजनीय मानेला... ऊ हिन्दुअन नियर ईंटा–ढेला–फेंड–पहाड के भगवान ना माने –––– ला इलाहा ईलल्लाह ... !! उनुकर बात सुनिके ओहिजा मौजूद उहाँ के कौम के लोग आ प्रगतिशील भाई लोग गदगद हो जाला। आमतौर पर मुँहफट कहाये वाला कवनो वामपंथियो शाकिब सर के कब्बो ना टोकेला कि जवना मजहब के सबसे मूल्यवान वाक्ये (कलमा) नकारात्मकता से शुरू होत बाटे (ला = नहीं) ऊ कबो सकारात्मकता के कइसे समर्थन कर सकेला ! हमहूँ बड़–जेठ बूझि के ओतना लोग का बीच में अकसरहा चूपे रहल पसन करीलाँ। बाकिर एक दिन पता ना का मन में आइल कि हमार सबर के बाँध टूटि गइल आ हमरा मुँह से बेलगाम निकल गइल ––– 'सर ! क्षमा करिएगा मगर आप उन चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में नहीं समझते हैं ... मजहबे–इस्लाम कहता है कि परमात्मा के अलावा

कोई और पूजनीय नहीं और इसप्रकार वह खुदा और उसकी खुदाई को अलग–अलग करके देखता है ... मगर सनातन धर्म कहता है कि दुनिया में परमात्मा के अलावा और कुछ है ही नहीं ... शिव–तत्व ही जीव–तत्व तथा जीव–तत्व ही शिव–तत्व है ... सृष्टि में जो कुछ भी है उसमें अव्यक्त रुप में ईश्वर ही समाया हुआ है ... सर्जक और उसका सृजन इन्सेपरेबुल हैं ...और जब सबकुछ ईश्वरीय है ,तो सबकुछ पूजनीय भी है ... !'

ओह दिन हम देखनीं कि हमरा नियर दब्बू का मुँह से ई कूल्हि निकलत देखि के खाली शाकिबे सर के ना , सबके चेहरा के भाव बदलि गइल रहे । 'सर' के शायद ओह् घरी कवनो उपयुक्त जबाब ना सूझल होखी , लेहाजा आँखि तरेर के उहाँ का एकही वाक्य बोल पवलीं ––– 'शट अप, शशी ! एक मोमिन के सामने बैठकर ऐसी काफिराना बातें मत किया करो ! तुम्हारी बेवकूफियाँ तुम्हें ही मुबारक हों ... तौबा–तौबा !'

सन् सैंतालिस में जब धरम का नाँव पर , लाखन निरपराध लोगन के जान–माल–इज्जत के बलिदान लेके , भारतभूमि के बिभाजन आ पाकिस्तान के निर्माण भइल रहे त करोड़ो मुसलमान एहिजे रहे के फैसला कइलन। एह् सच्चाई के बूझला–समुझला का बादो कि अब भारत में हिन्दुअन का मुकबिला में उन्हन् लोग के संख्या अउर कम हो गइल बाटे ! ओह् घरी दुनिया के ईहे जनाइल कि इहँवाँ से पाकिस्तान ना जाये वाला लोग प्रगतिशील अउर समावेशी संस्कृती में बिसवास करे वाला मुसलमान होइहें ... ऊ लोग के बहुसंख्यक हिन्दुअन के सोच , रहन–सहन आ सांस्कृतिक बिरासत के लेके कवनो आपत्ति नइखे ... जइसे ई देस चली , ऊ लोग भी राजी–खुसी ओसहीं सबका साथे चले खातिर मानसिक रूप से तइयार बाटे ... ऊ लोग आइंदा से कवनो जिन्ना–इकबाल–सुहरावर्दी–मीर कासिम–तैमूर–बाबर–औरंगजेब जइसन अलगाववादी , साम्प्रदायिक आ कतली–लुटेरन से ना बल्कि आदिशंकराचार्य , नानक , कबीर , रैदास , शिवाजी , महाराणा, विवेकानन्द , गाँधी , अशफाकुल्लाह , आम्बेडकर जइसन लोगन से प्रेरित आ अनुप्राणित होखी ... आ ऊ लोग आगा चलि के खाली अपना कौम भा कौम से रिश्ता राखे वाली चीज का पक्षधरता में ना , मातृभूमि के एकता–अखंडता आ ओकरा साँस्कृतिक–विरासत के नुकसान पहुँचावे वाली हर दुष्प्रवृति के खिलाफ एकजुट होके आवाज उठइहन् ... बाकि का ई हो पावल?

हमहूँ एह् कटु सच्चाई के बिनम्रता से स्वीकार करत बानीं कि सनातनी हिन्दुअनों में कुछ कट्टर आ संकीर्ण मानसिकता वाला लोग बाड़न ! गद्दारो बाड़न य अइसन लोग जे छब्बीस जनवरी आ पनरह अगस्त के , भा पाकिस्तान के खिलाफ कवनो मैच के दौरान त थोरकी देर खातिर बड़का देशभक्त हो जाला बाकिर अगले दिन से फेरु रिश्वतखोरी , कमीशनखोरी , कामचोरी , मिलावटखोरी , कालाबाजारी , जाल–टाप , कामचोरी , व्यभिचार , कायदा–कानून के उलंघन आदि जइसन काम करके देश के कमजोर बनावे आ बदनाम करे के अभियान में जी–जान से जुटि जालन ! बेशक हर धरम–पंथ–समाज में अइसन धर्मांध लोग हमेसा से रहल बाड़न् जेकर आध्यात्मिकता से दूर–दूर तक संबंध ना होखेला। बाकिर फरक परसेंटेज आ कालखंड के रहल बाटे। हिन्दुवन के हेय दृष्टि से देखे वाला लोग आ हर बात मेंआर०एस०एस०, भा०ज०पा० , गोडसे के नाँव लेके चीखे–चिचियाये वाला स्वयंभू बुद्धिजीवी प्रगतिशील लोग एह् सवाल पर काहें शुतुरमुर्ग नियर बालू में मुँह लुकवावे लागेला कि आज बरिसन से लगभग पूरा दुनिया के जवन आतंकवाद के रक्तबीज तबाह करि रहल बाटे आ जेकरा चलते अबतक लाखन इन्सानन के जान जा चुकल बा , अरबों – खरबों के सम्पत्ति नुकसान हो चुकल बा , शको–शुबहा के एगो अभूतपूर्व माहौल बनि गइल बाटे , ओकरा पाछा सनातन धरम भा संघ–परिवार के लोगन के केतना हाथ बाटे ! बाकिर आजादी का बाद से हमनीं का देश में लगातार अइसने लोगन के महिमा मंडित कइल गइल , बढ़ावा दिहल गइल जे , एगो खास मुद्दा पर , हमेशा सेलेक्टिवली आपन प्रतिक्रिया दिहल आ 'खीरा–चोर' अउर 'हीरा–चोर' के बलाते एके बरोबर घोषित करे में माहिर रहल । अइसना किसिम के पूर्वाग्रही लोग जानबूझिके इतिहास के ओह् कूल्हि पन्नन से परहेज करे के आदत डालि लेबेला जहवाँ साफ–साफ शबदन में दर्ज बाटे कि धरती पर इस्लाम का अलावा अउर कवनो अइसन दोसर धरम भा पंथ नइखे जेकरा बारे में ई कहल जा सके कि ओकर अधिकांश अनुयायी –– मध्य काल से लेके आजु ले –– कमोबेश ओतने हिंसक , रुढ़िवादी ,भेदभाव करेवाला , स्त्री – विरोधी आ आधिपत्यवादी मानसिकता से ग्रसित रहि गइल बाड़न भा, जुग के अनुरूप बदले के तइयार नइखन ... ! का एह प्रगतिशीलता से समाज में समानता आ समदर्शिता के पालन पोसन भइल?

एह् लेख के लिखला के मकसद ई इयाद दिआवल बाटे कि हमनी के एकइसवीं सदी में जी रहल

बानीं जा ! अगर एतना पढला–लिखला, देखला–सुनला आ भुगतला का बादो हमनीं का अपनी कबिलाई–बर्बर संकीर्ण मानसिकता से अपना के मुक्त नइखीं जा कर पावत ,ते एह् से ना खलिसा इन्सानियत के बल्कि परमात्मो के अनादर हो रहल बाटे । वइसे जवना मनुष्य भा समुदाय में ईश्वर–अल्लाह–गाड के एह् वैविध्यपूर्ण दुनिया के सम्मान करे के समझ नइखे , ऊ कब्बो ओश सुप्रीम पावर के सम्मान ना कर पायी। एह् से हमनी सभे के भेंड़–बकरी के झुंड नियर आचरण कइल छोड़ के , मनसा–वाचा–कर्मणा आ देश सभ्य – विवेकशील मनुष्य लेखा आचरण करे के चाहीं । हमनी के कवनो धरम के अनुयायी होखीं जा , अपना मातृभूमि के एकता–अखंडता आ जन–सामान्य के भलाई हमनी खातिर सर्वोपरि होखे के चाहीं। हमनीं के अतीत केतनो दागदार होखे , हमनीं के वर्तमान साफ–सुथरा होखे के चाहीं । सबसे जरूरी ई बाटे कि हमनीं के एह् अति खतरनाक धारणा से कि 'सज्जी बुराई दोसरा में , हमहन में एकहू ना !' से शीघ्रातिशीघ्र निजात पावे के ईमानदारी से प्रयास करे के चाहीं । जब रिटायर्ड पोरफेसर शाकिब सर जइसन एजुकेटेड अउर वेल– क्वालिफाइडो लोग एह् देश में रहि के सनातन धरम के बहुदेववाद जइसन महान चिन्तन के मरम समझे के तइयार नइखन आ अइसन जीवन–पद्धति के कुफ्र ठहरावे में फकर महसूस कर रहल बाड़न , त दुनिया कइसे मानी कि इस्लाम शांती , प्रेम आ भाई–चारा के पैगाम देबे वाला , वैज्ञानिकता आ स्वस्थ चिंतन पर आधारित एगो समावेशी मजहब हउवे ! दुख ते एह् बात के बाटे कि हर चीज में राजनीतिक फैदा–नुकसान देखे वाला, आ जात–जमात के नाँव पर झुठहीं असुरक्षा–बोध से पीड़ित लोग अइसन जरुरी मुद्दन पर निरपेक्ष होके चिंतन करे के तइयारे नइखे । जहिए अइसन लोग गहराई में उतरि के , अपना पूर्वाग्रह – दुराग्रह से मुक्त होके सोचे खातिर तइयार हो जाई , तहिए ओह् लोग के पता चलि जाई कि दुनिया में जेतना प्रमुख धरम बाड़न स , ओह् में सनातन धरम सबले उत्तम आ कल्याणकारी बा ––– खाली अपने अनुयायियन खातिर ना , सकल सृष्टि खातिर , जड़–जीव–सूक्ष्म–स्थूल ––– सबका खातिर। एह् जीवन–पद्धति में सबसे बेड़ बात ई बाटे कि ई कुदरत के निराकार – अज्ञात – अलख 'सुप्रीम पावर' यानी परमात्मा के व्यक्त रुप मानि के ओकर सतत् संरक्षण आ सम्मान करे के संदेश देत आइल बाटे । सनातन संस्कृती शुरुए से जीव–जड़ , छोट–बड़ , दृश्य–अदृश्य , सुन्दर–असुन्दर के बिबिधता आ महत्ता सबीकार करे वाला जीवन–दर्शन से प्रेरित अउर अनुप्राणित रहल बाटे । ई सिखावले कि जेभी हमरा कामे आ रहल बा , भा कामे आ सकेला , ओह् तुच्छ से तुच्छ चीज का प्रति हमहन के अनुग्रहित होखे के चाहीं , ओकर संरक्षण करे के चाहीं। हिन्दुअन के 'काफिर' कहि–कहि के मजाक उड़ावे वाला दू–नमरी लोग (*Converted*) अगर बुद्धि–विवेक के इस्तेमाल करित ते जानि जाइत कि सनातनी हिन्दू एह् धारणा के समर्थक हउवे कि जेभी हमरा के यानी मनुष्य के कुछ देत बाटे भा देत आइल बा , हमरा नजर में प्रतीकात्मक रूप से ऊ 'देवता' भा 'देवी' बाटे ! चूँकि बिना ओके आदर दिहले , ओकर खियाल कइले कवनो चीज के संरक्षण–संवर्धन संभव नइखे, एही से हिन्दू लोग खातिर ,कालान्तर में, मनुष्य से लेके जानवर ले , जीव से लेके जड़ ले पूजनीय हो गइल ! सच्चा सनातनी हिन्दू आध्यामिक होखेला , धार्मिक– करमकाण्डी भलहीं ना होखे। ऊ दुनिया के जबरन अपना लेखा बनावे के , भा फुसिलाके–बहकाके–धमकाके दोसरा पर आपन विचारध ाारा थोपे के , दोसरा के जमीन हडपे के कब्बो प्रयास ना कइलसि ! सतही तौर पर ऊ भलहीं सगुण–ब्रह्म के उपासक भा अनेकेश्वरवादी जनात होखे बाकिर भितरी से ऊ निर्गुण–निराकार परमात्मा के जाने आ मानेला ! ऊ केतनो कम पढल–लिखल भा पिछड़ा होखे , ओकरा एह् बात के हमेसा अहसास रहेला कि अगर खुदा/भगवान के ईहे मंसा रहित कि एह् धरती पर खलिसा एकही मजहब के माने वाला , एके किसिम के लोग रहो , ते ऊ सबके अपने हाथे मुसलमान भा ईसाई भा हिन्दू बना देले रहितन् ... ई काम कवनो मौलाना , पण्डा ,पादरी भा सुल्तान , खलीफा , सम्राट के जिम्मे ना सँउपतन् ... ! हर समझदार , संवेदनशील इन्सान नियर सनातनी हिन्दू एह् बात के हर छन इयाद रखेला कि परमात्मा सर्वशक्तिमान , सर्वव्याप्त बाटे ... ऊ एतना असमर्थ नइखे कि आपन मकसद पूरा करे खातिर ओकरा के बेर–बेर साढ़े तीन हाथ के तलवारधारी , रैफलधारी ,बमधारी भा धरमग्रंथधारी क्रूर–तंगखयाल–जाहिल इनसानन् के सहारा लेबे के पड़े !

(एह् लेख के उद्देश्य –– प्रत्यक्ष भा परोक्ष रूप से –– कवनो धार्मिक समुदाय ,भा व्यक्ति के आस्था के अपमान कइल नइखे ।)

– कुँवर सिंह इन्टर कॉलेज, बलिया

बतरस आ पाती

✍ अनिल कुमार राय 'आंजनेय'

भोजपुरी अइसन भाषा ह, जवना पर केहू गुमान करि सकेला। एह भाषा के जेही पढ़ल, जेही सुनल, जेही गुनल ऊहे अगराइल, ऊहे धधाइल, ऊहे सराहल, ऊहे सिहाइल। एकरा मरम के जेही बुझल ओही के भरम भहराइल। एकरा ओरि जेही एगो नजर डालल ओही के ई भाखल भाषा भासल, ओकरा आँखि का आगा के अन्हरिया बिलाइल आ टह–टह अँजोरिया लउके लागल। एह भाषा में अइसन मिसरी क मिठास आ सहद का हद दर्जा क सवाद सहेजल बा जे एह भाषा का चितचोर मोहन का बात क लुनाई लूटे खातिर कवनो भाषा क गोपी ओही तरे दिवाना रहिहन आ उनुका ऊहे उपाइ नाधे–नवाधे के परी जवन बिहारी कवि बखनले बाड़न–

"बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहन हँसै दैन कहै नटि जाय।।"

एह भाषा में बाति ना होले, बतरस होला। बाति भा बात आ बतरस में का भेद ह से हम फरिआइ के, खुलासा कइके कहि रहल बानी। बाति होले नीसठ आ बतरस होला रसगर आ मनगर। ऊखि का ऊपर के बोकला बोकड़ि के, नीकहन क छील–छाल के एकग्गर कइला पर ओह चिमिरिख, चीमर आ छेहर छोइला का तर के तर गुद्दी उजागर हो जाले। छोइला छुरिन छीलि के हटाईं भा दँतवसि के। दाँतन ढरमेच के मुँह का समाई भर एक कट्टा काटि के ऊखि का गुद्दी के जवन हिस्सा मुँहें चूसे खातिर लिहल जाला, ऊ बड़ा रसगर, मनगर आ चभक्का होला। ऊखि के ईहे रसगर, मनगर आ चभक्का हिस्सा कहाला गुल्ला। गुल्ला रस ले गुल–गुल रहेला, एही ले कहाला गुल्ला। एह रसचमोर गुल्ला क रस जब निकनी क नीचोरि आ चूसि लिहल जाला त बकिका हिस्सा जवन मुँह में बाँचेला ऊ कहाला खोइया। गुल्ला जब रस खो देला त बाँचि जाला खोइया। जे रस खो दिही, बेरस हो जाई ऊ खोइया ना कहाई, त अवरी का कहाई? ई खोइया बड़ा निसठ होला, निकनी के संठ। ई पेट क दहकत–लहकत कुंड (जठरानल) में ना झोंकाला। एह कुंड में त रस स्वाहा कइल जाला आ चूल्हा क आगि, कउड़ भा भऊर के दवँक में झोंकाला खोइया। रसना रस ले ले। सिट्ठी ना। (ए रसना के खाली चाम मत बुझीं, ईहे न पेट का आगि क लहकत ललकी लवरि ह। एके लब–लब करे वाली खाली लबरा मत जानी, बड़ी जबरा ह। ई लवर क कवर लीलसि, सेकर हिसाब जो कहल बने, त करीं।) एही ले पुरुखा–पुरनियन क, बुद्धिमान लोगन क ईहे सीख–सलाह रहेला जे बाति तवलहीं करे आ गुल्ला तबलहीं चूसे जबले ओमे रस रहे। गोइयाँ आ चतुर सुजान ऊहे कहाला जे बाति में रस ना रहि गइला पर बन कइ दे आ गुल्ला चूसि के खोइया उगिल दे। बतरस ह गुल्ला आ बाति ह खोइया।

साँच कहीं त, बाति क बतंगड़ आ बतकूचन के बखेड़ा जखेड़ा लगावल हमरा रचिको ना सोहाला। एहसे बाति आ बतरस क एगो–दूगो, बस गिनले–गुथल तीनि–चार गो अवरी परतोख देइ के हम एह बतकही के 'इति रेवा खंडे' कइ रहल बानीं। बतक्कड़ई से न त कवनो बाति बनेले आ न त कुछ सिरइबे करेला। रउरो सभे सुनलहीं बानीं जे "बातहि बात करख बढ़ि आवा।" बे बाति के बाति कइला से भला बाति बनिए कहाँ ले सकेले? बाता–बाती में हूँ–टूँ होला। जहाँ बोल–ठोल भइल कि ठोठा धरे के नउबत आइल। दू बाति भइल कि दू हाथ होत देरी ना लागे। बाति–बाति में बाति बढ़ेले। बाति बढ़वले बाति बढ़ेले आ बाति ओरिअवले बाति ओरिआले। जे बाति ध ले ला ऊ बरोबर बेघाता करे का घात में रहेला। बतिधर भइल त नीमन ह बाकिर बाति धइल नीक ना ह। बाति के बतास बातूनी के कबो कल न लेबे दे, ऊ निकनी के बाति जाला। सचहूँ बाति अनरस आ अमरख पैदा करेले। आ बतरस अमरस का अमृत ले भरल–पूरल रहेला, जेसे एकरा खातिर मन लुलुआत–छिछिआत रहेला। बतरस सरल रहेला एसे हमेसा सरस परेला। बतरस के गुन केतना ले बखानीं, साँख नइखे होत। अवरी सुनीं, बात का ऊ ई ह कि बतरस ह रुई आ बाति ह बनउर। चिन्तन का चरखा पर चढ़ा के बुद्धिमान सुजान लोग विचार का ध ाागा के ओहिआवेलन आ ओजही बतरस का रुई के काटल बिचार का धागा के करम का करघा पर सुख आ सील का ताना–बाना से बीनल मनभावन पीतम्भर पंडित लोग पहिरेलन।

बाति में रस लेत बतरस के हाल रउरा सुनली–गुनलीं। अब पाती क हाल सुनी। एह भाषा क पाती हियरा का भाषा से लिखाले। एही से पाती पावे वाला छोहन छाती से पाती लगा लेलन। अइसने प्रेम पाती लिहले–दिहले ऊधो एक बेर मथुरा ले गोकुला जुमलन। मनभावन मोहन क मीत, सनेहिया के सनेसिहाव, मनरुचा ऊधो के अचके में आइल सुनि के गोपी लोन बेहाल हो उठल। आपन सुध बुध बिसारि लोग दीहल। जे जहें से ई समाचार सुनल से तहे से तड़ा–तड़ी धधाइल–अगराइल–अरबराइल अगहुँड दउरल। नन बाबा का दुअरा ऊधो जी का चहुँपते पाती पढ़े खातिर झुमेल लागि गइल। बीच में पाती लिहले अकचकाइल उजबुक लेखा सुधवा ऊधो जी आ उनुका चारू ओरि प्रेम–दिवानी गोपी लोगनि क हुमेल। धीर ना धरात रहे, बेकली बढ़त जात रहे। पाती के छाती से लगावे बदे लोग पंजा पर उचके लागल। फिरु का भइल? रत्नाकर जी गवाह बानीं–

"हककौ लिख्यौ है कहाँ? हमको लिख्यौ है कहाँ?
हमकौ लिख्यौ है कहाँ? कहन सबै लगीं।"

सूरदासजी क साखी बा कि अपना सामसुनर क अइसने प्रेम पाती पाके मन के गहिरन गोपिन का आरु आ गइल आ ओह लोगनि क डबडबाइल आँखि क लोर लरकि परल। आँखि क मोती ढरकि गइल। थम्हाव ना लीहलस, सम्हरले सम्हरल ना। जतन जवाल हो गइल। बिना सावने क बदरी बरसे लागल। फिरु त "निरखत अक स्याम सुन्दर के हवै गइ स्याम स्याम की पाती!"

कतहूँ त अन्हरिया में पाती बाती आ सँघाती के कार करेले अवरी तकहूँ छाती फारेले। रावन क पठवनिया सुकनासिक लखन लाल जी क दीहल अइसने छतिफार पाती रावन का हाथे थम्हवलस। लखन लालजी क ई पाती का रहे? ई हनुमान जी का पोंछ का लूक क लाफ फेंकत लवर रहे, जेसे रावन क छाती जरे लागल आ पाती बाँचि त घललस बाकी बाँचे के ओके कवनो दवर ना भेंटाइल। कतो–कतो चिट्ठियो भट्ठी मतिन दँवकि उठेले।

छाती फारे वाली पाती अनदेखाइयो मेंहें लिखाले। एके लखनलाल नियर बीरे ना लिखेलन। एके लिखेलन अनभल देखे वाला मुरुख, गँवार, खल आ नीकहन के सठ। बहुता त अइसन चिट्ठी भर .... नयर सोझा–सोझी आ डिठार ना, अलोते लिखाले। बे ठर–ठिकाना के। अवर परोसी सराये ले असरा। जेकरा सराये ले आहि अलम रहि जाला, ओकर रोआँ जो टूटल त ओकरा से अइसने कुकरम होई। हम त सपनो में अपना गरकट मुद्दइयो के छाती फारे वाली अइसन घाती पाती ना दीहल चाहीलाँ। अइसन राढ़ बेसहल हमरा ना सोहाला। हारल–थाकल आदिमी एही के मरदुम्मी बुझेलन। बाकी डूबि के पानी पिअल कवनो पद के बात ना ह। हमरा समुझे से बज्जर चलावे वाला नीमन। "बज बचन जेहि सरा पिआरा" – उनहूँ के राम–राम। बाकिर त छानी फारेवाली, ढाठी देबे वाली एह घाती पाती लिखे का घात में रहे वाला पाँजल पाजी, अनदेखना, मुरुख, गँवार आ सठ के हम सइ हाथ फरकवें ले सलाम करीलाँ। केहूँ अनुभवी के राय बा जे–

"सात हाथ हाथी से डरिहऽ चउदह हाथ मतवाला।

सइ हाथ ओकरा से डरिह, जेकर नाँव सुरतवाला।।"

बाकिी हमरा से जो पूछल जाव त हम ई हे कहब जे सुरतवलो के ढेर सजग आ चिहुँकल पत उतार लेबे वाला पाती का लिखनिहारन से रहे के चाहीं। एह लोग ले हम गन–गन काँपीलाँ। हम आठो घरी ई हे बिनइलाँ जे जीव जरावे वाली पाती पढ़े भा लिखे के रामजी लगन मत करसु।

हमरा समुझ से त पाती ऊ ह जवन पत राखे, अन्हरिया में अँजोरिया करे। पाती थाती हऽ, छाती ले लगा के सेंके, जतन से परान का पाछे राखे आ गरब–गुमान करे के चीजु ह। पाती ऊ बाती ह जवन बिसभोर परल डहर फेनु से धरा दे। एके पावते दूर देस में डहरल पिया, बिदेसे विलमल बेदरदी बलमा का हिया में प्रेम पलुहे लागेला। आ सँवरिया क प्रेम पगल पाती का पूनम क दरस पाके परस खातिर गोरिया क हिरोहत हियरा हिलोर उठेला। अपना सुगना क सनेह से सरबोर सनेस पाके सुग्गी निहाल हो उठेली।

हरिनी आपन चितचोर चकित चितवन चारू ओरि डाल रहल बाड़ी। चितचोर के चितवत, पिया क पंथ हेरत–हेरत अपनहीं हेरा गइली, बेदरदी बलमा नेहा लगाके, भरोसा देके अबहीं ले ना आइल। बिरह पिया का सुधि क मथानी से मन मथ रहल बा। पीर क लैनू गहिरात जात बा। आँखि में आँखि लागल बा, आँखि लागो त कइसे लागो? 'पिया क पंथ निहारत मोरी सगरी रैन सिरानी हो।' एनी ले त पाती लिखाइल, खूबे लिखाइल। एतना लिखाइल कि "सँदेसन मधुबन कूप भरे।" बाकिर ओने से? ओने के त ई हाल बा जे 'अपनो नहि भेजत नँद नन्दन हमरो फेरि धरे।'

चोली सूखे के नाँव नइखे लेत, आँखि में सावन–भादो छवले बा। छाती ले पनारा बहि रहल बा। राति कटले कटात नइखे, दिन ओरात नइखे। जिनिगी जवाल हो गइल। डहकि उठत बाड़ी 'आहि हो बालम?' .... करेजा करकि गइल। तले से एतने में आ गइल पाती। छाती जुड़ाइल। बालम बिना बेहाल प्रेम क पिआसल हरिनी अपना पिया क सनेस पाके गह–गहा उठली। "तनी अउरी दउर हिरनी पा जइबू किनारा हो।" रचिकी धीर धरे के साजन कहत बा। धनियाँ का धीर ध् ारहीं के परी। जबले साँस तबले आस। साँस क पहरुआ पाती बनि गइल, साँस जाव त जाव कवना राहे?

पापी पपीहरा जब 'पिउ–पिउ' क रट लगा के करेजा किकोरे लागेला, अमवा क बगिया में बइठलि कोइलरि 'कुहुकि–कुहूकि' हियरा में हूक जगावे लागेली त बिरहा क आगि में विरहिन के देहिं दहकि उठेले, जीए के आस अरुझा जाला। एतने में आ जाले हिया के हुलसावे वाली हरि जी क पाती। अँचरा पसारि के पिया क प्रेम पाती धनि ले लेली। छाती से पाती लगा के जियरा जुड़वावे लागेली। सजनी अपना साजन क पाती परस–परस, निहार–निहार निहाल हो उठेली। मन के तीहा देली, "चढ़ते सावन सरसावन मनभावन अइहन, फिरु त ई मुरुझात सनेह क लता लहसे लागी, पलुहत–फफनत देरी ना लागी।"

ई बेटी हई। हाथे पाती लेले बाड़ी, बँचात नइखे। बँचाव त कइसे बँचाव? दूनों आँखि लोर ले भरभरा गइल बा, जइसे होत भिनुसहरा कमल–कोष में बटुरा गइल होखे। बाबा क बगिया इयादि परति बिया, मन भींगि रहल बा। बाबा क मीठ बोल, माई क मोह, भइया क छोह, भउजी क ढीठ दुलार–निनार, सखी–सहेलर क नोना–चोन्हा, ऊ संग–साथ, सहजोर अँमुदउवल–गुदरउवल अवरी सीखवल सुगना क "मुन्नी–मुन्नी" रट, अपना बछिया के दूध्या–पियाअवत–चाटत धवरी गइया, तुलसी माई क चउरा, सँझवाती, 'आखो–माखो दिअवा चाखो' केतना इयादि करीं? केतना भुलवाईं? ई हमरा मन के नइखे, बूतो के नइखे। पीर पोरे–पोरे, गाँसे–गाँसे समा गइल बा।

एइसने त पाती लिखाले–पढ़ाले कुसल–छेम क एह पाती खातिर गंगा मइया के पियरी चढ़ावे आ तनाव करे के मनौती कइल जाले। पियार क ई पियरी, साध क ई चढ़ावा आ भाव–अरमान क ई तनाव बड़ा अनमोल होला। एही पाती खातिर कउवा मामा ले उचरे बदे मिनती कइल जाले। कउवा मामा ले उचरे बदे निहोरा आ मनावन करत खान ई बचन दिआला कि जो बालम क, बाबा क, भइया क, भउजी क, आँखि के जोति प्रान प्रिय लाल क पाती जो आजु मिलि जाई त सोने से तोहार चोंच मढ़ाइब, सोने के कटोरी में तोहें दूध–भात खियाइब। केतने बेर कउवा क चोंच भावना क सोना से मढ़ाइल आ केतने बेर भावना का सोने क कटोरी में उनुके मन भर प्रेम क दूध आ बिसवास क भात खिआवल गइल। एकर कवनो लेखा–जोखा नइखे। ई बात ना रहित त कउवा काहें पतिअइतन, बेर–बेर काहें उचरतन? हम त ईहे कहबि जे कउवा भावना, प्रेम अवरी बिसवास क के आदर–मान करेलन। प्रीति के रीति ऊ जानेलन। आ रउरा? डूबि मुई ना। ●●

– कोरन्टाडीह, उजियार, बलिया

चेयर–चिपकेरिया

डॉ0 मुक्तेश्वर तिवारी
'बेसुध' 'चतुरी चाचा'

नाँव सुनिके चिहुकीं, चिहाईं जनि। मलेरिया, फाइलेरिया, हिस्टीरिया, डायरिया वगैरह बेमारिये नीअर 'चेयर–चिपकेरियो' एगो बेमारी हवे जेवन आजु काल्हि हमरा देश में बड़ा जोर–शोर से फइललि बाटे। अउरी बेमारी आ एह बेमारी में अन्तर एतने बा कि अउरी कुल्हि बेमारी के असर देहि पर परेला आ देहिं दूबर लउके लागेले। बाकिर ई दिमागी बेमारी हवे। एमें देहि भलहीं रेंगरात रही बाकिर मन बराबर छत्तीस कोठा धउरत रहेला। एगो अन्तर अउरी ई बा कि अउरी बेमारी में बेमरिहा खटिया धइ लेला बाकिर 'चेयर–चिपकेरिया' के रोगी 'चेयर' यानी कुरुसी धइ लेला। आ ऊहो अइसन कि ऊ ओके छोड़े के नांव ना लेला। ऊ बराबर 'चेयर' से चिपकल रहल चाहेला। कोशिस ओकर ईहे रहेला कि अगर ओके कहीं से नट आ बल्टू मिलि जा त ऊ पेंचकस से अपना के कुरुसी में अइसन कसि के फिट कइ देउ कि ओके कुरुसी से हटावे के सवाले ना उठे। एने ओने ऊ भरिसक सहरेसो खोजे के उपाइ लगावेला कि ऊ अपना के 'चेयर' से अइसन चिपकाइ देउ कि 'चेयर'भलहीं ओकरा संगे संगे रसातल के चलि जाउ बाकिर ऊ कबहूं कुरसी से अलगा जनि होखे। 'चेयर' से चिपकले खातिर एह बेमारी के नांव 'चेयर–चिपकेरिया' पड़ल बाटे।

'चेयर–चिपकेरिया' के रोगी ना फेंकरेला, ना घिघिआला, ना चिचिआला, ना डेंकरेला। ना ऊ कबे कहंरेला, ना बाप माई करेला। ऊ बराबर सिंह का नीअर दहाड़त रहेला ताकि दोसरा का कगरी आवे के फरह ना परो। दोसरी बेमारी में रोगी चाहे ला संगी संहाती लोग कगरी आके इची लोर पोंछसु, ताकि किछु ढाढ़स मिलो, बाकिर एह रोग में रोगी ईहे चाहेला कि एगो चिरइयो के पूत हमरी कगरी जनि आवो। ओकर सूतत जागत बस ईहे फिकिरि रहेला कि केहू आके हमार कुरुसिया जनि हथवसि लेउ। निगिचा पास अगर केहू सगबगाये के कोशिस करेला त ऊ ओके अइसन झटहेरि देला कि ऊ ओहीजा चारू खाने चित्त होके पटाइ जाला। फेरु कबों मूंड़ी उठावे के हिम्मति ना करेला। आ एकरा बाद त ऊ टांगि पसारि के चैन के वंशी बजावेला।

अब सवाल ई उठत बा कि ई रोग केवना केवना जगहा पर हो सकेला? त महाराज, रउरा सभे नोट कर लेईं– 'चेयर–चिपकेरिया' के रोग अइसने स्थान आ संस्थन में फइलेला जहाँ किछु माल टाल बा। 'ऊपर–झापर' झटके के गुंजाइश बाटे। बन्हल बन्हावल तनखाह आ भत्ता के जानकारी त सभका रहेला। बसिया भात में खुदा मियां के केवन चिरौरी बा? ऊ तक मिलहीं के बा। असली ललक त 'ऊपर झापर' से बा। जेवन 'बिलेक बिहारी जी' का किरिपा से मिले के बा। असल में हवे त ई 'आकाश वृत्ति' जेवना के बनियादम का भाषा में– 'नम्बर दू' के आमदनी कहल जाला। साँच पूछी तक ईहे 'ब्लैकानन्द' हवे। एइजा बूड़ि के पानी पिये के

होला। अइसन चोरी कि खुदो मियां ना जानसु। बाकिर सजग रहे के परेला। न त टेंगरा अटंकि गइला पर गाता गमि ना चलेला। बस मोटे में ईहे जानि लीं कि जहवाँ 'ब्लैकानन्द' होला ओही जा 'ब्लैकानन्दी' लोगन का 'चेयर–चिपकेरिया' के बेमारी होला। एमें दुइ राय नइखे।

एह बेमारी के शुरूआत 'चुनावे' से होले। एही से एकर रोगी 'चुनाव' खातिर बड़ा सजग रहेलन। ऊ बराबर 'चुनाव' के दबाइ के राखल चाहेलन। ऊ कबों ई ना चाहेलन कि 'चुनाव' सामने आवे पावो। अगर केवनों तरह 'चुनाव' कपारे परियो जाला त ऊ लोग केहू तरे हिस पट, हुश पट–कन्टी–कइ के आपन गोटी बइठा लेलन आ कुरुसी हथिया लेलन। चुनाव देखते एह लोगन का आँखी का आगा अन्हरिया छाइ जाले। नीनि हराम हो जाले। दुआरी दुआरी दांत चिआरत फिरेलन। लोगन के गोड़धरिया करेलन। नाकि रगरेलन, बाकिर 'वोटर' अइसन कठकरेजी होलन कि पसीजे के नाँव ना लेलन। ऊ तक उड़ती चिरई का हरदी लगावत चलेलन। 'चेयर–चिपकेरिया' का एही दौरा में 'सेल्फ प्रेजेरियो' के दौरा हो जाला आ रोगी अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बने लागेला। आपन बड़ाई करत देखि के लोग दिल्लगी करे लागेला। ओ लोग का का बुझाये के बा कि बेचारा रोग के मारल बा। आपन लाज शरम के ताखा पर धई के चारि गो चमचन के पाछा पाछा ले ले अपना बड़ाई के नारा लगवावत फिरत बा। अपना तारीफ के पुल बन्हवावत फिरत बा। बेचारा थगली के मुंह खोलि के पइसा पानी नीअर बहावता। वोट खातिर नोट बरिसावता। कतो अनाज, कतों कपड़ा, कतों कमरा बँटवावता। आ दू दिन खातिर दानी कर्ण के मात करता। कुल्ही का पाछा ओकर ई हे उद्देश्य रहेला कि चाहे लाख बेइज्जती भलही होखो बाकिर थेथर बनि के कुरुसी कइसहूँ हथिआइबि। कुरुसी बहके ना देइबि।

'चेयर–चिपकेरिया' के ई रोग राज–रोग हवे। हामां सूमां का ई रोग ना होला। ई रोग ओही का होला जे 'चेयर' पर बइठेला। आ कुरुसिया अइसन जेवना का हेठा अधिकार के गद्दा होला जेवना में रकमि के रूई भरल होले। अइसना कुरुसी पर बइठते ऊ कान से अइसन बहिर हो जाला कि ओके दोसरा के आवाज सुनइबे ना करेले। आंखि के जोति अइसन मद्धिम हो जाले कि दोसरा के दुख दर्द लउकबे ना करे। ऊ टाँगि से लँगड़ा आ जबान से तगड़ हो जाला। बिना सवारी के ऊ चली ना सके। ओकर गोड़ भुइयां परबे ना करे। बाकिर भाषन त अइसन भीषण देला कि सुने वाला का कान के परदा उधियाइ जाला। कुरुसी पवते ऊ अपना सात पुहुत के अजाची बना देवे का फिकिर में परि जाला। एकरा खातिर भाई–भतीजावाद, जाति–जवारवाद वगैरह अनेकन हथकण्डा अपनावेला। ऊ ईहे बनाबर सोचेला कि ओकरा 'चेयर' का निगिचा जेतने ओकर सगा संबंधी रहिहन ओतने ओकर चेयर अहथिर रही। बाकिर 'चेयर छीनू' लोग ओकरो से चल्हांक होलन। ए मियां एढ़ा त हम तोहरो ले डेढ़ा। रोगी डाढ़ि डाढ़ि चलेला त ई लोग पात पात चलेला। ई लोग 'चेयर' में समस्यन का केवाछु के अइसन रोंई छिरिक देलन कि बेचारा खजुहट का मारे ना त चैन से कुरुसी पर बइठिये सकेला और ना त अपना मन में ओके छोड़िये सकेला। भइ गति सांप छुछुंदर केरी–सेहे हालि होकर हो जाला।

ओइसे त ई रोग बहुत पुरान हवे। महाभारत काल में 'दुर्योधन' का ई रोग भइल रहे जेवना का इलाज खातिर 'महाभारत' के लड़ाई लड़े के परल। रामायण काल में 'कैकेयी' का एह रोग के शुरूआत जइसहीं भइल, भरतजी ननिअउरा से पहुँच के दवा बिरो कइ के ठीक कइ दिहलन। एसे ओकर असर घरे तक रहि गइल। देवतन के राजा इन्द्र का 'चेयर–चिपकेरिया' के बहुत पुराना रोग हवे। एही से ऊ बड़ा सजग रहेलन। बलि जब जग्गि कइ के इची मुंड़ी उठावल चहलन त इन्द्र भगवान कीहें तुरंते गोडे पर गिर परलन आ भगवान का बलि के ले जाके पातालपुरी में मीसा में बन्द करे के परल। राजदरबारन में ई रोग ढेर लउकत बा। औरंगजेब 'चेयर–चिपकेरिये' का दौरा में शाहजहां के जेहलि में बन्द कइ दिहलसि। आजु काल्हि आजादी मिलला का बाद 'चेयर–चिपकेरिया' के रोग किछु ढेर लउकत बा। 'चेयर' खातिर जेवन काटा काटी होखति बा ई कुल्ही 'चेयर–चिपकेरिये' के लक्षण हवे। 'चेयर–चिपकेरिया' के दौरा से देश में अनेकन राजनीतिक पार्टी बनि गइल बाड़ी स। 'दलबदलेरिया' के मरीज दलबदलू लोगन पर 'चेयर–चिपकेरिया' के असर हवे।

'चेयर–चिपकेरिया' का रोगी खातिर 'पचपन साल आ रिटायर होखे के केवनों सवाल नइखे। एहजा त–सट्ठा तब पट्ठा–मानल जाला। भलहीं

शरीर जर्जर हो गइल बा, चले फिरे के गँवे नइखे। तबों 'चेयर' छोड़े के मन नइखे। जबले साँस तबले आस–तेवने हालि बा। ऊहो कहाव का बा कि हम अपना खातिर ना, देश खातिर, समाज खातिर त्याग करत बानीं। हमार भारत त ऊ देश हवे जहां पचास बरिस का बाद राजा लोग आपन राज पाट युवराजन के दे के वानप्रस्थ आश्रम में चलि जात रहलन हां। ओह लोगन का 'चेयर–चिपकेरिया' के बेमारी ना होखति रहलि हवे। बाकिर आजु हालति ई बा कि शरीर जर्जर हो गइल बा, ना आँखि से लउकत बा ना कान से सुनाता बाकिर 'चेयर' से चिपकल बाड़न। ओके छोड़ल नइखन चाहत।

ई रोग खाली हमरे देश में नइखे। विदेशो में एकर बड़ा जोर बा। अमेरिका के पछिला राष्ट्रपति निक्सन 'चेयर–चिपकेरिये' का दौरा में 'वाटरगेट' के जइसन काण्ड करववले रहलन आ बार बार पूछला नकरि जासु। बाकिर ओइजा के नेता एक से एक पेहम रहलन। ओरी तर के भूत सात पुहुत के नांव जानेला। चमइनी से भला कतों पेट छीपी। बाद में कुल्ही बाति पिआजु का बोकला नीयर अलगा–अलगा छितिराइ गइल आ उनुका कुसरी छोड़ि के भागे के परल। एह माने में हमार देश अभागा बाटे। एइजा 'चेयर–चिपकेरिया' के रोगी त बाड़न बाकिर इलाज के बढ़िया इन्तजाम नइखे। सभे हेठा से ऊपर ले जहाँ देखीं सभे रोगिये रोगी बा। दवा के केकर करो। ऊपरा चढ़ि के देखा त सभे एके लेखा।

खैर रोग के जानकारी त हमरा कराई देवे के बा। 'चेयर–चिपकेरियन कीटाणु' दू तरह के होलन। 'प्लस' आ 'माइनस'। जेकरा देहि में 'प्लस' 'चेयर–चिपकेरियन' कीटाणु होलन ऊ बराबर 'चेयर' से चिपकल रहेला आ ओके कबो छोड़ल ना चाहेला। जेकरा में 'माइनस चेयर चिपकेरियन' कीटाणु होलन ऊ 'चेयर' पर बराबर 'चपेट' कइल चाहेला। एकरा खातिर ऊ अपना एड़ी के पसेना चोटी ले ले जाला। नारा लगावेला, हड़ताल करावेला, अनशन करेला, आन्दोलन करावे ला। देवराज इन्द्र में 'प्लस चेयर चिपकेरियन' कीटाणु रहलन स। एसे ऊ कबो 'चेयर' ना छोड़सु। एही खातिर लोग 'माइनस चेयर–चिपकेरियन' कीटाणु वाला बलि के उकसावल। ऊ बेचारा पानी का नीअर पइसा बहवाइ के निनानबे गो जग्य करवलसि। प्लस आ माइनस कीटाणु में लड़ाई भइल आ प्लस चेयर–चिपकेरियन कीटाणु जीति गइलन स। इन्द्र अपना गद्दी पर बरकरार हो गइलन।

अउरी रोगन में रोग के असर खाली रोगी का देहिये पर होला बाकिर 'चेयर–चिपकेरिया' के असर रोगी का देहि पर त रहबे करेला, साथे साथे देश आ समाजो पर एकर कम असर ना पड़ेला। जेवना संस्था भा महकमा का मालिक में 'चेयर–चिपकेरिया' के असर हो जाई ऊ संस्था आ महकमा भ्रष्टाचार के अड्डा हो जाला। सभे अपना मन के हो जाला। केहू तीन घाट त केहू मीर घाट रहेला। केहू केहू से सांस तक ना लेला। सभका चेयर से चिपकल रहे के रहेला। मतलब खातिर त गदहा के 'बाबू' कहल जाला। ई त सब आदमी के संतान ठहरल।

अब एह रोग से बचे के उपाइ सुनीं। 'चेयर–चिपकेरिया' से बचे खातिर 'ब्लैक बिहारी' जी का मंदिर से फइलवें रहे के चाहीं। 'ऊपर झापर' के आसरा ना करे के चाहीं। नाहीं त रोग का हो गइला पर एकर इलाज बड़ा कठिन हो जाला। जल्दी काबू में आवे वाला ई रोग ना हवे। खाली 'नो कान्फिडेन्सलीने' (अविश्वास) एगो अइसन सुई बा जेवना के दे दिहला पर रोग किछु हद्द तक दबावल जा सकेला। ना त एकर इलाज ना एलोपैथी में बा ना होमियोपैथी में ना आयुर्वेदि में ना यूनानी में। 'ढेलोपैथी' में 'घघेलियावलीन' भा 'गरदनियावलीन' दू गो टेबुलेट जरूर निकसलि बाड़ी स। दू नो दू कम्पनी के तेयारी हवी स ओइसे असर दूनों के एक हीं तरह होला। इस्तेमाल के तरीका अलगा अलगा बा। 'घघेलियावलीन' आगा हाथ दे के दिहल जाला एमें कुरुसियों के टूटे के डर रहेला। बाकिर 'गरदनियावलीन' में हाथ पाछा गरदन पर रहेला। एसे कुरसी पर खतरा ना रहेला। मोका मोका से दूनों 'टेबुलेट' के इस्तेमाल कइल जा सकेला।

हमरा देश में 95 फीसदी लोगन का ई रोग हो गइल बा। एतना विस्तार से हमरा बतलवला के मतलब ईहे बा कि सब आत्मचिन्तन करो आ देखो कि ओकरा में त 'चेयर–चिपकेरिया' के रोग नइखे नू भइल। अगर भइल होखे त तुरन्ते ओकर इलाज करावे के चाहीं। एमें राउर भला बा, देश के भला बा, समाज के भला बा। बेकारी एसे मिटी, भ्रष्टाचार मिटी, भाई भतीजावाद के अन्त होई आ बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम लागू करे में सहूलियत होई। ●●

अगस्त के महीना भइल बड़ा सोर

श्री सत्यवादी छपरहिया

'अगस्त' संस्कृत 'अगस्त्य' आ अँगरेजी 'औगस्ट' के भोजपुरी रूप हवे। एह शब्द से कई एक गो माने–मतलब निकलेला। पौराणिक युग में अगस्त नाँव के एगो लमहर ज्ञानी–ध्यानी ऋषि भइल रहले। एक बेर ऊ किरोध में आके पूरा समुन्दरे सोख गइलन आ जब ओमें के जिआ–जन्त दुख से अललाये–बिललाये लगले सन तब फेर उगिल देहले। पंचवटी जाए का पहिले सीता आ लछुमन का साथे रामजी इनके आश्रम में टिकल रहीं। एगो जोन्हीं के भी नाँव अगस्त ह, जवना के भादो का अँजोरिया पाख में उदय होला। अगस्त नाँव के एगो गांछी होखेला आ एकर झूरी लोग बड़ा सवख से खाले। खास कके, गोधन का दिन अगस्त का फूल के बजका खइला के बड़ा महातिम मानल जाला। चउथा अगस्त के माने एगो महीना ह, जवन आम तौर से सावन–भादो का बीच में पड़ेला। सावनी पूजा, नाग–पंचमी, रक्षा–बंधन, पनढकउआ, बहुरा आ जन्माष्टमी अइसन परब–तेवहार एही अगस्त में कइल जाला।

अँगरेजी अगस्त के दीगर–दीगर कोशकार अपना–अपना ढंग से माने बतवले बाड़न। वेब्सटर युनिसर्वल डिक्शनरी में एकर माने 'कन्सेक्रेटेड', 'वेनेरेबुल' आ 'मैजेस्टिक' देहल बड़ु ए। चेम्बर्स डिक्शनरी में 'बेनेरेबुल', 'इम्पोजिंग', 'सबलाइम' आ 'मैजेस्टिक' बतावल बा। औक्सफोर्ड डिक्शनरी में अगस्त के माने विलियम अपना शब्दकोश में एह शब्द के मतलब 'प्रतापवान', 'अत्युत्कृष्ट', 'महामहिम', 'अतिमहान' आ 'राज्ययोग्य' बतवले बाड़न। महान शब्द–शास्त्र आ कोशकार डा0 रघुवीर का अनुसार एकर माने हवे 'ओजस्वी' आ 'गम्भीर'। राँची सेंट जेवियर्स कालेज के हिंदी विभागाध्यक्ष आ कोशकार फादर कामिल वुल्के अपना शब्दकोश में अगस्त के माने 'भव्य', 'प्रतापी', 'महान' आ 'सम्भाव्य' लिखले बाड़न। अइसहीं डा0 हरदेव बाहरी का वृहत हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोश में एकर माने 'ऐश्वर्यपूर्ण', 'प्रभावपूर्ण', 'गरिमायुक्त', 'महिमान्वित', 'प्रतापी', 'श्रद्धास्पद', 'सम्माननीय', 'नृपोचित' आ 'राजस्वी' बतावल बा।

अगस्त का महीना में प्रकृति छटा बड़ा मनसायन होखेला। धरती का हरियर मलद्दच पर रंग–बिरंग के कसीदा देखते बनेला। गरजत बादर, चमकत बिजुली आ झमरत पानी देख के जियरा जुड़ा जाला। झेंगुर क झनकार, ढायुस के ढेंढों–ढेंढों आ मछरियन के छिप–छुप बड़ा निम्मन लागेला। रात में बअदुरी के फुर–फुर आ भगजोगनी के भुक–भुक देख के खूब मजा आवेला। किसानन खातिर त ई जियका–जिनगी के महीना ह। सब जाना जीवन–जान से खेती गिरहस्ती में लाग जाले। केहु कतिका–अगहनी का रोपनी में लागे त, केहू अमीरन के सवख आ गरीबन के भोजन अलुआ–सुथनी रोपे में– 'सुथनी सकरकन अगिया के मोल मिले, जरो भइले अनमोल भाई लोगनी'। कहीं मड़ुआ गदराला, त कहीं मकई मोचियाला। कहीं सारो–साठी आ सावां–टँगुनी फर के झूले लागेला त कहीं जनेरा–मसुरिया गमके महके के शुरू कर देला। कहीं घेंवड़ा–तरोई, भिंडी–करइला, अरुई–कंदा आ चिचिरा–सेमरहरिया लदर जाला त, कहीं टेकुआ–ठढ़िया, करमी–झुनखुन,

पोय–नोनी आ केना–गंधपुरना लहलहात रहेला। अइसहीं लउका–कोंहरा, सेम कवाछ आ बैगन–मरिचा अलगे लथर जाला। एही महीना में सेव–नासपाती, अंगूर–विदाना आ केरा–अमरूध तनी गरीबो–गुरबा का चीखे लायक भाव पर आ जाले सन। अगस्त के मस्ती के बारे में त, कुछ कहहीं के नइखे। कहीं कजरी के बहार मचेला– 'नींक सइयाँ बिन भवनवाँ नाहीं लागे सखिया' त कहीं झूलन के झकझोरी सुनाला– 'झूला लगे कदम की डारी, झूले कृष्ण मुरारी ना'। चारू ओर धरती माता के धानी चुनरिया देख के मुँहजोर मउगी त, एकदम से बउरा जाली सन– 'सबुज रंग चुनरी मँगा दे पियवा हो। चुनरी मँगा दे पिया, चुनरी मँगा दे। आरे, बीचे–बीचे गोटवा लगा दे पियवा हो।' भला, अइसन रसगर–लसगर अगस्त कवना आदमी का ना सोहाई?

अगस्त अँगरेजी कलेंडर के आठवाँ महीना हवे। ई, नाँव महान विजयी जुलियस सीजर के पोता आ पहिला रोमन सम्राट औगस्टस सीजर का नाँव पर धराइल, जे अब तक उनका जस के इयाद करावत बड़ुए। अगस्त के जइसन लमहर माने–मतलब ऊपर बतावल गइल बा ओइसने एकर गुनो लमहर बाटे– 'यथा नामः तथा गुणः।' देश–विदश के बड़–बड़ राजपुरुष, साहित्यिक आ ज्ञानी–विज्ञानी के जनम, बड़की–बड़की घटना आ भारी–भारी लोग के मृत्यु हत्या एही महीना में भइल बाटे।

इतिहास में मुगल शाहंशाह जहाँगीर एगो अजगुत आदमी भइलन। तरुनाई में उनका अनारकली से मोहब्बत करे के सवख जागल। अनारकली भुलावा में आ गइली आ आपन औकात ना देख के दिल–दुआ सब दे बइठली। प्यार के जिनगी कुछ दिन बड़ा निमन से कटल, बाकी मुसीबत के दिन जल्दिए आ गइल। बादशाह अकबर का कान में ई बात पहुँचल आ दस्तूर का मोताबिक अनारकली 'अलविदा–अलविदा' करत देवाल में चुनवा दिहल गइली बाकी सलीम पर एगो जूँ भी ना रेंगल। 20वीं सदी में ब्रिटिश साम्राज्य के उत्तराधिकारी युवराज अष्टम एडवर्ड आपन प्रेमिका लेडी शिम्पसन खातिर राजगद्दी तक त्याग देहले। बाकिर एह शाहजादा का दिल में अनारकली खातिर प्रेम के कवनो हिलकोरा ना आइल। ऊ केश अइसन मजनू ना बनले, फहराद अइसन कोहकन ना कटले आ रंझाँ अइसन हथकड़ी–बेड़ी ना पहिर सकले। अनारकली 'मुहब्बत की झूठी कहानी' पर रोअत आ अपना 'धड़कन दिल के पयाम' देत इश्क पर कुरबान हो गइली– 'खुदा निगहवाँ हो तुम्हारा, धड़कते दिल का पयाम ले लो। तुम्हारी दुनियाँ से जा रहे हैं, उठो हमारा सलाम ले लो।' बाकिर उनका 'किस्मत के खरीदार' दगाबाज 'सिपहिया' पर कोई असर ना पड़ल। सलीम का एह बेवफाई आ बुजदिली के दुनिया के आशिक–माशूक कबो माफ ना करी। एक ओर त, ई भइल, दोसरा ओर गद्दी पर बइठते मेहरुन्निसा खातिर शेर अफगान के मरवा दिहलन आ साम–दाम–दंड–भेद का सहारे ओह अलचार बेवा से बियाह कइ के ओकरा के नूरजहाँ नाँव से मलका–ए–हिंद बना देलन। एक ओर अपना कान से गरीब–दुखियन के पुकार सुने खातिर महल में इंसाफ के घंटा लटकवले। त दोसरा ओर नूरजहाँ के हाथ में शासन के बागडोर थमा के शराब कबाब में पूरा डूब गइले–'आध सेर कबाब और आध सेर शराब हो, नूरेजहाँ की सलतनत है क्या खूब हो या खराब हो।' अइसन अनोखा बादशाह जहाँगीर के जनम 30 अगस्त, 1569 के भइल रहे।

अँगरेजी विश्व के बहुत भरल–पूरल भाषा हवे। दुनिया के करीब दू तिहाई लोग अँगरेजी बोलेला–समझेला। ब्रिटिश साम्राज्य के सूरुज डूबे का पहिले, संसार का कोना–कोना में अँगरेजी के बोलबाला रहे। अबो एकरा एगो दमगर अन्तरराष्ट्रीय भाषा होवे के गौरव हासिल बा। अँगरेजी में साहित्य–कला, ज्ञान–विज्ञान आ दर्शन–राजनीति के एक से एक निम्मन चीज बाड़ी सन। एकरा कवियन आ लेखकन के दुनिया भर में इज्जत–शोहरत मिलल बा। एह लोगन में से सतरहवीं शताब्दी में रेस्टोरेशन–काल के महान साहित्यकार, अनुवादक, समालोचक आ 'मैकफ्लेवनो', 'टेम्पेस्ट' आ 'हिरोइक स्टैजाज' आदि के लिखनिहार जौन डाइडन के जनम अगस्त, 1631 में भइल रहे। सब से बड़हन उपन्यासकार, कहानीकार आ कवि सर वाल्टर स्कौट 15 अगस्त, 1771 में पैदा भइलन, इनका रचना में 'लेडी आफ दि लेक', 'दि टेलिमैन', 'दि मोनास्टरी', 'लाइफ आफ नेपोलियन' आ 'टेल्स आफ ग्रैंड फादर' प्रसिद्ध बाड़े सन। विक्टोरिया युग के महान साहित्यकार लार्ड एल्फ्रेंड टेनिरान जे संसार के आपन 'लोटस ईअर्स', 'युलिसिज', 'दी प्रिंसेज', 'इन मेमोरियल', 'दि चार्ज आफ लाइट बिग्रेड' आ 'दि होली ग्रेल' अइसन रचना दे गइल बाड़े, 6 अगस्त, 1809 के जनमल रहले। अइसहीं प्रसिद्ध अँगरेज दार्शनिक जौन लौक के 29 अगस्त, 1632 के जनम भइल रहे।

संसार भर में प्रसिद्ध जर्मन साहित्यकार जे0 डब्लू0 भी0 गेटे 28 अगस्त 1749 के पैदा लिहले। लड़ाई

में संसार के कँपा देबे वाला आ 'इम्पौसिवुल इज ए वर्ड फाउण्ड इन दि डिक्शनरी आफ फूल्स' के कहनिहार बहादुर पेनोलियन बोनापार्ट के जनम 15 अगस्त, 1766 के भइल रहे। आधुनिक लघु–कथा के जनक मोपासा 5 अगस्त, 1840 के पैदा लिहलन। लरिकन का पढ़ाई–लिखाई खातिर मौंटेसरी शिक्षा–पद्धति के प्रवर्तक आ महान शिक्षा–शास्त्री इटली के बड़हन सपूत मेरिया मौंटेसरी के 31 जगस्त, 1870 के जनम भइल। महान क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी आ पांडिचेरी आश्रम के अधिष्ठाता योगीराज अरविंद घोष 15 अगस्त, 1872 के एह धरा–धाम पर अइलन। हिन्दी साहित्य गगन के जगमग निछत्तर, बिहार में कई–एक गो कवि–लेखक बनवनिहार 'मुँडमाल', 'भगजोगनी' आ 'कहानी का प्लाट' अइसन दमगर कहानियन के लिखे वाला आचार्य शिवपूजन सहाय के अगस्त, 1893 में जनम भइल रहे।

हमरा परिवार में भी अगस्त के कवनो कम मोल नइखे। हमार बड़की बेटी ऋद्धि 2 अगस्त 1964 के जनम लेहली। अबतक हमनी चारो भाई का बीचे एको बहिन ना होखे से घर में फीकापन–सूनापन रहे ऊ बेदी पाके काफी हर तक दूर हो गइल। कुछ दिन का बाद नवम्बर, 1968 में दोसरकी बेटी 'सिद्धि' भी पैदा भइली। दुनों बहिनी हरसाल बड़ा प्रेम–हुलास से रक्षा–बंधन आ गोधन मनावेली। जब दुनों रक्षा–बन्धन के दिन हमरा तीनों छगन–मगन के 'रखिया बन्हा ल भइया, सावन आइल, जीअ तू लाख बरीस हो' गावत राखी बान्हेली त देख के हमार बहिन खातिर तरसत हिरिदा अगरा उठेला। बाकिर गोधन का दिन ओकनी का मुँह से 'हम परदेसी ए भइआ मोटरिया के हो आस' सुनके करेजा फाटे लागेला आ मोटिया रुमाल भींज के पोतन हो जाला। ओही घड़ी हम 'काहे के जनमलू ए बेटी' के परतछ मरम समुझ पाईले।

अगस्त में बड़की–बड़की घटनो घटल बाड़ी सन, जवना के इतिहास, समाज, साहित्य आ राजनीति पर खूब असर पड़ल बाटे। पनरहवीं सदी में यूरोप के बहुत बहादुर जहाजी भारत के पता लगावे खातिर जहाज ले के निकलले बाकी किन्हहूँ का सफलता ना मिलल। आखिर में कप्तान क्रिस्टोफर कोलम्बस भारत का खोज में निकलले। लेकिन उनकर जहाज भटक गइल आ ऊ अगस्त, 1492 में अमेरिका पहुँच गइलन। एकरा पहिले अमेरिका के केहू ना जानत रहे। एह से एकर नाँव 'नई दुनिया' पड़ल। धीरे–धीरे यूरोप के अउर–अउर लोग उहाँ जाके रहे–बसे लागल आ आज अमेरिका खुशहाली का चोटी पर पहुँचल बा। कुछ दिन के बाद ओ लोग का भारत के पता लागल आ कइएक ठो विदेशी–कम्पनी इहाँ बैपार करे आ गइली सन। अइसने कम्पनियन में एगो ब्रिटिश ईस्ट इन्डिया कम्पनी रहे, जवना के मुगल सम्राट शाहआलम नं0 2 अगस्त, 1765 में बंगाल, बिहार आ उड़ीसा के दीवानी सौंप दिहलन। साँच पूछीं त, ओही दिन से भारत में अँगरेजी राज के रास्ता खुल गइल आ करीब 300 बरिस तक हमनी अँगरेजन के गुलाम बनल रह गइनीं।

संसार में तहलका मचावे वाली फ्रेंच–क्रान्ति के मोटा–मोटी शुरुआत 4 अगस्त, 1789 के हो गइल रहे। फ्रांस के नेशनल असेम्बली 4 अगस्त 1789 के एगो डिक्री पास कइलस, जवना से उहाँ युग–युग से चलल आवत सामन्तशाही के जड़ कोड़ा–खोना गइल। पोर्तुगाल, जवन जालिम सालाजार का समय तक स्वतंत्र भारत का छाती पर कबाब में हड्डी अइसन गोआ–डमन–डिउ में जमल रहे, 20 अगस्त, 1911 के गणराज्य बनल। पहिलका विश्वयुद्ध 20 अगस्त, 1914 के शुरू भइल। महात्मा गाँधी का नेतृत्व में भारतीय असहयोग आन्दोलन अगस्त, 1920 में चलावल गइल। दोसरका विश्वयुद्ध छिड़ला पर अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट आ ब्रिटेन के प्रधानमंत्री सर विंस्टन चर्चिल 14 अगस्त, 1941 के अटलांटिक चार्टर पर हस्ताक्षर कइलन लोग।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद से भारत का आजादी के जवन लड़ाई 1857 में बहादुशाह 'जफर', लक्ष्मीबाई आ कुँवर सिंह का कमानदारी में शुरू भइल ऊ 1947 से करीब एक शताब्दी तक चलल। भलहीं, समय–समय पर परिस्थिति का अनुसार एकर रूप बदल गइल, बाकी स्पिरिट में कवनो कमी ना आइल। भारतीय राजनीति में गाँधी जी के उतरला पर संघर्ष के रूप बिल्कुल अहिंसात्मक हो गइल। लेकिन उनका असहयोग आन्दोलन आ व्यक्तिगत सत्याग्रह से, जवना के श्री गणेश आचार्य विनोबा भावे कइले रहस, जालिम फिरंगी पर कवनो खास असर ना पड़ल। उल्टे जालियाँवाला बाग कांड भइल आ दमन के चक्की तेजी से चले लागल। एने देश में आजादी खातिर बैखरा समा गइल आ जनता सब कुछ कुरबान करे खातिर कम कस लिहलस। एही सब माजरा पर विचार करे आ कवनो ठोस रास्ता निकाले खातिर बम्बई में काँग्रेस–कार्य–समिति के मीटिंग होत रहे। सरकार घबड़ा गइल आ 9 अगस्त, 1942 के गाँधी जी समेट सब राष्ट्रीय नेता गिरफ्तार कर लिहल गइले। बस, समूचे देश में ओही दिन से सुप्रसिद्ध भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू हो गइल। गिरफ्तारी का बेरा

गाँधी जी 'करो या मरो' के संदेश दे गइले। लोग एकर अपना–अपना ढंग से मतलब लगावल आ 'करे–मरे' में जोश खरोस से लाग गइल। पुलिस–थाना, डाक–घर आ रेलवे स्टेशन के फूँकल–लूटल, रेलवे–टेलीफोन के लाइन उखाड़ल, टेलीफोन–टेलीग्राम के तार काटल आ अँगरेज अफसरन के मारल–मुआवल एगो आम बात हो गइल रहे। चर्चिल–एमरी–लिनलिथगो के सब हैंकड़ी बन्द हो गइल। सगरो किसिम किसिम के दमन चक्र धुँआधार चले लागल। बाकीर 'सरफरोशी की तमन्ना' के आगे 'बाजु–ए–कातिल' का जोर जुलुम के कवनो नतीजा ना निकलल।

हमार 'सत्तू खोर' प्रान्त भी कवनो बात में केहू से कबो कम नइखे रहल। बिहार आपटना के लोग बड़ा जोश–खरोस का साथ आन्दोलन में कूद पड़ल आ अँगरेजन के छरपट छोड़ावे लागल। 11 अगस्त, 1942 के पटना सेक्रेटेरियट पर तिरंगा झंडा फहरावे खातिर जमा निहत्थन का भीड़ पर तत्कालीन अँगरेज डी0 एम0 मिस्टर आर्चर का हुकुम से अन्हाधुन गोली चलल। गोली से सात गो स्कूलिया लरिकन का वीरगति प्राप्त भइल। पुरनका सेक्रेटेरियट के पुरवारी फाटक का सामने के शहीद–स्मारक एही लोग का यादगारी में बनल बा– 'वतन पै मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा।' एह सातों में दूगो भोजपुरियो नवहा रहलन। तीसरा भोजपुरिया बने के हमार साध ना पूरा हो सकल। सेक्रेटेरियट पर पर झंडा फहरावे खातिर हमरो जाए के प्रोग्राम रहे। बाकिर हमार बड़ भाई जाए ना दिहले आ खिसिया के घर में बन्द कर देलन। हम मछरी अइसन छटपटा के रह गइनीं।

ओह घड़ी हम अपना शहर के एगो गैर–सरकारी हाईस्कूल में पढ़त रहीं। कांग्रेस के कट्टर समर्थक आ गाँधी–नेहरू, पटेल–प्रसाद आ आजाद–गफ्फार के परम भक्त रहलीं। जेहल से निकल गइला पर सुभाष आ जेपी के भी भक्त बन गइनीं। अपना मासूमियत में गाँधी जी के भगवान के अवतार, चरखा के सुदर्शन–चक्र आ खादी के पीताम्बर मानीं। आन्दोलन के विरोध कइला खातिर राय–जिन्ना–जोशी के घोर देशद्रोही समझीं। खादी के कुरता पाजामा, गाँधी टोपी आ दास कम्पनी के चप्पल इहे हमार ड्रेस रहे। स्कूल के लरिका हमरा के 'गाँधी जी' कहसन। काफी दिन तक हम ई ड्रेस रखनीं, बाकी आजादी मिलला का बाद जब बहुत से अवांछनीय लोग 'मुंड मुँड़ाय भये संन्यासी' अइसन राताराती खदर पहिर के लीडराने वतन बने लगलन आ एकरा आड़ में सब करम कुकरम करे लगलन तब खादी पहिरल हमरा उचित ना बुझाइल। अब खादी त्याग–तपस्या के पोशाक ना रह सकल आ लूट–खसोट करे के पासपोर्ट बन गइल। तब हम बड़ा मायूसी का साथ आपन सब खादी के कपड़ा पेटी में बन्द कर देनी। अबो दू चार गो गाँधी टोपी बक्सा में पड़ल ओह जमाना के इयाद दिआवत रहेला। अब त पैंट, बुशशर्ट पर मोजा लागल बाटा के फूल शू ड्रेस बन गइल बा आ जाड़ा में गरम सूट बूट भी डटाइले।

आन्दोलन से हमार स्कूल भी अछूता ना रह सकल। राष्ट्रीय नेता लोग का गिरफ्तारी के खबर सुनते हमनी स्कूल छोड़ देनीं। आन्दोलनकारी संघतिया हमरा के आपन मेठ बना दिहले सन। रोज जुलूस निकाल के स्कूल–कालेज, दोकान–बाजार आ कोर्ट–कचहरी बन्द करावल हमनी के खास काम रहे। सेक्रेटेरियट जाए के प्रोग्राम पहिलहीं बन गइल। स्कूल में हम एगो फ्री–स्टूडेंट रहीं। हमार हेडमास्टर साहब, ते अब स्वर्गीय हो गइले,, बराबर धिरावस– 'आन्दोलन में शामिल होगे, तो, फ्री–शिप तोड़ देंगे। सेक्रेटेरियट जाओगे तो रेस्टिकेट कर देंगे।' कबो कबो डरो लागे आ मने–मने सोचीं, 'फ्री–शिप टूट जाई, त, फीस देबे के पइसा कहाँ से आई। बाकिर सोन का बाढ़ के पानी आ नवहा के जोस कवनो रोक ना माने।'

सेक्रेटेरियट में गोली चले का दिन, एकदम भोरहीं, विहार विभूति श्री अनुग्रह नारायण सिंह अपना कदमकुआँ आवास पर तत्कालीन डी0एम0 श्री आचर का हाथे गिरफ्तार कइल गइनीं। आर्चर साहब के कार देखते चारों ओर तहलका मच गइल आ गिरफ्तारी से बचल छोट–मोट नेता लोग, जेमे फूआजी श्रीमती भगवती देवी (राजेन्द्र बाबू के बड़ बहिन) प्रमुख रहली, स्कूल कालेज के विद्यार्थी, वकील–प्रोफेसर आ आम पब्लिक काफी संख्या में उहाँ जमा हो गइले। हमहूँ अपना भइया का साथे, जे पाछे गिरफ्तार करके कुछ दिन बाँकीपुर जेल में आ फेर काफी दिन ले हजारीबाग सेन्ट्रल जेल में रखल गइले, उहाँ गइल रहीं। अनुग्रह बाबू का तैयार होखे में 5–7 मिनट लागल। एह बीच अपना खरखाह लोगन से बातचीत का दौरान श्री आर्चर का मुँह से निकल गइल–'टुडे आई शैल आस्क टु फायर।' ई बात हमरा भाई साहब का कान में भी गइल। 'बाबूसाहेब' के गिरफ्तारी का बाद भीड़ छँटला पर ऊ हमरा के लेके सीधे डेरा पर लौट अइले। भला, कवन बड़ भाई जान–सुन के भी अपना छोट भाई के गोली

खाये खातिर जाये दी। हमरा लाख रोवला–पिटला पर भी ऊ हमरा के सेक्रेटेरियट जाये ना देहले। एकरा पराछित में हम तीन साँझ तक खाना ना खइनीं आ मुँह धोए तबे उठनीं, जब भइया आपन खराब–खराब कसम देबे लगलन। तब, त, हमरा उनका पर बड़ा खीस बरल, बाकी आज, जबकि ऊ दुनिया में नइखन, सब बात इयाद अइला पर आँख बरबस सावन–भादो बन जाला।

अब विश्वयुद्ध में धुरी–राष्ट्र के हार पर हार होखे लागल। हार खाके हिटलर आ मुसोनिली अंडर–ग्राउंड हो गइले। मोर्चा पर अकेले डटल जापान मित्र–राष्ट्रन का सेना के बहादुरी से मोकबिला करत रहे, बाकी कुछ दिन में उहो हार जाइत। लेकिन, अमेरिका आपन सुपरमेसी जमावे खातिर धीरज आ विवेक दुनों खो बइठल। ऊ ना आव देखलस ना ताव, संसार के पहिलका ऐटम बम, 6 अगस्त, 1945 के हिरोशिमा पर आ दोसरका ऐटम बम 9 अगस्त, 1945 के नागासाकी पर गिरा देहलस। चंगेज खाँ आ नादिर साह का कत्लेआम से भी जियादे संहार भइल आ सगरो 'त्राहि–त्राहि' मच गइल। अलचार होके जापान 14 अगस्त, 1945 के आत्मसमर्पण कर देलस आ दोसरका विश्वयुद्ध के अन्त हो गइल।

लड़ाई खतम भइला पर ब्रिटेन में आम चुनाव भइल आ श्री एटली का रहनुमाई में लेबर पार्टी के सरकार बनल। नया सरकार के भारत का प्रति उदार नीति रहे। एह से 1942 के गिरफ्तार सब राष्ट्रीय नेता लोग छोड़ देहल गइले आ समझौता के बातचीत चले लागल। तत्कालीन गर्वनर जनरल श्री वेवेल, जे लिनलिथगो का बदला में आइल रहलन, 'फारगेट ऐंड फारगिव' (भूल जाईं आ माफ करीं) के दोहाई देबे लगले। भारत में भी आम चुनाव भइल, जेमें, कांग्रेस आ मुस्लिम लीग का बहुमत मिलल। समझौता का मोताबिक कांग्रेस वायसराय का कार्य–परिषद में शामिल भइल। मुस्लिम लीग पहिले एकर बहिष्कार कइलस आ विरोध में 16 अगस्त 1946 के देश भर में प्रत्यक्ष कार्रवाई के आयोजन कइलस। प्रत्यक्ष कार्रवाई का दौरान कलकता में लाखन–लाख निर्दोष हिन्दू औरत–मरद, बूढ़–बालक आ नवहा–नवही मारल गइलन। ई कातिल घटना इतिहास में 'सेट कलकता किलिंग्स' का नाँव से प्रसिद्ध बा। एकरा बाद नोआखाली, टिपरा, नगरनौसा आदि जगहन में जे साम्प्रदायिक उपदरो के तूफान शुरू भइल ऊ समूचा देश के झकझोर दिहलस। वैवेल साहब वापस बोला लेहल गइले आ उनका बदला में श्री माउंटवेटेन गवर्नर–जेनरल बन के भारत अइलन।

माउन्टवेटेन साहेब के अइला पर कांग्रेस आ मुस्लिम लीग से समझौता का दिसाईं बड़ तेजी आइल। लीग का पाकिस्तान के मार्ग पर डटल रहला से साम्प्रदायिक आग फइलत जात रहे। एने कांग्रेस आ देश में आजादी खातिर बैचेनी बढ़ल जात रहे। ओने राष्ट्रीय–अन्तरराष्ट्रीय स्थिति का चलते अंगरेजी सरकार का भारत छोड़े का मजबूरी में तेजी आवे लागल। कोई बीच के रास्ता निकालल जरूरी हो गइल। आखिर राष्ट्र–हित में कांग्रेस कुछ हेर–फेर का साथ भारत विभाजन के सवाल पर गांधीजी के इच्छा का विरूद्ध, जबकि ऊ नोआखपाली में 'ईश्वर अल्ला तेरा नाम, सबको सन्मति दे भगवान' का मिशन पर डटल रहले, सहमत हो गइल। एकरा बाद 14 अगस्त, 1947 के भारत माता के तीन टुकड़ा कइ के एगो नया देश पाकिस्तान के निर्माण भइल, जवना के गवर्नर जेनरल कायदे आजम मुहम्मद अली जिन्ना भइले। भारत अपना मर्जी से एक दिन बाद 15 अगस्त, 1947 के स्वाधीनता स्वीकार कइलस। स्वतंत्र भारत के गवर्नर जेनरल का रूप में कइ एक कारन से माउंटवेटेन साहेब के रख लिआइल, जे आखिरी गवर्नर जनरल भइलन। तब से हर साल 15 अगस्त के बहुत धूमधाम का साथे देश का कोना–कोना में स्वतंत्रता दिवस मनावल जाला। एह साल 1975 में 15 अगस्त के उन्तीसवाँ स्वतंत्रता दिवस मनावल गइल ह।

भारत का आजाद होते, पड़ोसी देशन में भी आजादी खातिर बैखरा समा गइल आ स्वतंत्रता के लड़ाई होखे लागल। कांग्रेस आपन 1942 के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव 'एशिया छोड़ो' में बदल देलस। साम्राज्यवादियन का सामने आपन बोरिया–बिस्तर बान्हला का सिवाय कोई रास्ता ना रह गइल। धीरे–धीरे दोसरो–दोसर देश गुलामी से मुक्त होखे लगले सन। पहिले, इंडोनेशिया आजाद आ उहाँ 17 अगस्त, 1949 के गण–राज्य के घोषणा भइल। अइसहीं सिंगापुर का भी आजादी मिलल। सिंगापुर 09 अगस्त, 1965 के अपना के सर्वप्रभुता–संपन्न गणराज्य घोषित कइलस। न्यूक्लियर हथियार इन्सान खातिर कतना घातक आ नोकसानदेह बा ई बतलावे के जरूरत नइखे। एह वजह से काफी सोच–विचार आ बहस मुबाहिसा का बाद संसार के न्यूक्लियर देश अणु–परीक्षण पर रोक लगावे खातिर राजी हो गइलन। एकरा मोताबिक 05 अगस्त, 1962 के अणु परीक्षण निषेध–संधि पर न्यूक्लियर देशन के हस्ताक्षर भइल आ मानवता राहत के साँस लिहलस।

अभी तक भारत एगो तटस्थ देश रहल ह। बाकिर संसार के एगो बड़हन देश सोवियत रूस शुरुए से हमनीं का साथ सहानुभूति आ हीत मीत के भाव रखत आवता। एह देश के स्वराज्य दिआवे में रूस के बहुत लमहर हाथ रहल ह। काश्मीर से लेके गोआ तक, पाकिस्तान आक्रमण से लेके चीनी आक्रमण तक आ बंगलादेश से लेके सिक्किम तक ऊ हरमेसा भारत का नीति के डट के सर्मथन कइलस। बंगला देश का दिसाईं अमेरिका के भारत–विरोधी रवैया का चलते रूस से नगीची लगाव आ पकिया दोस्ती कइल बहुत जरूरी रहे। ओने चीन के रूस विरोधी हरकत आ अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का वजह से रूस का भी भारत से दमगर दोस्ती कइल जरूरी बुझाइल। एह से 9 अगस्त, 1971 के भारत आ रूस का बीच बीस–वर्षीय शान्ति–मैत्री सहयोग–संधि पर हस्ताक्षर भइल आ संसार का इतिहास में एगो नया अध्याय जुटल। एह संधि के सबसे बड़ा नतीजा ई भल कि बंगलादेश का संदर्भ में पाकिस्तान से छिड़ल लड़ाई के समय अमेरिका के सातवाँ बेड़ा हिन्द महासागर में आके लाग गइल, बाकी भारत का खिलाफ एगो खरो खरकावे के ओकरा हिम्मत ना भइल। ई संधि अबो बरकरार बा आ दुनों देश के दोस्ती–हीतई रोजो–रोज गाढ़–मीठ भइल जाता।

आज संसार के सबसे खुशहाल, भरल–पूरल आ लोकतांत्रिक देश अमेरिका में कुछ दिन से बड़ सनसनीखेज घटना हो रहल बाटे। राष्ट्रपति केनेडी के हत्या भइल, आ सीनेटर केनेडी के हत्या भइल आ हाले राष्ट्रपति फोर्ड पर भी दू–दू दफे हमला हो चुकल। बाकिर सबसे ज्यादा सनसनीसेज बाटरगेट कांड रहल ह, जवना के दुनिया भर में जोर सोर से चर्चा रहुए। आखि में राष्ट्रपति रिचार्ड निक्सन का एगो महान देश के महान लोक का आगे झुके के पड़ल आ ऊ 'अगस्त' 1974 के सकार लिहलन कि वाटरगेट कांड में उनकर पूरा हाथ रहल ह। दुनिया के सबसे बड़हन लोकतांत्रिक देश अमेरिका के नागरिक लोग का अपना राष्ट्रपति के ई नाजायज हरकत तनिको ना सोहइल। अलचार होके राष्ट्रपति निक्सन, भरल आँख से, 09 अगस्त, 1974 के अपना पद से इस्तीफा दे दिहलन आ ओही दिन श्री जेरार्ड फोर्ड, उनका जगे पर राष्ट्रपति का पद के भार ग्रहण कइलन। विश्व भर के लोकतंत्र–पसन्द देश आ लोग एह लोकतांत्रिक पद्धति का जीत पर निहाल हो उठल। 15 अगस्त, 1974 के स्वतंत्र भारत का इतिहास में पहिला बेर बिहार का राजधानी पटना में कइएक सार्वजनिक जगहन में सरकारी समारोह का समानान्तर स्वतंत्रता दिवस पूरा जोस खरोस का साथ मनावल गइल, जहाँ अबतक के परंपरा का खिलाफ कवनो भी0आई0पी0 का बजाय जन–साधारण से रिक्सा वाला राष्ट्रीय झंडा फहरवले।

देशरत्न डा0 राजेन्द्र प्रसाद के आधुनिक भारत का इतिहास में बहुत ऊँचा स्थान बाटे। उहाँ का त्याग–तपस्या, गुण–आदर्श आ विद्या बुद्धि के एह छोट लेख में बखन कइल संभव नइखे। साँच पूछीं त, राष्ट्रपति बनवला से उहाँ के कवनो महातम ना बढ़ल, बलु राष्ट्रपतिए का पद के गरिमा बढ़ गइल। एने, हमनी में अपना महापुरुष लोग के भूलत बिसारत जाए के प्रवृत्ति बढ़ल जाता। 'डूबल सुरुज के केहु ना पूजे, ऊगत सुरुज के सभे पूजेला' वाला कहाउत हमनीं पर पूरा–पूरा लागू होता। राजेन बाबू के भी हमनीं करीब भूलते जात बानीं। उनका जन्म–दिन के, देश में के कहो, उनका जन्म–भूमि बिहार में भी, सार्वजनिक छुट्टी ना होखे आ कवनो दमगर समारोह ना मनावल जाय। अभी तक पटना में उहाँ के कवनो कहे लायक स्मारक नइखे बन सकल। ई कवनो निमन बात ना ह। बाकिर खुशी के बात ह कि अब बिहार सरकार के ध्यान एह तरफ जा रहल बा। 14 अगस्त, 1975 के पटना में राज भवन के सामने, जहाँ पहिले सम्राट पंचम जार्ज के मूर्ति रहे, राजेन्द्र बाबू के मूर्ति बइठावल गइल। मूर्ति के अनावरण बिहार के राज्यपाल महामहिम श्री रामचन्द धोंडिबा भंडारे जी कइनीं आ एगो बहुत लमहर कमी पूरा हो सकल। उमेद बा, आगे भी एह दिशा में कुछ कारगर कदम उठावल जाई।

बंगला देश का इतिहास में शेख मुजीबुरहमान के नाँव सोना का कलम से लिखाई। पाकिस्तानी तानाशाही का खिलाफ मुक्ति–आंदोलन उनके गतिशील रहनुमाई में शुरू भइल। आगे चल के ई आन्दोनल जुध के रूप धर लिहलस आ एगो अन्तराष्ट्रीय समस्या बन गइल। विस्तार में जाए खातिर एह लेख में ना जगह बा आ ना कवनो जरूरते। काफी जद्द–जहद, खून खराबी आ तबाही–बरबादी का बाद बंगला देश आजाद भइल आ शेख मुजीब एकर प्रधानमंत्री बनावल गइले। कुछे दिन का बाद उहाँ संसदीय शासन–प्रणाली माकूल ना बुझाइल। एह से संविधान में संशोधन क के राष्ट्रपतीय शासन–प्रणाली कायम कइल गइल आ बंग–बन्धु मुजीब राष्ट्रपति बनले। कुछ अन्दरूनी कारण से सब विरोधी पार्टियन आ अखबारन पर रोक लगा के अब शेख जी

का पार्टी के एकदलुआ शासन चलत रहल ह, बाकी 'होता है वही जो मंजूरे खुदा होता है'। 15 अगस्त, 1975 के बंगलादेश में खूनी सैनिक विद्रोह हो गइल। बंग–बन्धु बड़ा बेरहमी से, अपना परिवार के सभ लोग के साथे, मारल गइलन आ उनका जगे पर श्री खोंडकर मुस्ताक अहमद बंगलादेश के राष्ट्रपति बनले। श्री मुजीब का मृत्यु के भारत के एगो दमगर दोस्त दुनिया से उठ गइल, जवना के पूरा कइल आसान नइखे। खुशी के बात बा कि नयका सरकार भी भारत से हीतई'–मीतई बनवले रखे के एलान कइले बाटे। एही बीच 17 अगस्त, 1975 के लीबिया में चउथा बेर सैनिक विद्रोह भइल, बाकी नाकाम कर दिहल गइल।

पटना शहर चारों ओर गंगा, सोन आ पुनपुन नदी से घेराइल बाटे। एह तरे एकरा पर तीनों नदियन से बाढ़ के खतरा बराबर बनल रहेला। अगर कबो तीनों एकवट के एके बेर धावा बोले त, पटना में कयामत भइल निश्चित बा। साइत इहे बात सोच के चन्द्रगुप्त आ अशोह आपन राजधानी मौजूदा पटना के बदला पटना सीटी में रखले रहलन। हजारन बरिस पहिले भगवान बुद्ध पटना पर आग, पानी आ फूट से खतरा बतवले रहीं। तथागत के ई बचन समय–समय पर साँचे होत गइल बा, जवना के दोहरावे के कवनो जरूरत नइखे। हमरा होस में 1948 आ 1967 में पुनपुन छरिअइली आ 1971 में गंगा खिसिअइली। बाकिर 'मीठे स्वर गावे' वाला सोनभद्र का प्रकोप से 25 अगस्त, 1975 के जे बाढ़ आइल ऊ अभूतपूर्व आ सबसे भयंकर रहे। सोन बाबा 'राजा भोज' आ 'भोजवा तेली' केहू के ना छोड़ले। 27 अगस्त, 1975 तक पटना के तीन चौथाई आबादी आ इलाका बाढ़ का चपेट में आ गइल। इतिहास में पहिला बेर राजभवन, मुख्यमंत्री–आवास, सचिवालय, हाईकोर्ट, जी0पी0ओ0, पटना जंक्शन, टेलीफोन एक्सचेंज आदि में बाढ़ के पाँच–पाँ छव–छव फीट पानी घुसल। पाटलीपुत्र, राजेन्द्र नगर, कदमकुआं, आर0 ब्लाक, बोरिंग रोड आ बेली रोड अइसन अमीरन के इलाका, श्री कृष्णपुरी, राजबंशी नगर, शास्त्री नगर, किदवईपुरी आ गर्दनीबाग अइसन सफेदपोश गरीबन के इलाका अउर मन्दिरी, सालिमपुर अहरा, जक्कनपुर, मीठापुर, लोहानीपुर आ पीरमोहानी अइसन आम इलाका बाढ़ के परतच्छ शिकार भइले सन।

सिकन्दर का आक्रमण अइसन बाढ़ आइल आ चलिओ गइल, बाकी किसिम–किसिम के लोग का बीचे किसिम–किसिम के बतकही अबो सुनात बा। केहू बाढ़ के 'मैन मेड' कहता, केहू 'भगवानी लीला' कहता त, केहू अतना दिन से बिटोराइल पापन के फल बतावता। अब त, बहुते जाना जोतिसबाजी शुरू कइले बाड़न आ बहुते जाना आपन काविलियत छाँटतारे, बाकी असली मोका पर किनहूँ अपना बिल–मान से बाहर ना निकलले। आम लोग का इहे गुनावन बाटे कि बाढ़ कुछ हद तक पटना के पाप, गंदगी त जरूर धो दिहलस, बाकी एको पाप–महल के गिरा–भहरा ना सकल। एह से बहुते लोग एकरो ले जबरजस्त–जोरदार बाढ़ लेके आवे खातिर गंगा मइया के चुनरी–पियरी आ खोंसी–पाठा भाख रहल बाड़न। कुछ लोग त, अउरी आगा बढ़ के बाढ़ देवी के लहुरा माई भूकम्प देवता के गोहरा–मना रहल बाड़े, ताकि 'गढ़–लंक' अइसन चमकत–दमकत पाप–महल बालू के घरौना अइसन एकजोराहें से ढह–बह जा मन आ सभकर प्यारा पठना सीता मइया अइसन पाक–पवित्तर हो सके।

बड़हन देशन के खुदगरजी, धींगा–मस्ती आ गोटी बइठउअल का चलते छोट–छोट देशन में बराबर झंझट–झमेला मचल रहत बा। एह तरे छोट देशन के जनता आ शासक दुनों में केहू का चैन नइखे आ सभकर जिनगी साँसत में पड़ल रहता। कब कहाँ गृह–युद्ध, उलट–फेर आ सैनिक–विद्रोह हो जाई, कहल नइखे जा सकत। अरब–इस्राइल, लंका–पोर्तुगाल, लेबनान–फिलस्तीन आदि में झंझट लागले बा। 29 अगस्त, 1975 के लैटिन अमेरिका के एगो छोटहन देश पेरू में सैनिक विद्रोह भइल। ऊहाँ 'कूप' में राष्ट्रपति बन गइले आ आपन सरकार कायम कइलन।

अगस्त महीना मनहूसियो में कवनो कम नइखे आ बहुते लोग पर गाज गिरवले बा। एह महीना में जहाँ निमन–निमन लोग के जनम आ निमन–निमन घटना भइल बाड़ी सन, उहाँ कइएक लोग के मृत्यु, हत्या आ आत्महत्या भी अगस्ते में भइल बडुए। आज से करीब दू हजार बरिस पहिले मिस्त्र देश के रानी आ अपना नमाना के विश्वसुन्दरी क्लिओपेट्रा 30 अगस्त, ई0पू0 30 में जुलियस सीजर से हार खइला पर जहरइला साँप से कटवा के आत्म–हत्या कर लिहली आ एगो परम सुन्दरी के दुखदायी अन्त भइल। अंगरेजी में 'पोयटिकल स्केचेज', 'ऐन आइलैंड इन दि मून', 'सौंग्स ऑफ इन्नोमेंट', 'मैरेज आम् हेवुन ऐंड हेल' आ 'दि बुक ऑफ युरिजन' के रचइता, कवि, कलाकार, दार्शनिक आ स्वप्नद्रष्टा विलियम ब्लेक 12 अगस्त, 1827 के सुरधाम गइलन। हालीउड के सुप्रसिद्ध अभिनेत्री, अंगरेजी फिलिम 'नियाग्रा', सेवुन इयर्स इच', 'हालीउड आन बस्ट',

'बस स्टौप' आ 'दि मिरेक्ल' के हिरोइन लाखन–लाख दिलदारन का हिरदा के रानी आ 18 इंच सीना–24 इंच कमर–36 इंच नितम्ब–वाली परम भावुक सुन्दरी मेरिलीन मनरो अपना 36 वां बसन्त में 5 अगस्त, 1970 के नीन आवे वाला दवाई खा के आत्म–हत्या कर लिहली आ दुनिया भर में अपना 'फैन' सभ पर गाज गिरा देली।

अमेरिका में हिन्दू–धर्म के झंडा ऊपर उठवनिहार स्वामी विवेकानन्द के गुरु आ देश–विदेश में रामकृष्ण मिशन आश्रम के आराध्यदेव महर्षि रामकृष्ण परमहंस जी 16 अगस्त, 1886 के अपना नश्वर शरीर के त्याग कइनीं। 'स्वराज्य हमारा जन्म–सिद्ध अधिकार है' नारा के देनिहार, श्रीमद्भगवतगीता के भाष्यकार आ राष्ट्र–पितामह लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का 1 अगस्त, 1920 के गंगा–लाभ भइल। सोवियत रूस के तानाशाह जोसेफ स्टालिन के संघतिया आ महान क्रान्तिकारी लिओन ट्राटस्की 20 अगस्त, 1940 के मेक्सिको में बड़ बेरहमी से मार देहल गइलन, जवना के खबर सुन के समूचना संसार सन्न रह गइल।

भारत में नोबुल पुरस्कार के पहिला पवनिहार, राष्ट्र–गीत 'जन–गन–मन अधिनायक' के रचयिता आ महात्मा गाँधी के गुरुदेव विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के 7 अगस्त 1941 के सरगबास भइल। भारतीय राष्ट्रगीत का रूप में 'जन–गन–मन' के सबसे पहिले अपनावे वाला, आजाद हिन्द फौज के प्रवर्त्तक 'जय हिंद' आ 'दिल्ली चलो' नारा के देनिहार आ महान क्रांतिकारी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के अगस्त, 1945 में एगो विमान–दुर्घटना में तथाकथित मृत्यु भइल। नेपाल के दसवाँ नरेश श्री पाँच महाराजाधिराज वीरेन्द्र विक्रम शाह देव के दादी, स्वर्गीय राजा महेन्द्र के माई आ स्वर्गीय राजा त्रिभुवन के मेहरारू रानी उषा देवी 21 अगस्त, 1975 के शांत भइली। भारत के पकिया दोस्त आ बंगलादेश के जनक शेख मुजीबुर्रहमान 15 अगस्त, 1975 के सैनिक विद्रोह में मारल गइलन।

अगस्त का मनहूस साया से संगीत संसार भी नइखे बाँचल। भारत के सुप्रसिद्ध संगीतशास्त्री आ संगीतज्ञ पद्मभूषण विनायक राव पटवर्द्धन 23 अगस्त 1975 के सरगबासी भइलन। आधुनिक आयरलैंड के राष्ट्रपिता, भारतीय स्वतंता आन्दोलन के पकिया हिमायती, आयरिश गणराज्य के भूतपूर्व प्रधानमंत्री–राष्ट्रपति श्री ईमन डिबेलरा के 29 अगस्त, 1875 के मृत्यु भइल।

एह तरे अगस्त में बहुते छोट–बड़, भारी–हलुक आ निमन–बाउर सब तरे के घटना भइल बाड़ी सन, जवना के लेके देश, विदेश आ दुनिया में बड़ा सोर मचत रहल। अबहीं जब तक लय भा कयामत नइखे हो जात तब तक अगस्त अइबे करी आ अइसन–अइसन घटना होते रही, जवना से एह महीना के महातिम आगहूँ बढ़त जाई। अगर दुनिया का कलेंडर से अगस्त निकाल दियाव चाहे एक महीना में भइल बातन के अलगा छाँट दियाव त, संसार के इतिहास अधूरा–अधूरा रह जाई। लेकिन अइसन पागलपन केहू कबो ना करी। सृष्टि का साथे–साथे अगस्त के नाँव भी आगे बढ़त रही, एह में कवनो शको–सुबहा नइखे। ●●

गीत

का माँगे अइलऽ

माहेश्वर तिवारी

बतावऽ तनी बाबू
अब का माँगे अइलऽ

बोली दिहलीं
बानी दिहलीं
कुर्सी अउर रजधानी दिहलीं
तू एतना पाइके
काहे दुबरइलऽ ?

सपना हमके
बहुत देखवलऽ
किसिम-किसिम से

तू भरमवलऽ
सब कुछ खाइके
न तनिको अघइलऽ

कइसे अब बिसवास करीं हम
तोहसे कउनो
आस करीं हम
आपन कहल
तू अपने भुलइलऽ

भोजपुरी भाषा के बल-बेंवत

डॉ0 शुकदेव सिंह

भोजपुरी हमार मातृभाषा ह। बाकिर अबले विचार, चिन्तन, लेखन, सोच समझ–मतलब सार्थक अभिव्यक्ति के माध्यम नइखे भइल। एह से सोचे, बोले आ समझे में कवनो ऊँच–खाल होखे त पहिलहीं हथजोरिया बा, विनती बा कि रउआ सभे खाल के ऊँच करलीं, ऊँच के बरोबर। सरिया लीं, बूझ–समझ लीं। विद्वान लोगन के बारे में कहल जाला 'आधा कहे त सरबे बूझे'। एगो बात सुनीं सभे। 'उहां के पाहुर से खरमेटाँव कइलीं आ बेरा भइल त दात–भात, गलगल निबुआ आ तात घीव के बीजे कइलीं।' ई हमार लोकभाषा ह, भोजपुरी ह। खड़ी बोली में, "उन्होंने उपहार से जलपान किया और समय आने पर चावल, दाल, नीबू के अँचार और घी के साथ भोजन किया।" अब रउआ सभे विचार करीं, उपहार त लोटा–गिलास, थरिया–परात, साबुन छूरी–काँटा, साड़ी लूगा कवनो चीज के हो सकेला बाकिर पाहुर लड्डुआ खाजा के होला। जलेबी इमरती भा अवरू कवनो मिठाई के ना होला, कपड़ा लत्ता के बात त दूर बा, बहुते दूर। भोजन के 'बेरा' होला आ खाये वाली चीज 'भात' होला, चाउर ना। 'बीजे' वाली बात त बहुत दूर ले प्रजातीय बा–ऐब्सट्रेक्ट, डाग्मेटिक आ जाति–विश्वास के कवनो अपरिज्ञात, अपरीक्षित विश्वास–श्रृंखला से संबद्ध बा। भोजपुरी वाला वक्तव्य के अनुवाद कठिन बा। खड़ी बोली वाला वक्तव्य कोशगम्य, अनुवाद के दृष्टि से सुकर, व्यवहार–बोध से भरल बा। खड़ी बोली के वक्तव्य के समझे–समझावे खातिर जाति–परंपरा, अतिकालिक अभिव्यक्ति–पद्धति आ पुरादृक् व्यजना–संश्लेष के समझे के जरूरत नइखे। एहसे ए बात के अंदाज लगावल जा सकेला कि लोकभाषा कतना जीवन्त, सार्थक, संश्लिष्ट आ जातिवृत्ति से संवद्ध होले। विचार–व्यवहार के भाषा के ना कवनो क्षेत्र होला ना संस्कृति। ना कवनो संकेत, ना लय, ना ओ में कवनो तीज–त्यौहार, पूजा–पर्व, ऋतुबोध चाहे जातिबोध के तत्व होला। एही से ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही, अंगिका, बज्जिका जइसन जाति संस्कार–संपन्न भाषा होखे चाहे कवनो लोकभाषा होखे, ओहके समझे–समझावे खातिर नृतव्त विद्या (एथ्नोलॉजी) के जरूरत होला। परिनिष्ठित आ विचार–व्यवहार के भाषा के एगो मोट–झोंट ऊपरी रचना होला जवन बहुत आसानी से कोश से समझल जा सकेला। ऊ कवनो क्षेत्र से संबंधित ना होखे। ओमें कवनो गंभीर बात कहल–रचल संभव नइखे। अइसन भाषा संवाद–सुकर होला आ ओकर कार्य प्रायः अन्तर्भाषिक भा वैभाषिक होला। एसे लोकभाषा– चाहे ऊ कवनो लोकभाषा होखे– आ परिनिष्ठित अन्तर्भाषिक दायित्व निबाहे वाली भाषा में कवनो तुलना संभव नइखे। दूनों भाषा के बीचे अस्ति–नास्ति भा नित्य–अनित्य जइसन संबंध स्थापित हो सकेला। एसे तुलनात्मक विवक्ष से हट के समस्या मूलक विवक्षे ठीक होई। लोकभासा आ परिनिष्ठित अन्तर्भाषिक विचार–भाषा के बोले, कहे–सुने पढ़े आ लिखे के समस्या पर बातचीत अधिक सुविधा–संगत होई।

एह के कहे के सुविधा खातिर हिंदी क्षेत्र कहल जा सकेला। एमें कइगो लोकभाषा बोलल जाला। सरकार के भाषा में एके 'क' वर्ग के भाषा कहल जाला।

अइसहीं, हिंदी क्षेत्र के विस्तार एगो दोसरो अन्तर्भाषिक जगत में होला जे के 'ख' वर्ग कहल जाला। फेर, हिंदी के क्षेत्र विस्तार अइसनो दुनिया में बा जहाँ कोश, नाम आख्यात– से कवनो संबंध ना होखे। एसे 'ग' वर्ग के स्तर पर दूनो भाषा के बीच में तुलनात्मक मुद्दा बनावल अउर कठिन बा। धर्म आ भारतीयता के कुछ इकाई जरूर बनी बाकिर ओकर विश्लेषण विद्या प्राणायाम के अलावा अउर का होई? दूसर समस्या ई बा कि 'ख' वर्ग के भाषा जइसे गुजराती, मराठी आदि भा 'ग' वर्ग के भाषा तमिल, तेलूगू आदि के लोक आ बेद मतलब बोली आ मानक दूनो रूप उपलब्ध बा आ दूनों में लिखित आ मौखिक संबंध में काफी जगह बा आ ई समस्या वर्तमानकालिक बा, माने बंगला से लेके तमिल तक–जेतना भाषा बा, कुल्हि में विचार आ चिन्ता के साहित्य लिखे के बड़ी लमहर परम्परा बा। बाकिर ब्रज, अवधी आ मैथिली के साहित्यिक धारा–मतलब विचार आ चिन्ता के साहित्य लिखे के परम्परा–स्थगित आ अधोमुखी बा। ई कुल्हि भाषा, भाषा के ऊँचाई पर चढ़ के बोली के जमीन प उतरल भाषा हई स। भोजपुरी में छिटपुट बात के भावुकता में ना लपेटल जाव त ई बहुत साफ बा कि ई भावरक योग्यता में शुरू से सनल रहल भाषा ह। चिन्तन आ विचार के साहित्य एकर रस सोखले नइखे। लिखित साहित्य के दबाव में एमें कवनो नया तरह के चाक्षुष संप्रेषण चाहे दृश्य विधा के विकास नइखे भइल। एमें श्रुतिपरक तत्व माने वाक् आ श्रुति के तत्व जीवित बा। एसे जब खड़ी बोली जइसन ठस; विचार व्यवहार–चिन्तन, अनुवाद, अधिग्रहण–परिग्रहण के समस्या से संबद्ध भाषा के संगे छानबीन कइल जाई त भोजपुरी नीयर वाक् आ श्रुति में जीवित, अपना श्रुति परम्परा से बरियार भाषा से समस्यामूलक संवाद करे में हमरा नियत नवसिखुआ के सुविधा होई।

आपन बात सरिआवे खातिर सबसे पहिले भोजपुरी आ हिन्दी के मोट–मोट फरक पर ध्यान देबे के चाहीं। एसे कि भोजपुरिया लोग भोजपुरी आ हिन्दी के एके भाषा के दूगो रूप बुझेला। कवनो भीड़ भा विद्यार्थी लोग के क्लास आ सभा में अगर पूछल जाय कि रउआ सभे के मातृभाषा का ह त एके झटका में बहुत लोग बोली कि हिन्दी। फेर पुछाई कि भोजपुरी का ह त उहाँ सभे कहब कि भोजपुरियों मातृभाषा ह। एही से भोजपुरी के समर्थन में कवनो ओइसन आवाज ना उठे जइसन गुजराती, बंगाली आ कबो–कबो मैथिलियों खातिर उठेला। सच ई बा कि भोजपुरी आ हिन्दी में ओतने फरक बा जतना बंगला, गुजराती, मैथिली आ हिन्दी में फरक बा। ई बात दीगर बा कि बंगला, मराठी, गुजराती, भोजपुरी, मैथिली आ तमाम भाषा आ बोलियन में शब्द संसार– क्रियामूल आ संज्ञामूल– में बहुत दूर तक समानता बा। जवन भेद बा तवना कार्य आ व्यवहार, खास तरह के वाक्यवृत्ति में बा। वाक्य–विधान में भोजपुरी में कर्मणि प्रयोग के प्रचुरता होला आ खड़ी बोली तिर्यक विधान में कतरि प्रयोग के 'हमने लड़का देखा, हम लइका देखलीं', 'हमने लड़की देखी', 'हम लइकी देखलीं'– जइसन विभिन्न प्रयोगन में खड़ी बोली में क्रिया कर्त्ता से संचालित होई आ भोजपुरी में कर्म से। ई कवनो आखिरी बात नइखे बाकिर वाक्य–विन्यास के समझे खातिर, भोजपुरी आ हिन्दी के अलग–अलग भाषा–विवेक खातिर एह तत्त्व के ध्यान में राखे के होई।

भोजपुरी में क्रिया के प्रमुखता होला। एकाक्षरी क्रिया–वाक्य भोजपुरी–हिन्दी दूनों मे ंपावल जाला– खास तरह से अनुज्ञा लोट में। भोजपुरी के ई प्रकृति बा, बाकिर खड़ी बोली में वाक्य के लुकाइल हिस्सा के रूप में ई प्रयोग होला। सवाल सोभाव के बा। एके पहचाने खाती संबोधन–प्रक्रिया प ध्यान देबे के होई। भोजपुरी में संबोधन जीवित प्रयोग के भाग ह। 'एहो सुनऽ ताड़ऽ', 'एहो सुनऽ ताड़ू', 'अरे कहाँ लुकाइल बाड़े', 'का रे, सबेरवे से कहँवा घूमत रहले ह' – एह तरह से भोजपुरी में संबोधन जीवित आ उपस्थित होला बाकिर परिनिष्ठित खड़ी बोली में सहज उच्चार–अनुमान में विलुप्त होखल जाता। सुनते हो, सुनती हो, सुबह से कहाँ गायब थे– जइसन बोल में खड़ी बोली हिन्दी संबोधन के छोड़ देले बा। एगो बहुत विशेष बात अवरू ध्यान रखे के होई। ऊ तिर्यक प्रयोग से जुड़ल बा।

खड़ी बोली में वाक्य–संरचना स्पष्ट रूप से दू तरह के होला। एगो के ऋजु आ दुसरका के तिर्यक कहल जाला। खड़ी बोली में जहाँ 'ने, को, से'.... जइसन परसर्ग आ 'का, के, की' जइसन विशेषण निपात लागेला उहाँ प्रयोग तिर्यक हो जाला। आकारान्त शब्दन में ई साफे देखल जा सकेला। लड़का कहता है, लड़के ने कहा। असहीं, लड़के को बुलाओ, लड़के से बात करो– जइसन कुल्हि वाक्यन में 'लड़का' एकवचन के 'लड़के' एकवचन हो जाला। भोजपुरी में तिर्यक जइसन दशा नइखे। लइका जात बा, लइका के खाय द, लइका से बतियावऽ.....। अइसन कुल्हि वाक्यन में, परसर्ग होखे भा ना, ना संज्ञा के तिर्यकीकरण होई, ना अलग से वाक्य बनावे वाला तंत्र के रूप में आई। ई एगो बहुत महत्वपूर्ण

बात बा जवना के ना जनले, भोजपुरिया लोग जब खड़ी बोली लिखेला त ओकर वानक भोजपुरिया हो जाला। 'ने' आ 'ओ' वाक्य खड़ी बोली में बड़ा टेढ़बम्मक होलें स। ई भ्रम मिट जाये के चाहीं कि दूनों भाषा में उक्ति–अभिव्यक्ति–उच्चारण संबंधी कवनो बड़ भेद नइखे।

भोजपुरी संस्कृति–निर्भर, जाति–चेतन, परम्परा व्यस्त भाषा ह– ध्वनि अनुतान के संगे–संगे रीति–रेवाज, पूजा–परब, मेला–ठेला, टोना–टोटका, झाड़–फूंक, अभिचार–कर्म से जुड़ल विश्वास, मतवादी संरचना के ध्यान में रखले बिना भोजपुरी लिखल संभव नइखे। लिखे वाला लोग के नृतत्वशास्त्र से जुड़ल कुछ बात समझे–समझावे के चाहीं। जइसे कविता आ गीत के अभिव्यक्ति के ध्यान में रखल जाव त भोजपुरी में बिना बतवले पता चल जाई कि ई मल्हार ह कि फगुआ, पचरा ह कि सोहर। खाली गवले से बुझा जाला कि बरखा बसन्त, चइता जइसन ऋतु से ए लोग के संबंध बा। हिन्दी में वर्षा आई, आई बसन्त बहार, वर दे वीणा वादिनी आदि स्वशब्दवाच्यता से ई बतावे के परेला कि अमुक कविता अमुक ऋतु, पूजा, विश्वास से संबद्ध बा। खड़ी बोली के अपना निजी परम्परा में एकोगो अइसन कविता ना मिली जवन ऋतु, संस्कार आ अभिचार से संबद्ध होखे। नागार्जुन जइसन कवि जब 'मंत्र' जइसन कविता हिन्दी में लिखेलें त मंत्र के उपहास होला। खड़ी बोली में एको मंत्र ना मिली। बाकिर भोजपुरी में 'हरियर बाँस के लमहर पोर ओ में बइठे हुक्का चोर' बुदबुदइला से चमक के दर्द ओहर जाला। असहीं कुछ बोलला से बिच्छी–कीरा, जर–बोखार–कुल्ह दुख भाग जाला। ई समझ लेबे के बा कि भोजपुरी में मंत्रशक्ति बा। सिद्ध नाथ–सूफी लोग के ई माई ह। खड़ी बोली में गाना, शेर, गजल, सॉनेट, हाइकू तक मिल जाई बाकिर एको मंत्र ना मिली। जवना भाषा में दुख–निवारक तत्व ना होला ओकरा पूरा अभिव्यक्ति–प्रणाली में जाति–चेतन तत्व के अभाव आ मृषा वैदुष्य के बोल भरल रहेला। एकरा खातिर कवनो भाषा के बोले वाला समाज के हजार–हजार बरस कमाई करे के परेला। भोजपुरिहा लोग के विचार–चिन्तन आ लिखावट के संसार में आवत समय जाति–चेतन तत्व, मिथक आ अमूर्तन संबंधी कुल्हि तत्त्वन पर कब्जा होखे के चाहीं, ना त ऊहो लोग बाजार, व्यापार, संपर्क आ राजभाशा जइसन महिमा से मढ़ा त जाई बाकिर संस्कृति–संपन्न ना होखे पाई।

भोजपुरी के कई गो ताकत ठेका, मुहावरा, कहाउत, बहुली, गाली जइसन कुल्हि तत्व होला। भोजपुरिया लोग भाषा के सम्पदा के खूब इस्तेमाल करेला, समझेला। खड़ी बोली में मुहावरा आ लोकोक्ति के प्रयोग धीरे–धीरे कम होत जात बा। ई भाषा कोश–निर्भर भइल जात बा। भोजपुरिया लोक के ई ध्यान रखे के होई कि धीरे–धीरे जब ई भाषा कोश निर्भर होखे लागे त जाति चेतन शब्दन के संग्रह कइल जाय। ई भाषा के मोट पंजी ह, एकर ध्यान रखे के होई आ लोग–बाग के जाति–चेतन शब्द, मुहावरा, लोकोक्ति, बहुली आ कथी, अथू, माने कि, जेबा से जइसन ठेकवनों के सरिआवे के होई आ अभिव्यक्ति प्रणाली पर पड़े वाला एकरा प्रभाव के समझे–समझावे के होई। ना त भोजपुरी खड़ी बोली नियन शब्द–लेख हो जाई। भाषा के अपना प्रथम प्रस्तुति आ उच्चार में 'अर्थ' होखे के चाहीं 'अर्थात्' ना। भोजपुरी 'अर्थ–सम्पन्न' भाषा ह आ खड़ी बोली हिन्दी 'अर्थात्–निर्भर'। एकरा के फतवा मत समझल जाय, गहिर सोच–विचार से समझे के कोशिश कइल जाव।

असहीं समरूप आ समानार्थी शब्द के बार में अवधानता के जरूरत बा। जब कवनो नया शब्द कवनो नया समाज में प्रवेश करेला त देखे के चाहीं कि ओह भाषा में ओ शब्द के ग्राहकता संभव बा कि ना। आज–काल्ह 'हरिजन' शब्द के लेके बड़ा उठा–पटक होत बा, क्रांतिकारी लोग तरह–तरह से जागरूक हो गइल बा। लइकाई में हमहूँ गाँधी जी से बड़ा प्रभावित रहलीं आ बड़ा प्रेम से गाँव के दलित भाई लोगन के हरिजन कहे लगलीं। त गाँव के चनरिका चउधरी अइलन आ कहलन कि बाबू साहेब, "हम उचधरी हईं, पढ़ले–लिखले नइखीं त बेकूफ नइखीं। गाँधी जी सोच समझ के हमनी के हरिजन कहेलन। हरिजन माने हर जोतेवाला जन। बनिहार। ई कवन नया बात बा। बाप–दादा से हर जोते वाला जन–बनिहार हईं जा आ रहब जा। अब त लोग मुस्की काटेला आ कहेला कि चनरिका भइया कांग्रेसी बाभन हवन। खूब बुझाला, रउआ लइका हईं, साफ सुथरा मन बा, हरजन कह के कउँचाई मत।" हम तबे से हरिजन शब्द के छोड़ दिहलीं। जब बाबा साहेब अम्बेदकर पुरस्कार मिलल त केहू भइल आ सरस्वती–वन्दना करे लागल। बड़ा कस के विरोध भइल। एसे ई समझे के होई कि नया शब्द इहाँ तक कि मान–सम्मान व्यवहार से संबंधित शब्दन के स्वीकार के कवनो भाषा में कतना गुंजाइश बा। भोजपुरी के विचार आ चिन्तन के भाषा बनावे के समय बहुत गंभीर होखे के चाहीं, बड़ा सावधान, नाहीं त

भाषा में बिना कमाइल शब्द खसरा नीयर खजुअहट पैदा करिहें सन।

एह बात पर अखेयान कइल जाव कि जब अंग्रेजी सभ्यता के प्रचार भइल प पैण्ट, सर्ट, हैट, बूट, सूट, बास्केट जइसन कपड़ा भारतीय समाज में जगह बनावे लगलन स। भोजपुरी जनपद में सबसे पहिले विरोध भइल आ चमरनेटुआ के नाच में लबार लोग ई कपड़ा पहिन के कूदे–फाने लागल। एसे वस्त्र संस्कृति प विदेशी असर थथमल, बबड़ी, मूंडल मोंछ, सलवार–कमीज, सुथना–सुथनी के आवे में देर लागल। ई तब्बे संभव भइल तब भोजपुरी प्रदेश पर से भोजपुरी के सांस्कृतिक प्रभाव, पारम्परिक दाब कम भइल। भोजपुरी के जवन अवरोधक ताकत बा ओकरा के ध्यान में ना राखले ऊहो खड़ी बोली मतिन संस्कृति–दुर्बल आ संस्कृत–निर्भर भाषा हो जाई।

भोजपुरी जीवन के चर्चा आइल बा त भोजपुरी के लोकजीवन आ लोक भाषा–शक्ति के बारे में कुछ बातचीत जरूरी बा। लोकशक्ति के समझे खातिर ई देखे के होई कि भोजपुरी के आपन निठाह ताकत, उच्चार आ शब्द–शक्ति का बा। एगो–दूगो मोट बात सुनल जाय। भोजपुरी में चिट्ठी–पत्री, गाँव–गिराँव, घर–दुआर जइसन एकार्थी शब्दन के जोड़ा के इस्तेमाल होला। ऊपर से कवनो खास बात नइखे। बाकिर ध्यान से देखल जाय त चिट्ठी भोजपुरी के आपन शब्द ह। एही वजन प एगो अवरू शब्द चलेला 'पाती'। चिट्ठी त निठाह देशज समृद्धि से संपन्न भइल बा, पत्र–पत्री आ पाती ए चार शब्दन में लिखित चीज के कवनो संकेत नइखे। पत्र, आम्रपत्र, प्रेमपत्र के अन्तर जब समझावे के होई त गैर भोजपुरी छात्र के सामने मुँह बवा जाई। उहाँ सबके त लेटर, माने अक्षर, के अर्थ फैला के लिखित चीज के भीरी सट जाला। बाकिर 'मैन आफ लेटर्स' आ 'लव लेटर्स' के फरक समझावे में उहों सबके मुँह बवा जाला। असल में पत्र चाहे पल्लव, लता, वृक्ष के अंश विशेष खातिर आवे चाहे ओही के मेल–जोल वाला छाल, भोजपत्र भा कागज खातिर–लिखित सामग्री के कवनो अभिप्राय पत्र–पत्री में ना आवे। 'पाती' शब्द त घिस–घिसा के अपना तद्भव आचरण के चलते चिट्ठी के नियरा पहुँच गइल बा। असहीं 'गिराँव' के माने होला गाँव के आसपास वाला इलाका भा गाँव। एकरा खातिर खड़ी बोली में कवनो ठीक–ठीक शब्द नइखे। असहीं घर–दुआर के भोजपुरी में रुधल अर्थ बा। घर माने जनाना लोग के रहे के जगह, दुआर माने मर्दाना लोग के बइठका। अब चिट्ठी, गिराँव, दुआर जइसन शब्द कबो अपना देशज का तद्भव आचरण में आ कबो अवरू तरह के दबाव से अइसन आर्थी प्रक्रिया में ढल जालन स कि ऊ भाषा विशेष के ताकत हो जालन स। ए से बहुत ध्यान दे के भोजपुरी में ऊपर–ऊपर निरर्थ, आनोमोटोपई शब्दन के जान आ जांगर के बहुत सावधानी से पता लगावे के होई। अइसन संस्कृति–सम्पन्न आ प्रयोग–सिद्ध शब्द भोजपुरी के ताकत बढ़इहें स। अइसन कुल्ह शब्दन के बटोरे के चाहीं आ संस्कृत, अंग्रेजी से शब्द के बायन बटोरे से बेहतर बा कि अपना शब्दन के इस्तेमाल कइल जाय।

असहीं कबो–कबो परिमार्जनों के अपनावे के होला। संस्कृत में स्वार्थिक प्रत्यय से भूषित शब्दन के प्रयोग होला, बहुत विरल रूप से होला। ओके व्याकरणिक सम्मान ना मिलेला। खड़ी बोली के आधारभूत जतना भाशा बा, बुंदेली, ब्रज, अवधी, भोजपुरी आदि आ असहीं खड़ी बोली के प्रचार के साथे अंग्रेजी, बंगला, गुजराती बोले वाला लोग के लिखला पढ़ला पर ए भाषा बोली के स्रोतो से बहुत शब्द आ शब्दार्थ खड़ी बोली में आवेला। बाकिर खड़ी बोली के प्रतिमानीकरण में स्वार्थिक प्रत्यय आ ओकर उच्चार कई गो स्तर पर छूट जाला। भोजपुरी में 'वा' आ 'या' जइसन स्वार्थिक प्रत्यय के प्रयोग बहुत बा। घरिलवा, घरवा, बपवा, बेटवा, बकरिया, हथिया– माने पूरा नामिक संरचना प स्वार्थिक प्रत्यय लोग के चाँपि चढ़ले रहेला। ए लोग के छोड़े के होई। थरिया, बाल्टी, नदी जइसन निठाह शब्दन के प्रयोग बढ़ावे के होई जेसे भोजपुरी के सीमा पार कइला प स्वार्थिक प्रत्ययन के अव्याकरणिक अपरिनिष्ठित स्थिति के चलते संज्ञाहनन के ठीक–ठीक राह मिले। बाकिर एगो बात समझ लेवे के होई। जहाँ स्वार्थिक प्रत्यय लोग अर्थकारी बा ओइजा ना छोड़े के होई। ऊहाँ ऊ भोजपुरी के बजरंग बल ह। जइसे संस्कृत 'वत्स' से भोजपुरी बच्चा, बछड़ा बचना, बुच्चा, बुच्ची जइसन कइगो शब्द बनेलन स। बच्चा केहू के बाकिर बछड़ा गाय के। बछेड़ा, घोड़ा के। बचना बरकी के। अइसन निहितार्थ धइले शब्द बाड़न स कि एहिजा चाहे अइसन जगह प स्वार्थिक प्रत्यय के अंगीकार करे के होई। बुच्चा–बुच्ची में निठाह लध्वर्थक संसक्ति के उठान बा। ए से एहू के छोड़ला से काम ना चली। कुछ संबोधन के निपटा लेहल जाय। राजा, हीरा, सोना, जियरा, करेजऊ–अइसन अनुरक्तिमूलक शब्द तरह–तरह के छाया में इस्तेमाल होले स। ई शब्द धीरे–धीरे अभिव्यक्ति के अनुषंग पकड़ लेले बाड़न स।

इन्हनी के इस्तेमाल करे के होई। एइजा गारियो गुप्ता वाला शब्दन के देखल जाय। भोजपुरी में संबंध आ रिश्ता से जुड़ल शब्दन के भण्डार बा–सास, सरहज, जेठसर, नाना–ननिआउर, मामा–ममिआउत, आजी–अजिया सास. ..। अइसन सैकड़न शब्द भोजपुरी शब्द–संसार के संपन्न कइले बा। ई लोग जान ह। एही लोग के बीच से बनेला सार, सरहज, साली, ससुर–ई चार गो अइसन शब्द बा कि साथी–संघतिया, गाय–बछरू, बादर–बरसात, दुश्मन–नोकर केहू के प्रेमपूर्वक स्मरण के कामे आवेला। ए शब्दन के सरिया के बटोरे के होई चाहे कवनो सार के नीक लागे भा ना। भोजपुरी ताकत के रूप में एके इस्तेमाल करेके होई।

असहीं एगो बहुत महत्वपूर्ण शब्द पर ध्यान देबे के जरूरत बा। जूठ–काँठ। जूठ से जुठारलो शब्द बनेला। संस्कृत में एकर मूलरूप 'उच्छिष्ट' के अर्थ होला–छोड़ल। रउवा सब के आश्चर्य होई बाकी जूठ एगो प्रत्यय ह। ई हिन्दुस्तान के अलावा अवरू कहीं मिलबो ना करी। अपनो देश में मुस्लिम भाई लोग किहाँ जूठ के कवनो विशद प्रतयय नइखे। गाय, गोबर, स्त्री के पवित्रता के साथे ई जूठो एगो विचित्र हिन्दू प्रत्यय ह। ए चारों के बहुत मतवादी आधार बा ओसहीं जइसे अपना प्रिय से प्रिय व्यक्ति के मूँगइला पर उलट–पुलट के फूँकल। एकरा पीछे दर्शन, मूल्य जाति–विश्वास–तमाम तरह के रहस्य आ जातिगत तत्व काम करेलन स। एकरा के ठीक–ठीक समझे के होई। अइसन तमाम शब्दन के बड़ा सावधानी से बचावे के होई। ए से हमरा राय में विश्वासपरक शब्दावली पर मेहनत से काम करे के चाहीं। काहे कि कयदा, कानून, होटल, जिनगी के बाजारूपन के विकास में पात्र, कुपात्र, महापात्र जइसन कई गो रूढ़ के समापन हो गइल बा। कब्बो भोजपुरी इलाका के जीवन से ई शब्दन के संबंध रहे। परम पवित्र सतुआ, खानपान संबंधी शुचिता के विश्वास रक्षक रहलन। अब उनुको भाव बढ़ गइल बा। एही सिलसिला में खानन के शब्दावली दाना, बहुरी, ढुंढा, ठेकुआ, पूआ, फुटेहरी, उल्टा, पिठौरी, लिट्टी, बाटी, चोखा, कचवनिया, मेथी, सोंठौरा, अछवानी, मोछी, परेह, फुलौरा, अदौरी–तिसौरी–फुलौरी जइसन शब्दन के सहेज के इस्तेमाल करे के चाहीं। एह शब्दन के संख्या बढ़ावे से कुछ खधोर लोग के पेट में मूँस कूदे लागी, एसे अतने संकेत काफी बा।

ई बात फेर–फेर दोहरावे के जरूरत नइखे कि जाति शब्द आ पेशा शब्द के बटोरे–बचावे के चाहीं। लोहार, कँहार, सुनार, डोम, दुसाध, धोबी, हलखोर–जइसन सैकड़न जाति लोग के पेशा शब्दावली के संसार बहुत बड़ बा। असहीं निषेध, नकार, थूक–डकार, इन्द्रिय विकास से संबंधित खोंट, कींची, पोंटा, खखार–तमाम चेतन इन्द्रिय के मल–संबंधी शब्द आ ओसे बनल मुहावरा के संग्रह होखे के चाहीं। सभ्यता के दबाव में अइसने शब्दन के निष्कासन होला। एके बचावे के होई ना त भोजपुरी के आपन ठेठ प्रकृति लिखित भाषा में ओसहीं अनुपस्थित हो जाई जइसे खड़ी बोली में। खड़ी बोली में एको लाइन अइसन ना मिली जवन जाति, क्षेत्र, ऋतु, विश्वास, अभिचार के संकेतक होखे, वाचक भले मिल जइहें स। भोजपुरी के सांकेतिकता बनवले राखे खातिर ओकर ठेठ अघोर चरित्र के बचवले राखे के होई। सतिबाड़, मनियारा साँप, करइता, मनसा, फेंकरे वाली सियारिन–तमाम तरह के रहस्यात्मक ढाँचा रहे। आदमी के जोड़े, बटोरे खातिर जीवित संसार के सामान्तर एगो अदृश्य संसार के रचना कइल गइल बा। एमें लय, मंत्र, विश्वास–तमाम अइसन तत्व बाड़े स जवना से आदमी के आदमी में विश्वास बढ़े, ओकरा पत्थर–पेड़ के उजारे में डर लागो। वनस्पति संरक्षक ताल–तलैया से संबंधित सावधानी, अमुक जगह पेशाब करत जिन पकड़ ली, अमुक जगह थुकबा त दँइत दबोच ली–एगो सँउसे दुनिया बा, अदृश्य, धीरे–धीरे ई दुनिया अनुपस्थित हो रहल बा। कहे के मतलब ई नइखे कि ओह दुनिया के अपने सभे बचाईं। बाकिर एह अदृश्य संसार के स्मृति भाषा में रहे के चाहीं। ओसहीं एकर जरूरत बा पइसे पुरान के मिथक के कवनो जाति समाज के समझे–बूझे में जरूरत होला।

भोजपुरी हमनी के भाव–भगति, प्रेम आ विश्वास के भाषा ह। एकर बोलल कम होता, ए के बढ़ावे के होई। केहू–केहू कहेला कि जे खड़ी बोली में स्थापित ना होला ऊ भोजपुरी में उतर आवेला। श्रेष्ठ साहित्य लिख के एह खराब बात के जबाब देबे के होई। पं. रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय जइसन निबन्धकार, आलोचक भोजपुरी इलाका में पैदा होले। भारतेन्दु, प्रेमचन्द, प्रसाद, धूमिल– एही इलाका के हउवन, ई लोग खड़ी बोली में लिखले बा। भोजपुरी में इन्हन लोग नियन लिख के, ए लोग के बरोबर आवे के होई, जरूरत पड़े त ए लोग के तोपे के होई। तब भोजपुरी के लोकशक्ति, लोकभाषा शक्ति के सही–सार्थक रूप सामने आई। ई एगो सपना ह, रउआ सभे देखीं देखाईं, एकरा के सभ में उतार लीं। ●●

❑ साभार – 'समकालीन भोज० साहित्य'

सुभाव

महेश्वराचार्य

लोमड़ी खातिर त अंगूर खाटा आ बेसवाद के होइबे करेला। सुग्गा कहस कि उनका नरियर के सवाद भेंटा गइल त का ई माने के बात बा? कउआ खातिर जइसन काँच सिरीफल ओइसन पाकल सिरीफल। छूछूनर के कपार प जो चमेली के तेल बोथ दीहल जाइ त ओह से का फायदा? कहल बा जे बानर का जानस अदरख के सवाद? आ सभके ऊपर ई कि 'जार को विचार कहा, गनिक को जाल कहा, गदहा को पान कहा, आँधरे को आरसी।' ठीक ऊहे हाल बूझीं– 'भैंस के आगे बीन बजाओ भैंस रहे पगुराय।'

जे फरके से घाव घाव कइले बा कि दुनिया में कुछुओ नइखे, दुनिया झूठ ह, ऊ दुनिया के का बूझी? आ ऊहो का बूझी जे भर हीक दुनिया के उपभोग ना कइल? ऊ त कहबे करी कि 'बुझै न काम अगिनि।' अइसने आदमी आगा चल के जिनगी में कराहे लागी 'मेरो मन हरि हठ न तजै'। अब हरि का करिहें? काहे ना मेहरारू के ऊ धिरकारल बरदास्त रउरा कइ लेलीं आ विषय के हद दरजा तकले भोग लेलीं। पुरहर भोग से त नफरत हो जाला। तृप्ति के के पूछो? छुछुमाह मिलला प नफरत ना होखे। ओह से त लालसा बढ़ले जाला।

जे कबहीं जिनगी में रसगुल्ले नइखे खइले ऊ रसगुल्ला देखते ओह प टूट परी भा ओकरा मुँह में पानी भर जाई। ढेर सम्भव बा कि अइसना अतृप्त आत्मा का आगा मरे के बेरा रसगुल्ले नाचे लागे। जिनगी के शान्तिमय, सुखमय बनावे खातिर जरूरत बा भरपूर भोग के। अर्जुन के जिनगी अतना भरपूर बा कि उनका आगा उर्वशी आवत बिया त ओकरा उलटा लवट जायेके परत बा आ बाल ब्रह्मचारी श्रृंगी दुनिया से अतना दूर बाड़े कि महज अयोध्या के कुछ युवतियन पर निछावर हो जात बाड़े। आखिरकार उनका शान्ते से जिनगी में शान्ति मिलत बा। भोग से योग में गइले त उचिते भइल, बाकिर व्यतिक्रम भइल योग से भोग में आइल।

अइसन सियारो के कवनो तारीफ नइखे जे फेन फेन तरकुल तर नइखे जात जहँवा ओकरा एह हाली ठेस लाग गइल बा। दूध से मुँह जरते केहू मठो फूँक के पिये लागे त एकरा के मूर्खते कहल जाई। दूध दोसर चीज ह, माठा दोसर। बुद्धिमानी आ चतुराई एह में बा कि दूनों के अलग अलग पहचान लिहल जाइ। तब ओकरा मोताबिक ओकर इस्तमाल भा उपभोग कइल जाउ। दुनिया के हर पदार्थ के अलग अलग पहचानल आ ओकर उपयोग कइल आदमी क धर्म ह। आदमी के सभसे बड़हन धर्म त केहू आदमी के ठीक ठीक पहचान कइल हऽ। आदमी के फोटो भइला से त केहू आदमी ना हो जाई जबतकले ओकर आदमीयत के कर्म के नमूना नइखे मिल जात।

आज जतना ले परेशानी उलझन आ अशान्ति बढ़ गइल बा, ओकर जड़ बा मानव चरित्र के गलतफहमी, मानव हृदय के भ्रान्ति। आदमी दोसरा के हृदय, चरित्र आ सुभाव पूरा पूरा परख नइखे पावत, जेह से ओकर भ्रान्ति दुःख मिटत नइखे, बलुक बढ़ले जाला। जे आज कवनो अच्छा काम कइ देता ओकरा के अच्छा कह दिआता आ

काल्ह खराब काम करत बा त ओकरा के खराब कह दिआता। केहू के चरित्र के आज काल्ह के कसौटी प नइखे कसल जा सकत। चरित्र के मूल्यांकन करे खातिर समूचा जिनगी के कर्म के देखे के परी आ ओह में अच्छा बुरा के हिसाब लगाबे के परी। तब जाके उपसंहार लिखे के परी। त ऊ होई मानव चरित्र के सही मूल्यांकन।

एह बीहड़ दुनिया में बड़े बड़े बीहड़ आदमी भरल परल बाड़े। ओह सभ लोग के बूझल समुझल आसान काम नइखे। एगो कहनी कहल जाला। एगो साधु रहले। ऊ एगो चूहा रखले रहले। चूहवा के बिलार डेरावे लागल। तब ऊ ओकरा के बिलार बना देले। बिलार भइला के बाद ओकरा कुकुर से डर लागे लागल। तब साधु ओकरा के कुकुर बना देले। अब कुकुर के सिंह भयभीत करे लागता। साधु ओकरा के कुकुर से सिंह बना देले। सिंह बन के ऊ चूहा साधुए प झपटल। तब साधु फेनु ओकरा के 'पुनर्मूषिको भव' कह देले। दुनिया में दुष्ट प्रवृत्ति के आदमी के तरक्किओ दीहल खतरनाके बा।

जे समरथ बा ऊ त बाघ आ बकरी के एके घाट प पानी पिआवत बा। साँप आ नेउरो के ऊ लड़ाई रोक देत बा। बाकिर आम आदमी का करिहें। एगो के अच्छा भइला से त दुनिया अच्छा नइखे हो सकत। ना एके प दुनिया चल सकत बा। हँ, आदमी आदमी जो अपना के सुधार ले आ अपना में शक्ति पैदा कइले त कवनो फेन दोसर कारण नइखे कि ई दुनिया स्वर्ग ना बन जाय। उपदेश आ उपदेशक के केवना जरूरते ना परे। कुछ अइसन बुझाता कि उपदेश के मारे दुनिया बिगरल जाता आ भलाई कइला से बुराई हाथे लागत बा। सज्जन बनला से दुर्जन लोग बढ़ल जाता। ●●

चिरइया हो...

इन्द्र कुमार दीक्षित

चुनि चुनि खर-पात,खोंतवा बनवलू
चिरइया हो काहें पिजरा में अइलू।।

छोट छोट पँखियन से नपलू अकसवा
उड़ि उड़ि धँगरेलू पुलुई परोसवा ।।
कौने करनवा से एतना लोभइलू ।।
चिरइया काँहे पिजरा में अइलू ।।

एक ठो चिड़वना से प्रीति अस लागल
जहाँ जहाँ गइलू तू उहो चले भागल।।
कहेला कि 'मनवाँ में असरा जगवलू'।।
चिरइया हो काँहे पिजरा में अइलू।।

चिड़वा के संगे-साथे कुछु दिन बीतल
संग-संग जिनिगी के हारल आ जीतल
सेइ-सेइ अण्डन के बचवा बनवलू
चिरइया हो काहें पिजरा में अइलू।।

बढ़ि गइल मोह माया केहुए ना जानी
बचवन के खातिर जुटाव दाना पानी।।
उनुके सेयान कइके अपने उजरलू।।
चिरइया हो काँहे पिजरा में अइलू।।

एक दिन बगइचा में आइल बहेलिया
कुछुचारा छींटिकेबिछादिहलसि जलिया
दनवन के ललचे तू जाल में धरइलू।।
चिरइया हो काहें पिजरा में अइलू ।।

❑ मुंसिफ कालोनी, रामनाथ देवरिया(उत्तरी) देवरिया।

इमली के बीया

✍ विद्यानिवास मिश्र

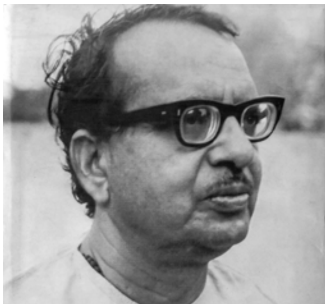

लइकाईं के एक ठे बात मनपेरला त एक ओर हँसी आवेला आ दूसरे ओर मन उदास हो जाला। अब त शायद ई बात कवनो सपना लेखा बुझाय कि गाँवन में जजमानी के अइसन पक्का व्यवस्था रहे कि एक जाति के दूसर जाति से संबंध ऊँच–नीच प कायम ना रहे, रुपया–पइसा के लेन–देन पर ना– ओ व्यवस्था में सभकर सब प हक रहे आ केहू ओमें दखल ना दे सकै। बियाहे, में जनेवे में, बाँसे के छितनी, बाँसे क डाल बनावे वाला धरिकार बसै। ओनहन के जजमानी बँटल रहै। जवन गाँव ओनके जजमानी के रहै ऊ गाँव उनुकर गाँव हो जाय, ओही किसिम के मिल्कियत ऊ मानैं। एक बेर अइसन भयल कि हमरे गाँव के जममानी वाला धरिकार हमरे लगे आयल। बोलल कि बाबू एक ठे कागज बनाय दें हम ई गाँव पाँच बरिस खातिर बन्धक रखल चाहऽतानी; पाँच रुपया में। हमरा बड़ा किरोध आइल कि ई कवन गाँव के बंधक रखे वाला! त बोलल कि बाबू गाँव पर सबकर आपन हक होला, हम आपन हकवे नूं बंधक राखऽतानी दोसर आपन हक रखो, हमके कवनो गुरेज नाईं बा। खैर कागज बना देहलीं, ऊ गाँव बन्हकी रखलैं, कब छोड़वलैं भगवान जानैं। तब त हँसी आइल, आज सोचीले त मन उदास हो जाला कि का हम अपने गाँव ओ हक के दावा क सकींले? जवने गाँव में पैदा भइलीं, जवने गाँव के पानी पियलीं, जवने गाँव के बयार साँसे में भरल, जवने के धूरमाटी में बड़ भइलीं, जवने के आमे के बगइचा में जेठ के लहकारत लुक्कड़ के कुच्छू नाईं बुझलीं ओह गाँव के का हम आपन कह सकींले? बरिस क बरिस बीत जाला ओ गाँव में जाय के मौका न लागेला। कइसे कहीं ऊ गाँव हमार ह आ ईहो कइसे कहीं कि ऊ गाँव हमार ना ह। ओ गाँव के लोगन के जवन प्यार–दुलार–आदर मिलल बा– कइसे कहीं कि ऊ प्यार–दुलार–आदर हम ना हईं।

राप्ती नदी के कछारे में बसल गाँव, नगीच से नगीच सड़क–तीन कोस, आज काल्ह के नाप–जोख में 10 कि0मी0 लामे, नगीच से नगीच रेलवे स्टेशन–पाँच कोस माने लगभग सोरह किलोमीटर लामे, गाँव के पछिम ओर एक कोस प राप्ती नदी आ पुरुब ओर एतने दूरी पर गोर्रा, राप्तिए नदी से निकलल एक ठो शाखा। बाढ़ आवे त दूनो नदिया एक हो जाय। अपने गाँव के गैंड़ा नाव लागे, ऊहे सड़क ले चलि जाय। बाग–बगइचा सब पानी में डूबि जाय, बाढ़ि निकल जाय त अइसन पानी खेतन में आवे कि खाद दिहले के जरूरते ना रहि जाय। ऊपर ऊपरे अनाज छींट दें त ऊ छतियाफार उपजे। बाढ़ तब एक साल आँतर देके आवे। जवना साल ना आवे तवने साल रहर अइसन उपजे कि ओ में गाइ–भँइस त लुकाइए जाय छोट–मोट हथियो लुका जाय। कछारा में रहरी–रहरी अदमी कोसन चल जाय पते ना लागे। गाँव के पुरुब ओर आमे के बगइचा रहल। सबसे छोर प हमरे घर के बाग रहल। सज्जी बिज्जू आम रहल आ बड़ा पुरान। चिनियवा आम फरे त गाड़ी के गाड़ी आमे आम, करियवा में आम कम आवे, बड़ा मोट ओकर छिलका रहे बाकिर रस बड़ा गाढ़ रहे। जरलहवा आम बड़वर रहे, आधा बिजली लगले से झुराइल रहे आ ओकरे नाते ओकर अजबे सवाद रहे।

मिठवा गोपुली एक जड़ में दू आम रहल। एक ठो आम रहल जवन कच्चे मीठ रहे आ पाके त ओमें कीड़ा पर जाय आ एक ठो मुदियवा आम रहे, छोटे छोटे होखे आ कठेसे होखे बाकिर बहुते मीठ। कवनो के सवाद दोसरे के सवाद से ना मिले। गाँवो के ईहे हिसाब रहे। केहू के गुण दोसरे में ना मिले, गुण अलगे, चेहरो अलग, सुभावो अलगे, चलियो अलगे। ओ बगइचा के बीच में एगो पीपरे के पेड़ रहे ओके घंटहवा पीपर कहल जाय आ ओके नीचे जात से लरिका सब डेरायँ। ओही बगइचा से होके प्राइमरी स्कूल में जाय के रहे। प्राइमरी स्कूल दोसरे गाँव में रहे ओके बीचे मरगा नाला रहे, बाढ़ में ऊहे नदी हो जाय। कम पानी रहे त केकरो कान्हे प, ना त लकड़ी जोड़ के नाय बना के पार कइल जाय। पता ना कहाँ के जलकुंभी आ गइल कि सुखा गइल ना त तनी–मनी पानी गर्मियों में रहे। ओही मरगवा के सटले तीन–तीन गाँव रहे। दखिन सीवान पर गोपलापुर, पछिम सीवान प दुलारी आ कोनाहे पछिम उत्तर दीवाँ आ दक्खिन के ओर कोनाहे डुमरी।

हमार गाँव सबके बीच में रहे आ सबसे तनी ऊँचो रहे। हमरे गाँव में सबसे नीमन बात ई रहे कि सब जाति आ व्यवसाय के लोग रहल। पाँच घर बढ़ई, चार घर लोहार, चार घर नाऊ, पाँच घर दखिनहवा चमार, एक घर चमड़ा क काम वाला चमार, तीन घर तेली, पाँच घर कलवार, तीन घर कोंहार, तीन घर माली, दू घर लाला, दू घर सकलदीपी बाह्मन, एक घर पुरोहित, सबसे ढेर घर अहीरन के, मलाहन के आ मुड़ेरी लोगन के। मुड़ेरी लोग अधिकतर बंगाल में, असम में नाय चलावे, तिजारती बड़की–बड़की नाय। होली के अरीब करीब घरे आवें आ जतना दिन गर्मी रहे ओतना दिन ओनहन के बंगाल, असाम के जादू के खीसा गाँव के बयारि में लहरात रहै। उनके घर के मेहरारू कुटनी–पिसनी के काम करैं। ओमें से एक मेहरारू आन्हर रहल। हमरी घरे आवे आ चाकी प दाल दरै, पिसान पीसे आ कबो–कबो हमन के कथो कहनी सुनावे। बिना केकरो मदद के ऊ चलि आवे। हमरे घरे हरवाह, मलाह, रहत रहलन भा चमार रहलन बाकी सिलवाह त सुखई रहले, उनके पहिले उनके बाप रहले दुल्हर। सुखई काका के बड़ी खेत रहे। ऊ बाहर के बखार से महीने–महीने खोराकी में अनाज लें आ बड़ा अधिकार से हिसाब माँगे। हमरे घर के पिछवारे बढ़ई के घर रहे। ओ में से हरबंस हमरा साथे पढ़तो रहले। पछिम ओर कोंहारे के घर रहल ओं में से रघुनन्नन कोंहार हमरा साथे रहले। उत्तर के घर सुन्नर लोहार के रहल ओ घरे के मटेल्हू के माई के हमरे घर में बड़ा दखल रहे। हर काज परोजन में ऊहे पतुकी, घइली, कोसा, कसरा बना के दें। दिया–दियारी में दिया बना के दें हमहन के, माटी के जाँता–जाँती– छोट मोट गाड़ी बना के दें आ खूब लड़ें। बियाहे–उयाहे में मड़वा में हाथी रखाय। ओ प कलसा रखाय। अपना पतोह के आगे क के ऊ जब हाथी कलसा ले के आवें त ओके परिछन होवे आ ओ परिछन में ओके नखरा देखे लायक रहे।

हमरे घरे के उत्तर ओर बिरजू अहीर के भाई बंद रहैं। एक कोना में सरनाम–बिसराम रहले। ओकरा सटले मलाहे के घर रहे। ओमें एगो सोखा रहले बिरजू। ऊहो हमार हरवाह। उनकर चार भाई में एगो टहल रहले। टहल बहू आ बिसराम बहू में दिन के आँतर भले पर जाय बाकी सबेरे–सबेरे संवाद शुरू होखे त दतुअन मुँहे में रह जाय आ गारी–सराप के कवनो कोटि बाकी न रह जाय। दूनों जने अपने अपने घरे के छोर तक आ जायँ। ना कबो हाथापाई भइल ना झोंटा झोंटउअल खाली गारी–संग्राम होखो आ जब दूनो थकि जायँ तब उनकर दतुअन पूरा होखे। हमार दादा पूजा करे बइठें आ महाभारत शुरू होय त कहैं कि अब शास्त्रार्थ शुरू हो गयल। बिरजू अहीर के एक लड़िका बलराज आ फिर दू लड़का दिलराज लखराज। दिलराज कुछ दिन ले हमरे घरे नौकरो रहले आ लालटेन बुतावे के होखे त ऊ बजाय बाती नीचे करे के मुँहे से फूँक के बुतावल चाहैं। ऊ रंगून कमाय गइलें ओही जा अलोप हो गइलें। एसे उनुकर माई लखराज के माई के नाव से जालन जाय लगली। ऊ हमरा मतारी के सखी रहली। लखराजो संसार से चल गइले। उनके एक ठे बेटी रहल ऊ हमरा दीदी के सखी रहे। लखराज के माई के ई नियम रहे कि हम छुट्टी पें आईं त बढ़िया दही जमा के ले आवें। काजो परोजन में ऊहे दही जमावें। उनुकर हथौटी दी जमावे में मशहूर रहल। उनुकर जमावल दही के सवाद अबहीं ले जीभे में लागल बा, कवनो दही ओकरे आगे नीक ना लागे। हमरे घर के पुरुब शिवधनी अहीर के घर रहे आ दूनो के बीच में डीह बाबा रहले जिनकर पूजा दुखहरन चमार करें। उनुकर डफली आ तासा के बिना कवनो शुभ कार्य होय ना। उनके बेटा हमरे ईहाँ बाद में हर चलावत रहले आ उनुके घर के रमेश बहूत सउरी में धगड़िन के काम करत रहल। हमार जनम उनहीं का हाथ भइल। तब छट्ठी ले त ऊहे चमाइन सउर सम्हारै ओकरे बाद नाउन सम्हारैं। हमार नाऊ रहले जगरोपन। बड़ा सोझवा। ऊ जतने सोझवा, उनुकर मेहरारू ओतने

मुँह के तेज आ रोअनी। हमार जनम खिचड़ी के दिने भइल रहे आ ओ साल बाढ़ अइले के नाते तनी–मनी अकाले के स्थिति रहल। आधा गाँव खिचड़ी बनल– हमरे जनम में जवन पइसा लुटावल गइल ओही से। गाँव में लोग के हमरे ऊपर प्यार बहुत रहल। गाँव भर में हम बाबू कहल जाईं। अधिक उमर वाली लरिका मानैं आ उनुकर पतोह चाहे कतनो सेयान होखैं देवरे मानैं। हम साते आठ बरिस के रहलीं तबे देवर मानके अइस चुहुल करैं कि हम लजा जाईं। ओमें कई ठे त बहुत ढीठ रहली। हम चार साल के रहलीं कि नागपचैया के दिने शिवधनी बहू पँचरंगी पहिर के निकलली। हम बाबा से कहली कि एही से आपन बियाह करब। बाबा कहलें कि कुजात हो जइबऽ। हम जिद पकड़लीं त शिवधनी कहले कि अच्छा भाई आज से ई तहरे मेहरारू भइल। ऊ मेहरारू का भइल आफत हो गइल। हम पढ़े जाईं ओही रास्ता से त ऊ अपना लइकन के ललकारैं देखऽ तहार दादा जा तारैं। हम तेजी से भाग जाईं। ओ लरिकाई के भूल के खामियाजा जले हम पढ़त रहली– हाईस्कूल, इण्टर में– तले भरलीं। हम ए गोपी–प्रसंग के गोपन राखल चाहीं जवना के ऊ उघार दे। हम के बड़ा संकोच होखे। हमार बियाह भइल त शिवधनी बहू दही लेके अइली। हमरा पत्नी से भेंट भइल त कहली देखीं रउए हमार लहुरी सौतिन हईं। फेर लाज–संकोच चल गइल आ एक सहज हँसी मजाक बन गइल।

गाँव के नाव काहें पकड़डीहा पड़ल एकर हमरा कवनो जानकारी त ना बा बाकिर गाँव के दखिन एगो पकड़ी के पेड़ रहल। कबो शायद बड़वर रहल होई। ओही जा हमार खरिहान रहल, ओकरे दखिन काली माई के थान रहल। जइसन सज्जी जगह होला ओहिजो कवनो मूर्ति ना रहल। खाली माटी के हाथी घोड़ा बदलल जाले साले साल, जवन उनके सवारी के बोध करावेले। कुआर चइत में फूले के रथ चढ़ावल जाला। मालिए लोग के काम ह ई। केहू के बियाह–शादी पड़े त काली माई के थाने गइल जरूरी। काली माई, डीह बाबा, बरम बाबा हर गाँव में रहले आ उनुकर थाने के पूजा होला ओइजा कवनो मूर्ति ना होखे। हमरे गाँव में कवनो जमाने में बीर बाबा रहले। माने यक्ष के पूजा होत रहल– हमार एगो खेत रहे बरेतर नाम के उहाँ एगो बरगद के पेड़ रहे। ओही बरगद के नीचे बीर बाबा के थान रहे। खीसा कहानी में लोग उनके नाम इयाद करे। बाकिर ऊ पेड़ हमरा बचपने में खाली यादगार बन गइल रहे।

जवने घर में हमार पैदाइस भइल ऊ कच्चा रहे। ओकर बहुत सपना अइसन इयाद रह गइल बा। खाली एक प्रसंग अबहीं ले इयाद बा। शायद हमरे मन प परल पहली छाप ह ऊ। हम ढाई–तीन बरिस के रहल होब। पच्छिम ओर दलान रहे। ओही दलान में भाई बहिन अधपाकल फरुही (इमली) खइलीं। हमसे ओकर बीया घोंटा गइल। हमरे दीदी के चिन्ता भइल कि इमली खइले सब रोकेला, एके बतवलो ना जा सकेला आ ई बियवा जामी त का होई। कई महीना ले ओ बियवा के अँखुअइले के अनेसा बनल रहल। बियवा नाईं जामल कहीं भितरे भीतर ऊ अइसने किसिम के पेड़ बन गइल। जेके बारे में बतावल बहुत मुश्किल बा। हम गाँवे में ना रहींले बाकिर ओही पेड़वा के करने गाँव हमरे भीतर रहेला। ओ पेड़वा के सोर बहुत नीचे चल गइल बा, भीतर बहुत गहिरे चल गइल बा।

आज लोग कहले प पतियाई नाईं कि पिछड़लो कहाये वाला गाँव अइसन मेल–जोल के गाँव हो सकेला जइसन हम देखले हईं। ई नाईं कि राग–द्वेष ना होखे, आपस में कलह ना होखे एक–दूसरे के बारे में एहर ओहर के बात न होखे, गाहे–बेगाहे झोंटा–झोंटउअल न होखे, गारी–सराप ना होखो–सज्जी रहल, अइसन अइसन पंचाइत हमरे बाबा के सामने आवे जवने के गवाह ए दुनिया में मौजूदे ना होखे– केहू कहे कि नइहरे के भूत हमरे ऊपर चला देले बाटिन, केहू कहे कि ई हमरे ऊपर टोना क दिहले बा। तब टोनहिन के नाम एक ठो आतंक रहे। संजोग से हमरे गाँव में कवनो टोनहिन ना रहल बाकिर माई–ओई दोसरे गाँवे के टोनहिन के बारे में चेतावें कि ओनके नजरन में मत परिहऽ। ओसहीं एक धोकरवहा के भय रहे कि बड़वार झोरा में ऊ लरिकन के उठा के चल देला। जवने बगइचा से होके स्कूल जाईं ओ बगइचे के बारे में हजारन किस्सा रहे। ई सब रहल। पुराने जमाने के त जुलुम के किस्सा रहबे कइल अपना सामनहूँ हम जमींदारी के जुलुम कुछ कुछ देखले रहीं। ई अच्छा रहल कि हमनी के ओ गाँव में जमींदार नाईं रहलीं। बाकी के जाने कतना पुश्त से हमरे घर के बूढ़ मुखिया रहले आ हमरे बाबा के दावा रहे कि हमरे गाँव कवनो के रपट थाना में नइखे गइल। झगड़ा फसाद के निपटारा गाँवे में हो जाय। बाबा घंटो लाग के भूत प्रेतन के पंचाइत निपटा दें। ई जरूर रहे कि हमन के ओ गाँव में इज्जत रहे, आसो पास के गाँव में भी। धन–दौलत के नाते ना, ना अउरों कवनो अधिकार के नाते खाली एसे जेअइसन पण्डितन के घर रहे जे केहूके दुआरे गइले ना, कवनो रजो के नेवता ना खइले, जे के कवनो

धरम करम के बारे में पूछे के होखे ऊ हमरे घरे आवे। आ ईहे नाहीं, पटवारी के कागज में कुछ गलती होय त होय हमरे बाबा के याददाश्त में गाँव के धूर–धूर नक्शा अइसन साफ रहल आ सात–सात पुश्त के कुर्सीनामा अतना साफ रहल कि लोग उनके बात के यकीन करैं। नेम रहल कि बाबा सबेरे दिशा–मैदान जायँ त एक फेरा अपने सज्जी के खेत त लगाइए लें पूरा गाँव के खेती के हिसाब लगा लें आ कहाँ का करे के बा, कवन कमी बा एकर हिदायत हरवाहे के दे दें। उनुके साथे हम बहुत हिलगल रहली। उनकी के साथे जागीं–सुती, ऊहे हमके महाभारत, रामायण के किस्सा सुनवलैं आ गाँव भर के कुर्सीनामा त सुनइबे कइले गाँव के आस–पास के लोगन के पूरा इतिहास, 57 के बदअमली के इतिहास, जे लोग के जमींदारी रहल, सगउर सगउर के बड़का घर के इतिहास पूरा सिलसिलेवार बतवले। हम काफी सेयान हो गइलीं त जनलीं कि हमरा संग बाबा ना हवें, हमरे बाबा के बड़का भाई हवन।

ओ समय हमरे गाँव में बजार ना लागत रहे। बाजार सोमारे सोमार बगल के गाँव बिसुनपुरा लागत रहे। आ सोमार के बाजार कइले के नजारो एगो नजारा रहे। जगह–जगह देखे में आवे कि ओ गाँव के मेहरारू गाँव के मेहरारू से अँकवार लेके भेंटत बाड़ी आ तनिके में गोहरी के आग मतिन सुनगत बाटिन। दुइ चार बून आँसू गिरा के फेर हँस–हँसा के इनके उनके बारे में नीमन बाउर बातिआवत बाटिन। बजार कइले के एगो उमंगे अलग रहे। अपने छोटके दादा के साथे बजारे जाईं आ धुंधी गाँव के हलुआई मिठाई बेचे आवे। उनसे गुड़ के बताशा लेईं। ऊ गुड़ के बताशा हम फेर अब कहीं गाँव में देखीला नाईं। बड़े–बड़े शहरन में गुड़ के फैशन आवता बाकिर गुड़के बताशा के सोन्हाई अब केहू का जानी, गाँवे के सोन्हाई अब केहू का जानी? ई सोन्हाई तब आवेला मनई के हाथे के कवनो परस से, ऊ परस अब गायब हो गइल, मनई मन से अगर मटियो छूवे त ऊ सोना हो जाई आ अगर कुभाव से सोनवो छुए त माटी हो जाई। गँउओं त बटले बा, भूगोलो में बा, सन97 के इतिहासों में बा बाकिर गाँव में जवन रिश्ता के पारस परस रहल ऊ नाइँ बा हालांकि, चाहे हमार भरमे होखे, हम आठ–दस साल पहिले गया जाय के पहिले गाँवे गइल रहीं, गाँव के पितरन के नेवते के रहल कि चलीं सभे गया, त गाँव में कवनों घर ना बचल जहाँ के लोग अछत देबे ना आइल होखे। देखलीं कि जवन चेहरा फूले मतिन खिलल रहल तवन मुरझा गइल जहाँ बतीसी झलकत रहल उहाँ गाल पचक गइल जवना हाथे में पछेला रहल ऊ हाथ सून हो गइल। शिवधनी बहू आधा पागल हो गइल रहली, नया–नया लड़िका अइले जिनके चेहरा से उनके बापे के चेहरा याद आइल आ उनके बापे के नावे से बोलवलीं गाँव के लोग के अजगुत लागे कि हमके सबकर नाँव इयाद बा। नाव कइसे न याद रहो हर नाँव के साथ कवनो खट मीठ तींत बात टँकल बा।

एक बेर हम कोशिश कइलीं कि गाँव में अपने प्रयत्न से पंचायती व्यवस्था विध–विधान से हो जाय। आठ–नौ गाँव के बड़ पंचायत बनवलीं, बिना कवनो सरकारी सहायता के पंचायत के चुनाव आ कार–बार दुइ साल चलवलीं लेकिन ऊ सपना अस टूट गइल। हम अपने जवानी के जोश में ई ना समझलीं कि जवन ऊपर ठाट–बाट से हेल मेल से विधान बनेला ओमें कवनो सत नाईं रहेला। जवन–पुश्त–दर–पुश्त से चल आइल या आ जेकरे पीछे कवनो कानून के चलावे वाला नईं बा ऊ अबो कवनो ना कवनो रूप में चलत बा। मण्डल के नगाड़ा के बावजूद। काहे से ओकरे बिना कुछ नाई चलीं। अइसन नाई होत त अतना घरे क अच्छत हमरे अँजुरी में कइसे आवत आखिर सबके भरोस रहल कि हम पुरान मनइन के अबो इयाद राखलें, चाहे ऊ शिवभजन बढत्रई हों, गंगादीन अहीर हों, मुंशी बलराम लाल हों, शिवशरण हजाम हों, अपने बौड़मपन बदे अलग छाप लिहले राजा हों, कानून छाँटे वाला लोचन मलाह हों, दुकानदारी में उस्ताद रामदास हों, रघुबीर आ दुधई के बहिर जोड़ी हो, अपना खइले के अनुपात में भार ढोवे वाला बीपत कोहार हों, सबके आगे अलग किसिम के बुद्धि के बात करे वाला शिवधनी अहीर हों– सबकर कहीं अलग अलग रूप आ सबकर कहीं अलग–अलग रिश्ता मन में टाँकल बा। ओही तरें लखराज के माई, राअवध के माई, लाला बिहारी के माई, ढुनमुन फुआ भनमतिया के माई, राम प्रसाद कोंहार के माई, पारस माझी के माई, एक ओर या दुसरी ओर चुहुल करे वाली ओ समय के दू–दू तीन–तीन लरिकन के महतारी बाकिर गाँव के रिश्ता में भौजी लागे वालिन के सहज स्नेह के रूप, उनके चुहल उनके एक से एक दावा– ईहे सब जोर–जार के गाँव हऽ आ ओही के आपन गाँव कहि सकीं ले। जहाँ छप्पर रहल उहाँ पक्का मकान उठ गइल, जे दुब्बर रहल से जब्बर हो गइल, जे बोल नाईं पावत रहे ते बड़का नेता हो गइल ई सब गाँव के नक्शा चाहे होखे, गाँव ना हऽ। आ गाँव होबो करे त आपन गाँव ना ह। अब सड़क हमरे बगइचा से होत

अउर आगे चल गइल, गोर्रा पक्का पुल बन गइल, गाँव में कई ठे चाय के दोकान हो गइल, कौनो समय रहल कि दूध आ माठा बिकात ना रहल अब सितुही भर दूधे के चाय बिकाता, कवनो समय रहल कि जाति रोटी–बेटी ले रहेला। आज हमरे गाँव से उजर के दुसरे गाँव में बसल एगो पठान चाचा रहले। एक दूसरे के खेयाल अइसन रहे कि ऊ हमन खातिर एक ठो अलग ओसारा में जगह भोजन बनावे के बर्तन भांड़ समेत रखलें रहन आ हमरे घर के बियाहे में आके कार–बार सम्हारें आ अब सुनऽ ताटी कि गाँव बदल गइल बा, गाँव के दखिन बान्ह बन्हा गइल बा, अब बाढ़ आवे ना अब गाँव में साँवा कोदो टाँगुन ना होला अब गाँव में कवनो कोल्हू ना बा। ऊख ना पेराला आ गुड़ पकावे वाला कड़ाहा में आलू भंटा ना पकावल जाला, पाक कड़ा प जवन घिंटउड़ा गुड़ होखे ओकर कहीं नाव ना केहू जानेला। दूध डेयरी में चलि जाला, लखराज के माई के दही सपना हो गइल, गाँव में दुआरे–दुआरे बहुत कम पोंछ लउकेले, बैल गाड़ियो अब एकाध ठो टूटल टाटल पड़ल होइहें। ईहो सही बा कि अब ओंतनी भुखमरी ना होले बाकिर गाँव से अब चौताल उठ गइल, कबड्डी तब अब राष्ट्रीय खेल में शुमार हो गइल, गुल्ली डंडा के पता ना कवनो निशान बचल बा कि नाईं, अब पटरी सेल्हा से कहाँ चमकावत जात होई। कहाँ खड़िया के रोशनाई बा, का ओ प नरकुल के कलम से लिखल जात होई–बड़का सुन्नर–सुन्नर अच्छर– का ई सब बीत गइल, का कबो ई सब बीती? हमरे पकड़डीहा त अबो सदा अनंद रहे एही द्वारे के असीस बा आ कदम के गाछ चाहे कट गइल होखे झुलुहा पड़े कदम के डढ़िया में अबो गाँव के रेखियाउठान उमिर जियतार गीत बनके गूंजेला। हम पकड़हीहा के निवासी हईं ई कइसे कहीं, खाली घर बा, दुआर बा एसे कइसे कहीं। एतना जरूर कहब कि पकड़डीहा हमरे भीतर बा, ओकर कब्जा ताजिन्दगी बरकरार रही। ओकरे साथे–साथे उहाँ रहे वाला लोगन के हको ओइसने बनल रही। ऊ हक हम कतना दे पाइब, ना कह सकीं, बाकिर ओ हक के हम देनदार हईं ई समुझ के हम अपना के ओ लोग के बनिस्पत अधिका भाग वाला मानींले जेकर कवनो जर–सोर नइखे रह गइल आ जेकरे ऊपर केहू के हक नाइँ बनत बा। ●●

कहिया ले जगबऽ

जगदीश ओझा 'सुन्दर'

जनमे के सूतल, जिनिगिया से रूठल
टूटल ना निनिया तहार
बतावऽ भइया, जगबऽ त कहिया ले जगबऽ

खेतवा जगावे, खतनिया जगावे
अमवा महुइया बगनिया जगावे
फटही लुगरिया में धनिया जगावे, सुसुकेले अँचरा पसार

काया डहाइल, महँगिया के मारल
साहस ओराइल, बिपतिया से हारल
टूटल कमरिया हो फाटल करेजवा, जरि गइले घरवा दुआर

दस गो रुपइया के सुदिया सयकड़ा
कबहूँ बियजवा के टूटल ना झगरा
रोजे तगादा में आवे पियादा, गरिया सुनावे हजार

भइया बिलइलऽ तू अपने करनवा
तहरे में देसवा के बाड़े परनवा
तोहरे से जगमग बा कोठवा अटरिया, काहे मड़इया अन्हार

सूतल गँवावे, जे जागे से पावे
मंजिल पर पहुँचे-जे दउरे, जे धावे
मँगला से देला ना भिखियो जमाना, मारेला ठोकर हजार

जुलुमी त आपन जमतिया जुटावे
अबहीं ले तहरा सुमतिया ना आवे
अबहूँ से जागऽ गोहरिया लगावऽ, मचली सिवाने जुझार

मुवलो ले बिगरल जिनगिया का होई
सँसिया का रहते ई लसिया के ढोई
सुख-दुख का दाँवे चढ़ावऽ परनवा, दूनो में लाभे तहार
बतावऽ भइया, जगबऽ त कहिया ले जगबऽ ?

शहर में गाँव

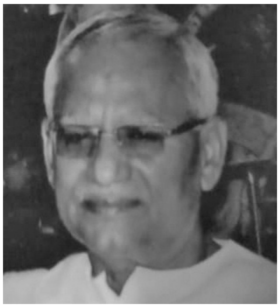

अरुणेश नीरन

देवारण्य। देवपुरी। देवरिया।

बुजुर्ग लोग बतावे कि देवरिया पहिले देवारण्य रहे। अइसन अरण्य, जेमें देवता लोग वास करें। सदानीरा यानी बड़ी गण्डक के ओह पार चम्पारण्य, एह पार देवारण्य। उत्तर प्रदेश आ बिहार के एल.ओ.सी.–सदानीरा। चम्पारण्य त चम्पारन हो गइल आ ओह हिसाब आ तुक से एके देवारण होखे के चाहीं लेकिन हो गइल देवरिया! कइसे? बड़का–बड़का भाषा–वैज्ञानिक जब एह पहेली के ना सुलझा पवलें त हम का बताईं! एतने जान लीं कि देवारण्य, देवपुरी, देवरही–जवन नाम देवरिया के पुरखा मानल जाला ओसे देवरिया के रिशता कवनो विद्वान जोरि नाहीं पवले। उनके व्याकरण आ भाषा–विज्ञान के सूत्र अपसे में अझुरा गइल लेकिन देवरिया के ऊ लोग बान्हि ना पावले। रिमझिम बरसत पानी के संगीत के कवनो राग–रागिनी में बान्हल जा सकेला?

लडकाईं में आपन गाँव अइसन बुझा जइसे कवनो गाय के अब्बे–अब्बे जनमल बछरू ह। गाय अइसन सोझ, पवित्र आ बछरू अइसन चंचल आ जीवन से भरल। अलगे–अलगे टोला रहे, जइसे लँगड़ी, बड़की, खास लेकिन सबके कुलनाम–अइसन आगे देवरिया लगल रहे। हमार टोला खास कहा, कुछ लोग लँगड़ी कहे, कुछ बड़की। तीनो टोलवा त एके रहे लेकिन लोग ओकरे मुँह, पेट आ गोड़ में बाँटि के तीन नाम से बोलावे।

लेकिन एहू के एगो कहानी कहल जाला। तीन भाइन में बँटवारा भइल। बड़का भाई के मिलल पच्छिम वाला हिस्सा, माँझिल के पूरब वाला आ छोटकू के दक्षिण वाला। जायदाद, बँटवारा के बाद लंगड़ हो गइल, एसे लोग ओके लँगड़ी देवरिया कहे लागल। चूँकि ऊ मूल हिस्सा रहे आ बड़का भाई परशुराम के मिलल रहे एसे ऊ खास देवरिया आ बड़कियो देवरिया के नाम से जानल गइल। अजुओ ई तीनो नाम प्रचलन में बा। मँझिलका बासदेव तिवारी के हिस्सा बाँसदेवरिया आ छोटकू रामनाथ के हिस्सा रामनाथ देवरिया के नाम से।

गाँव के सिवाने लोग दिशा–मैदान खातिर जाय। लौटत के ढेंकुल पर बाकी नित्यकर्म पूरा होखे। रस्ता में रामचन्नर बाबा के घर परे। ऊ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथे कश्मीर के जेल में बंद रहलें। गाँव के नेता, अविवाहित, ब्रह्मचारी आ आर.एस.एस. के स्वयंसेवक। कबो जेल में रहें, कबो रैली में, कबो नेता लोगन के साथे। हमेशा जतरा पर रहें, लेकिन कब्बो टिकट ना कटावें। उनके दूनो आँख में फुल्ली रहे एसे लोग उनके सूरदास समझे। गाड़ी में चेकिंग होखे तो टीटिए से टकरा जाँ। ऊ इनके देखेत कहे, 'ए सूरदास, एहर नाहीं, ओहर जाके बइठऽ.

...' आ हाथ पकरि के सीट पर बइठा दें। पइसा ना रहला पर कब्बो–कब्बो भजन गावे लागें त लोग रुपया–पइसा दे दें, खियाऊ दें।

बाबा के सटले भुअर भगत के घर रहे। भुअर भगत पल्लेदार रहलन। अढ़तियन के इहाँ बोरा ढोवें आ लौटें त ताड़ी पी के सूति जाँ। एकदम भोरहरिये उठें आ विभोर होके रामचरित मानस के पाठ करें। करिया अच्छर चीन्हे भर के पढ़ले रहें। बुझा कि पाठ नइखन करत, थरिया में चारउ बीनत बानऽ। ऊ चउरे अइसन गीताप्रेस के गुटका में से एक–एक अच्छर बीनें....'र...र....घु....घु....कु....कु....ल....ल....री....री. ...री....ती....ती....ती....' । बीच–बीच में अपने लइकन के गोहरावें, मेहरारू के बोलावें आ कहें 'हई गोबरा के फेंकी, तोर बाप?'

रघुनाथ गोसाईं अपने छत पर से चिल्ला के बोलें, 'ए भुअर! रमायन बाँचऽ, गोबरा ओकरे बादो फेंका जाई।'

भुअर हँसि के फेर बाँचे लागें आ पूरा एक घण्टा में चार लाइन बाँचिये के उठें। गोसाईं उनके समउरिया रहलन। हमेशा परेसान रहें देश आ विदेश के राजनीति से। जेही मिले ओसे पूछें, 'का हो! ई अयुबवा (अयूब खाँ। पाकिस्तान के तब के राष्ट्रपति) का करे जात बा? फेरू हमसे लड़े के विचार बा का? उनके 'हम' के मतलब हिन्दुस्तान रहे। चीन के आक्रमण भइल त गोसाईं मुहल्ला भर के सुना के कहें, 'हम त कहते रहलीं कि ई चउवा (चाऊ एन लाई) चाईं ह। एक दिन धोखा देई। लेकिन हमार बात के सुने? न नेहरुआ सुनलस, न मेननवा। आखिर हमरे ऊपर घात हो गइल न?'

गोसाईं के उमर पचास साल के रहे। दू–तीन महीना चेलाही में रहें, फेर एक महीना घरे। चेलाही से आवें त बुझा कवनो सामान से लदल ठेला आवत बा। दूनो काँधे में लटकल बड़का–बड़का झोरा, कपारे पर बड़की मोटरी, कमर में लपेटल तीन–चार गो चदरा। एक बेर चेलाही से लवटलन त समाने के साथे एगो कनियो रहे, सोरह–सत्रह बरिस के। लाल गुलाब अइसन मह–मह करत जब ऊ गोसाईं के अँगना में पहुँचल त गोसाइन पूछली, 'ई के ह?' गोसाईं कहलन, 'तुहरे सेवा खातिर ले आइल बानीं। तोहार छोट बहिन बन के रही आ सबके सेवा करी।'

गोसाइन अबहिन खुश होखही जात रहली कि बम फटल, 'दउरी ले के आवऽ....नयी दुलहिन के ससुरारी अइले पर ओकर पहिलका डेग दउरी में परे के चाहीं।'

गोसाइन दउरी कहाँ से ले आवें?। दउर के एक लात गोसाईं के मरली आ दुसरका नयकी के। उनके कोश में से धराऊ–धराऊ गारी तोर अइसन निकल के दुलहा–दुलहिन के बेधे लागल।

दुसरे दिन पंचायत जुटल। गोसाईं सफाई में कहे लगलन, 'सास्तर कहेला कि गरीब–गुरबा के मदद करे के चाहीं। जे सरन में आ जा ओकर रच्छा करे के चाहीं। केहू चेला दच्छिना दे त ओके ठुकरावे के ना चाहीं। एगो चेला आपन कनिया हाथ में देके संकल्प क दिहलस त ओके ठुकरावल महापाप होइत। हमनिए ना कहल जाइ त के सास्तर के रच्छा करी?'

पंचाइत अबहिन कवनो फैसला सुनावत कि गोसाइन करिखही हाँड़ी ले के निकलली आ जबले केहू सोचे–सोचे कि तबले, धड़ाऽऽम। पंच लोग भूत बनि के भाग चलल।

हमरे घरे के सामने बरात आइल रहे। गैसबत्ती, नचनियाँ–कई गो आकर्षण रहे लइकन खातिर। हम एड़ी उठा के दुलहा देखत रहलीं कि अचानके अन्हार हो गइल आ हम पाताल में जाये लगलीं। लोगन के शोर सुनात रहे कि 'लइका इनारे में गिरल। बचावऽ'। पानी में तीन–चार बेर नीचे ऊपर भइलीं कि एगो मजबूत हाथ हमके थामि लेहलस। अचानक जोर से धक्का लागल आ हम हाथे से छूटि के फेर पानी में चल गइलीं। पानी में भीतर चार गो हाथ हमके छान के बहरा ले अइलन। कुँआ में सीढ़ी परल आ हमके निकालल गइल। गोसाईं हमार पेट दबा–दबा के पानी निकलन।

दुसरे दिन पता चलल कि हरिचन आ पूर्नमासी काका कुँआ में ना कूदल रहतन त हमार जान नाहीं बचत। पूर्णमासी काका दक्खिन टोला में रहें आ गाँव भर के जीयन–मरन में नगाड़ा बजावें। गाँव भर के लइके, चाहे ऊ कवनो जात बिरादरी के रहें, उनके काका कहें। हरिचन के दुसरका घर जेल रहे। छव महीना जेल में रहें, छव महीना घरे। बड़हन घरे चोरी करें, छोटकन में बाँटें। एक बेर पुलिस

वाला लोग उनके बोला के सेन्हि काटे के कला के बारे में बहुत कुल सीखल–जानल। सेन्हि आ जेब एतना सफाई से काटें कि जेब आ दीवाल के कम से कम नुकसान होखे आ रुपया आ गइना–गुरिया गायब हो जा। पुलिस वालन खातिर ऊ चोर त रहबे कहलन, कलाकारो रहलन।

हमके कुँआ में गिरत हरचिन देखलें त हमार जान बचावे खातिर तुरंते ओमें कूद गइले आ हमके अपने दुनों हाथे में छान लिहलन। जब हल्ला भइल त पुर्नमासी काका कुदलें आ सीधे गिरलन हरिचन के पीठ पर। हमके त ढेर चोट नाहीं लागल लेकिन हरिचन के पीठ पर कई महीना ले शराब के मालिश भइल।

हमरे गाँव के बसावट देखि के लागेला कि एकर रचना विश्वकर्मा के कवनो सहायक कइले होई। उत्तर में आम के विशाल बगइचा, दक्खिन में ओहू से गझिन शीशम, जामुन, आम के पेड़; पूरब में बड़का पोखरा, पश्चिमो में विशाल पोखरा। जल आ वनस्पति के चारदीवारी। सात–आठ घर ब्राह्मण, बाकी पिछड़ा (आज के भाषा में) आ दलित। कुछ घरन के छोड़ के बाकी सर्वहारा, मजूर। दिन भर हाड़–तोड़ मिहनत के बाद साँझ के चूल्हा जरे। एकरे बादो हियरा सुख के अँजोर से दप–दप। लेकिन एक सुख के आँख नाहीं, कान देख सकेला। अनन्त दुःखन के भार के गठरी लोग कइसे ढो पाइत अगर ई सुख नाहीं रात में पेट में दाना गइल कि नाहीं–

जइसे दूध में पानी मिलेला
वइसे मिलौं तेरे साथ
जइसे उड़े अकास में चिरइया
वइसे उड़ों तेरे साथ
सँवरिया रे, काहें मारै नजरिया
मारै नजरिया, जगावै पिरितिया, सँवरिया रे....

....मोती बरई अकेले रहें। जीवन में कब्बो उनके देहीं हरदी ना चढ़ल एसे ऊ हरदी से घिनायँ। दु गो टिक्कर आ आलू के चोखा उनके बारहमासी भोजन रहे। दिन भर में एतने भर के कमाई हो पावे। खा–पी के रात के आठ बजे अपने झोपड़ी के बहरा बोरा बिछा के बइठ जाँ आ काने पर हाथ दे के बिरहा गावें। बिरहा के बिरह उनके गला में अइसन उतरि आवे कि सुनवइया के आँख से लोर बहे लागे। मोती लगे सात–आठ कट्ठा जमीन रहे जवन प्रेमचंद के 'रंगभूमि' के सूरदास के जमीन अइसन गाय–गोरू के चरे के काम आवे। जब हमार गाँव शहर में बदले लागल तब कुछ लोग जाल–बट्टा क के ओपर कब्जा करे के फेर में परल लेकिन मोती लाठी ले के परती में खड़ा होके ताल ठोंके लगलन. ...जे अपने माई के दूध पियले होखे ऊ एमें आपन डेग डारि दे...'। अपने माई के दूध त धरती–पकड़ लोगो पियले रहे लेकिन ए धरती–पुत्र के चुनौती केहू स्वीकार ना कइल।

गाँव के उत्तर कोरया के जंगल रहे। लोग दिशा–मैदान जा आ ओकरे आड़ में सघन गगन के नीचे बइठ के चिन्तन करे। एकरे अलावा ओह जंगल के कवनो उपयोग ना रहे–ओकर फल–फूल–लकड़ी न चढ़ावे के काम आवे, न जरावे के। सबेरे निपटान वालन के अड्डा रहे, दुपहर में प्रेम–रोगिन के आ रात के चोरन के। जब केहू के घरे चोरी होखे त चोर कोरया में खोजल जा। प्रेमिन के एकांत कोरया में मिले। सबसे पहिले ओ अभेद्य वन के भेदलस बिजली–विभाग। चार सौ चालीस वाट के लाइन दउरावे खातिर खंभा गड़े के भइल त इंजीनियर लोग बीचोबीच ओकर सीना चीर के बड़का–बड़का खम्भा गाड़ि दिहलन। दु फाड़ होते जंगल लुटाये लागल। दुइए–तीन साल में उहँवा अइसन सपाट मैदान हो गइल कि लोग मैदान जाये में सरमाय लागल।

पश्चिमे के ओर से हमरे गाँव पर औद्योगिक हमला भइल। थापर घराना के लोग एगो चीनी मिल लगावे खातिर जमीन के सर्वे करत–करत हमरे बाबा लगे अइलन। जवन जमीन उनके पसंद आइल ऊ हमार आ हमरे पट्टीदारी के जमीन रहे। जमीन खातिर पइसा आ लइकन के नौकरी–सभे तइयार हो गइल। साले भर में, जवने जमीन पर पीयर फसल लहराय ओपर चिमनी के करिया–करिया धुआँ छा गइल। मिल बनते गाँव गन्हाये लागल।

गाँव में जब शहर घुसेला त सबसे पहिले ऊ परम्परा के मारेला आ लोगन से कुछ रिश्तन के छीन लेला। गाँव अपने–आप में एगो परिवार होला।

सब एगो मजबूत रिश्ता में बन्हल होला आ रिश्ता के डोर जाति–धर्म–सम्प्रदाय–अमीर–गरीब से बहरा बन्हल रहेला। एह गाँव–परिवार के सदस्यन के बीच एतना समझ होले कि ऊ जानेलंऽ कि गाँव कवने बात पर भड़केला, कवने में रस लेला, केपर रोवेला आ सबसे ज्यादा ई कि केपर हँसेला? गाँव में जब शहर घुसेला त सबसे पहिले ओकर हँसी गायब होले आ धीरे–धीरे समझ।

मोती के जमीन पर एगो सेठ के कब्जा हो गइल। ऊ फर्जी कागद–पत्तर बनवा के अपने नामे चढ़वा लेहलन। एह डकैती में सहयोग मिलल, मोती के दु पट्टिदारन के। उसे निर्गुन भुला गइल। रोज सबेरे–साँझ नियम से सेठ के दुआरि पर जाँ आ एक से एक धराऊं गारी से उनके असीसें। कई बेर सेठ आ गुण्डन से बतियावल गइल लेकिन गारी के उठवना बंद ना भइल। पइसा–रुपया–पंचायत सब बेकार बेअसर। अपने गाँव नाहीं, आसो–पास के गाँव जानि गइल कि सेठवा चोर ह।

अब खाली पर्व–त्योहार पर ई गाँव गाँव लागे। फगुआ, पचइयाँ, नागपंचमी जब आवे तब शहर के टोपी उतार के ई फेर गाँव हो जा। फगुआ दुपहरिया से खेलल जा ओकरे बाद लोग बंसी बाबा के घरे ढोल–झाल ले के जुटे। गारी, अबीर, गड़ी–छोहाड़ा, इत्र–देत, खात, लगावत लोग एक–एक घरे पहुँचे आ गावें– सदा अनन्द रहे एहि द्वारे, जीये से खेले होरीऽऽ....।

गंगाशरण मउसा प्राइमरी स्कूल में अध्यापक रहलन। कवनो संतान ना रहे लेकिन गाँव भर के ऊ मउसा रहलन आ कुल लइका उनके बेटा–बेटी! स्कूल में जब कवनो लइका के कुछ ना आवे त मउसा ओकर ढोंढ़ी जोर से अइँठ के कहें, साबड़गिल्ले.... साबड़गिल्ले....। न छड़ी, न मुक्का, न लात–लेकिन लइका राम सोझ हो जाँ। मउसा, फगुआ के चैम्पियन रहें। आपन सीनियारिटी बतावे खातिर हर साल ऊ फगुआ–गायन के शुरूआत 'सुराजी फगुआ' से करें, जवने के टेक रहे–'भारत छोड़ो अंगरेजो'। लोग कहे कि अंगरेज अब कहाँ बानंऽ कि एके गावत बाड़ऽ? मउसा कहें, 'ईहे बतावे खातिर गाईलां कि लोग जाने कि अंगरेजवा कुल भारत छोड़लन नाहीं, उनके छोड़े के परल। आ गान्ही बाबा छोड़वलन। हमहूँ उनके एगो सिपाही रहलीं आ एही होरी के बंदूक से अंगरेजन पर फायर करीं।'

आखिरी घरे पहुँचत–पहुँचत रात हो जा। होली–मण्डली के लोगन के पहिचान मिट जा आ सब एक तरह के लउके। जेकरे घरे में ताला बंद रहे ओकरे दुआर पर गुलाल छिरिक दीहल जा। मउसा कहें, 'बाबू, होली के श्रृंगार एही में ह कि सबके पहचान खो जा। सब एक अइसन लउके।' ऊ कन्हैया के गोपी बना दें आ उनके माँग सँवार के रोरी से भर के कहें, 'लला, फिर आइयो खेलन होरी।'

बसंत आवे त पूरा गाँव महके लागे। फूल आ आम के मौर के बंदनवार सजे आ होली आ चैती के धुन पर सब थिरके लागे। एक बेर मउसा से पुछलीं कि 'फाग आ चैता के गीतन में लय के एतना उतार–चढ़ाव काहें आवेला?'

मउसा बतावे लगलन, 'ए बाबू! बसंतवा गाँठ आ पुल दुनो हउवे। आधा पिछला संवत् में, आधा नयका संवत् में फइलल रहेला। आधा में पतझर होला, आधा में कुसुमन आ पल्लवन। पुरनका सृष्टि के पहिले ऊ पेड़न के ठूँठ बनावेला, फेर ओकरे गाँठ–गाँठ में नया कल्ला फूटेला आ पूरा पेड़वे कली आ फूल से भर जालां पुरान आ नया के बीच ई पुल बनेला। एकर आधा भाग ज्वार ह, आधा भाटा। एही से फाग आ चैता के लय में एतना उतार–चढ़ाव आवेला। नयका संवत के यज्ञ में पहिलका आहुति बसंते देला। गर्मी में घी जइसन पिघलेला आ जाड़ा के आरम्भ के सृष्टि के यज्ञ में आहुति बन के जरेला। देखऽ बाबू, फागुन आ चइत उतपाती महीना ह– एमें जेतना आपन होला, निजी होला– ऊ सब झरे लागेला। पत्ती कुल पेड़े के छोड़ देलें। कब्बो समुद्र के किनारे गइल हउवऽ?

'देखबऽ बाबू, समुद्र में जब ज्वार आवेला त कुल लहर एक हो जाली आ जब भाटा आवेला त पछाड़ खाते हर लहर अकेल रहि जाले। फागुन बसंत के ज्वार ह आ चैत ओकर भाटा। होली में सब ठूँठ बन के एक जइसन हो जाला, जे ना होला ओहू के लोग रंग पोत के अपने जइसन बना लेला। आ चैत में? हर डाल पर अलग–अलग रंग के फूल खिलेला आ पूरा बगइचा कई रंगन के नशा में झूमे लागेला।

हमरे याद आवेला कि सम्मत (होलिका) जरे त अम्मा बुकवा लगावे खातिर परेशान हो जाँ। जब हम बड़हन हो गइलीं तब्बो ऊ बुकवा (उबटन) लगावे के कहें आ हमरे मना कइले के बावजूद गोड़ के एक अंगूठा में लगा के अनुष्ठान पूरा करें। कहें, 'एकरे साथे साल भर के मइल छूट जाई आ ओके बटोर के सम्मति में जरा देहले के बाद तोहार देहिया नया हो जाई।' आज बुझाला कि अम्मा के बोध में केतना सहजता रहे कि पुरान साल के मइल बाहर हो जा, ओके गाँव भर के कूड़ा–कचरा के साथ सम्मति में डार के जरा दीहल जा, तब्बे कुछ नया शुरू हो सकेला।

हमरे गाँव में एगो कविजी रहें, अरविन्द जी। ऊ नियम से रोज एगो कविता लिखें। साल में तीन सौ पैंसठ कविता के विश्व रिकॉर्ड उनही लगे रहे। कविता के लाठी से ऊ पूरा सृष्टि के संचालन करें उनके कविता न कहीं छपे, न केहू उनके सुनल चाहे, तब्बो अपने कारखाना में ऊ रोज कविता के प्रक्षेपास्त्र बनावें आ मौसम, त्यौहार, आदमी सब पर दागें। बरसात पर उनके एगो कविता 'आज' अखबार में छपि गइल 'गड़गड़गड़ गड़ाम, सूख गइल धरती के प्रान! शेष रहल दू दिन अषाढ़....।' जब केहू ई कविता सुनावे के कहे तब अरविन्द जी बिगड़ि के कहें, 'तोहरे त खेतबारी बटले नाहीं बा। फटकचंद गिरधारी हवऽ तू। अबे ई कवितवा सुना दीं त बरखा बरसे लागी त खरिहाने के का होई? अनजा भींज के सरि जाई त नुकसान के भरी? तोहार बाप?'

चइत के महीना में मउसा, गोसाईं, राम चन्नर बाबा के टोली चैता के धुन छेड़े–

जियरा जरत रहत दिन–रैन ए रामा
जरत रहत दिन–रैन
अमवा के डरिया कोयलिया बोले
तनिको न आवत चैन, हो रामा
जरत रहत दिन–रैन.....

हम सोचीं कि चइत फसल तइयार भइले के महीना ह। पकल खेत धूप में सोना अइसन चमके लागेला। पकल गेहूँ के गंध के साथ बउराइल आम के गंध मिल के अइसन सुबास फइला देले कि तन–मन अन्न–धन देखि के बउरा जाला। अइसन मस्त समय में जब संतोष आ तृप्ति के स्वर फूटे के चाहीं, तब चैती के स्वर एतना उदास काहे हो जाला? उल्लास में उदासी काहें?

अरविन्द कवि से पुछलीं त ऊ कहलन, 'ए बाबू, उत्सव के बाद अवसाद आवेला। ई फागुन के उत्सव के बाद के अवसाद ह। बिआह बितले के बाद के अवसाद ह, ई। फाग के गीतन में चुनौती होला, सबके पानी उतार देवे के चुनौती। स्नेह के बल पर सबके साथ ले चले के, सबके रंग में सराबोर करेके, सबके आदमी से रंग बना देवे के चुनौती। चइती के दर्द आपन नाहीं, सबके होला। चइती सुधी के गीत लागेला लेकिन ह बेसुधी के गीत! उत्सव के बाद के उदासी में अपने खुदी के खो देवे वाला गीत।'

आज बुझाला कि अरविन्द बाबा सही कहें। होली के दिन अपने वर्तमान पर विश्वास करे वाला दिन होला। ओह वर्तमान में आपन अतीत जेतना छन के आ गइल बा, ऊहे आपन ह। जवन पतई पेड़ से झरि गइल, उ त झरते पराया हो गइल, ओकरे खातिर का रोवल? पेड़ के रग–रग में उभरल संकल्प के देखे के चाहीं, जवन नस–नस के पुलक से भरि देला आ एह पुलक के गमगमात फूल से भर देला आ जगा दूला फूल के फल भइले के आशा। होली के कोख से ई आशा जन्मेले आ चइत के कोख से फूल के फल भइले के सम्भावना।

हमरे गाँव में साँझ होखे त 'गोधूलि' कहल जा आ भोरहरी के पहचान 'सुकवा' उगले पर होखे। सूरज भगवान जब कपारे पर सवार होखे त दुपहरिया खिले। अब ई सब बिसरत बा। आदमी के प्रकृति से जवन रिश्ता होला, ओकर पहचान जब बिसरि जाले त ओही के साथ माई, बाबू जी, काका, मामा, चाचा, फूफा, मउसा, चाची, मामी, सास–ससुर, भउजी–भइया, जेठ–जेठानी, देवरानी, ननद जइसन अनगिनत रिश्तन के नामों बिसरत जाला आ आदमी लहर न बन के लकीर बन जाला। गाँव लहर बनावेला, शहर लकीर।

अजुओ हमरे गाँव के सीवाने पर हनुमान मंदिर बा। ओकरे आगे काली माई आ डीह बाबा के थान। दशहरा आवे त पूरा गाँव मंदिरे पर जुटे। उहँवा नीलकण्ठ के दरसन होखे, चुर्की में जौ के

बाल बन्हाय, रावण हमरे इहाँ दशहरा के नाहीं, पूर्णमासी के जरे। काली जी के थाने पर दूनो नवरात्र में खूब जगमग होखे। अब त काली जी के थान चारो ओर मकानन से घेरा गइल बा, पहिले चारो ओर खूब फइलहर मैदान रहे। नवमी के दिने असंख्य चूल्हा जरे आ गाँव भर के मेहरारू सोहारी आ हलुवा बना के माई के चढ़ावें। आम, कैथा, आवँला के पेड़, कनेर आ बेला के झाड़ी, जूही आ चमेली के लतर से सजल काली माई के दरबार में सब बेटा बनि जा– सौ साल के रहे भा एक साल के। पण्डित जी मंत्र पढ़े–

'जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।'

जई चुरकी में बान्हत के पण्डित जी जब ई मंत्र बाँचें त बुझा जइसे जई के रूप में माई के आशीर्वाद माथे पर बरसत बा। शक्ति के सूत्रपात होला अपना के उत्कृष्ट सिद्ध कइले में, लेकिन उत्कर्ष सिद्ध होके रहि जाय– ई शक्ति के गतिरोध ह। उत्कर्ष के माने होला मंगलमय भइल, दुसरा के कल्याण खातिर शक्तिमान भइल। जे दुसरा के मंगल खातिर युद्ध–भूमि में उतरेला, ओके अमंगलकारी लोगन के विनाश खातिर कालरूप बने के परेला। काली अमंगल के विनाश अमंगलकारी के कल्याण के भाव से करेली। कालो काली के आराधना करेला। काल के स्वभाव ह मिटावल। कालियो के कार ह संहार। लेकिन काली के संहार भद्र के भूमि के रचना करेला। एही से काली के भद्रकाली कहल जाला।

समय के साथे हमरो गाँव धीरे–धीरे बदले लागल पहिले चीनी मिल आइल, फेर टाउन एरिया, फेर नगरपालिका, फेर तहसील आ बाद में जिला। जिला होते कुल गाँव मोहल्ला हो गइल आ गाँव के होली–दीवाली, दशहरा, पंचमी, सावन–भादो, कुआर, कातिक, फगुआ–चैती सब ओमें समा के बिला गइल। जबले ई गाँव रहे बसंत पंचमी के दिन घर–घर में सरस्वती के पूजा होखे। ब्रह्मा माने ध्वनि आ सरस्वती माने गति। ध्वनि जब गतिशील भइल तब एह सृष्टि के रचना भइल। एसे सरस्वती सृष्टि के इच्छा त हइए हई, सृष्टि ओकर नया प्रस्तुतियो हई। पण्डित जी पूजा करें आ श्रीपंचमी के महातम बतावें। एक बेर हम पुछलीं कि बसंत–पंचमी के रउरे श्रीपंचमी काहे कहेलीं? पण्डित जी के जबाब अब्बो हमके याद बा। ऊ बतवलन, नीरन बाबू, श्री लक्ष्मी के नाम ह आ एह धरतियो के, जवन हमनी के धारण कइले बा। आज के दिन सरस्वती, लक्ष्मी आ धरती–तीनो के सम्पुट बनेला, एसे एके श्रीपंचमियो कहल जाला।'

माघ आवत–आवत हरियर चादर ओढ़ले धरती फुलाय लागेला, गमक के गुनगुनाय लागेला। खेत सरसों के रंग में रँगा के पीयर–पीयर हो जाला। ओही रंग के कपड़ा पहिर के जब आदमी सरस्वती के पूजा करेला त देबी, साधक, धरती–सबके रंग एक हो जाला– पीयर–पीयर! ईहे गाँव के असली रंग होला। सत, रज, तम–तीनो गुण मिलि के गाँव के रचना करेला। सत के रंग सफेद होला, रज के केसरिया। राग जब सत के आराधना करेला तब ऊ सात्विक राग हो जाला, आसुरियो रंग सफेद से मिलि के पीयर हो जाला।

गाँव के ई स्वभाव ह कि ऊ सुविधा के बात ना करेला, ऊ आपन बात करेला आ ओहू से ज्यादा दुसरा के सुनल चाहेला, भर मन सुनल चाहेला। गाँव के स्वभावे ह, सुनल। संस्कृत में सेवा खातिर शब्द ह, 'सुश्रुषा'– जवने के अर्थ ह– सुनले के इच्छा। सुने के मन होखे तब्बे सेवाभाव आवेला।

शहर बनले के बाद सब बदल गइल। के सुने, के सुनावे? कुल गाँवन अइसन हमरो गाँव एगो सात्विक राग रहे, जेके सब मिलि के गावे– फागुन में, चइत में, सावन में, पीड़ा में, उल्लास में, पतझर में, मधुमास में–सबके अलग–अलग रंग रहे। लेकिन सब मिलि के एक रंग होजा–पीयर बसंत के रंग। अब के सुने, के के सुनावे? सब रंगन के सोख लिहलस शहर। गाँव जब मिट के शहर बनेला तब दुइए रंग रहि जाला– करिया आ लाल। करिया में समा के कुल रंग करिया हो जाले आ ओसे लड़ेला लाल रंग– लेकिन धीरे–धीरे उहो करिया हो जाला।

पंचमी अब्बो आवेला, लेकिन ओमें बसंते गायब बा। शहर के नाते बाहर के बसंत त विदे हो गइल, भितरो ना बचल। गाँव रहित त बचाइत। अब के बचाई? ●●

पेट-पहाड़

अशोक द्विवेदी

अगर हम कहीं कि आज सगरी संसार में जवन धमाचौकड़ी आ करकरहट मचल बा ओकर संबंध पेट से बा त रउवा चिहाए के ना चाहीं। मानतानी जे केहु के पेटे पहाड़ बा आ केहु खातिर भरुकी बाकी पापी पेट सभका बा (ई अकाट्य सत्य बा) आ सभ ओकरा खातिर नीक जबून जोगाड़ करते बा। रउवा नइखीं करत त रउरा पेट क जोगाड़ केहु दोसर भा तीसर करत होई। कहल गइल बा कि लइका जब धरती पर आवेला त ओकर पहिला चिल्लाहट पेटे खातिर मचेला। पेट भरल कि चुप। लइका चाहे अदिमी क होखे भा कवनो जानवर के, लइके ह। फेरु ओकरा भूखि कइसे ना लागी? अगर रउवा एह से इनकार करबि त एह सत्य के ना तोपि सकीं कि राउर पैदाइश पेटे से भइल ह। रउरे ना सभकर। माई का पेट में नौ महीना रहिए के रउवा धरती पर अइनी। धरतियो माइये ह। राउर पालन पोषन एही पर भइल बा। रउरे ना हमरा खियाल से हर दाना दूनी के अपना गरभ से नया जन्म रूप रंग आ सुघराई देबे वाली धरतिए ह। अगर वैज्ञानिक फारमूला के मानीं त ई कहाई कि रउवा पेट से अइनी, पेट पर (धरती का) पोसइनी, पेट खातिर जाँगर तोरनी, बुद्धि दउरवनी, गलत–सही, नीक–जबून जवन बुझाइल कइनी आ फेर पेटे में (धरती में) चलि गइनी। आवा–जाही के एह कड़ुवा सच के रउवा ना झुठिला सकीं।

दू अच्छर से बनल ए शब्द के महिमा अपरंपार बा। मानीं त देव नाहीं त पत्थर। राम क दुइये आखर भवसागर से पार करावे वाला, बिपत बलाइ दूर करे वाला आ तारे वाला ह। मनले पर नू? मानी त राम नाहीं त किछु ना। पिण्डे से ब्रह्माण्ड के व्यापकता बा। संसार ब्रह्मांड कहाला। बह्म के पेट ई संसार ह। धरती–अकास के कूल्हि नाँव–रूपधारी जिया–जन्तु, कीट–पतिंगा, गाछ–बिरिछ, लता–कुंज, घास–पात सभकर जियन–मरन एही अखिल ब्रह्मांड भा पेटे में बा। तब पेट के बड़ काहें ना मानल जाय? पेट क महिमा बड़–ना रहित त भगवान कृष्ण आपन नाँव दामोदर ना रखितन। एही से ऊहो इहे कहले बाड़न कि पेट अइसन चीझ ह, जेवना से केहू बाँचि ना सके। देवता लोगन में लम्बोदर (गणेश जी), महारथियन में वृकोदर (भीमसेन) आ राक्षसन में सहोदर (रावन के योद्धा), के, नइखे एह पेट से जुड़ल? उदर का जवरे गणेश आदि देवता भइलन, भीम संसार के महाबली आ सहोदर कुम्भकरन महायोद्धा कहइलन। इहे ना नारी जाति में उदर से सम्बन्धित नारी बहुत नामी भइली सन। मंदोदरी, सहोदरी, कृशोदरी नाँव कवनो घरी के चर्चित नाँव रहे।

संसार में रहे वाला मूरुख, विद्वान, चल्हाँक, बुड़बक, ओझा–गुनी, ऊँच–नीच, धनी–गरीब, छोट–बड़ के अइसन बा, जे रात–दिन अपना आ अपना असरइतन के पेट भरे के उतजोग नइखे करत? उतजोग चाहे नीक होखे भा जबून मूलतः ओकर सम्बन्ध पेटे से बा।

"हम फ्रायड नियर अतिवादी मनोवैग्यानिक नइखीं भइल चाहत, जेकर कहनाम रहे कि काम कूल्हि क जरि ह। पेट कूल्हि के जरि ह, ई साबित कइल कवनो बड़ बातो नइखे, बाकिर साबित कइला के जरूरते का बा? रउवा इनकार करितीं तब न? हमरा लेखे ऊ आदमी धनि बा जे अपना पेट के चिन्ता ना क के, दूसरा के पेट पाले–पोसे में आपन कूल्हि गवाँ देता। बाकिर अइसन लोग कतहूँ, कवनो समाज में बहुत कम बाड़न।

ढेरका तदाद ओही लोगन के बा, जे अपना भूखि–अपना पेट खातिर–दोसरा के पेट काटे मारे प उतारू रहेला। दोसरा के लूटे, चोरावे, छीने, मारे, मुआवे वालन के तदाद आज हर जगह, हर समाज में अधिका बा।

एह देश में अइसन लोग के तदाद ढेर बा, जेकरा जियका जमीन जनमे से नइखे, रोजियो–रोजगार मोहाले बा। कहीं मेहनत–मसक्कत से दू–चार पइसा मिल गइल त पेट नाँव के अतल कराह में कुछ छौंका गइल, नाहीं त हहाइल–छिछियाइल घूमे के बटले बा। कबो कबो त स्थिति अइसन आ जाले कि कामो–धंधा ना मिले आ ई समस्या कबो–कबो ढेर दिन ले चल जाले। ओह समय ए लोग का सोझा चोरी–छिनारो का अलावे दोसर विकल्प कमे बा? संस्कृत में एगो लाइन बा– 'बुभुक्षितं कि न करोति पापम्?' भूखा कौन पाप ना करे? कुछ लोग अइसनो बा जेके भूखा बनिके लूटे, माँगे आ बटोरे के सवख बा। आदत से लचार ए लोगन का आँखी कवनो सील–संकोच नइखे। धर्म–कर्म क फिलासफी इनका सोझा फेल बा। 'भाऊ भाव ना जाने, पेट भरला के चिन्ता'।"

पेट के दोजख कहल गइल बा। दोजख माने नरक। एह नरक के आगि बड़ी भीषण, बड़ी प्रचण्ड होले। ई जब आपन विकराल रूप धरेले त अदिमी–अदिमी ना रहिके किछु दोसर हो जाला। पेट का चलते अगर केहू के नरक के दुःख आ बीपत भोगे के परि जाव त का ओकरा खातिर ई धरती नरक समान नइखे?

भारत जइसन देस में अइसन दोजख गली–गली बा। दोजख भरे खातिर जियत एह लोगन के किनहूँ–बेचे वाला ढेर बाड़न एइजा। अइसना लोगन के असली हालत में बदलाव खातिर कबो, कवनो सरकार कवनो क्रांतिकारी कदम ना उठवलस। ई लोग खुदे कबो उठे ऊ कोसिस ना कइल। लोग काम आ क्षुधा के मारल बा। जले ऊ बढ़ल जाता बेरोजगारी बढ़ल जातिया। बेरोजगारी का सुरसा–मुख में लाखों–करोड़ों लोग अनासो समाइल जाता। एसे पेट भरे आ पोसे के राह में बिघिने–बिघिन बढ़ल जाता। ना देहिं पर सुबिधान कपड़ा ना पेट में सुबिधान भोजन। एकरा पाछे कवन कारन बा? काहें पेट पर आफत बढ़ल जाता? का पैदावार कम होता? ना। दोस खाली ए फटहा पुरान व्यवस्था आ सोच के बा, जेकरा आँचर में छेदे–छेद बा। बहुत हल्ला–गुल्ला मचेला त कुछु पेवन लागि जइहन स। व्यवस्था के खटारा गाड़ी चलि जाई। बाकिर फेर कुछ दिन पर ऊहे हाल। एह आँचर से का फायदा? नंग–धड़ंग दिगम्बरे बनि के रहल ठीक बा। समरथ लोगन का पेट भा मानसिक क्षुधा से कुछ बाँची तब नऽ? बँचबो करी त तहखाना में चलि जाई। फेरु निकली बिलेक में।

हमरा देस में दू गो गोल सोझे तइयार हो गइल बा। पेट दूनू गोल के बा। बाकिर एक गोल का लग्गे पेट के कूल्हि सरंजाम जुटल बा दुसरका गोल (पेट पर) ओकरे हाथे बन्हाइल–बिकाइल बा। भूखि का नीति पर पहिलका गोल जब चाहेला दोसरका के दबा देला–लूटि लेला, मीसि देला। पहिलका गोल का रुतबा आ प्रभाव का आगा, दोसरका गोल एकदमें नवल बा। तनी तरनातो बा, त मारिके सुता दिहल जाता। बरियार हर तरह से बरियार बा। अब्बर हर तरह से अब्बर। बरियार कूल्हि लीलियो के डकारत नइखे, साँस तक नइखे लेत। ओकरा पेट के तल रसातल ले बा–कपड़ा, अनाज, तेल, चीनी, डालडा, सीमेन्ट लोहा–लक्कड़ कूल्हि हजम बा। बोली ओकर अतना मीठ बा कि गरदनो उतार लेव, त पता ना चली। ओकरा लग्गे कूल्हि साधन बा। ऊ चाहे त भाई–भाई में बलवा करा देव, जाति–धरम, क्षेत्र आ भाषा के लेके दंगा करा दिहल ओकरा बायां हाथ क खेल बा। सरकार ओकरे माया से चलेले। नियम–कानून ओकरा पाकिट में बा। ओकरा पास हर किसिम के अदिमी तइयार बाड़न। आडर मिलला क देरी बा। बाकिर ओकरा में ईहे एगो कमी बा कि ओकरा अपना पर बहुते घमंड बा, ऊ नइखे जानत कि जब पेट भरसाईं बन जाला त ओम्मे से बड़ा तिक्खर आँचि निकसेले। आ चाहे जानियो के अनजान बनल बा। बाकिर दुसरका गोल क जठराग्नि धिरही–धीरे अतना तेज हो गइल बा कि ओके रोकल बहुत जरूरी बा। नाहीं त ई आगि अइसन फइली कि केहू के बिना जरवले ना छोड़ी। गनीमत बा कि आवे वाला समय खातिर एगो चेतना लहर ले रहल बा।

एसे सभकर पहिल धरम इहे बा कि सब सभका सहोदर भाव से देखो। सभकर पेट भरे के चाहीं। पेट पेटे ह। चाहे लयनू नियर चिक्कन आ फूल लेखा मोलायम होखे भा कठौती नियर कड़ेर आ हाँड़ी नियर भद होखो। सभके रोटी चाहीं। केहू के मुँह के कवर छीनल, गऊ हत्या तमाम बा। सभकर परम कर्तव्य रहे कि भूख से जुड़ल पाप नाँव के चीझ एह दुनिया से उठि जाव। व्यवस्था अपना आपे ठीक हो जाई। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' आ मानवता के नारो सुफल हो जाई। कौर उठावे त मेहनत आ ईमानदारी क; हराम के कौर उठावल महापाप ह। सभके ई परन ठानि लेवे के चाहीं कि 'हम अपने पेट के ना बलुक दोसरो के पेट के पेट समुझब' त आधा झगरा झंझट आ दुश्मनी अपने मेटि जाई। मानवता के साँच सेवा एही पुन्न से होई। ई काम झुठिया गंगा नहान आ माला जप से बढ़ि के बा। ●● – *साखी, (1979)*

कोजागरी

✍ शिव प्रसाद सिंह

भारत के साहित्य में भा पुराणन में, संस्कृति भा धर्म साधना में, कई गो बड़हन लोगन क जनम आ मरण कुआर के पुनवासी के दिन भइल बाटे। कुआर के पुनवासी–शरदपूर्णिमा के ज्योति आ अमृत के मिलल जुलल सरबत कहल जा सकेला। ऊ दिन रात भर अपना छते पर लोग खीर के भरल कटोरा भा थरिया रखि देहला कि राति भर ओम्मे अमृत क बरखा होखे ओस के बूँद बनि के। इहो कहल जाला कि ऊ खीर खइला से असाध्य से असाध्य रोगन से जड़ से छुटकारा मिलि जाला। ई बाति त रउआ सभ जानते होखब कि अँजोरिया पाख के पहिलका दिन, प्रतिपदा, के वरुणजल कलसा पर नरियर रखि के दुर्गा माई क आवाहन कइल जाला आ भर नवरात्र ओनकर पूजा–पाठ खूब धूमधाम से सगरी ओर होखे लागेला। ऊ महीना क अँधेरिया पाख होखेला पितरन क आ अँजोरिया देवतन क। हम अगर ई लेख में बड़हन महात्मा लोगन का चरित्र बतावे लागीं ओकर महत्व बतावे लागीं त लेख के जगहा पर एक गो किताबे बन जाई। एह खातिर खाली पुनवासिए तक अपना के सीमित रखल चाहत बानीं।

शरदपूर्णिमा के दिन हमरे बनारस में सगरे घाटन पर लम्बा लम्बा बाँसन का टुनगी पर सींक के भा बाँस के छोटहट खंचोली में जवना के हमहन के पुरखा लोग मंजूषा कहत रहलें, दीया जलावल जाला। एह तरह के दीया के कहल जाला आकाश दीप। अब आकाश दीप रखे के इतिहास त हमहन के भुलाई गइल बाटे। एही तरह से इहो भुलाई गइल कि इ कुल काँहे खातिर कइल जात रहे। आजकल के पतरन में ज्योतिषी लोग 'आकाश दीपदान' के आदेश आ चरचा करेलें आ ओकर महातिमों बतावेलें। गंगा मैया के दीपदान, मंदिरन में दीपदान ज्योति से ज्योति जला के तमस के खिलाफ चलत एगो पुरान जुद्ध क अखण्ड लीला बाटे। भगवान् तथागत बुद्ध के प्रिय शिष्य आनन्द एक बार ओनसे पुछलें कि भन्ते, रउरा ना रहला पर भिक्खु लोग कहँवा से प्रकाश पइहें। भगवान् बुद्ध आनन्द से कहलें– आत्मदीपो भव। अपने दीपक खुद अपना के बनाव। आतमा के दीया जलावऽ। ई घटना से इहो पता चलता कि जौन प्रकाश सूरुज आ चन्द्रमा से मिलेला, ऊ त ऊपरी अंधेरा भगा सकेला। बाकिर मन के भीतर प्रकाश पावे खातिर त एके गो उपाय बाटे–बहरे देखल छोड़ऽ। मन्दिर मसजिद में जौन प्रकाश बा उहौ उपरिए प्रकाश बाटे। भीतर के प्रकाश देखल चाहत होखऽ त खुद अपना भीतर उतरत चलल जा निर्भय होके। एक न एक दिन तोहरा के ऊ प्रकाश जरुरे देखाई जौने के निवास त तोहरे भीतरहीं बाटे। एही के चैत्य पुरुष क जागरण बतवलें महर्षि श्री अरविन्द। बहुत गहराई में उतरत चलल पर कई मील भीतर यात्रा कइला का बाद में ओहिजा मिलेला एगो दिव्य प्रकाश के चिनगारी जौना के परमात्मा क स्फुल्लिंग कहल जाला। उहे बताई तोहरा के अगवढ़ यात्रा क रास्ता। जब ऊ प्रकाश एकबार दिखाई दे जाला त ऊपर आ भीतर हजारो हजारन सूरुज एकै बारे चमकि उठिहैं। अइसन सूरुजन का रोशनी में आँखि क रोशनी न चौधियाई बलुक

अऊरी शीतल होई आ तोहरा के अउरी सूक्ष्म चीजन के देखे लाइक बना दी। एह तरह से देखला पर बुझाला कि हमरा देश में 'दीप' के बहुते गहिर मतलब रहल ह।

आजु के हिसाब से देखला पर इहे बुझाला कि आकाशदीप दान एगो उजड़ल, टूटल, फूटल–फाटल प्रथा क निर्बाहे मात्र रह गइल बाटे। चाहे गंगाजी में होखे भा मन्दिर में ई सब जगहा त दीपदान आसान काम बाटे। बाकिर 'आकाश दीपदान' कहला आ लिखला क तात्परज का बाटे। आकाशे में सूली ऊपर सेज पिया की बाटे– ओहि पर चढ़ के सभे जनसाधारण कइसे करि लीहन दीपदान?

एह उत्सव क पुरान नाम रहे 'कोजागरी'। एह शब्द क खोज कइला पर दिखाई देला कि सगरे शब्दकोशन में एकर जिकिर बाटे बाकिर एकर मतलब कतही ना मिलेला। मोनियर विलियम्स से शुरु क के ज्ञानमण्डल तक के शब्द कोशन में एकरे अर्थ का जगहा पर लिखल मिलेला एक गो उत्सव। बस, एकरा अलावे कुछु कतहूँ ना मिलेला। हिन्दी के अमर लेखक जयशंकर 'प्रसाद' 'एगो कहानी लिखलें जौना के नामे हवे 'आकाश' दीप'। अगर ई कहानी उ ना लिखतें त कुछ एक विद्वान् लोगन के अलावे, के जान पावत आकाश दीप के महत्व। बनारस अपना भीतर अइसने न जाने केतना चीजन के छिपवले बाटे। उ सबहन के केलव अनदाजे लगावल जा सकेला। हमरो के काशी पर काम करत करत दस साल त होइए गईल। बाकिर अबहियों कौनों कौनो अइसन जगहा भा निशान मिलि जाला जेकर पहिले से गियान त दूर, सोचलो कठिने लागेला।

रउआ सभे विद्वानन से जरुरे सुनले होखब कि न जाने केतना साल से, अनादि काल से कहीं त ज्यादा ठीक होखी, सगरी दुनिया के जोड़े खातिर व्यापारी लोग अपना साथे वृषभ शटक (बैलगाड़ी), अश्वरथ (घोड़ा गाड़ी) आ सुरक्षा सिपाहियन का साथे व्यौपार करे खातिर जात रहले हँ। एकरा के 'सार्थ' कहत रहलें हमहन क पुरखा लोग। जब कौनो पोत समुन्दरी लहरन का भँवर जाल में फँस जात रहे त समुन्दर का देवी मणि मेखला के धियान कइला से ऊ किनारा पर आ जात रहे। अपना देस के पहिलका सार्थवाह रहलें महाजनक। सार्थवाह क मतलब होखेला पूरा काफिला क नेता। ई जनक उपनिषद वाला नाहीं हवें। उनकर बेटा रहलें महाजनक। इहौ बुझाला कि महाजनक (गियानी) आ महाजनक सार्थवाह प्रथम, द्वितीय महाजनक नाम से जानल जात रहल होइहें। काहे से कि एकेगो जनक ई दुनो काम नाहिए कर सकेलें' उनहीं के नेता मानि के काशी तक के सभे पोत एकै झण्डा का नीचे व्यौपार खातिर जात रहल होइहें। वावेरु जातक में लिखल मिलेला कि वाराणसी के व्यौपारी लोग 'दिशाकाक' ले के पोत से चललें। दिशाकाक कहात रहे ऊ कौआ के जौना से इ पता लागत रहल कि आसे पासे कहीं जमीन देखाता। बाबुल देश वाला लोग ऊ कौवा पर इतना मोहइलें कि ओकरा के कीनि लेहलें। कबौं कबौं टूटल जहाज के पटरा पकड़ि के अथाह अछोर समुन्द्रै में समाधियों लेबे के पड़त रहल होई ओह लोगन के। महाजनक भइल रहलें वेद के आखिरी भाग में। एक तरह से ई कहल जा सकेला कि उ रहलें पहिलका भारतवासी जे अंग देस के चम्पा बन्दरगाह से यव द्वीप, सुवर्ण द्वीप में पहुँचत रहलें आ ओहिजा काशी के कपड़ा–लत्ता अनमोल पच्चीकारी वाला गहना–गुरिया, तार्प्यक साड़ी वगैरह पहुँचावत रहलें। ओकरा बाद ओहर से इलायची, लौंग, कत्था, समुद्री सीप, मोती वगैरह ले के लौटत रहलें। ई सब बातन क पूरी जानकारी 'प्रसाद' जी के रहल होई जौना के ऊ आकाशदीप में अइसने पोत पर बन्दी बनावल नायिका ओ पोतदस्यु के कहानी में लिखि डललन। ओही कहानी के आखिर में चम्पाद्वीप में आकाश दीप स्तम्भ बनावे क चरचा ऊ कइले बाड़न स।

हमरे भोजपुरी में लोग ऊ कुल्हि बातन के भुला देहले बाड़ें जब कि महाजनकौ त भोजपुरै क हिस्सा रहल होइहें। एही से हमरे भोजपुरी टप्पा में अकास दीप उत्सव का याद दियावे वाला बाँस के छोर पर लटकल आकास दीप क चरचा चलि रहल बाटे। साँच बात त इ तब कहात जब हमहन के ई कुल्हि बातन का पता होखत। पता मिली भोजपुरिया मनके भीतर से जेकर थाह लीहल त बहुते मुश्किल बाटे। बनारस में अबहियों इ प्रथा शेष बाटे काहें से कि ई नगर वेद के जमाना में बसल।

इ अकास दीप इ बतावे खातिर रहे कि सही रस्ता कवन हवे। केहर जाए के चाही केहर न जाए के चाहीं। इहै प्रथा आजुओ ले निबाहल जात बाटे। सभे के इ आसा रहे कि कातिक महीना में जरुर व्यौपारी अपना घरे लौट अइहें। एही से दीवाली के बाद जब गोधना कुटात रहै, त ओही गोबर से पीड़िया बनावल जात रहे। इहो प्रथा एही मारे, चलल कि कबौ कबौ दीवाली पर नाव अपना देश ना पहुँच पावत रहलीं, कहीं बेलम जात रहीं। कबौं चक्रवात में उलटतो रहलीं। जिन्स क

नुकसान त भरा जाला बाकिर जौन जन क हानी होखत रहल ओकरा के केहु कबौ भर सकेला का? बारह मासा में त कातिक क एतना बखान भइल बाटे कि कई बार अचम्भा होखे लागेला। कातिक के पावन महीना कौने काम के जब ले पियवा घरे ना लौटस :

कातिक कंत विदेस गए सखि हौं जोगिनी तैयार हो।
दुःख सुखवा हरि संग गँवइतों दियवा बरतों अकास हो।।
(भो.लोकगीत–181)

इहवौं अकासे दियवा बारे क साध देखाता। एगो दूसरो बारह मासा में प्रीतम के बनजारा (जे वानिज्य व्यौपार खातिर गइल होखस) होखे क दरद छटपटा रहल बा–

पहिल मास जब कातिक लागल
हमरा के छाँड़ि पिया भइले वणिजार
नाचत अहीर चरावत गाइ
पिया बिनु कातिक मोहि न सुहात।।

भोजपुरी लोक गीतन में बड़हन रहस्य भरल बाटे लोकगीतन में बहुरा के गीत खूब गावल जाला। हमहन के त इहौ भुला गयल बाटे कि बहुरा के गीत आ पीड़िया के गीतन में कौन रिश्ता बाटे। बहुरा के बारे में डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय जी अपने साहित्य कोश में लिखले बाटन कि इ व्रत भादों के अँधेरिया पाखके चौथके दिने मनावल जाला। मनावे क उद्देश्य रहेला सन्तान आ सुख सम्पत्ति पावल। ओही के भीतर उ बहुला गाय आ सिंह के कथा बतवले बाड़ें। बहुला गाय के एगो सिंह दाब देहले रहल। ओकर बछड़ा छोट रहल ओकरे परितोख के खातिर गाय कुछ देर क छुट्टी मँगलेस आ फिर लौट के आवे के कसम देहलेस। ऊ आपन कसम पूरो कइलेस जौना के देखि के सिंह क मन पसीज गइल ऊ ओके छोड़ देहलेस। एकरा बाद उपाध्याय जी लिखले बाड़ें कि बहुरा नाम के गीतन का साथे एह कथा के कौनो सम्बन्ध नइखे। काहें से कि इ गीत त विरहिण ी औरत लोग गावेलीं। ओम्में त सास ननद से झगड़े के परसंग मिलेला। जब गीतन के अरथ से गीतन का विषय में कौनों मेलेजोल नइखे त ओप्पर निराधार 'बहुरा' थोपले का जरुरत का बाटे?

भादो वदी चौथ के जौन व्रत कइल जाला तौना के संकेत त कुल्हि पंचांग में बहुला व्रत के नाम से होखबैहीं करेला :

श्रोतव्या बहुला गाथा स्त्रीभिश्च पुरुषैस्तथा।
मातृणां सुतवात्सल्यं सत्यस्य महिमा परम्।।

बिहुला में माता क पुत्र प्रेम आ सत्य का पालन के कथा कहे सुने क फल बतावल गइल हवे। एमा विरहिणी के बहुरा से का मतलब? बिहुरा गीतन के पहिलके गीत में इतिहास के भारी भरकम खण्डन देखात हौ साफे साफ। देखीं सभे :

लवंग सोपरिया बोझाइल मोरी नइया
केहो लगइहें नैया पार ए।
बाबा के जनमल भइया जे रहतें
हँसत खेलत नैया पार ए।
ससुरु के जनमल देवरु जे रहतें
हँसत खेलत नैया पार ए।

ओकर न त भाई बा न देवर। अकेल सैंया बनिज पर निकलल बाड़न त ऊ अपना के बनिजारिन बना लेहलस :

राम खेवइया लखन बोझवईया
से अब नइया लगइहै पार ए।।

ऊ जब देखलस कि सामने से आवत नइया ओकरे वणिजार क हौ। इ नैया त वणिज पर गइले ओही के सैंया वणिजार क हौ। एतना देखते गोरी क हिरदा उमंग से भरी गइल :

जो हम जनतीं कि हरिजी खेवइया
तो लेवतीं अँचरा भरी पान ए।
सबके त दिहतीं एकहक बिरवा
हरि जी के देतीं खोंइछा झार ए।।

एही मारे प्रीतम के राह देखरावे खातिर कुवार के पुन्नवासी से कातिक पुन्नवासी तक आकाश दीपन से काशी के घाट जगमगात रहेलें। इहै हौ कोजागरी क महिमा! इहै हौ भारत के सार्थवाह क कहानी जवन अपना देस क सामग्री से बोझाइल नाव ले के यव द्वीप, सुवर्ण द्वीप के यात्रा पर जात रहलें।

– (समकालीन भोजपुरी साहित्य, अंक–3, मार्च, 97)

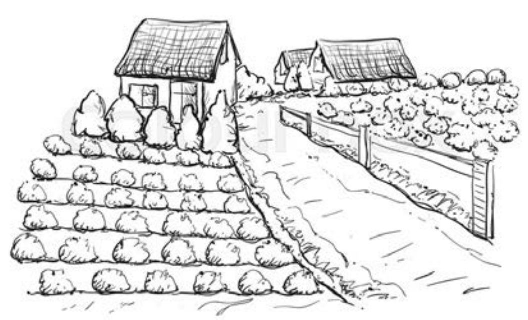

दसवाँ ग्रह

✍ कुलदीप नारायण 'झड़प'

अपने हमरा बात पर अचरज करब, हँसब आ झुँझुलाइब कि दसवाँ ग्रह कइसन जी? फलित ज्योतिष का अनुसार त ग्रहन के गणना नवे गो बा। खगोल शास्त्री लोग के बात पर विचार कइल जाय तबों त कुल्हि नवे गो ग्रह बाड़े। गनिये लीं– बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, वृहस्पति, शनि, यूरेनस (अरुण), नेप्च्यून (वरुण) आ उल्टा चले वाला प्लूटो। फिर दसवाँ ग्रह कहाँ से आइल? का इहो कवनो पद–प्रतिष्ठा ह, कि कवनो सरकारी विभाग ह, जे जब मन में आई एगो जगह बढ़ाके ओपर केहू के बइठा दिहल जाई? कि दियारी के दियरी ह कि तनी तेल डालि के थोरे देर खातिर लहका दिहल जाई?

राउर तर्क त ठीके बा, बाकी सब जगह तर्के से सत्य के जाँच ना होला। यदि सब जगह तर्के परम प्रमाण मानल जाइत त तुलसीदास काहे कहितीं–

"कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, युगल प्रबल कोउ माने।
तुलसिदास परिहरे तीन भ्रम, सो आपुन पहिचाने।।"

इहे बात सूरोदास जी कहत बानीं–

'मन वाणी से अगम अगोचर सूर सगुन लीला पद गावे।'

जइसे ए महाकवियन के बात तर्क का बाहर बा बाकी बा अनुभव के बात। ओइसहीं हमरो बात के आधार बा। सुनीं संस्कृत का एगो कविजी के उक्ति–

'सदा वक्री, सदा क्रूर, सदा पूजामपेक्षते।
कन्या राशि स्थिते नित्यं जामाता दशमो ग्रहः।।'

अब जनलीं! दमाद दसवाँ ग्रह ह!! आ ऊहो राहु–केतु या प्लूटो नियर उल्टा बहे वाला, सदा वक्री। क्रूर अइसन कि सदा पुजावत रहे के इच्छुक, कतनो पूजा दीं कबे संतुष्ट होखे के हाल ना जाने। ए विषय में लोकगीत के प्रमाण लीं। एगो सास–ससुर के दमाद खातिर दहेज के जोग जुटावे में सगरी पाहि लागि गइल बा। दमाद का फरमाइश का मारे उनकर नकदम हो गइल बा, उनका गृहस्थी के जरि–पलई लुँज–पूँज हो रहल बा। उनका प्रतिष्ठा के भरल नाव मँझधार में डूबे चाहत बा, बाकी दमाद जी का ए से का मतलब! ससुर जी तन–बिन जासु, उजरि–पजरि के पार लागि जासु भा जहन्नुम में जासु, उनका त दहेज चाहीं। दसवाँ ग्रह दमाद के मनावे में, संतुष्ट आ प्रसन्न करे में किकियात ससुर का व्याकुल हृदय के मर्म पीड़ा सुनीं– 'एतना दहेज हम बेटी के दिहलीं मुखवो ना बोलेला दमाद!'

'ऊ काहें के बोलसु? जो बोलिये दिहें त उनकर पूजा कइसे होई? नइखीं सुनले– प्यादा से फरजी भयो टेढ़ो–टेढ़ो जाय।' बहुत लोगन का अधिकार पाके पुरनका जान–पहिचान भुला जाला। बलबन पहिले गुलाम रहल, बाकी जब दिल्ली के सुल्तान का पद पर पहुँचल त सबसे पहिले अपना चालीस गो साथी गुलामने

के हत्या करवलस। ओ मूस के के कहानी नइखे जानत, जवन मुनिजी का कृपा से सिंह बनि गइल आ, सिंह बनला पर ऊ अपना निर्माता मुनिये जी के खा जाये चहलस!

हम ई नइखीं कहत कि दमाद जी बलबन हईं आ ऊ मूस से बनल सिंह बाकी पद बढ़ला पर अहम त आइये जाला। लोभ–लालच सब–जान पहिचान आ नाता–गोता पर पानी फेर देला। यदि ई बात ना रहित त अलाउद्दीन अपना ससुर जलाउद्दीन के, मुहम्मद अपना बाप गयासुद्दीन के, जहाँगीर अपना बेटा खुसरू के, आ औरंगजेब अपना भाइयन के हत्या काहे कराइत? अधिकार आ पद का खुराफात से इनकार कइसे कइल जाई? इहो एगो शाश्वत सत्य ह, जवन ए सत्य का युग में सर्व सम्पन्न होके सगरे संसार के छपले बा।

रउराँ कहब कि ई त कलयुग ह, सत्य के युग कइसे? त एकर उत्तर ई बा कि सत्य का नाम पर अश्लील साहित्य के उद्घाटन कइल जाता, सत्य का नाम पर मन के कसक निकालल जाता आ सत्य का क्षेत्र में जारी, हत्यारी, बटमारी, शराबखोरी, घूसखोरी, चोरबजारी, मुनाफादारी, धोखाधड़ी आदि सबकुछ समेटि लिहल गइल बा त ई सत्य के युग ना कहा के कलयुग काहें कहाई? हँ, आज काल्ह कले पर आ कले का माध्यम से सब काम होता। ए अर्थ में कलयुग कहीं त मान सकीले। बाकी तबों कइसे मानी? कल–बल–छल से पेट पोसल सब जीवन के स्वाभाविक प्रवृत्ति ह। ओही जीवन में आदमियों बा, ए से जो ओकरा स्वभाव में उपर्युक्त सद्‌गुण स्पष्ट रूप से खुल के खेलऽता, तबों ए सत्य के बेपरद कके नचावे वाला युग के सत्य के युग कहल जाई नु!

खैर, आईं अब दसवाँ ग्रह का ओर। जवना पद पर पहुँचला के एतना प्रभाव आ मोल–महत्व बा ओ पद–प्रतिष्ठा के पावेके, के ना अभिलाषी होई? वनवासी श्रृंगीमुनि राजा रोमपाद के दमाद बने खातिर तइयार हो गइले। धर्मशास्त्र में दमाद के मधुपर्क देबे के विधान बा। मधुपर्क के अधिकारी बहुत विशिष्ट अतिथि होला। अकबर से लेके औरंगजेब तक मुगल बादशाह आपन दमाद केहू के ना बनवले। ऊ लोग अपना के दुनिया में सबसे बड़ मानल त आपन लड़की केकरा के देव? उत्तर मध्य युग में राजस्थान के बहुत राजपूत सरदार जनमते लड़किन के बधे क दिहला में आपन कल्याण आ आपन प्रतिष्ठा के रक्षा बूझसु। ओ घरी लड़की के बियाह भारी झगरा के जरि रहे। ओसे बचे के ओ लोग का इहे उपाय सूझल। ओ घरी से ए घरी ले केतना बात बदलि गइल। तब गुणवंती लड़की के माँग कइल जात रहे, अब तिलक दहेज के माँग कइल जाता। तब कुल–कुटुम्ब के बनावे उठावे के भावना रहे, अब धन जोरि–बटोरि के व्यसनी बनेके प्रवृत्ति बा– चाहे ससुर बिका जासु, स्त्री मरि जाय आ घर उजर जाव आ लड़िका बिलबिलात फिरसु। व्यक्तिनिष्ठता अइसन बढ़ि गइल बा कि आपन मौज चाहीं। संकीर्ण स्वार्थ का नंगा नाच का आगे समाज–निष्ठा हवा हो गइल।

ससुर से पूजा पाके भला केकर मन चंग पर ना चढ़ि जाई? जब भगवान विष्णु आ शिव का ससुरारी में बसल नीक लागल त 'इतरजीव केहि लेखे माही'। जेके एगो अवलम्ब मिल गइल ओके दुसरा के अपेक्षा का? गोसाईं जी त कहिये गइल बानी–

ससुरारी पियारी लगी जबते।
रिपु रूप कुटुम्ब भए तब ते।।

सास–ससुर का प्रेम में महतारी–बाप का प्रेम के भुलवा दिहल युग के परिपाटी बनि गइल बा। ससुरजी का घरे रात–दिन निवास करे वाला दमाद जी मधुपर्क आ मान–सम्मान के भले अधिकारी ना होईं जइसन कि कहल बा–

घरहि जमाई ज्यो घटयो खरो पूस दिनमान

बाकी सुख–सुविधा के त अधिकारी बानी। ई युग ईज्जत प्रतिष्ठा के ताखा पर ध के सुख–सुविधा खोजता। एही से कुलाभिमान आ लाज–लेहाज लाजवन्ती बूटी में जाके लुका गइल बा। धन्य बा ई समतावादी युग जवन सभ कुलीन–अकुलीन के एके लाठी से, एके दिशा में हाँकि दिहलस।

कहल बा– 'दमाद डाइनों का प्रिय होला।' बाकी दमाद का? ऊ त सास–ससुर के भकुआ बुझेले, सुनींना–

घर घोड़ा भुइयाँ चले, अछइत काढ़े रीन।
थाती धरे दमाद घर, जग में भकुआ तीन।। ●●

कि बरधे कि मरदे

डॉ0 नन्दकिशोर तिवारी

अक्षैर्मादीव्यः किषिमित् कृषष्व वित्ते रमस्व बहुमन्यमानः तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे विचष्टे सविताऽयमर्य (ऋ0 7/8/5/3)

ऋग्वैदिक रिचा में एगो जुआड़ी के जूआ खेलला से मना करत ऋषि कहत बाड़न कि जूआ खेलला से आछा बा कि तू खेती करऽ। खेती में एके साथे कई गो फयदा बा। दूध देबे वाली गायो मिलेली सन आउर पतिबरता मेहरारुओ। स्वामी सविता देव ई बात हमरा से कहले रहन। एह रिचा के पढ़ला से कई गो सवाल दिमाग में उठे लागल। सुरूज भगवान छछात देवता हवन। अपना उपदेस में खेतिए करे के कहत बाड़न, नोकरी आ बैपार के बात एहमें नइखे। जूआ के बदला खेती करऽ माने खेती के छोड़इ के सभ काम जूए हऽ। जरूर ईहे बात हमनी के मसल में आइल बा ऊतम खेती मध्यम बान...। सुरूज भगवान अपना बनावल जीवन्ह के रच्छा खातिर एकरा के जरूरी चीझ बतवलन। हमार सौ बरिस से ऊपर के पुरनिआँ मतारी हमरा नोकरी से बढ़के खेतिए पर जादा जोर देली। रोज कहिहन कि बाबू नोकरी चार दिन के चाननी ह। खेतिए से सगरो बराबर अँजोर बा। अतना अदिमी जीआ, जन्तू जीअत बाड़न सभका के दूध घीव मवस्सर होता। नोकरी वाला अपने खाला, खाइल चाहेला। खेती वाला साथे खाला सभका के खिआवेला। नोकरी आजु बा, काल्ह नइखे, 'बिजनेस' में आजे राजा, काल्हे कंगाल। लेकिन खेती करे वाला के धरती माता भले बहुत जादा ना देसु बाकिर कबो दरिद्दरो ना होखे देस। ई बात होते रहे कि बुढ़वा बएल बेमार होके गाँव से डेरा पर दवाई करावे चलि आइल। डाकदर कहले कि एकरा ढाँसी हो गइल बा बहुत पइसा लागी। रउरा अतना में त दोसर बएले खरीद लेब। माई से कहलीं कि मर जाए दे एकरा के अतना सेवा आ दवाई में त दोसर नीमन बएल आ जाई। मतारी डँटली– "खबरदार लछिमी के अइसे ना कहे के। जिनिगी भर बरधई कइलस आ अब ओकरा के दवइओ दूलम हो गइल। हम त तोहार कवनो काम नइखीं करत त हमार दवाई बेमार भइला प ना न करइबऽ।" तुरंते मोहावरा मढ़लस– 'कि बरधे कि मरदे' बरध आ मरद ईहे त खेती, घर, दुआर के सिंगार हवन। इन्हकरे से सब राज पाट बा। कतनो पइसा लागे दवाई करवावऽ। पइसा से खेती के ना तउलल जा सके। ई बरधा जी जाई त साल भर खेती कराके सभ असूल करा दीही। बूढ़ के बात बिरिथा ना जाय। आँख मूदिके दवाई–बीरो भइल। बएल जी, जी गइलीं। दू साल खेतिओ करवँली आ सात सौ में एगो गरीब जोते खातिर ले गइल। माई कहत रहली कि बरध आ मरद कबो ना बुढ़ास। खियावत रहऽ, काम लेत रहऽ। असल में पचीस–तीस साल से ट्रैक्टर खेती करऽता एसे बएल के तरफ से आँखे मुदा गइल रहे।

बड़ा गुनावन कइलीं माताजी के बात पर। अब बुझाइल कि मरद आ बरध ईहे दूनों खेती गिरहथी के चलावे वाला दूनों चाका हवन। ईहे दूनो देस के बचा

सकेलन, बढ़ा सकेलन। बेटा सेआन भइला पर अगर मरद ना निकलल, माने अपना कान्ही पर पूरा घर के भार ना उठा लेलस, त ओकर जनम मरद के ना कहाई। कुल–खानदान के पानी त मरदे राखेला। अइसहीं बाछा के बरध होके पूरा गिरहस्थी चलावे के परेला। मरद के खिआ–पिया के मेहरारू (माई चाहे मेहर) घर में पट्टा बनवले रहेली आ उनुके बल पर जिनिगी भर फानत रहेली– 'सिंह स्वपति निर्भया'। सीता जी कहलीं न– 'को प्रभु संग मोहि चितवनहारा'। सिंह के मेहरारू का ओरी कबहूँ खरहा सिआर ना तकलन। आपन मरद सिंह रही त ओकरा समने सभे सिआर होइए जाई। बाछा बा बेटा के हमार समाज अधिका महत्व देलस। सभकर रच्छा होई एकरा से। पृथिवी, मरद आ बरध के भइला प चार बीता उठि जाली। जनम से सभी बाछा न बरध होखस ना कुल्ही अदिमी मरद। अगर कान्ह पर गिरहथी ना ढोआइल त ईहे कहाई– "नतरू बाँझ भलि बादि बिआनी" बरध भी (बल+द) बलद ह, बल देबे वाला, गति देबे वाला, हर होखे चाहे गाड़ी, दँवनी होखे चाहे बोवनी, ओकर चाका चलावे वाला आखिरी विसवास बरधे हवन। इन्हिके बउसाव से मरद हर के चनुली धइके बिरहा गावत रहेलन। गाड़ी में उन्हुका कान्ही पर बइठ के टिटकारी पारत रहेलन। मरद आ बरध दूनो के चकचकी गिरहथी के चौचकी ह। मसल में कहल बा कि सरबस चाहऽत अपने गाहऽ। मतलब ई कि सुन्नर खेती आपन आ बरध के बउसाव के परदरसन ह। एही से कवनो साल बरध चाहे मरद में से एकहूँ के खमसला पर पूरा साल के गिरहथी थउस जाला। एह में दूनो के बल–बउसाव के थाह पाता हर दिन लागत रहेला आ ओकरा अनुसार खाए–पीए, रहे–सहे के संजम बरतत अपना के आ बरध के मजबूत बनावे के कोसिस होत रहेला। अगर एह संसार में "सरबस" कमजोर खातिर ना ह त खेतिहर खातिर त अउरी ना ह। खेतिओ के अधेआतम ऊहे ह– "नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो"। साँच पूछीं त गिरहथ के कूल्ही सिंगार अनाजे ह। ओही पर ओकर कूल्ही नाज बा सादी–बिआह, मरनी–जिअनी। धनी–गरीब में अन्तरे कतना? गिरहथी सुतरला पर मन के अकास भागत देखीं आ फसल ना भइला पर मुँह पिआसल बछरू लेखा हो जाला। एही से एकर पहचान बतावल बा–

बार देख सत्रू पहचान, गोट देखिके दाँव
देखिके आँगन घर पहिचान, गली देखिके गाँव
सूम देख पहचानऽ घोड़ा, ककुद देखिके बरध
नयन देख नारी पहचान, मूँछ देखिके मरद।

बएल के मउर आ मरद के मोंछ कतना सुनराई के बढ़ावेला ओकर गुन गाँहके जानी। अइसन सुन्नर मरद आ बरध गिरहथ के दुआरी के चान–सुरूज हवन। इन्हका पर खरच कइल अकारथ ना जाय। कहाउत ह पुरूख आ पहार दूरे से पहचान में आवेले। चरन पर के चउकस बरध आ बाघ लेखा मोंछइल सवाँग देखिए के गिरहथ के भीतरी औकात के पाता लाग जाला। एही से बाछा के बरध आ जवान बेटा के मरद भइला के मोल ह। ना त बाछा बएल आ बहुरिया जोय से घर ना चले। बाछा जब बएल हो जाला त मरते दम तक आपन बरधई ना छोड़ें मरदो सब साठा पर पाठा होलन। आज के नोकरिहा मरद साठ बरिस पार करते सुरधामपुर में पाठ करेके तइआरी करे लागऽ ताड़न। गिरहथी में रिटायरमेंट ता जीवन हइए नइखे। ओह में त मरद आ बरध के खिआवत रहीं, काम लेते रहीं, काम करे वाला कतहूँ बुढ़ाइल ह? हर होखे चाहे हेंगा, गाड़ी में चाहे कोल्हवारी, मोंट होखे चाहें रेंहट, दँवरी होखे छाँटी, टिटकारी पर अगर चार भाँवर ना मार देलस त ऊ बरध का? ऊ त कलिजुगी जामवन्त ह– "उभय घरी महँ दीनों सात प्रदच्छिन धाइ।" मरदानगी के बखान ईहे ह।

कुछ मित्र लोग एकरा के बकवास कहिहन। एह विग्यान के जुग में बएल के बखान के सुनी? रात–दिन खिआवऽ–पिआवऽ सेवा में लागल रहऽ बएले बन जा। ई दुनियाँ काहाँ से काहाँ चल गइल। बएल–बछरू के फेरा में जे पड़ल ओकर उन्नति एह जमाना में ना होई। देखीं अखबारन में पचासों किसिम के ट्रैक्टरन के बिगेयापन (विज्ञापन) छपत बा। एक बार जीव जाँति के खरीद लीहीं बीस बरिस उपराजत रहीं। कुस आ राड़ी जोब आ जम्हार, काहाँ चलि गइलन कि अब लइकन के चिन्हाते नइखे कि ईहो एगो घास रहे। गेहूँ आ धान के बड़का खास दुश्मन। खेत साफ आदमी साफ। ट्रैक्टर चलावे वाला ड्रैबर कहाला। हर जोते वाला हरवाह। बिआह में गारी गवाला– "ई हो समधिआ बड़ा हरवाह रे"। अब गवाता– "हमार पिअवा गाड़ी के डरैवर" मित्र के सवाल के जबाब खोजे में नौ दिआ तेल जर गइल। तब कुछ बात बनल। भाई ठीक बा विगेआन के जुग ह, अदिमी के ना। लेकिन

अबहिओ अदिमी हावा पी के कहवाँ जीअत बा, अन्ने न खाता। अबहिनो देखतानी कि खेती बएले करत बाड़न। कवनो गाँव में पाँच गो से जादा ट्रैक्टर नइखे। गुनानों में पड़ल रहीं कि एके जगे कुल्ही आँकड़ा मिल गइल– "ट्रैक्टर" से पूरा देस के आठे प्रतिसत खेती हो रहल बा। बारह प्रतिसत भैंसा, ऊँट आ हाथी से। कतहूँ (मतारी) गायो जोतात बाड़ी लेकिन अबहिनो अस्सी प्रतिसत खेती त बैले महाराज के जीमे बा। अगर पूरा खेत ट्रैक्टर से जोतइबो करे, जवन संभव नइखे, त बीस बरिस में तेल के कुल्हि भंडार ओरा जाई। तब फिर पहिले लेखा बएले के जैकार मनावे के परी। दूसर आधार न रहे, न बा, न होई। भारत देस के पसुबल के बड़ाई अइसहीं नइखे। भार उठावे वाला आ गाड़ी खींचे वाला एहिजा के पसुलोग से अतना "ऊर्जा" प्राप्त होला जतना दोसरा देस में लागल बिजली के अनेक कारखानन से। एक कारखाना में 30 करोड़ रु0 के खरच बा आउर अतने खातिर अपना इहाँ एगो पसु पाँच सौ रोपेआ से दू हजार में मिल जइहें। हमनी के देस में आठ करोड़ भार उठावे वाला पसु बाड़न। एह कामगार पसुअन में अकेले बएल महराज सात करोड़ बाड़न। अस्सी लाख भँइसा, दस लाख घोड़ा, आ दसे लाख ऊँट। अब जनसंख्ये के अधार पर जनतंत्र चलत बा, जहवाँ जेकरा से भोट कम मिले के बा ओकरा कवनो भविष्य, वर्तमान के जीए खाए के चिंता राजा लोग नइखन करत। त हम आठ करोड़ में साते करोड़ वाला के परसंसा काहें ना करीं। हम जानत बानीं कि कुछ दिना के बाद फेरू बएले पर आवे के परी। रिसि मुनी लोग अइसहीं नाहीं बएल के शंकर भगवान, देवाधिदेव, महादेव के सदारी बना के कुल्ही मंदिरन में परतिष्ठा करवा देलन। कहलन कि संकर जी धरम के रच्छा करीला आ ई उनुकर सवारी बरध (बृषभ) धरमे हवन, धरम के छछात अवतार।

बहुत पढ़ला–विचरला पर बुझाइल कि बात त ठीके कहल बा। सिवजी कल्यान के अवतार, एह से घर–घर के देवता। बेटा गनेस जी विघिन के मारक, एहसे पहिला पूजा के अधिकारी। बएल महराज धरम के अवतार। धरम में सभकर कलेआन एहसे कलेआन के अवतार धरम के आपन सवारी बनवलन। धरमें पर चलेलन, चढ़ेलन, चारो जग में आपन परताप फइलावेलन, फिरू अपने में सभका के समवा लेलन। हर अदिमी अपना सवारी के साथे रखेला। अब त मोटर होखे चाहें ना, गैरेज पहिलहीं से तइआर हो जाता। संकर जी अपना बाहन वाएल महराज के साथे रहलीं। नाँव रखलीं नंदी। बेटा गनेस आ बाहन नंदी। सउँसे संसार हो गइल सिवजी के बन्दी। एही से धरम आ बरध रूप नंदी सऊँसे भारत के कलेआन करेवाला धरम रूप बएल भइलन बलुक बएल के रूप धइलन। बएल के सेवा जे भुला जाई ऊ आपन कलेआन के लात मारी। बएल के कमाई संसार खाता, माने धरम के कमाइए अदिमी खा सकेला, पचा सकेला। अन्ने नू प्रान ह। आ परान के जिआवे वाला धरम ह। धरम सभकरा के जिअला में आपन परान के अड़ान मानेला। बएल महराज अपने भूसा–पवटा खा के सभका के अन उपराज के जिआवत बाड़न। मतारी गऊ ओह पर दूध दही घीव छाछे के अमरित छिटकत बाड़ी। रिसी लोग देखिके धधा गइल। कहलन "गऊ माता लछिमी हईं, बएल महादेव"।

अन्न के परान कहला पर ओकरे हँसी आई, जेकरा भूख ना लागत होई। जे बतास के आस पर जीअत होई। गिरहथी करे वाला के बुझा जाई कि धरम से बरध के गँठजोर कइसे भइल। सिवजी घर–घर के देवता, देवों में महादेव, उनुका साथे बेटा गनेस आऊर सखा रूप नंदी। सउँसे संसार के खिआवे–जिआए वाला, नंदी माने अनंदित करेवाला। अन्न खा अनन्द हो जा, ईहे नंद–नंदी के अरथ ह। उनके रास तइआर भइल। लाठी पैना से चउकाइल। रूप रेख सोभा जनु चाँकी। गनेस जी सहस्सर नाम छोड़िके "बढ़ावन" बनिके ओहर अन के रास पर बीचे बइठ गइलन। कवनो बिघिन अब कहाँ से आई। हर पलरा पर बढ़न्ती के मन्तर लिखा गइल– "रामः रामो, रामा"। बढ़ावन के सरूप भी अजबे बनल। एक मूठी पुअरा में गोबर के एगो चोत। ऊहे गोबर ह जे अन्न के फसल बढ़वले रहे। गनेस जी ओही रूप में परगट भइलन, बढ़ावन बनिके। जे बराबर बढ़ावे कबो घटावे नाहीं– कबो किरिपा आ कबो कोप, नाहीं बलुक बराबर किरिपे करे, ऊ बढ़ावन ह, ऊहे पहिला पूजा के अधिकारी ह। अपना बापो के बिआह में अइसने अदिमी पुजालन। गनेस जी के बिसेसन ना चाही, गोबर बने खातिर बराबर मंगल कारज में तइआर। जेकर कपार हाथी के, ओकर सरूप गोबर के। गोसाई जी कहलीं कि राम जी से परेम ना करे वाला बरखा के गोबर हो जाला। लेकिन धन हईं गनेस जी रउआ अन के भीतर

बाहर दूनो जगह बइठल बानीं–गोबर–गनेस बनिके, कंचन रूप बनि गइलीं। बरध आ गनेस दूनो भारत के गिरहथी आ मंगल में समा गइलन। सराध में भी नंदीमुख आउर नंदी (साँढ़) के जरूरत आइल। दूनो मिलके बाप के, संकर जी के, देवाधिदेव बना देलन।

बेटा के गौरव बाप के कतना ऊँचा बढ़ावेला, बएल जी, गनेस जी एकर उदाहरन बाड़न। ओने धन्य हवन संकर जी। एगो बेटा दानवन के मारे खातिर जनमवलन। दोसरका के विघ्नन के मारे खातिर आ तिसरका बेटा, चेला, वाहन, जे हर देस काल में दलिद्दर के मारे खातिर भइल। गउरा–पारबती आ संकर जी दूनो साथे, दूनो के सवारी बएल जी बनले। संकर जी, इनकरा समने दोसरा के ना चुनलन। चल्हाँकी एह में कतना बा। अन उपरजिहें ई, पीठ पर चढ़ाके दूनो अदिमी के ढोइबो करिहें, जाहाँ चाहब ताहाँ ले जइबो करिहें। खाए के भूसा–घास। भाला ई कहवाँ ना मिली? अपना सवारी खातिर कतना ममता रहे कि उहाँ के आपन नाँव तक बदल देलीं– हम संकर ना हईं, पसुपति "हईं", हम "वृषरथ" पर सवारी करीला। आजुकाल सवारी से अदिमी के बड़प्पन नापल जाला। के 'फीएट' से आइल आ के 'कन्टेसा' भा 'सूमो' से। एक हाली एगो हेलीकाप्टर पाटी भइल रहे। हेलीकाप्टरवे अदिमी जुटावत रहे। इन्हिकर मतारी दूध पिअइहें आ ई बरध बनिके खेत में, बधार में, दँवरी में, गाड़ी में, मोट–रेंहट में, लदनी–खेदनी में, रथ में, पथ में, कुपथ में, घरे–बाजार सगरो काम अइहें। घर दुआर इन्हिके से जगमगाई।

संकर पारबती के संवाद से, दास्तान से, कुल्ही पुरान आ तंतरसास्तर लिखाइल। नंदी जी सुनत रहन, सखिया–गवाह बनिके। लोक में के सैकड़न गो आछा चाहे असलील अखेआन, गौरा पारबती से जोड़ा गइल तख भाई से लेके कोइरी भाई के (शर्कराकंद या शकरकंद) तक में। सरकन के काहें अइसने रूप हो गइल? नंदी के अपने लिखे के सकती आ गइल। एगो उपपुरान नंदीकेसवर लिख देलन। मौन रहे वाला मुनि कहा गइल। नंदी जी के अनंद के का कहल जाव, मगन बाड़न, कान लागल बा, पगुरी चलत बा। भोजन, श्रवन, गुनन, कुल्ही एके साथ। बोलत नइखन, सुनत बाड़न, आचरन करत बाड़न। ना बोलला खातिर कुछ लोग समुझल, मुरूख हवन। बएल महराज बुरबकाही के पर्याय कहइलन– "का मरदे बएले हव? बोलत काहें नइख? ना बोले वाला बएल कहाइल। गूँग के सरवन सकती भगवान ले लेलन।" गोसाई जी कहलन हमार भाव जतना नीमन भीतर बा कहला पर खराब हो जाई– "कहत नसाइ होइ हिम नीकी।" अगर वाके–वाके चेला चाहें स्रोता टोकारी भरस त बकता के बोलले छूट जाई। एगो नेता अपना चहेता के डँटलन– "बड़ा बेहूदा बा बराबर बीचे में बोल देता"– "डिस्टरब" कर देता। बरध महराज आदर्श स्रोता आ चेला के धरम निभा के बुरबक कहइलन–बएल बनलन लेकिन मरजादा ना मेटलन। वेद में मरजादा के बखान बा। एह बएल के वृषभ रूप में "वेद" इयाद कइलस। भोजपुरी में "बसहा" पर असवार होके संकर जी चलेलन। ई बसहा "वृषभ" ह। वेद में ब्रह्म रूप जग्य पुरूष के कलपना वृषभे रूप में बा– "चत्वारि श्रृंगास्त्रयों अस्य पादा, द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रौरवीति महादेवो मर्त्या आविवेश।"

सेवक रूप ऊपर से बड़ा विचित्तर होला। एही से वेद एह बिचित्तर रूप के चित्र बनवलस वेद के बएल के लौकिक बएल से अलगा दू गो के बदला में चार गो सींध बा। तीन गो गोड़, दू गो कपार अउरी सात गो हाँथ। तीन जगहा में ऊ बाँन्हल बाड़न, हँकड़त बाड़न। वृषभ के रूप में महादेवे एहिजा मर्त्य–लोगन में प्रवेस कइलन। निरुक्तकार आ वेयाकरन एकर भेद अपना–अपना तरह से खोललन। निरुक्तकार चारों सींघ के चार वेद मनलन, तीन गोड़ के तीनों स्वर। दूगो कपार के अयन। सात गो हाथे सातो छन्द ह। मन्त्र, ब्राह्मण, कल्प एही तीनों से ई बँधाइल बाड़न। वैयाकरन चार गो सींघ के नाम, आख्यात, उपसर्ग आ निपात बतवलन। तीन पाद–भूत, भविष्य वर्त्तमान ह। सात गो हाथ सातों विभक्ति ह। त्रिधाबद्घ तीन वचन ह। हिन्दी के छायावादी कवि पन्त जी अपना काव्य संग्रह "स्वर्णधूलि" में "ज्योति वृषभ" नाम देके एगो कविता लिखलीं–

स्वर्ण शिखर से चतुश्रृंग है उनके सिर पर,
दो उसके शुभ शीर्ष, सप्त के ज्योति हस्त वर।
तीन पाद पर खड़ा मर्त्य इस जग में आकर,
त्रिधाबद्ध वह वृषभ, रंभाता है दिग्ध्वनिभर।

सब कोई अपने बात कहेला, जेकरा जतना बुझाला। हमरा पुरानन के पढ़ला पर अतने बुझाइल कि धरम के छछात (साक्षात्) रूप बैल महराज के

हमार सास्तर मानत बा। एह विश्व ब्रह्माण्ड के रूप में साकार ब्रह्म के धारन धरमे करेला। एह से महादेव जी इन्हका पर सवारी कसीलाँ। लगभग कूल्ही पुरान में तरह–तरह से एही बात के पुष्ट कइल गइल बा। श्रीमद्भागवत के स्कन्ध एक, अधेआय सतरह के करीबन बारह गो असलोक में एकर बड़ा सुन्नर बरनन बा। पुरानन के सैली देखीं– "सूतजी कहलीं कि ओहिजा राजा परीछित जी गोमिथुन के अनाथ नीअन मारखात आउर राजा नीअन भेख बनवले सूद्र के हाँथ में लाठी लिहले देखलीं। लाठी के डर के मारे ऊ मृणाल धवल वृषभ मूतत रहन आउर लात खइला से काँपत रहन। ओह सूद्र के गोड़ से धवाहिल धरम के दूध देबे वाली गाय से रथ पर चढ़ले चढ़ल उहाँ के पुछलीं– ऐ मृणाल धवल! तोहरा पाँवों नइखे, एकही गोड़ पर कइसे चल रहल बाड़ऽ। कवनो देवता त ना हवऽ। धरम के बात तोहार सुनिके लागत बा कि वृष रूप में रउआ छछात धरमें हईं। राउर तप, सौच, दाया, सत्य ईहे चार गो चरन ह। गरब के मद वाला अधरम के अंस तीन गो गोड़ टूट गइल बा। बस एगो सत्य वाला चरन बाँचल बा। एही से कलि रउआ (धरम) से घिरिना क रहल बा। राउर ई हाल देखिके दुख होता। एह तरह से सतजुग से लेके कलिजुग तक एक–एक जुग में धरम के एक–एक गोड़ टुटल जाला। अरथ भइल कि धरम गोड़ टुटला पर लँगड़िओ के चलेला। बोले ना खाली इसारा पर संसार के ढोवेला। चलत रहेला काहें कि संसार के चलावे के बा। ऊ बा, एह से संसार बा। वृषभ धरम के खंडावतार हवन आउर धरम विष्णु के खंडावतार। वृहद् धर्मपुराण एकर साक्षी बा। लिखल बा कि संसार रचला के बाद एकरा राछा खातिर ब्रह्माजी केहू के ढूँढ़े लगलन। उनुका दहिना किनारा से कुंडलधारी ऊजर फूल के माला लेले आउर ऊजर चनन लगवले कवनो जीव जनमलन। ओह जीव के चार गो पैर रहे अउरी वृषभ अइसन देखात रहे। ऊ धरमें रहन। ब्रह्माजी उहाँ के धरम (धारन करे वाला) नाँव देके आपन बड़का लइका बनवलीं। आउर अपना सृस्टी के राछा खातिर नियुक्त कइलीं, कलिजुग में घटत–घटत एकही गोड़ रह गइल बा। एही से कोश में "वृष" के अरथ "धरम" आउर "बैल" दूनो दीहल बा। महादेव जी अगर पसुपति हवन त वेद–पुरान के अनुसार सब प्रानी पसु ह। नटराज सहस्रनाम में लीखल बा– "येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुतद्वि पदामिति"। दुगोड़ा होखस चाहें चरगोड़ा, पशु लोगन के ईस पसुपति जगदीस हवन। "वृषध्वज" शब्द के भास्य में ओही में कहल बा एक वृष के धरम रूप आउर विष्णु रूप सब पुरानन में परसिध बा। धरम रूप वृष स्फटिक लेखा निरमल बाड़े। हम उनुकर बन्दना करत बानीं। स्कन्दपुराण के अनुसार धरम बराबर से वृषरूप बनिके शंभु महराज के वाहन हवन। धरम के ओरी कतना उहाँ के परेम बा एकर पहचान एही से होता।

परासर जी एकरा के अपना स्मृति में आउर साफ कइलीं। खेती के नाभ त बएले हवन। धरम सास्तर अइसहीं कोई के पूजन आ महातम ना लिखी। बएले के उपराजल अन्न सउँसे धरती के जीव के पालन करत बा। एही से ई संसार में धरम के रूप हवन, मूरत हवन।

उक्षाणो वेधसा सृष्टाः सस्यस्योत्पादनाय च।
तैरूत्पादित सस्येन सर्वमेतदिधार्यते।।(5.44)
वृष एव ततो रक्ष्यः पालनीयश्च सर्वदा।
धर्मों यं भूतले साक्षाद् ब्रह्मणाह्यवतारितः।।(5.48)

बएल महराज आपन बड़ाई कबहूँ मुँह से ना कइलन। परासर जी अइसन स्मृतिकार एह भेद के बतवलन। साँचों धरम आपन जय–जयकार अपने ना करे, धरम पथ पर चले वाला करेला। धरम राजनीतिक पाटी के कवनो टम्परोरी, नारा ना ह, वोट खातिर एकर महत्व ना ह। मनुष्यता खातिर ह। गद्दी खातिर ना ह, सेवा खातिर ह। लड़ावे खातिर ना ह, समस्त जीवन के राछा खातिर ह। बएल महराज मरात–पिटात, पैना खात, जोतत रहेलन। खेत जोतल ओहू में धान के, समुँदर मथले ह। माटी आ पानी के मथ के ढाब बनावे के होला। ओही में अनाज आ बीज के आब छिपल रहेला। बएल दधीचि ऋषि के औतार हवन। अपने भोजन घास कबारे खातिर आपन हड्डी तोड़वावेलन। वेद में एगो शब्द आइल बा "ऋषभ"। बड़ बैल के ऋषभ कहल जाला। शरीर में गति देबे वाला के भी। जे "ऋत" बा उहे ऋभु ह। वैदिक ऋषि जब भावमय हो जात रहन तब ओकर बरनन एकदम कविता मय हो जात रहे।

ऊँ प्राग्नये वाचमीरय, वृषभाय क्षितीनाम् (ऋ0 10,187,1)

अगिन के वृषभ कहल गइल। जइसे "वृषभ" धरम आउर अन्न से जुड़लन ओइसहीं अगिन से भी। ई

लोग परान के देवता ह। एह “वृष” से एगो शब्द बनल वृषल। वृष+अशील, माने जे धार्मिक सुभाव के ना होखे, कामी होला, ऊ वृषल ह। प्रसाद जी एकर प्रयोग कइले बानीं। संसकिरित में साफ बा– “वृषो हि भगवान् धर्म तस्य यः कुरूते ह्यलयम् वृषलं तं विदुर्देवोः तस्माद् धर्म न लोपयेत्”। मनु महराज धर्मच्युत के “वृषल” कहलीं।

जइसे मंदिल में भगवान शिवजी इहाँ के जगहा दे के हर गिरहथ के मन मंदिल के साथे हर घर में ऊँच जगहा दिआदेलीं। अब नाँव पड़ गइल नंदी। गउरा पारबती, शंकरजी नंदी जी मंदिल में अनंदित पड़ल बाड़े। अछत फूल चढ़त बा। सादी बिआह करे वाला के कूछो जाने के जरूरत नइखे। खाली पूछ देबे के बा– कगो बैल बाड़ऽसन? बस कुल्ही औकात के पाता लाग गइल– “धान क गाँव पुआर से जानीं।”

हर तीज परब पर, बाबूजी कहब, “बएल के नहवा–धो दीहऽ जा।” होली में त अबीर गुलाल आ रंगो छिड़कात रहे। उहाँ का कहीं कि जेकरा बउसाव पर, कमाई पर आज छपनो परकार बनत बा ऊहे मइल–कुचइल रही। इयाद आवत बा कि नहर चाहें ताल में बएल धोआस। धोअला पर जब छोड़ दिहल जाव त केकर मजाल जे पगहा धर ले। पोंछ उठवलें, गर में घंटी बाजत, चउकड़ी मारे लागस जा। घोड़दउर ओइसन का होई। देखनिहार के धरनिहार लागत रहन। दुआर पर जाते आपन चरन पहचान के खाड़ा हो जासु सींघ में तेल–घीव लागे। खुर से सींघ कुल्ही करिआ–कुच–कुच, चम–चम। गला में घुघुर आ घंटी दूनो खातो खानी बाजऽता आ पगुरिओ करत खानी। लागता हर घरी, हर घरे भगवान के आरती होखता। हर गाँव में मंदिल, हर मंदिल में बंदी, नंदी। बिना मनो के जे गइल ऊहो मंदिल में घंट टनटना देलस। भीतर में गोसाला आ बार में चरन (चरनी) जहँवे बैल महराज बाड़े, उहवें मंदिल बा अपने रात दिन घंटी टनटनात बा। संकर जी आ बसहा बएल के मंदिल हर घर के भीतर–बाहर पवितर बनवले बा, बनवले रही। घर में अनाज से भरल अन्नपूर्णा के मंदिल। अब एहू से सुन्नर संस्कृति के भला का कल्पना हो सकेला, जवन भारत देस के गिरहस्थी ह।

– पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, श्री कुंवर सिंह वि.वि. आरा ('पाती', जून–99)

भइल बोझ भारी

पी. चन्द्र विनोद

तिल के जे तरकुल बना दिहले सँइया
भइल बोझ भारी, चलीं पँइया-पँइया !

सराफा में सपना के गहना गढ़ाइल
मुखौटा प मुस्की मोलम्मा मढ़ाइल
ओढ़ावल बा गर्मी में तातल रजइया
भइल बोझ भारी, चलीं पँइया-पँइया !

नजरिया के ठोनहच नजरिए का सूझे
अँगारी चिलम के चिलमिए नू बूझे
सियाइल बा मुँह, का करीं दइया-दइया
भइल बोझ भारी, चलीं पँइया-पँइया !

तिजारत में हमरा पतुकिए लदाइल
लिही कवन करवट, ई केकरा बुझाइल
बुझाइल ना तहरो ए चुप्पा रमइया
भइल बोझ भारी, चलीं पँइया-पँइया !

अनेसा में रूपा, सनेसा में सोना
भरम का भरम हो गइल कवन कोना
अन्हारा में जिनिगी जे लेहलस बइलया
भइल बोझ भारी, चलीं पँइया-पँइया !

भड़ेहरि

✍ डॉ. विवेकी राय

रामदत्त के मेहरारू गोरी रोज सबेरे नदी तीरे, जहाँ बान्ह बनावल गइल बा, जूठ बर्तन माँजे आ जाले जब एहर से जाये के मौका मिलेला ओकरा के जरूर देखींला। अब ओकरा संगे–संगे ओकरा बर्तनों के चीन्हि लेले बानी। एगो पचकल तसला, एगो मटिही कराही, दूगो थरिया ओ एगो कुलछुलि, बस इहे।

आजु एगो नया बात सोचलीं ह ई गोरी भारत माता हवे एकर करिखाइल–पंचकल तसला भूदानी राजनीति नियर लागत बा। ई असली सर्वोदय पात्र हवे। एकर लोहा नियर लागे वाली कराही सुच्चा राजनीतिक कराही हवे। भीतर तेल के चिकनाई बा बहरा पेनी में करिखा के तह बइठलि बा करिखा दूर दूर ले पानी में पौंरत बा। थरिया में से एगो टीन के आ एगो पीतर के बा एगो में स्वार्थवादी खालन आ एगों में नाँव के समाजवादी। कलछुलि से विरोधी पार्टियन के छूछ नारा परोसाला आ ई भारत माता का करे ले? सगरे विकास के भड़ेहरि बटोरि के झखेले गाँव में रहतब कठिन बा। गाँव में एगो मुकदमाबाज सज्जन बाड़न सविधा खातिर उनकर नाँव कचहरी सिंह मानि लिहल जाव। जल्दी–जल्दी निवृत्त होके एने–ओने तकलन देखलन, कतहों केहू नइखे, लाइन क्लियर बा वस्ता बगल में दबवलन आ निहुरल निहुरल बान्ह का ओरि फलगरे बढ़लन। बाकी गोरी बर्तन माँजे आ गइलि रहे।

गोरी का तसला पर बालू खरखरात रहे। उठि गइलि नजरि कचहरी सिंह के। पता नाहीं काहे अइसन हो जाला कि जवना चीज के हम ना देखल चाहींला ओही पर आँखि दउरि जाले जा, साइति बिगरलि। ओह पार सिंह साहेब से भेंट भइलि त मुँह में बरबरात रहलन–तनिको सहूर नइखे बइटि गइली महरानी जी भड़ेहरि ले ले बीच राहे। लोग फजिरे फजिरे साइति सगुन पर निकलेलन। ट्रेन के इहे टाइम हवे, चाहे पूरब जाई चाहे पछिम एही घरी लोग घर से बहरियालन तवन रोज एकर ईहे धन्धा बा। मन करत बा कि लवट के कुल्हि बर्तन झटहेरि के नदी में फेंकि दीं। एक त करिखहा तसला, दूसरे जूठ आ तीसरे खलिहा लउकल! हे परभू जी! पता ना आजु का होनिहारी बा मोकदमा के काम ठहरल ई ससुरी बिगड़वलसि! लवटीलां त मजा चिखाईला। देखबि कि काल्हि से कइसे ई नुमाइसि लगावे इहाँ अनगुत्ते बितइहें। पता ना इनका बाप का सेवट में नदी बा, कि इनकर दादा घाटि कीनले बाड़न कि ई बान्ह का पासे बइठे के पट्टा लिखवले बाड़ी! हम जानि गइलों अब दिन भर के खुराक मिलि गइलि अब बकवास नधाइलि त नधइले रही। रामदत्त बो नीक ना कइली जिमदार जरि के खोता! बाकिर जरे लायक वा कवन चीज? आप लोग कचहरी सिंह के देखले होइबि जा। 'सीस पगा न झगा तन में' वाली बात पूरी तरह साँच नहियों होखे त धोती फटी दुपटी, अरु पाँय उपानह को नहि सामा' वाली बात त उनकरा पर हू–ब–हू उतरि जाले। बाकिर एकर मतलब ई ना कि बाबू साहेब सुदामा जी हवन। ना, अगर कवनो पौराणिक पात्र से उनकर तुलना करहीं के होखे त आप लाग उनकरा के खुशी–खुशी

नारद जी कहि सकीला। बाकिर एगो गड़बड़ बा। नारद जी का बारे में कवनो पुराणा में ई चर्चा ना होवेले कि ऊ विष्णु भगवान का इजलासन में रुपया छीटत फिरेलन एने हमार कचहरी सिंह बाड़न कि हाकिम, वकील, आ बाबू लोगन का टेबुल पर पइसा भा नोट के गड्डी खिसकावल करेलन। ई कचहरी क्षेत्र के असली तपसी हवन। भूखि पिआसि जीति ले ले बाड़न। सगरे दिन बिना कोइला–पानी के इंजन जूझत रही। ई सीत–ताप के तनिको ना गँवेरेलनि। कठिन जाड़ एगो सूती चदरि पर कटा जाई। दाढ़ी बढ़लि रही। देहि उकठलि रही। साँचो के मनई कादो चूहा नियर थाहत रही। आ अइसहीं बीति जाई एगो ना कई–कई गो जनम जिनिगी के माने लड़ाई लड़ाई के माने लूट, कुछ मिली, जायज–नजायज। अब आजु सबेरहीं खाली तसला लउकल खिसिआइल कवनो बेजॉय बा?

बाकी कसूर केकर बा? भँडेहरि कहाँ जाउ?

असल में बेचारा तसला के कवनो दोष ना। ओह के माँजे वाली जवन गरीब गोरी बा ओही के कुल्हि कसूर बा। ऊ गरीब बिआ त ओकरा कुरूप होखे के चाहीं, तसला नियर एने ओकर सुघराई बा कि जूठ भँड़ेहरि से कवनो मेल नइखे बइठत। रसगर डाढ़ि पर आवे–जावे वाला के आँखि उठति नइखे कि तबले बर्तन के माँछी भिनिके लागति बाड़ी स। कहाँ ऊ रूप आ कहाँ करिखहीं कराही। कचहरी सिंह खिसिआत का झूठ बाड़न? का भइल जे चारू ओरि माटी से घेराइलि बनिहारिनि बिटिया का सुघराइयों में मटिए के सुघराई होले। अइसन माटी के भेली कि जेकर रवा रवा गरीबी का घाम में छितिरा जाला। अथाह जिनिगी का पानी के परछँहियों ओके गला देले! हम जवन देखत बानी तवन अपना देखे वाला संस्कारन के देखत बानी। नाहीं त उहाँ का बा देखे लायक? सब कुछ दुदुकारल अनगराहित! गोरी ना ऊ घूर हवें। गरीबी के घूर बहुत भारी माने पूरा समाज के धूर। ओह घूर पर जो एगो उज्जर टटका धतूर जामि के खिलि गइल त का भइल? का ऊ कमल–बन हो गइल? घर जबले कचहरी सिंह आ महंथ जी जिअत बाड़न तबले घूरे बनल रही। साँचो, एक दिन महंथो जी उठलन त एक खाँची बातिन के फटकरुआ बहारन ओकरा ऊपर उझिलि दिहलन। घर राम का कुछ बोले के त बा ना, चुपचाप सहि लिहलन। अब किस्सा मुखतसर में स्वामीजी भा महंथ जी के सुनीं।

महंथजी भगवान के भक्त हवन। भक्ति का कानून में आइल बा कि सबेरे–सबेरे स्नान होखे के चाहीं, स्नान का पाछे तिलक–त्रिपुण्ड, आसन–ध्यान इहे उनकर जिअका हवे। ऊ खूब बड़हन मकरा नियर रोज पूजा के जाला तानि के बइठि जालन आ ओह जाला से पूड़ी, मिठाई, दूध, चीनी, फल, कपड़ा, रूप, रुपया आ मान–सम्मान के कीड़ा फतिंगा भगवान भेजत रहेलन।

लोग कहेला कि महंथ जी के बाप कवनो गाँव के जिमदार रहलन बड़ा दुलार हुंकार से उनकर पालन–पोषण भइल। जिमदारी टूटलि त नून–तेल के कठिन परती तूरे के परल पिता का गुजरला का बाद एही कठिनाई से बबुआ जी स्वामी जी हो गइलीं अब एह ईश्वर भक्ति का सनातन जिमदारी के, के तूरी? तवन स्वामीजी भजन–भाव में सबेरे का बेरा बहुत उतरात नहाये चललन त उनकरा ले पहिले पानी का छोपा गोरी हाजिर चुपचाप वासन पर हाथ चलत बा। अब का? साधू बिगडल– "जे बा से तेवन का इहे बखत हवे बर्तन माँजे के रे चंडालिनि। तमाम जल भरनहीं! राम राम हई देखीं, तमाम खरकटाइल आ जरल भात के खिखोरी पानी का ऊपर पौरंति बा। ना जाने कवना अनाज के भात हवे। अरे, ई त बजड़ा जनात था। जे बा से तेवन अतना काहे के रीन्हि दिहली हवे रे? तनिको सहूर नइखे! कुल्हि जल करिखा से भरभट्ट कइलसि साक्षात् कलयुग घाटि पर उतरि गइल बा ए रामजी, अब कहाँ नहाई धोई? रोज–रोज एकर इहे धंध बा। रोज सोचत बानी कि तनी सेकराहे आई, तबले ईहे हाजिर अरे, देख रमदतवा–बो, ई बेरा हवे अदिमी के नहाये–धोवे के। तनी देखि के चलु शिव हो, शिव हो तोरा से रोज कहत बानी, पानी गन्दा मति करु ई भगवान पर चढ़ी।"

साधु–संत आ देवता–पितर से डेराइल करु जे बा से.....। स्वामी जी बरबरात बान्ह का ओरि बढ़लन ओह पार नहइलन नदी त छोटि बा बाकी पार होखे खातिर बाँस का खम्हन पर बाँस विद्या के बान्ह बनल बा। बाँस बेतरतीब बाड़न स आवे जाए में भरपूर सरकस करे के परत बा। ई बान्ह नइखे छितिराइल इहे सबूत बा कि गाँव छितिरा गइल बा। इहे गाँव के तस्वीर भइल बा। गाँव का सुख–दुख का दूनो किनारा के जोड़े वाला समाज के बान्ह सूचहूँ आज केतना खड़खड़ा गइल बा एकदम डमगम, डेरवना, उखड़ल, कवनो भरोसा ना अब गोड़ फिसलल, अब गिरलीं गाँव का टूटलि जिनिगी के टुटहा बान्ह! स्वामीजी चटाकी निकालि के हाथ में ले लिहलन शिव शिव करत निबुकि गइलन ठीक ओही घरी बसन्तू बाबू उहाँ चोंहपलन। स्वामीजी का ओरि देखि के अइसन मुँह बिजुकवलन जइसे सरल–आम के गोपी घोटा गइलि।

ई बाबू ओह बाबू के बेटवा हवन जेकर हर गोरी के आदिमी जोतेला। पाँच–पाँच बरिस इण्टर में रिसर्च करत हो गइल। कालेज में प्रिपरेशन लीव हो गइल बा। गंभीर पढ़ाई खातिर गाँव पर आइल बाड़न जोहत फिरत बाड़न कहाँ घूमें फिरे लायक जगह बा। एक दिन ऊ घोषणा कइलन कि गाँव में बस इहे एगो 'ब्यूटीफुल प्लेस'बा। इहाँ बान्ह से तनिक हटि के जवन दूनो किनारा पर टोटिओ बन तुलसी के झाड़ी बाड़ी स आ ऊ पानी में झुकलि बाड़ी स तवन अइसन शोभा करति बा कि सिनेमा झूठ सिनेमा वाला त अइसन स्थान के सूँघत फिरेलन स खबर दे दीं त बम्बई से दउरल चलि अइहें स आ का इहे, एतना 'सोन' बा?

वसन्तू बाबू चुनि–चुनि के खतिअवले बाड़न। सुबह का बेरा के शान्त पानी, बान्ह पर डगमगात गोड़ जात लोग, सूरज के उतरिति किरिनि में नदी के नहान, किनारन के हरियाली, परित बत्तक, बुद्धि के उतराति बनमुरगी, ऊँच किनारा आ सपाट बहाव, कुल्हि बहुत–बहुत खूबसूरत जवन कवनो बदसूरती एह बीच बा त ऊ ई गोरी। सबेरहीं सबेरे सगरे जूठ बरतन पसारि के बइठ जाति बा एकरा चाहीं कि घरहीं माँजि–धो देई नदी का तीरे त बस नहाये खातिर आवे के चाहीं। ई आइति, ठाढ़ होके देरी ले कुछु निहारित, पत्थर पर एड़ी रगरित, माटी से माथ मीजित भा एने–ओने ताकि के ब्लाउज उतारित, फेस पानी में ढुकित, देरी ले मछरी नियर.... तब न अच्छा होइत बान्ह पर चढ़ि के रोज नियर ओह दिन बसन्तु बाबू गोरी आ ओकरा वर्तनन के देखि के, निहारि–निहारि के खूब नखड़ा कइलन। फेरू हवा खात आइल रहलन ओइसहीं चलि गइलन।

अब ऊ बाति बता दीं जवना का सिलसिला में आजु सोचली ह कि हमके ई गोरी भारत माता नियर लागति बा। आजु अइसन भइल कि गोरी ठीक अपना जूनि पर नदी का किनारे आइलि।

बान्ह से तनिक हटि के बइठि गइलि। बइठि के खाली हाथ धोवे लागलि आजु एकहू जूठ बर्तन ना ले आइलि रहे। कचहरी सिंह अइलन। ओकरी ओरि ताकत मुसकी काटत चलि गइलन। स्वामी जी अइलन एकदम अगरा गइलन। बसन्तु बाबू अइलन फटाफट कैमरा ठीक करे लगलन बढ़िया पोज बा। फोटो के शीर्षक होई 'नदी तीर के भंड़ेहरि।'

बाकी अफसोस, केहू ई ना सोचल कि आखिर रोज–रोज धोआये खातिर आवे वाला बर्तन आजु काहे ना अइलन स। ●●

लघुकथा

मेहनती के सम्मान

विनोद द्विवेदी

पछिला बरिस नियर एहू बेरी, साल के सबसे मेहनती आ चरित्रवान अदिमी के उपाधि देबे खातिर वाइस चांसलर महोदय के मंच पर बोलावल गइल। मंच ए बेरी बहुत बड़हन बनावल रहे। उनका मंच पर चढ़ते, बायौं ओरी खड़ा आदमी हाथ में उपाधि आ दुशाला लेके आगा बढ़ल। दहिना ओरी क परदा हटल आ ओमे से एगो अदिमी गदहा के पगहा धइले मंच का ओरी ले आइल। भी0सी0 साहब दोशाला खोलि के गदहा महाशय के ओढ़वलन फेरु फूल क हार उनका गर में पहिरवलन आ उपाधि उनका गर में टाँगि दिहलन।

हाल में ताली के आवाज अइला क बजाय एकदम सन्नाटा पसर गइल। लोगन के होस तब आइल जब कुछ अखबार वाला कूदत–फानत मंच पर चढ़ि गइलन एगो अखबारनवीस आपन माइक भी0सी0 के सोझा ले जात सवाल कइलस, शहर में एक से एक मेहनती लोगन का रहते, रउवा काहें गदहा के उपाधि देहनी?

भी0 सी0 महोदय सीरियस हो गइलन। कहलन, "एही बेरी त सही उपाधि दियाइल बा?"

– "ऊ कइसे साहब?" दुसरका पत्रकार पुछलस।

– "ऊ एसे कि हर बेरी सोर्श, दबाव अ तिकड़म से नकली गदहा ई उपाधि आ सम्मान पा जात रहले हा स, आ असली लोगन के उपहास होत रहल हा। ए बेरी हम खुद निर्णायक रहनी हाँ। दरसल ई उपाधि इनके बहुत पहिलहीं मिल जाए के चाहत रहे।

आखिरी चिट्ठी

डा0 प्रभुनाथ सिंह

हर आदमी अपना जिनिगी में कुछ चिट्ठी पावेला आ कुछ चिट्ठी लिखेला। एगो आखिरी चिट्ठी ओकरा जरूर आवेला– एह दुनिया से जायेवाला। हर तरह के चिट्ठी के बेसब्री से इन्तजार रहेला, लेकिन केहू ना चाहे कि ई आखिरी चिट्ठी जल्दी से जल्दी आवे। दोसरा तरह के चिट्ठी कहीं डाक में गड़बड़ा भी जाला, लेकिन ई चिट्ठी अपना समय पर सबका हाथ में जरूर मिल जाला। अजीब गणित बा, एह जीवन के, जइसे–जइसे उमिर बढ़ेला आदमी ओकरा के जोड़ के आपन उमिर बतावेला, लेकिन ई ओकरा ना बुझाय कि ओतना साल, महीना आ दिन ओकरा कुल उमिर में से घट रहल बा। ऊ धीरे–धीरे मृत्यु के निकट जा रहल बा आ कवनो दिन, कवनो समय में टें बोल जाई। यदि केहू का हाथ में कवनो चिट्ठी मिलेला, त ऊ हड़बड़ा के लिफाफा फाड़ के पढ़े के कोशिश करेला। जाने के चाहेला कि ओकरा में का लिखल बा। लेकिन एह आखिरी चिट्ठी के मजमून सबका मालूम रहेला। आखिरी चिट्ठी में लिखल संदेश के यदि आदमी ना भुलाय, त शायद जीवन में ओकरा से कवनो गलत काम ना हो सके। अपना जीवन के कुछ क्षण समाज खातिर भी ऊ दे सकेला।

समाज से हट के आदमी के जिन्दगी के कवनो कल्पना ना कइल जा सके। ऊ परिवार में जन्म लेला, समाज में सेयान होला आ आखिरी चिट्ठी के अइला का बाद समाज अपना कान्ह पर लाद के जहाँ से आइल बा, ओह जगह पर ओकरा के पहुँचावेला। हर आदमी के जीवन के गाड़ी एही लीक पर चलेला। एकर पटरी आज ले ना बदलाइल। आदमी कभी–कभी एह लीक से भटक के 'सिक लाइन' में या 'ठोकर' में जा गिरेला। अइसन तब होला, जब ऊ अपना स्वारथ में अंधा हो जाला, ओकरा अन्दर मानवता नाम के कवनो चीज ना रह जाय। दया, धर्म, प्रेम, सद्भाव आ विवेक के ओकरा अन्दर में बहत सोती सूख जाला। ऊ एह बात के भुला जाला कि ओकरा में परिवार आ समाज के कुछ लागल बा। ओकरा दिमाग से ई उतर जाला कि परिवार आ समाज के ओकरा पर जवन कर्ज बा, ओकरा के लौटावे के ओकर फर्ज भी बनेला। जे आदमी सब कुछ भुला के मात्र भोग के संस्कृति में जी रहल बा, ओकरा संतोष नइखे। जहाँ संतोष ना होला, उहाँ सुख भी ना होला। अपना दिमाग के सारा समान जुटा लेवे में भले ऊ सक्षम होखे, लेकिन ओकरा अन्दर के भूख आ पियास कभी जाला ना। ओकर स्थिति कुछ ओही तरह के होला, जइसे कवनो आदमी सागर का तट पर खड़ा हो के अपना आगे अथाह जल देख रहल बा, लेकिन सब कुछ बेकार, दू घोंट पानी खातिर ऊ तरस के रह जाला। जीवन के भोगल एगो अलग चीज हवे आ जीवन के जीअल अलग। अपना जीवन के भर पेट ऊहे जीएला, जे अपनापेट के साथे–साथे समाज के पेट के भी चिन्ता करेला। आदमी एह संसार में आ के जवन अरज रहल बा, ओकरा में बहुत लोग के अंश होला; पहिल अंश होला बाप–मतारी के, जे ओकरा के पैदा कइले बाद्ध ओकरा कमाई में हिस्सा होला दोस्त–महिम, नाता–गोतिया आ रिश्ता के, जवन कभी समय पर काम आइल बा; ओकरा में अंश होला एह समाज के, जवन

ओकरा के आदमी बनवले बा। एह सब का बाद जवन बाँच जाला, ऊहे ओकर आ ओकरा बेटा–पतोह के हिस्सा होला। अपना कमाई के मात्र पाँचवाँ हिस्सा के ही ऊ हकदार होला। जे अपना कमाई के ईमानदारी से हिस्सा लगा के बाँट के खा रहल बा, ओकरा अइसन सुखी एह दुनिया में केहूँ नइखे। यदि एह धरती पर कवनो स्वर्ग हो सकेला, त ऊ एह स्वर्ग के सुख भोग रहल बा, अपना जिन्दगी के भरपेट जी रहल बा। जवन आदमी अपना बाप–मतारी के बुढ़ापा में लाठी के सहारा ना बन सकल, जे अपना भाई के दोस्त ना हो सकल, जे अपना मित्र आ सगा–संबंधी का कइल नेकी के धो देहल, जे समाज से लेके ओकरा के ना लवटा सकल, ओकर जीवन कभी भी सुखमय ना हो सके। ओकरा जीये के ढंग में आ कुकुर–सियार के जीये के ढंग में कवनो खास अन्तर ना हो सके। आखिरी चिट्ठी के अइला का बाद 'भोग' के संस्कृति में पलेवाला लोग के अपने जवाब देवे के पड़ेला आ जवाब जुरे ना, दोसरा ओर 'सार्थक जीवनदर्शन' के सामने रख के आपन जीवन जीये वाला लोग के आखिरी चिट्ठी के जवाब अपने ना देवे के पड़ी, जवाब देला ओकर कइल सुकर्म; ओकरा आगे–पीछे के लोग, जेकर लमहर कतार होला।

हर उमिर के आपन अलग–अलग रूप–रंग होला। बचपन के उमिर सुबह अइसन सोहावन होला– सबकर स्नेह आ प्यार से भरल–पुरल; उमिर के दुपहरी में तपन आ तेज होला आ उमिर का ढलत शाम के आपन अलग पीड़ा होला, जवन जुड़ल रहेला, पूरा जीवन के मीठ–तींत अनुभव से आ अपना कुकर्म–सुकर्म के लेखा–जोखा से। बचपन आसानी से कट जाला बाप–माई के गोदी में, परिवार के घर–आँगन में आ दादा–दादी के खेत–खरिहान में; जवानी जूझ जाला जीवन के तरह–तरह के संघर्ष से, एह उमिर में बनला के सार ढेर भेंटाले, लेकिन बिगड़ला के बहनोइयो खोजले से ना भेंटास। आदमी का जीवन के बनल–बिगड़ल ओकर अपना हाथ में होला, एक तरह से ऊ स्वतंत्र हो जाला। समाज के हर आदमी के नजर जाने–अनजाने ओकरा के चहेटत चलेला। लोग ओकरा के तउले लागेला, ओकर थाह लगावे लागेला कि ऊ केतना पानी में बा। आदमी के एह उमिर में एक तरह से 'एसीड टेस्ट' से होके गुजरे के पड़ेला। बाप–मतारी अपना लइका के नामकरण बचपन में करेला आ समाज ओकर नामकरण ओकरा जवानी में करेला। बचपन के नाम ओकर 'पुकार' के हो सकेला, लेकिन असली नाम, जवन 'राशि के नाम' होला, ऊ समाज देला। केहू प्रशंसा के पात्र बनेला; केहू गारी के। बचपन के बहस ठीक ह, बहसल ना। जवानी के जागल ठीक ह, लागल ना; आ बुढ़ापा के बुझल ठीक ह, जुझल ना। हर उमिर के आचार–विचार भी अलग–अलग होला। जीवन के शाम में काम घट जाला, चाम सिकुड़े लागेला, आदमी के दाम घट जाला। आगे–पीछे के लोग छँट जाला। यदि ऊ जीवन में कुछ काम कइले बा, ओकर नाम चलत रहेला, धीरे–धीरे एहसास होखे लागेला कि ओकर उपयोगिता घट रहल बा, शायद ओकर जरूरत अब दोसरा का नइखे, बल्कि ओकरा अब जरूरत बा दोसरा के देख–रेख के। असहाय आ बेसहारा के एह मानसिक स्थिति में कुछ टटोले के ऊ कोशिश करेला, ताकि ओकरा पर अलम देके कुछ देर खातिर ऊ ओठंग जाव। केतना लाचार हो जाला आदमी एह उमिर में आके। एक उमिर तक घर, समाज आ परिवार का ओकरा से अपेक्षा होला, लेकिन उमिर के एगो सीमा पार कइला का बाद अपना जीवन में यदि ऊ कुछ घर–परिवार आ समाज खातिर कइले बा, ऊ कुछ अपेक्षा रखेला एह सब से। प्रश्न बा कि ओकरा ई सब कुछ मिलेला, जवन ऊ चाहेला भरल जवानी में विधवा भइल औरत का आपन उमिर आ बुढ़ापा में माघ क पाला के रात काटल बड़ा कठिन होला, जानेला ऊहे जेकरा कपार पर पड़ेला। ऊपर से देख के केहू एह पीड़ा के अन्दाजा ना लगा सके।

काफी उमिर हो गइल बा, हड्डी उघार हो गइल बा, चलल–फिरल मुश्किल बा, आँख के रोशनी मधिमा गइल बा, कवनो तरह से क्रिया–करम कर लेत बानी, असाध्य रोग के पीड़ा बर्दास्त से बाहर हो रहल बा, भीतर काफी बेचैनी बा, आँख नइखे सटत आ एक दिन एक बरिस लेखा बीत रहल बा। आखिरी चिट्ठी आ गइल बा। खटिया पर पड़ल महीनन हो गइल बा। घर–परिवार, हित–साथी, बेटा–पतोह, सगा–संबंधी सभे घेर के खड़ा बा। ई तमाशा केतना दिन से देख रहल बानी। हर रोज एह तरह के मजमा जुटेला। जेकरा जवन बुझाला, ऊ कहे–सुनेला आ फेर सब लोग अपना–अपना घर, अपना–काम पर। सुख के हिस्सेदार त ढेर मिल जालें, लेकिन दुख के कब के बाँटल ह? एक हफ्ता से बेटा–पतोह लोग भी खराब हालत के समाचार सुन के अपना नोकरी पर से आ गइल बा। दू–चार दिन में ईहो लोग अपना–अपना काम पर लौट जाई। हाजिरी देवे लोग आइल बा कि जेतना जाना जनम लेहले, ओतना लोग के गिनती ठीक बा कि ना। पतोह लोग जहिआ से आइल बा, ओही दिन से सामान सरिआ रहल बा जाये के। पतिव्रता धर्म के निर्वाह करे खातिर सास–ससुर के छोड़ के एह लोग का अपना पति के नाके–काने बराबर पहिरले रहल जरूरी बा। जब से सारा परिवार जुटल बा,

घर में कुकराह बढ़ गइल बा। खटिया पर सुतले–सुतले सब कुछ सुनत रहीले। बबुआ लोग का शिकायत बा कि बाबूजी हमरा खातिर का कइनी, पतोह लोग के अलगे गिला बा कि जिनगी में एह लोग के साध लागले रह गइल कि बाबूजी अपना कमाई में से दू–चार थान गहना बनवा देले रहतीं, एगो घर बनवइनीं त ऊ छोट–खनहन छव कमरा के। ऊहाँ के कभी ना सोचनी कि नाती–पोता के बिआह–शादी होई, त सब कहाँ रहिहें। बेटा–पतोह लोग के एसेम्बली बराबर बइठ रहल बा, लेकिन आज तक ई तय ना हो सकल कि बाबूजी के दवा–दारू के खर्च में के केतना रूपया देव? रात सुने में आइल कि अभी ओह लोग के माई अपना पाले से या कहीं से ले–दे के खर्च करस, एके बार बाबूजी के श्राद्ध के बाद ठीक से हिसाब–किताब फरिआई। 'हमनी देखे के चाहतानी कि बाबूजी के भाई–भतीजा लोग का करत बा, जेकरा के उहाँ का हमनी से तनी बीसे कइले बानी' कहल बबुआ लोग।

भाई–भतीजा के परिवार भी सुखी–सम्पन्न बा। गाहे–बेगाहे ऊ लोग आ के कुशल–क्षेम पूछ जाला। जाये के पहिले फल–मूल केतना खाये के चाहीं, दूध केतना पीये के चाहीं आ कवन दवाई कब आ कइसे खाये के चाहीं– अइसन सब बहुमूल्य सुझाावन के एगो लम्बा सूची छोड़ जाला। हमरा प्रति एहसान से दबल बा ई सब लोग, गाँव में घुम–घुम के एकर प्रचार भी ई लोग करेला। बेमारी हमार लाइलाज बा। ऑपरेशन के खर्च लगभग एक लाख डाक्टर बतवले रहे। पइसा के जोगाड़ ना हो सकल। सही निर्णय सब लोग मिल–जुल के लिहल कि एक लाख रूपया पानी में फेंकला के कवनो जरूरत नइखे। ऑपरेशन से हो सकेला कि दस–पाँच बरिस जिन्दगी बँच सके, लेकिन एकर कवनो गारंटी भी त नइखे। एक लाख रूपया बाँचल रही, त ढेर जरूरी काम होई। एक दिन भाई लोग के सद्‌बुद्धि जागल, त ऊ लोग आ के मलकिनी से कह गइल कि यदि भइया सम्पत्ति के नाशे करे पर तुलल बाड़े, त अपना जमीन के हिस्सा के बेंच के ऑपरेशन करा लेस। जवन जमीन बाँच जाई, ओही में हमनी का गुजारा करब। भाई सब के त्याग के बात सुन के मन के थोड़ा संतोष जरूर भइल। गोसाईं जी के मने–मने प्रणाम कइनी एह बात के इयाद करके कि उहाँ का रामायण में कहले बानी कि भाई से बढ़ के दुनिया में केहू दोस्त ना हो सके। गोसाईंजी के बात शत–प्रतिशत साँच लागत रहे, भाई लोग के बात–व्यवहार से।

जीवन में आजतक ना केहू के बुराई सोचनी, ना बुराई कइनी। जेतना पार लागल ओतना लोग के भलाई कइनी। पता ना जीवन में केतना लोग के रोजी–रोटी भी देले होखब। एह सब के हिसाब–किताब करे के कभी फुर्सत भी ना रहल। बेमारी के समाचार सुन के एह में से भी कुछ लोग आइल रहे। हमार दशा देख के लोग के आँख के लोर भी ना सूखत रहे। एक लाख रूपया के बात सुन के केतना लोग के सांस अँटक जात रहे। चन्दा उगाही के कार्यक्रम में सूचना भी कान में आइल रहे। कुछ वसूली भी भइल रहे। मलकिनी के हाथ में दू–चार रूपया भी कुछ लोग थमा गइल रहे, दवा–दारू खातिर ना, फल–मूल खाये खातिर। परम आनन्द भइल कि जिनिगी में कुछ बोअले रहीं, त ओकरा में से कुछ त कटाइल।

धीरे–धीरे शरीर अलस्त होखे लागल। अब खटिया पर बइठले–बइठले क्रिया–करम के नउबत आ गइल। दू–दू, चार–चार दिन तक बेहोशी के स्थिति में पड़ल रहे के पड़त रहे। लोग के पहचाने में भी कठिनाई होखे लागल। केहू बोले, त ओकर बात समझ में ना आवे। एक दिन आँख खुलल आ चारों तरफ नजर दउरावे लगनी, त बुझाइल कि अपना घरे ना, कहीं आउर पड़ल बानी। समझे में ढेर देर ना लागल, ऊ हमार घर ना, अस्पताल रहे। शरीर में जवन तरह के दर्द आ बेचैनी होत रहे, ओकरा में कुछ बदलाव आइल रहे। पहिले अन्दर के घाव टभ–टभ बथत रहे, अब ऊ बाथा ना रहे। शरीर में चुभन रहे, जइसे केहू बरछी से छेदत होखे। बेचैनी घट गइल रहे आ सुते के चाहीं, त आँख सटत ना रहे। जम्हाई आवे, पता चलल कि ऑपरेशन हो गइल। सब कुछ ठीक–ठाक बा। पइसो के जोगाड़ के संबंध में जब सवचनी, त मलकिनी बतवली कि एगो आदमी आके ऑपरेशन के सारा पइसा दे गइल रहे। ऊहे इहाँ तक ले के आइल भी रहे। जब ओकर नाम जाने के चहनी, त मलकिनी बतावे से साफ इन्कार कर गइली। ऊ आदमी कवनो स्थिति में नाम खोले से मना कर गइल रहे। बुझाइल कि आज भी कुछ लोग दुनिया में अइसन बा, जेकरा पर ई धरती टिकल बाड़ी। घर–परिवार के कवनो सीमा में ना बाँधल जा सके। एकरा के परिभाषित कइल भी एगो कठिन काम बा।

जब पूरा तरह से होश–हवास में अइनी, त मलकिनी से 'अखिरी चिट्ठी' मँगा के फेर से ओकरा के गौर से देखे लगनी। लिफाफा पर के लिखल नाम त ठीक रहे, लेकिन आउर पता गलत। डाकिया गलती से हमरा दुआरी पर ऊ खत फेंक गइल रहे। भगवान जे करेलें, से अच्छा ही करेलें। फेर से कुछ दिन जीये के आस जाग गइल। आपन–बिरान के थाह लाग गइल। ●●

हँथवा लफावेले केवन दुलहा

✍ चन्द्रेश्वर

जब गाँव में केहू के बेटी के बरात आवत रहे आ जब बेटिहा के दुआरे बरात लागे, त टोला भर के लईकी आ मेहरारू गावस कि "आपन खोरिया बहार ए फलाना बाबा, आवत बाड़े दुलहा दामाद/बइठे के मांगे राम लाल गलइचा, लड़ने के माँगे मएदान/बियहे के माँगेले बेटी हो दुलरइतिन बेटी/जिनि बेटी दल के सिंगार/....बाबा नइयो, भइया नइयो बेटी तइयो ना नइयो/बेटी हो केवन बेटी के कारन/सिर आजु नवायो....!" एह गीत में कहल जा रहल बा कि बाबा, भइया सब नइ गइलन बेटी के बियाह तय करे में बाकिर बेटी के ना नवे के परल ना नवे दियाइल, बाकी बर जेवना दुलरी बेटी के माँगत बा बियहे खातिर ऊ बेटी दल के सिंगार रहल बिया अने हजारों–लाखों में एक ठो!

बाद में गारी गवात रहे कि "हथिया हथिया सोर कइले गदहो ना ले अइले रे तोरा बहिन के सोटा मारो।" गारी में उपालंभ आ सिकवा–सिकाइत के भाव रहत रहे। अब लोग एह गीतन के बिसार रहल बा। खएर, जब ले दुआर पूजा होखे तबले मेहरारू गारी गावत रही स। एने दुआर पूजा होखे आ ओने बराती लोग के जलपान सुरू हो जात रहे। बराती में केहू ना केहू अइसन होखे जे जरूर बवाल काटे। केवना बात के लेके। केहू कहे कि 'ससुरा जलपान के इन्तजाम अच्छा नइखे गइले, त केहू कहे कि समियाना के जगह प पानी के बढ़िया इन्तजाम नइखे भइल। ई बहुत मोटहा बाड़े स!'

दुआरे बरात लागे के बड़ा महत्व रहे आ अबो बा गाँवन में। लोग कबो कह देला केवनो आदमी के मोका प घबरात देख कि 'दुआरे बरात लागल आ समधी के लागल झाड़ा (हगवास)!' दुआर बरात के सामना कइल एगो फौज के सामना करे से कम ना होखे!

दुआरे बरात के बाद धूरछक के पानी आवेला कनिया के नहाए खातिर। धूरछक के पानी बर के केस के धोवल पानी होला जेवना से कनिया के केस धोवल जाला। एकरे से मुहावरा बनल बा कि 'ढेर बोलब, त धुरछक छोड़ा देब तोहार....!'

एकरा बाद गुरहथी होखेला। गुरहथी में बर के बड़ भाई अपना भावह के गहना–गुरिया आ साड़ी चढ़ावेला। ससुर एकरे बाद दुलहिन के बनारसी साड़ी से मँथढपी करेला लोग।

मँगढपी के बाद दुलहिन (कनिया) के भाई लावा मेरावेला लोग। एकरा बाद कनियादान होला। बाप कनिया दान करेला। एही के बाद बियाह में माड़ों में सेनुरदान के रसम पूरा होला।

माड़ो में ई सब रीति–रिवाज चलेला, त ओने बराती लोग के खाना खियावल जाला आ समियाना में नाच पार्टी के नाच–गान होत रहेला। कनिया दान में जब मेहरारू गावेला लोग कि 'ओरी तर ओरी रे तरे, बइठे बर रे नेतिया!' त केतना लोग के आँखिन से लोर ढरके लागेला आ गमछी से पोंछाए लागेला। भोजपुरी अंचल में कनियादान के बड़ा मारमिक प्रसंग मानल जाला– 'बनवा में फुलेला बेइलिया त देखत सोहावन/हाँथवा लफावेली मालिन त अब फूल लोढ़ब हो/धीरे रह ए मालिन धीरे रह/अवरू गंभीरे रह/जब फुलवा होइहें कचनार तबही तूँ लोढ़िह हो/चउकनि बइठेली केवन सुभवा/

चउका सोहावन हो/हाँथवा लफावेले केवन दुलहा अब हम बियहबि हो/धीरे रह ए दुलहा धीरे रह अवरू गंभीरे रह हो/जबे बाबूजी करिहे कनियादान तबही रउरा बियहबि हो/जबे भइया लउवा मेरहइहें तबे रउरा बियहबि हो/' एह गीत में मालिन से कहात बा कि धीर–गंभीर रह। जब बेली के फूल कचनार हो जाई अने नीक से खिल जाई तब लोढ़िह। मालिन के संगे दुलहो से कहात बा कि अबहीं माड़ो में आवते हड़बडी भा उतावलापन जनि देखावऽ/ हाँथ जनि लफावऽ हमरा बेटी के आर। धीर–गंभीर रह। जब भाई लावा मेरा ली आ बाबूजी कनियादान दे लिहें त रउरा बियाह के मोका मिली। एहिजा बेटी के बेली के फूल से उपमित कइल गइल बा। एह गीत में प्रसंगानुकूल जेवन बिम्ब आ उपमा आइल बा, ओकर केवनो रचना से का मुकबला हो सकेला!

एगो भोजपुरी के बियाह के गीत में भाई–बहिन के संवाद रोचक बा। हमार भोजपुरी अंचल में बेटी–बहन के आजुवो पराया धन मानल जाला। एगो भाई–बहन के संवाद से एह बात के बखूबी समझल जा सकत बा। बहिन जब भाई के उलाहना देत बिया त भाई कहत बा कि बहिन त पराया धन होले जबकि मेहरारू घर के लछिमी। गीत सुनी जां– "केहवाँ के छूरिया गढ़ावल हउवे/इंगुर ढरावल हउवे/केवन राम दुलरुवा के छूरिया त/केहवाँ बिजइया भइले हो/पड़री के छूरिया गढ़ावल हउवे/इंगुरा ढरावल हउवे/कन्हैया राम दुलरुवा के छूरिया/त कायमनगर बिजइया भइले/अरे! अरे!/भइया केवन भइया/तीर–धेनुही बान्हि रखिह/सगर दिन भइया जीति अइले/साँझ बेरिया हारि अइले।/अरे भइया! हारि अइल दुलरइतन बहिनी/त मति तोहार भरमि गइले/ जाँ के तिरियवा बलुक हरित/बहिना काहे हारि अइलऽ/ अरे गइया–भइंसिया बलु हरित/बहिनिया काहे हारि अइलऽ/अरे! अरे बहिना दुलरइतिन बहिनी/मति तोरो भूमि गइले/जाँघ के तिरिइयवा मोद लछिमी/त तुहूँ रे बहिनी पराया घरवा।"

जब बेटी के बिदाई के तइयारी होखे लागेला त ओह समे के परभाव देखीं–सुनीं– "बाबा जे रोवेले तबे–तबे हो/खाना खाहीं के बेर/घर में के बेटी कहाँ गइली हो/ दिहती भोजन परोस/माई जे रोवेले तबे–तबे हो/माई नहाए के बरे/दिहती पनिया भर/बाबा के फाटे करेजवा जइसे फाटे काँकर/माई के नयना झराझरी जइसे रे भादो ओरी चुवे।" बेटी के बाबा के जब–जब खाए के बेरा होला, ओकरा के इयाद पार के रोवेलन आ माई नहाए के बेर इयाद क के कि पानी के भरि के दी! बाबा के करेजा काँकर लेखा फाट जाला आ माई के नयनन से पानी झरेला जइसे भादो में ओरियानी चूवत होखे।

हमरा भोजपुरी अंचल में कनियादान के समे लोग बहुते भावुक हो जाला। भोजपुरिया लोग जेतना भाव मन में राखेला, ओतना भाव ओह लोग के लोर बन के बहरियो टपकेला आ कान्ह प के गँवछी भींज जाला नैनन के लोर से। बाबूजी आ भइया लोग लोर सोखवावेला लोग गँवछी में त माई–बहिन छाती पीट के रोवेला लोग।

जब बेटी के बिदाई में दुलहन बना के डोली में बइठावल जाला त ओकर पाँव भाई लोग झारेला कि घर के लछिमी जा रहल बिया, किछु त रोकल जाव। अब एह भोजपुरी संस्कृति में बियाह के पद्धति के तेजी से छरन हो रहल बा। एह सब में पंडी जी, नाई आ हर बरन के लोग सामिल रहेला। अबही एक बियाह के पद्धति के मुक्कमल विकल्प नइखे खोजाइल। किछु लोग आधुनिकता के परभाव में कोर्ट मैरिज कर रहल बा त किछु पिछड़ी आ दलित जाति के लोग पुरोहितवादी तरीका से अलग राह अपना रहल बा; जइसे अरजक संघ के माने वाला भा तिरबेनी संघ के माने वाला लोग।

सबके पता होला कि अब बेटी के नइहर छूटत बा– "एही नइहर रहना दिन चारी" (जायसी) बेटी के सुख ह नइहर/ बेटी के आजादी ह नइहर! बेटी के हिरदा के धड़कन ह नइहर! बेटी के मन के अगाध भरोसा ह नइहर! बेटी के मन के राग ह नइहर! बेटी के मन के चिराग ह नइहर! ऊ एगो जगह के माटी से उखड़ के दोसरा जगह के माटी में रोपाला लो आ कंछा फेंक के लहलहा उठेला लोग। हमरा बुझाला कि मेहरारू सिरजन आ संस्कृति के मूल आधार होला लोग। ओह लोग के बिना सब किछु आधा अवरू अधूरा बा।

हर लइकी के ससुरा जाते ओकर जिनगी के नयकी सुरूआत होले। एगो नयका संसार से सामना होला, जेवना में सइयाँ आ बलमू के संगे सास–ननद–ससुर–देवर आ गोतिनी में जेठानी–देवरानी होला लो। ननद में जेठकी आ लहुरी ननद होला लो। एह में सइयाँ जी से भले इकोरा में परेम आ परसंसा मिले; बाकी लोग से उलाहना सुने के जादा मिलेला। एगो लोककथा में सीता के सासु कोसिला जी हँसि के कहत बाड़ी कि 'ए सीता, तोहार माई दिहली सोना के चूल्हा, ओह प खाना बनावे जात बाडू। एकर उचकून कहवाँ बा?' कहे के गरज ई बा कि लइकी के नइहर से जेतना मिली, कमे बा! ओकर बड़ाई ना हो सके। सास आ ननद लोग किछु कमी निकलबे करी। अब सीता के सोना के चूल्हा मिलल त उचकुन रहि गइल। ससुराल लइकी खातिर जेहलखाना से कम ना होत रहे। अब ढेर बदलाव आ रहल बा, बाकी लोगन के मानसिकता में कमे बदलाव आइल बा। ●●

आजादी के पचास बरिस आ लोकशाही

✍ डॉ0 अशोक द्विवेदी

सियासी खेल बेराजनीति के ना होला आ राजनीति कवनो हद तक जा सकेले। हद पार कइला के सैकड़न उदाहरण विश्व–इतिहास में भरल परल बा। राजनीति अपना मरजादा आ नैतिकता का हदबंदी में रहियो के कतने बेर अनर्थ कइले बा। राष्ट्र आ राज्य के दोहाई देके, परदा का आड़ में ओकर क्रूर करनी आलोचना आ चरचा के विषय बनल बा। राजनीति का हल्का में दोसर आ जनता में दोसर।

राजत्रन्त के खात्मा आ लोकतंत्र के विकास के बाद लोकभय भा लोकलेहाज के चलते राजनीति के, कुछ बरिस ले नैतिकता आ मरजादा में रहे खातिर मजबूर होखे के परल, बाकिर भारत का राजनीति में ऊ रहि–रहि के उफनाए के कोसिस जरूर कइलस। ई बात अलग बा कि अइसनका राजनीति करे वालन के जनता मान–सम्मान ना दिहलस। आजादी मिलला पर लोकशाही के चलावे वाला कुछ अइसन त्यागी, महान आ चरित्रवान नायक लोग रहे, जेकर अजुओ जिकिर होखते सरधा से लोगन के मूड़ी नइ जाला। सादा जीवन आ ऊँच बिचार वाला अइसनका गिनल–चुनल राजनीतिकन के कवनो लालच भा सवारथ ना रहे। ऊ लोग साँचों के राष्ट्रभक्त आ लोकसेवक रहे। अइसनका लोगन के मौजूदगी आ प्रभाव जइसे–जइसे खतम होत गइल, 'भेड़' का खाल में 'भेड़िया' उपराये लगलन स।

ई सभे जानत बा कि आजादी का आंदोलन में जे सचहूँ के लड़ल आ जूझल रहे ओमें ई कतनन के ई लोकशाही वाली सरकार स्वतंत्रता सेनानी ले ना मनलस। जर–जोगाड़ से कतने फर्जी आ फालतू लोग पिन्सिन आ सुविधा पावे लागल। असली लोकसेवक आ सुराजी–लड़ाई के सिपाही त अपना सुभाव आ स्वाभिमान का चलते सुविधा आ सम्मान के छीनाछोरी ना कइलस। मिल गइल त ठीक, ना मिलल त पटाइल रहि गइल। एहू कूल्हि से 'लोकशाही' के छवि खराब भइल। राजनीति करे वाला नेतन में कतने अइसन सफेदपोस रहलन जेकर एगो चेहरा त लोकसेवक के रहे आ दोसरका अनैतिक आ जनविरोधी काम करे वालन के संरक्षण देबे वाला लोकविरोधी क रहे। सुराज के पचास बरिस बितला पर लोकशाही के एगो अजीबोगरीब सूरत सोझा आइल। 'कुरुसी' आ 'सत्ता' के चरम लक्ष मानि के होखे वाली राजनीति 'सिद्धांतहीन' आ 'मूल्यविहीन' हो गइल। जनता के भरमा–फुसिला के, छल–प्रपंच भा ताकत से हाँकि के 'सत्ता' का चोटी पर चढ़े वालन के बोलबाला हो गइल। ई कूल्हि देखि के सज्जन आ चरित्रवान लोग हक्का–बक्का रह गइले। ऊ धसोरि के पाछा ठेलि दिहल गइले। 'बाहुबली' आ बल–बेंवत वाला आगा हो गइले। जाति, संप्रदाय आ वर्ग के दोहाई देके सत्ता कब्जियावे वाला कथित लोकसेवक लोकहित के धन हड़पे आ सोखे क कीर्तिमान बनावे लागल। 'सत्ता' पर बनल रहे खातिर ऊ अपना पछधरन आ बिरादरी वालन के खास–खास जगहा पर त बइठइबे कइलस, सुविधा–सम्मान आ प्रमोशन खातिर लार चुवावत नौकरशाहियो के मिलवलस। जोरि–नाथि के ऊ एगो अइसन माया–जाल तइयार कइलस जेसे ओकर तूती हरमेसा बोलत रहो। एह तरे हर, जायज–नजायज तौर–तरीका इस्तेमाल कइल समय के व्यावहारिक राजनीति (प्रैक्टिकल पालिटिक्स) बनि गइल। तुर्रा ई कि सिद्धांतो बघारे वाला दल आ ओकर नेता अपना निहित स्वार्थन का चलते ओकरे समर्थन करे पर मजबूर भइल।

आजु स्थिति ई बा कि हर पार्टी भा पार्टियन के गँठजोड़ अपना खिलाफ भा गँठजोड़ के नापाक आ नजायज ठहरा रहल बा। मिलि–जुलि के राह खोजे आ लोकशाही के बचावे वाली प्रवृत्ति के लोप हो गइल। सुराज के असली रूप छिया–बिया हो गइल।

अब त जनता चल्हांक राजनीतिज्ञन के खेलवना हो गइल बिया। सत्तर बरिस बितलो पर गरीबी, अशिक्षा आ अज्ञान से ई देश ना उबरल, उलुटे ओकर आपुसी भाइचारा आ भलमनसाहतो खतम हो गइल। बेर–बेर सियासी खेल के अनबोलता मोहरा बनल लोग, आजु सही भा गलत के परतियाइयो के कवनो निरनय नइखे क पावत। 'लोकहित' के नगारा के बिगरल अवाज, उत्तेजना भरल नारा के हल्ला, कुबोल आ नया–नया आश्वासन के 'सब्जबाग' ओके लगातार छल रहल बा।

'लोकशाही' से लोगन के मोहभंग के ई स्थिति अतना जल्दी काहें आइल, समझदार लोगन में आइल जागरुकता के कमी आ रोज–रोज होखे वाला चुनावी नाटक का प्रति ओकर बेरुखी ई साबित करत बा कि राजनीति आ ओकरा करिया करतूत से लोग आजिज आ गइल बा; बाकिर खुलि के कुछ बोले भा विरोध करे के स्थिति में ऊ अपना के नइखे पावत। पाछिला पाँच–छव बरिस में आइल भारी नैतिक गिरावट उज्जड़ई, हुल्लड़ई आ बेहयायी भरल बात–ब्योहार आ अरबन के घोटाला लोकशाही के एगो दोसरे रूप सोझा ले आइल बा। एही में जवना किसिम के गुण्डई आ गोलबंद हमला के प्रवृत्ति बढ़ल बा ऊ कुछ कहे–सुने वालन के 'किंकर्तव्यविमूढ़' क दिहले बा। नया नया परिभाषा गढ़ल जा तारी सन। बहुसंख्यक, अल्पसंख्यक के नया व्याख्या हो रहल बा। केहू दलित–पिछड़ा चेतना के उभार के गद्दी हथियावल चाहऽता केहू धर्म निरपेक्षता (सेकुलरिज्म) आ तुष्टीकरण का जरिये बनल रहल चाहत बा, केहू धर्म आ राष्ट्र के दोहाई देत ओके गिरावल चाहता बा। सांप्रदायिकता के परिभाषा बदल गइल बा–राजनीतिज्ञ, ओकर अलग व्याख्या करते बा–न्यायालय अलग। चुनाव–आयोग अलग। लोकशाही के चार पाया एकदम 'चौपाया' बन गइल बा। ओकर कवनो गोड़ अगर सहियो डेग डालल चाहत बा, त ठीक से परत नइखे। चउथा पाया के हालत अउर बिछिलहर वाला बा।

कुछ बरिस पहिले जवन दल–बदल, खरीद–फरोख्त, नंगई आ मारामारी छोट–मोट रूप में होत रहे, अब खुल्लमखुल्ला बड़–बड़ आयोजन का रूप में हो रहलि बा। आज का राजनीति में जवन सच उजागर भइल बा, ऊ बा एक दोसरा का प्रति 'अविश्वास' आ 'असहनशीलता', 'आत्मालोचन' के कमी कवनो राजनीतिक दल के सोझ डहर नइखे धरे देत। इहे कारन बा कि हर पार्टी एक दोसरा प लांछन आ गंदगी उबिछे में पूरा जोर त लगा रहल बा बाकिर आपन अंदरूनी हालत जाने आ ओके ठीक करे के फुर्सत नइखे निकाल पावत।

सत्तानसीन होखे खातिर भा सत्तानसीन भइला पर जवन दल लोकशाही के आपन तंत्र आ अपना कुतर्की मनबढ़ूपन के तंत्र बूझत रहे, नैतिक मूल्यन के ढाहत–गिरावत रहे आजु ऊ दोसरा पर अनैतिक भइला आ तानाशाही कइला के इल्जाम मढ़त बा। कवनो अपराध–कर्म के आरोपी आ बाहुबली ओकरा संगे रहे त ठीक, दोसरा संग सटल त खराब। जवन भ्रष्ट आ कथित अपराधी ओकरा संगे कई बरिस ले विवाद के विषय बनल रहे अगर ऊ छटकि के राजनीतिक 'ध्रुवीकरण' में पाला बदल दिहलस त ऊ नरेटी फारि के चिकरे आ फेंकरे सुरू क देत बा कि दोसरका दल में अइसना गलत आदमी के संरक्षण दिहल जाता। एक गुट के दल, दोसरा गुट के दल के 'सत्ता' का पँजरा सरकत देखि के फोंफियाये आ गुरनाये लागत बा। अब आपसी असहनशीलता, 'घृणा' का हद ले पहुँचि गइल बा। लोकशाही के विकृत होत एह चेहरा के देखि के बड़ा अफसोस होत बा। काहें कि ई दलीय घृणा बढ़त जा रहल बा।

देश भा समाज के अन्दरूनी भा बाहरी विकास खातिर, नैतिक आ मानवी मूल्यन के रक्षा खातिर, 'लोकशाही' के नीरोग आ स्वस्थ बनावे खातिर मिलि–जुलि के सोचल आ सही आ पक्षपातरहित कारगर कदम उठावल त फइलाँवाँ बा–विधानसभा आ संसद जइसन जगहा के गारी–गरौज के अखाड़ा आ लड़ाई के मैदान बनावल एह 'सच' के नंगा रूप सोझा लियावत बा कि अब केहू के एह स्थिति पर अफसोस भा चिन्ता नइखे। दोसरा के असंवैधानिक, नाजायज, कुकर्मी, सांप्रदायिक आ फासीवादी कहि के भिड़ला ले पहिले एह राजनीति करे वालन के खुद अपना भीतर झाँकि के ईमानदारी से देखे आ गुनावन करे के चाहीं कि 'लोकतंत्र' में हम कतना सही, समर्पित, नैतिक आ सहनशील बानीं, हमार खुद के कदम कतना न्यायपूर्ण, कतना संवैधानिक आ लोकतांत्रिक बा। नियम, कानून भा संविधान के अपना सुविधा का मोताबिक तूरे–मरोरे आ ओकर अपना तर्क का मोताबिक व्याख्या कइला से कवनो साफ–सोझ राह ना बनी।

लोकशाही में 'लोकसेवा' आ 'लोकहित' के नाँव पर जेंतरे ऊ अराजक फेतुरत आ पोंहड़क फइलावऽता, दोसरो के अधिकार बा कि ऊहो एही लोकतंत्र, लोकहित के दोहाई देके ओकर काट करो। काँट से काँट निकालत कूटनीति भले होखे बाकिर सही नइखे। हिंसा के विरोध एह अहिंसावादी देश में 'हिंसा' से ना 'अहिंसे' से हो सकेला। खाली खिलाफत करे आ विरोध खातिर विरोध करे के राजनीति से निजात पावे के समय अब आगा ना आई। अपना बारे में सोचल छोड़ि के देश आ दिन–ब–दिन खराब होत सामाजिक समरसता के बचावे के उतजोग मिलि–बइठि के करे होई तब्बे विकास आ समृद्धि के डहर मिली। तब्बे मगरमच्छ का जबड़ा में फँसल लोकशाही के शरीर नवजीवन पाके हरकत करी। ●●

– 1997 (पाती–23)

'एक मुठी सरसो' के बहाने

केशव मोहन पाण्डेय

गदराइल गेहूँ के खेत में, भा मसुरी–मटर के अगरात फुलवन के बीचे बा ऊँखि के जामत पुआड़ी के पोंछ पकड़ले भा अकेलहूँ अपना हरियर देहिं पर पीअर अँचरा लहरावत सरसो अपना रूप–रंग, चाल–ढाल आ रस–गंध से अपना ओर बरबस लोग के मन के मोह लेबे के कूबत राखेला। सरसो के पीअर अँचरा देखत कवि लोग के मन कूदे लागेला। शायर लोग शेर लिखे लागेले आ लेखक लोग बड़ा रचि–रचि के कलम तुरेला। हम जब कबो सरसो के फूलन से पाटल खेत के देखेनीं त देखते रहे के मन करेला। अपना मनहर के मनभर देख के कहाँ कबो केहू के मन भरेला? हमरो मनवा ऊहे करेला। रसिक मन में सरसो के अइसन रूप बन जाना कि सगरो सरेह वन जस हो जाला आ अमीर खुसरो जी के गीत कान में सुनाए लागेला, सनसनाए लागेगा– 'सकल बन फूल रही सरसो।'

भले कोस कोस पर पानी बदल जाला त का ह, प्रकृति एक्के होले। रीति आ नीति के एक्के भाव होला बाकिर देखे वाला मनई अपना–अपना चश्मा से देखत रहेला। केहू के सरसो के पीअरका फूलवा धरती माई के चुनरी लागेली त केहू के कवनो अल्हड़ लइकी के बेपरवाह दुपट्टा। केहू सरसो के पीअरका फूलवा के हाथ पीअर भइला से जोड़ेला त केहू पाहुन के विदाई खातिर रंगल धोती के पसारल बुझाला। केहू के पीताम्बरी ओढ़ले अदृश्य पीतांबरधारी विष्णु भगवान बुझाला त केहू के सोना के पानी वाला उमड़त–उफनत नदी बुझाला। केहू के वसंत के अइला के चिन्हा ह सरसो त केहू के ललकार के लहास ह सरसो। ऋषभ देव शर्मा जी लिखले बानी कि –

''सुनो, बगावत कर रहे अब सरसों के खेत
पीली–पीली आग नव जागृति का संकेत''

'चंद्र गहना से लौटती बेर' में गाँव के बहरी, खेत के मेड़ पर बइठल केदारनाथ अग्रवाल जी के सरसो कुछू दोसरे रूप में लउकत बा। ऊहाँ के लागत बा कि सरसो त जइसे सबसे बड़ हो गइल बा। सरसो एतना बड़ हो गइल बा कि ऊ आपन हाथ पीअर करवा लिहले बा आ बिआह के मंडप में बइठ गइल बा। अइसन लागत बा कि होली के गीत गावत फागुन के महीनो ओह बिआह में शामिल हो रहल बा। एह स्वयंवर में प्रकृति अपना नेह के अँचरा डोलावत बा। देखीं –

''और सरसों की न पूछो/हो गयी सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं/ब्याह मंडप में पधारी
फाग गाता मास फागुन/आ गया है आज जैसे।
देखता हूँ मैं, स्वयंवर हो रहा है/प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है''

कवि चंद्रप्रकाश 'चंद्र' जी सरसो के फुलाइल वसंत के अइला के प्रमाण मानत लिखले बानी–

''पीली–पीली सरसों फूली, अरु बौर अमवा पे छायो ।

राष्ट्रीय चेतना के सजग आ स्वाधीनता संग्राम में अनेक बेर जेल के यातना भोगे वाली हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवयित्री आ लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान जी के लागत बा कि सरसउवे अनंग के मधुरस दिहले बा जवना से वसुधा के अंग–अंग फड़कत बा–

''फूली सरसों ने दिया रंग,/मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,
वधु–वसुधा पुलकित अंग–अंग''

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी 'ग्रामश्री' में सरसो के तैलीय सुगंध के बड़ा मोहक वर्णन कइले बानी। देखल जाव–

उड़ती भीनी तैलाक्त गंध/फूली सरसों पीली पीली,

लो, हरित धरा से झाँक रही/नीलम की कलि, तीसी नीली!

लेखनी के धनिक लोग एगो दोसरे दृष्टि रखेला। केहू के सरसो अपना पिअरका साड़ी पर खेतन में इतरात लागेले त केहू के बुझाला कि कवनो स्वयंवर रचाइल बा आ ओहमे एक्के जइसन साड़ी पहिन के, एक्के रूप में लाहे–लाहे मुस्की मारत कियारी–कियारी रूपी लाइन बना के सरसो जइसन सुन्दरी ठाढ़ बाड़ी। केहू के लागेला कि मंगल रूप धारण क के सुहागिन लोग ऋतुराज वसंत के स्वागत करे आइल बा आ केहू के लागेला कि अपना रूप–रंग से ६ारती माई के रूप के निखार के सरसो मने मन अपना पर अगरा ताड़ी। केहू के लागेला कि प्रकृति ऋतुराज बसंत के देख के सरसो के फूलन से कनखी मारत बा त केहू के लागेला कि गाँव के गोएड़ा बदलत ऋतु के खुश करे खातिर आस्था आ विश्वास में रमल गाँव के औरत लोग फूल–अछत–रोरी–कुमकुम चढ़ा के पूजा कइले बाड़ी। एतने ना, प्रकृति के सुन्दर चित्रकारी करत लगभग सभे सरसो के सुन्दरता के वर्णन कइले बा। 'सरसो' अपना नमवे में सरसता लिहले बा। जहवाँ रस बा, रूप बा, रंग बा, ऊहवाँ सरसता त होखबे करी। जवना तरे अनेक फसलन से भरल खेल के बदला में खाली फुलाइल सरसो अपना ओर मन मोहे के जादू जानेला, ओही तरे मटियो के आपन गुन होला। 'एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्। न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना।।' 'सरस' भाव से ई बतिया सरसउओ के तालाब के सुशोभित करत एगो राजहंस जस सिद्ध करता बा।

सरसो के खेती भारतीय किसान खातिर एगो जब्बर लाभकारी खेती हवे। खेती के परंपरागत तौर–तरीका अपनावत बेरा भोजपुरी लोक जीवन में घाघ आ भड्डरी के कृषि–पंडित कहल जाला। कई बेर त ओह लोग के लोकोक्ति चाणक्य के नीति से ताल ठोंकत लउकेली। घाघ जहाँ खेती, नीति आ रोग–व्याधी खातिर अपना कहावतन से विख्यात हवें ऊहवें भड्डरी के कहावतन में बरखा, ज्योतिष आ सामान्य आचार–विचार के बात मिलेला। इनकर मौसम–ज्ञान आ शुभाशुभ विचार अपना नीति आ अनुभव पर आधारित बा। गँवई मन आजुओ ओह लोग के लोकोक्तियन के दोहरा–दोहरा के अपना ज्ञान, बुद्धिमानी आ चालाकी के परिचय देला लोग। घाघ खेत में बीआ बोए के ढेर गुन बतवले बाड़े। खेत में बीआ केतना डालल बढ़िया रही, ओहके मात्रा के बड़ा शुद्धता से व्यौरा देत सरसो बोवे के रास्ता देखावत बाड़ें। घाघ के ई कहनाम बड़ा मसहूर ह कि –

'सवा सेर बीघा, सावां जान। तिल सरसों, अंजुरी परमाण।

कोदो, बरै, सेर बोआओ । डेढ़ सेर बीघा, तीसी नाओ ।'

एक बिगहा खेत में सवा सेर सावां, तिल आ सरसों एक–एक अंजुरी, कोदो आ कुसुम एक सेर अउरी तीसी के डेढ़ सेर ले खेत में डाले के चाहीं। एहसे दोगुना उपज के संभवना रहेला।

आजुओ, समय के साथे चलत मनई जब एकइसवीं सदी में आ गइल बा, तबो भोजपुरिया क्षेत्र के असंख्य किसान खेती करत एह बातन के मानेलन। घाघ जी के एक अँजुरी वाला बाति के सामने हम त सरसो खातिर कुछू अउरियो देखले–अनुभव कइले बानी। हमरा विचार से सरसो भोजपुरिया लोग के मनोदशा आ मनोवृत्ति के सथवे कूबत के असली परिचायक ह।

ई एकदम निर्विवाद बा कि आजु भोजपुरी भाषा सगरो संसार में आपन उपस्थिति दर्ज करा चुकल बा। भोजपुरी से केहू अनचिन्हू नइखे। आज भोजपुरी भाषी लोग में उत्साहो के बढ़ंती भइल बा। गहे–गहे लोग सार्वजनिक अथान पर आपुस में भोजपुरी बोलहूँ लागल बा। अब एकर पढ़ाइयो होखे लागल बा। कमे सही, अब भोजपुरी में पत्रिकन के साथे समाचारपत्रो (भोजपुरी टाइम्स) छपत बा। मामला कुछ मजा लेबे वाला गीतन ले नइखे सिमटल, गाहे–बेगाहे, छोट–बड़, सगरो मंच से सलिल आ अश्लील भोजपुरी के चर्चो में लोग सरीक होत बा।

भोजपुरी भाव के भाषा हऽ। भोजपुरिया मनई अभाव में केतनो रहें बाकिर भाव में तनिको कमी ना रहेला। जिनगी के हर हाल से ताल ठोंक के भीड़ जाए वाला स्वतंत्रता के चिनगारी पैदा करे वाला मरद मंगल पाण्डेय हऽ त बुढ़उतियो में अपना के कुर्बान करे वाला कुँअर सिंह हऽ। भोजपुरियन में भले केतनो आपसी मतभेद होखे, बाकिर भाषा खातिर अगाध नेह होला। भोजपुरिया घाघ के एक अँजुरी भा एक मुठी सरसों अस देखे में कमे हो के आपन दम देखावे में पाछे ना रहेला।

सरसो के सुभाव में विविधता बा। ओकरा उपयोग में विविधता बा। पत्ता के साग, फर के देत–मसाला आ डाँठ के जरावन त सबहरिया होला, अनेक लोग एकरा औधषीय गुन के जानत किसिम–किसिम के उपयोग करेला। जिनगी के धीरज धरे के सीख देबे बदे बेर–बेर बतावल जाला कि तरहत्थी पर सरसो ना जामेला बाकिर शुभचिंतक लोग भगवान से आँखि में सरसो जामत रहे के अरज करेला। लोग जानेला कि सरसो जमावल त बड़ा आसान ह बाकिर सरसो के फूलाइल खुशहाली के चिन्हा

ह। हमरा लागेला कि सरसो प्रकृति के परोपकारी रूप के ऐना ह। एकर उपयोग कम से कम भोजपुरिया क्षेत्र के पहिचान ह। तेल लगावल आ तेल–तासन कइल मुहावरा भले चमचागिरी खातिर होखे, बाकिर सरसो हमनी के संस्कारन में पुष्ठ करेला। एकर अबटन देहिं के रोग–व्याधी त भगइबे करेला, रंगों निखारेला। बिआह–शादी के अबटन होखे भा जिउतिया के अपना पूरखन के प्रति श्रद्धाभाव से देत खरी–तेल, नजर उतारे खातिर मुड़ी उछरूंगे के होखे भा शनिदेव के मनावे खातिर सरसो–तेल के धार चढ़ावल, ई जनजीवन के हर गाँव में आपन ठाँव बनवले बा।

खाली सरसो के बहाने केहू भोजपुरी के आत्मा से परिचित हो सकेला। बात वर्तमान के सबसे चर्चित विषय पर्यावरण के होखे चाहे परब–त्योहार के, बात परिस्थितिजनित इतिहास के तथ्यन से साक्षात्कार करावे के होखे, चाहें संस्कारन के समेटे–सजावे के, सरसउवे के बहाने पाठकगण के ढेर सवाल के जवाब मिल जाई। भोजपुरियन के सुभाव जस सरसो के ढेर पौष्टिक मानल जाला आ एकर तासीर गरम। जाड़ा–पाला में एकरा तेल के उपयोग खइला से ले के लगवला ले होला। एहके तेल के मालिस कइला में मांसपेशी मजबूत होली आ खून के बहाव बेरोक–टोक होला। ई चमड़ा, दिल, पेट आ सुभाव, सबके ठीक राखे के ताकत राखेला।

एह लेख के नाँव 'एक मुठी सरसो' एह से कि सरसो भले जंतर–मंतर में मंतर मार के परोरे के काम आवेला त काऽ, बड़ा शुभ आ सात्विको मानल जाला। जइसे कि पहिलहूँ कहले बानी कि सरसों के अबटन से देहिं के मइल झरि जाला, उछरूँग के जरवला से बाउर नजर उतरि जाला आ मसाला बना के खइला से मन मस्त हो जाला। सरसो के आपन औषधीय गुन होला। तेल खइला के साथे देहिं में लगावहूँ के कामें आवेला। एकरा पतई के उन्नत साग रिन्हाला त डाँठ उत्तम जरावन के काम करेला। सरसो अपना समय के कवनों फसिल (कवनो रवी फसल) के साथे बोआ जाई। कइसनको जमीनो पर छींट दीं, उगि जाई। एह सब के बादो लेख के नाँव 'एक मुठी सरसो' राखला के सबसे बड़का कारन कुछ अउर बा। हमरा मन के भाव। हमार लइकाईं गंडक के किनारे बितल बा। आजु हमार जनम धरती गंडक के गोद में समा चुकल बा बाकिर लइकाईं के बाति ना भुलाला। बाढ़ आ बरसात बितला पर हम देखीं कि माटी ढेर सरस हो जात रहे। रवि के खेती के बेरा कुछ खलार खेतन से पानी उतरते, पाँक के तनी काठ होते, बकला–खेंसारी–मसूरी छिंटा जाव, सथवे ओही में एक मुठी सरसवो मिला दिहल जाव। ना हर–बैल के गरज पड़े आ ना कोड़े–झोरे के झंझट। माटी आ पानी के आपसी सरसता रूपी प्रेम ओह बेरा किसान लोग खातिर आशीष बनि जाव। समय पा के बकला आ सरसो, गेहूँ आ सरसो चाहें खेंसारी–मसूरी आ सरसो के फसिल खूबे लहराए आ बिना कवनो खाद–यूरिया, बिना कवनो डाई–पोटास के लहरत सरसो के डाँठ सबसे ऊपर सीना तान के खड़ा रहे। सरसो अपना गन्हक रंग के फूल में सरस मन के सगरो शूल के मेटा के प्रकृति के कृति बनि के सबके नेह के निमंत्रण भेजहीं लागे। इहे हाल भोजपुरिया लोग के बा। विषम से विषम परिस्थिति में भेज दीं, ऊ लोग बोरा में कसा के कवनो आफत–बिपत सहत चलि जाई लोग आ अपना कूबत से, अपना उद्यम से सबसे ऊपर सीना तान के खड़ा हो जाई लोग। आ बिना कवनो खाद–यूरिया, बिना कवनो डाई–पोटास के अपना पहिचान के झंडा शान से लहरावे लागेले भोजपुरिया। एक मुठी सरसों लेखाँ अनेक खातिर शुभ आ सुखद बनि जाले भोजपुरिया। अपना माटी–मनई से दूर भइला पर मन में ढेर हिरोह जागेला। मजबूरी में बिछड़ल मोह ममता के मलाल त रहबे करेला बाकिर मिताई के मिठाई जब मिले लागेला त मन के ढेर घाव मरे लागेला। सरसो जइसन सुभाव लिहले भोजपुरिया लोग भले एक्के मुठी होई लोग त का, मिलला पर आपन दुःख–सुख, आपन हाल–बेहाल पर दू–चार टुम गलचाउर क के खुश हो जाई लोग। मजबूरी में घर छोड़ के ट्रेन पकड़ले हम दिल्ली अइला से पहिले करीब पाँच बरीस ले 'संवाद' के संयोजन क चुकल रहनी। हर महीना के दूसरका सनिचर के होखे वाले ओह साहित्यिक गोष्ठी के परिणाम आजु देश में आपन पहिचान बनावत बा लोग बाकिर दिल्ली अइला के बाद जइसे हमार लेखनी सूख गइल रहे। धीरे–धीरे भोजपुरिया भाई लोग मिले लागल त समय के साथे रून्हाइल बान्हा तूर के भाव के बाढ़ चारू ओर सरस क दिहलस।

कवनो आड़ा–तिरछा खेत में एक मुठी सरसो छींट दीं, समय पाके ऊहे एक मुठिया घर भरि देला। सरसो से कबो मुँह मत फेरब। भोजुरिया से कबो मुँह मत फेरब। सरसो सगरो रोग–व्याधी मेटावेला। स्वाद, सुभाव, स्वास्थ्य, शीलता, शालीनता, संस्कार आ संस्कृति के पहिचान ह सरसो आ भोजपुरिया। रउआ प्रेम देखाएब, माथा नवाई, पावर देखाएब त उलटा माला जाप क के मंत्र परोरी। एह के रहला से राउर घर भरल रही। एहके सुवास से लछमी जी के बास होई। एह के मान दिहला से राउर सम्मान बढ़ी। खाली साँझा देत रहेब त एकर रूप लहरत सोना बनि जाई, पते ना चली। 'एक मुठी सरसो / झमर झमर बरिसो।'

– राजापुरी, उत्तम नगर, नई दिल्ली – 59
मोबाइल – 9971116613

बरवै

अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी'

जरल जोर, अँइठन में नइखे रेप
चोर चिन्हाइल तबहूँ नखहिस झेंप

नवल काँट कतनो, ना पाई टूटि
दाबल रोग भला का जाई छूटि!

ऊपर से बा ढाँपल गड़हा खाल
अबहूँ जाला तानल तोपल जाल

पंडित बाड़न कउआ, ज्ञानी गीध
बइठल तरकुज पर जे सेही सीध

बिलरू बाड़न अँइठत आपन मोंछि
कूकुर के सुहरावल जाला पोंछि

बुलबुल के बनलन हा बाझ इआर
गाँव अगोरल कइले इहाँ सिआर

आजु हीक भर पाड़ा पीअसु घीव
जरल करे बाछी के भलहीं जीव

गाँठ खोलि के मालिक बा अँधुआत
नोकर बनि के बानर बा बँधुआत

जरल-झरल हो जाई सभ बरबाद
राख-पात बनि पाई ना जो खाद

भाग बाग के होई ना समतूल
डाढ़ी जब ले लागी ना फर-फूल

ठहरे जोग रही ना ई संसार
जब ले इहाँ बही ना रस के धार

साथ निबाही कइसे ऊ दिन-रात
बोलत नइखे अब जे भरि मुँह बात

जवरे रहि के भलहीं जनि हो भोज
पीठि-पीठि के रगरा रोजे-रोज

नवला बिनु ना लागल कुछुओ हाथ
कान्हा चढ़ि के अलगल जाला माथ

चले अमीरी अँखिया भलहीं चाल
परल करे तरवा में फोरा लाल

महँकि उठल बा पँजरा राखल घूर
जोहेला दुअरा से फेंकल दूर

इहाँ लगा पावल ना केहू मोल
जिनिस देखि के भइले चुप बकलोल

गिनि-गिनि अँगुरी पर जिनि जनलन बीस
आजु बरेला कोटिन तिनिका खीस

लाँघे में चवकठ जे मानल लाज
भड़कत ना ऊ चढ़ि के उड़नजहाज

आँखि मूँदि जे राखत आइल सान
रहल आह पर मारत ऊ मैदान

जानसु 'अकिला फूआ' सभ के मूल
कहली हा जूती के जिनि कनफूल

'लाल बुझक्कड़' के बा बड़हन नाक
बन्हलन हा हरिना का गोड़े चाक

हँसता-ठग दिहलन हा दाँत निपोरि
पी गइलन जिनि करनी अनकर घोरि

धावल कहिया के, सुनि कहल हमार?
पतिआइल के निभरम रहल हमार?

ना चाहसु खुलि पावे अनकर कान
गावत अइले बहिरू आपन गान

पीटत जाले अब ले फाटल ढोल
बान्हत जइहें कब ले अखड़ल बोल?

अँखिया में केकर बा कइसन भाव
सुनला बिनु सहले ना दँवकत ताव

माथे बान्हल इनिका बड़का पाग
हाँकल करसु बइठि के ऊड़त काग

मरले सभ दिन ठोना रहि के दूरि
जनले ना कइसन हऽ धाँगल धूरि

मानेले अपना के बड़ फरछीन
जानेले अनका के निछछ मलीन

चहलीं हम गफलत में धरितीं हाथ
जनलीं अब निबही ना इनिकर साथ

नाचल करसु अपनहीं तूरसु तान
आइल अनबोलत के हमारो ध्यान

सुनि पवले ना एको, कहलीं कोटि
बटुराइल बा उनुका काने खोंटि

बोलल सरबस सचहूँ भइल जिआन
खुलि पावल ना जब ले जबदल कान

अब ना आपन अधिका करबि अकाज
पहिले करसु कान के बहिर इलाज

हमरा आजु बुझाइल एगो बात
सुनल इहाँ बा अयगुन मानल जात

बेरथ होला तँहवाँ कइल उचार
नइखे जेहवाँ तनिको भर पतिआर

बोली कवनों कतनो हो टनकार
कनपातर का पँजरा बा अलचार

अब ना गावत जाइबि सगरे धाइ
भरल सभा में बइठबि जाब लगाइ

बहुत भइल बे-कहले रोजे रोज
देखल जाई होई जहिया खोज।

लागत चलल डगरिया में खरकौच
मारल सभे करेजा ऊपर चोंच

होत रहल बा मनवाँ भलहीं थोर
भींजल नइखे अबले पपनी-कोर
(पँखुरी भइल हजार) से...

प्रकाश उदय के
दू गो कविता

(एक) देव-दुख
(खास काशी-विश्वनाथ के नाम)

आवत बाटे सावन , शुरू होई नहवावन
भोला जाड़े में असाढ़े से परल बाड़े
एगो लांगा लेखा देह , राखें राखे में लपेट
लोग धो-धा के उघारे प परल बाड़े

ओने बरखा के मारे , गंगा मारें धारे-धारे
जट पावें ना सम्हारे , होत जाले जा किनारे --
'शव-शिव हो दोहाई
मुँह मारीं सेवकाई ' --
ऊहो देबे प रिजाइने अड़ल बाड़े

बाटे बड़ी-बड़ी फेर , बाकी सबका से ढेर
हई कलसा के छेद , देखऽ टपकल फेर --
'गउरा धउरऽ हो दोहाई'
आ त --'ढेर ना चोन्हाईं --
अभी छोटका के धोए के धयल बाटे'

'बाड़ू बड़ गिर्हिथिन ,खाली लइके केफिकिर...'
'बाड़ऽ बापे बड़ नीक ,खाली अपने जिकिर...'
'बाड़ू पथरे के बेटी...'
'बाटे जहरे नरेटी...'
बात बाते-घाते बढ़त बढ़ल बाटे

सुनि बगल के हल्ला , ज्ञानवापी में से अल्ला
पूछें, 'भइल का ए भोला,महकइलऽ जा मुहल्ला
एगो माइक बाटे माथे
एगो तोहनी के साथे
भाँग बूटी गाँजा फेरू का घटल बाटे ?!'

दूनो जाना के भेंटाइल ,माने दुख दोहराइल
ई नहाने नकुआइल ,ऊ अजाने अँउजाइल
इनके लागेला सोमार
उनके जुम्मा के बोखार
दुख कहले-सुनल से घटल बाटे

आवत बाटे सावन , शुरू होई नहवावन
भोला जाड़े में असाढ़े से परल बाड़े!

सावन आने वाला है , शुरू होने वाला है नहवावन , (सोच-सोच) आसाढ़ से ही जाड़े में पड़े हैं भोले बाबा । (एक तो कि) एक नंगे के जैसी (उनकी) देह , (जिसे) राख ही में लपेटे (वे) रखते हैं , (और) लोग (हैं कि उसे भी) धो-धाकर उघार (कर) देने पर पड़े हैं ।

इधर , मारे बरखा के गंगा लहर-पर-लहर मार रही हैं (जैसे) , सम्हाल नहीं पा रही हैं जटाएँ , दुहाई देकर शिव की कि मुँह मारें (ऐसी) सेवकाई की , वे भी(जटाएँ) इस्तीफा दे देने पर ही अड़ी हैं ।

फेरे तो ढेर सारे हैं , लेकिन सबसे बढ़कर (फेरे में डालने वाला) यह कलसे का छेद है । देखो ,कि फिर टपका...! दुहाई है गौरा , दौड़ो... ।(गौरा बोलीं कि)ज्यादा नखरे न करो , (खाली नहीं हूँ मैं) अभी छोटे वाले (गणेश जी) का...धोने को धरा हुआ है ।

'बड़ी (भारी) गृहस्थिन हो , कि सिर्फ बच्चों की ही फिकर है...!'
'बड़े अच्छे बाप हो कि (हमेशा) सिर्फ अपना ही जिकर (लिये रहते हो). ..!'
'(सचमुच) पत्थर की ही बेटी हो...'
'(सचमुच) जहर ही है नरेटी में...'
बातों के घात (-प्रतिघात) से बात बढ़ चली है ।

बगल का हल्ला सुनकर ज्ञानवापी में से अल्ला पूछते हैं कि हुआ क्या भोला कि सारा मुहल्ला गँधा दिया तुम(दोनो) ने । एक तो माथे पर माइक , दूसरे तुम लोगों (जैसों) का साथ ! भाँग-बूटी-गाँजा फिर से घट गया है क्या ?!

दोनो जने के मिलने का मतलब (एक-दूसरे से) दुख को दुहराना , दुख का दुहरा हो जाना । ये (रोज-रोज के) नहान से नकुआए , वे (रोज-रोज के) अजान अँउजाए । इनको सोमार लगता है , उनको जुम्मे के नाम से बुखार । (एक-दूसरे से) कहते-सुनते रहने से ही उनके दुख घटे हैं (, कटे हैं) ।

कमलेश राय के तीन गीत

(एक) सपना खातिर गीत लिखब

छोट होत जाता दिन पर दिन
अंगना खातिर गीत लिखब
दू दू हाथ करब आन्हीं से
दियना खातिर गीत लिखब।

सांस सांस में असरा लेके
पंखियन में परान लेके
उचक उचक आकास निहारे
मन भीतर उड़ान लेके
ठोर ठोर से पिंजरा तोरत
मैना खातिर गीत लिखब।

मंडी औ बजार के रुख पर
कुछ क बदल गइल चेहरा
कुछ लोगन के हर निगाह पर
हर जुबान पर बा पहरा
टूट टूट जाए सच बोले
ऐना खातिर गीत लिखब।

कबों आध कबहूँ पूरा
गरहन में सूरुज चान लगे
ए उदास मौसम में लोर
बहावत कहीं बिहान लगे
अंखियन में बाँचल उजास के
सपना खातिर गीत लिखब।

(दू) दुकान हटे पंचर के पक्का

हैण्डिल पैडिल टायर चक्का
दुकान हटे पंचर के पक्का

ना कवनो पोस्टर ना कवनो पलानी
काठे के बक्सा बा नादे में पानी
लागे के दुइ चार टक्का
दुकान हटे पंचर के पक्का

ओ से भरइबऽ चवन्नी लगइबऽ
अपने से भरबऽ त ऊहो बचइबऽ
पंप बदे भइल धरम-धक्का
दुकान हटे पंचर के पक्का

डाक्टर वकीलफ्सर हीरो भा नेता
लाखन करोड़न में लेता आ देता
सुनियो के खाय ना सनक्का
(सुनियो के हक्का न बक्का)
दुकान हटे पंचर के पक्का

दुइ चेला एक भाँजा एगो भतीजा
तनी-तनी गलती प नौ-नौ नतीजा
बुढ़वा लागी मम्मा कक्का।
दुकान हटे पंचर के पक्का

देसवा बँटा देले नेतवा अभागा
एके में बान्हें ए धंधा के धागा
दिल्ली लाहौर चाहे ढक्का
दुकान हटे पंचर के पक्का।

(दू) अइसन आंखि कहां से पाईं

आंखि अछइते आन्हर होके
कइसे भला बतासे धाईं
खन में हंसे खने में रोवे
अइसन आंखि कहां से पाईं।

असरा कहीं सपन बा कतहीं
दिया कहीं उजियारा
भरमल लोग सांझि के पहरा
के जाने भिनसारा
दीद दीद में दीठि जगा दे
कइसे अइसन हुनर जुहाईं।

खुदगरजी में रोज नेह क
दरपन तोरल जाता
सोना जइसन भोर गंवाके
राति अगोरल जाता
कवना जतन जोग से हम
पाथर के ऊपर दूब जमाईं।

हम युग क कुम्भन कबीर
का जानीं सिकरी , कासी
हिया - कठौती चन्नन पानी
हम अइसन रैदासी
रेत परल मन के भीतर अब
सूखलि नदिया नाइ चलाईं।

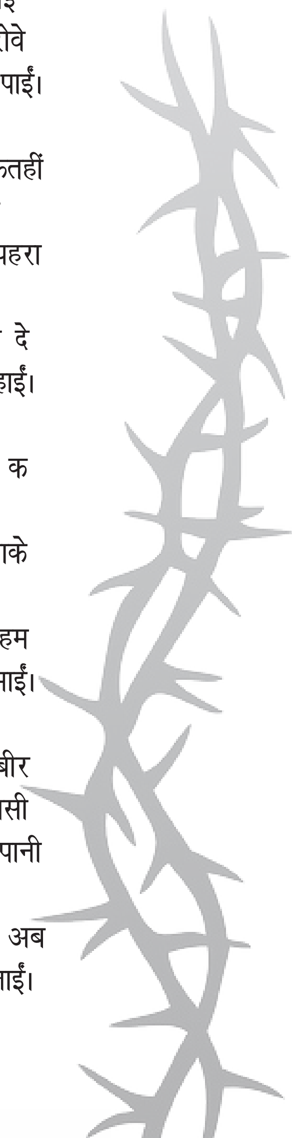

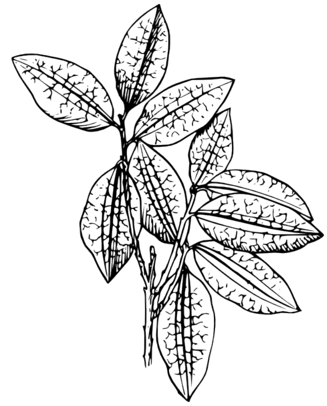

(तीन) बजर करेजा बा किसान क

धरती रोज बिछाके सूते
ओढ़न ओढ़े आसमान क
बजर करेजा बा किसान क।

हांफि हांफि के जांगर तोड़े
करम कुदारी किस्मत कोड़े
करजा चढ़ले रहे कपारे
सगरी उमिर घटावे जोड़े
सुख क सपन नीन भर बाटे
दुख बाटे दुनिया जहान क।

खेते में जामल जवास बा
कबों परल परती परास बा
रहे अन्नपुरना के घर में
कबों भूख कबहूं पियास बा
कुंआ खोदिके पानी पीये
मन राखे गंगा नहान क।

ढेर गंवावे थोरे पावे
सगरी जिनगी आस जोगावे
मन भीतर पीरा अभाव क
हंसि हंसि सबद रमैनी गावे
अनगिन फिकिर रहे माथे पर
पगरी बान्हे स्वाभिमान क।

258 /e 1 सहादतपुरा ,मऊ 275101

दिनेश पाण्डेय के
कुछ कविता

काग-भेद

कगवा अब जनि बोल रे, के सुनवैया नार।
रहली ना ससुई ननद, के परदेस भतार।

अक्सर कटु हितगर हवें, असर करस बिपरीत।
काग हियाँ कोइल पलस, कइसन निखरे गीत।

बहरी के परतीति ह, करुई साँची बैन।
इँकसल कागे के मुहें, मंगल काव्य रमैन।

कउआ गइले कान्ह लग, लिहले अमिट भुकास।
लउकल रोटी अंतरे, कतिने ना आकास।

रहिते इनर निपूतरा, सची न जनती काक।
सहसाखी घर कान सुत, मान न मिलिते खाक।

बतकूचन मूरख करे, जहँ कागन के बूझ।
इनकर मति-गति तुच्छ में, तापर मरिहें जूझ।

काग करुर कपटी कजी, तजल पदारथ खाय।
तिकव हगे महराब पऽ, ढीठे पाँख खुजाय।

के सुनलस के देखलस, कागा होखल शूर।
काकुवाद अनघा करस, भागस बिझुकल दूर।

पंछी ज्ञानी अस कहस, कउआ होत उपाट।
आँख फाड़ पेखीं तनी, छपले हर घर घाट।

इक महराबी भौन में, कउअन के बइठार।
चले भँड़ैती स्वांग रव, सीट बीट अतिचार।

कउअन में उड़ती खबर, पसरल असह कुराज।
अब ना भेंटी कागबल, गरुड़ बनल महराज।

मिलत वजीफा काग के, कउड़ी अँतरी हाड़।
मौसम के बदलाव से, जिनिगी भइल उजाड़।

पलखत पाइ अलोत में, खेले खेल अनीठ।
सोझे में बाना धरे, बड़ मरजाद-बसीठ।

एहि अलँग सब रोसनी, ओने सब अन्हियार।
मूरख काना काग के, हद जरिबद्ध बिचार।

हठधर्मी कागा बड़ी, भलहीं बिनसे जान।
तब ले जतन न छाड़िहें, पूरे ना अरमान।

धूप सुनहरी के खिले भइले काग बेचैन।
छनकल आपन छाँहि से फिरे नचावत नैन।

स्वारथ साधन तब तलक, ढोरन के पुठवार।
अनकुस अँठई के चुके, नोच खास जियतार।

आगि लगवले काग के, उड़ले करत कुहाच।
गफलत में दरखत तरे, नाचल कवन पिशाच।

साजिश करि कउवन रखल, खोंता में अवसेस।
मुफुते में मारल गइल, बूढ़ गीध दरवेस।

उरुआ बैरी बड़ जबर, लिहलन काग पनाह।
कपट संधि के चाल से, रचलन अगियाडाह।

कहि दिहलन परिहास में, कउआ हरले कान।
मूढ़ बिना टोवे अपन धउगे धाने-धान।

मति मारल दुखदेव के, धइले काक कुमार।
सइयो ठोकर खाइ के, भइलस टीक उजार।

लुच्चन के एक फाग के, बेसर रसिया काग।
सैंया रहलें सूतले, लूटल रयन सुहाग।

कउआ बइठल डाढ़ि पऽ, खरमिटाँव के फेर।
ऊपर से फेदा गिरल, जान गइल अखरेर।

(भोजपुरी दोहे)

कठिन शब्दों के अर्थ - कुरले - काग की मंद्र बोली। धनिया - धन्या, पत्नी, स्त्री। भतार - पति। इँकसल - निकला। सची-शची, इंद्रपत्नी। सहसाखी - हजार आँखोंवाला, इंद्र। कानढकाण। बूझ-सभा। काकुवाद - गलथेथी, निरर्थक शोर करना। उपाट - मूलोच्छेद हो जाना, विलुप्त। छपले - छा गए हैं। सीट - डींग। पलखत - मौका। अनीठ - अनीष्ट। मरजाद-बसीठ - मर्यादादूत। खरमिटाँव - भूख शमित करना।,

तिजारत

बात कुछ ना रहे तबो बोलीं।
बेवजह कान में जहर घोलीं।
ना खलेटी कहीं हवें तर-पर,
फेरु काहे जुबाँ अधर तोलीं।
लंगई बेपरद त का हरजा,
चैन से ऐन मध डहर डोलीं।
दे लुकारी जराइ छान्ही के
ओत में छुप रहीं शहर झोलीं।
शातिरी में न रावरी समता,
धीकले पाट पर चुतर पो लीं।
झूठ के पौध के तिजारत में,
नीति गेंठे चढ़े कहर मोलीं।
ए प्रबोधन प ना अमल राखबि
जा कहीं डूबि के उफर हो लीं।

अकुती

फिजाँ में फिर तनिक करुआपना बा।
चनरमा भिर बड़ी धूंधर घना बा।
जुगाली कर रहैं बादर-हिरन कुछ
हवा के पाँव धीमा अनमना बा।
गिरल हा झाग अस पैरत जमीं पऽ,
बिरछ के चूल पर भारीपना बा।
कहीं अस्फुट विनय के लय सुनाता,
विजन में गुम रहल आराधना बा।
पलक पर नीन के टुकड़ा अलस भर,
नयन में झाँकि के उतरल मना बा।
बदन संवेग से बोझल थिराइल,
बिलम के फर्फरी फिर काँपना बा।
पता ना भोर कतिना देर बाटे,
पता ना दूर कतिना आशना बा।

खीझ

आँखि में खीझ जियादा लागे।
बज्र ढावे प अमादा लागे।
रंज काहे ह, समुझ का इचिको?
आज ना नेक इरादा लागे।
नजर के घात चले तिरछौंहे,
चाल अदबद के पियादा लागे।
लूटि के खोर कइल घर सेही,
ओढ़ले साध-लबादा लागे।
ऊपरे से त दिखस पाथर अस,
भीतरे ओछ बुरादा लागे।
अब कवन बात भरोसा लायक,
बात सब नून सवादा लागे।
झंझ आँखिन में बढ़त बा रोजो,
घरजरुन केरि लकड़दा लागे।
जौन बतिया त रहे तर ढाँकल,
तल प उभरे त कुशादा लागे।

❑ सरकारी आवास-100/400, राजवंशीनगर,
रोड-2, पो० शास्त्रीनगर, पटना-23

अशोक कुमार तिवारी

गमन बा अकेला

अकेले बा आवक गमन बा अकेला।
सभे झूठ बाटे इहां के समेला!

भइल बाटे लइका नचनिया नचावऽ,
बहुत बाटे पावर तुँ सभके देखावऽ।
सरब शक्ति लेके ऊ ऊपर बा बइठल,
ऊ अंगुरी घुमावे तु ठुमका लगावऽ।
ऊ जइसे नचाई तु नचबऽ वइसहीं,
अधिक एह ले तोसे न कुछ हो सकेला...।

दियावेला आदर आ सत्कार ऊहे,
दिखावेला सबके चमत्कार ऊहे।
भुला जनि कि तू बस निमित मात्र बाड़ऽ,
बनावे बिगाड़ेला घर बार ऊहे।
उ चाहेला जबले जरे दीप जीवन,
उ चाहेला जब्बे अन्हरिया करेला..।

उहे जन्म देला, उहे बाटे मारत,
जिताई न जबले तु रहि जइबऽ हारत।
गुजर जाई जिनिगी सम्हारत सम्हारत,
उखड़ नाहीं पाई तु रहबऽ उखाड़त।
भुला जाई अचके सभे चालबाजी,
हेरा जाई बुद्धी बिगर जाई खेला...।

❑ सूर्यभानपुर, बलिया(उ०प्र०)

योगेन्द्र शर्मा 'योगी'

एह देसवा के राजनीति

एह देसवा के राजनीति में
रोग बड़ा बरियारै धइलस
देखतै देखत देश के गोइयाँ
जातिवाद कै कीड़ा खइलस।

बड़ बड़ हाकिम बइद भेटइलन
आपन दुआ दवा अजमउलन
जोर लगल जेतनै निदान के
ओतने अंगे अंग ई फइलस।

कउनो घर ना छोड़लस जरिको
सबके अँगुरी पोर नचइलस
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शुद्र का
जेके पउलस धरत मुअइलस।

रचि के सबही आपन गंगा
मिलतै मोका खूब नहइलस
अब करिहा राम तुहीं निगरानी
'योगी' जान सबै भरमइलस।

एह देसवा के राजनीति में
रोग बड़ा बरियारै धइलस।

❑ भीषमपुर,चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

ओम धीरज के गीत

सनेसवा हे कागा!

जिनि जा उचारे सनेसवा
हे कागा
वोही मुँड़ेरवाँ!

जेवने बहुरिया के पिया गइलें बहरा
घरवा पे सास अउर ससुरे के पहरा
काटे धावे सँसवै, अँगनवा
हे कागा
वोही मुँड़ेरवाँ!

जेहि घर बाटे सयानि री बिटिया
दिन में चयन नाहीं, राति के निंदिया
कोंचि के दहेज ले, परनवा
हे कागा
वोही मुँड़ेरवाँ!

जेहि घर काम बिना लउटैं उदासे
बीति जाला रात कबों दिनवो उपासे
कइसे नीक लगिहें, पहुनवा
हे कागा
वोही मुँड़ेरवाँ!

अब का होई भाय !

सुरसा जस मुँह
शहर पसारै
गँउवाँ जात ओराय,
अब का होई भाय !

घर-घर 'बागड़-बिल्ला' घूमैं
दूध कहँतरी झाँकै
जेवने आँखिन कमतर सूझै
उनका घर निपटा के
फेंकि के खुरचुन
देशी बिल्लन
के लेहलैं परचाय
अब का होई भाय !

मुफ्त कमाई चिक्कन खाई
मेहनत के भरमावै,
बड़ी-बड़ी बखरी के एगो
कोठरी शान बुझावै
मगरमच्छ भी
घूमैं लगलैं
ताल-पोखरी आय,
अब का होई भाय!

कँकरीट क जंगल आइल
रोज लगावे बोली,
खेती-बाग-बगइचा जइसे
सड़िगै आम झपोली,
केतना गाँव के
भाड़ झोंकाई
पेट भइल भरसाँय,
अब का होई भाय!

हिन्दी प्रचारिणी सभा बलिया में अनन्त देव पाण्डेय के किताब 'गँउवो गाँव बुझाते नइखे' के विमोचन 27 मार्च 20222

कुंवर सिंह इन्टर कॉलेज में काव्य गोष्ठी आ सम्मान

ब्राह्मण उत्थान समिति बलिया में डा0 अशोक द्विवेदी आ श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी के सम्मान 29 मार्च 22

साहित्य चेतना समाज द्वारा डा0 अशोक द्विवेदी के गाजीपुर गौरव सम्मान
(15 अप्रैल 2022)

डा0 अशोक द्विवेदी के जनपद-गौरव सम्मान-पत्र देत प्रो0 राममोहन पाठक (बाएँ)
डा0 आनन्द कुमार सिंह (दायें) तथा जनपद के वरिष्ठ कवि-साहित्यकार

स्व0 प्रभुनाथ सिंह के पुण्य तिथि पर आयोजित समारोह आ विचारगोष्ठी में डा0 जयकान्त सिंह 30 मार्च 2022

साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलने से गौरवान्वित हुआ भोजपुरी क्षेत्र

भोजपुरी साहित्य साधना के लिए सुल्तानपुर निवासी डा.अशोक द्विवेदी को मिला सम्मान

बिकास राय गाजीपुर पैनी खबर

गाजीपुर जनपद के मुहम्मदाबाद क्षेत्र के सुल्तानपुर गांव निवासी डा. अशोक द्विवेदी को इस वर्ष साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है।लगभग आठ वर्ष बाद साहित्य अकादमी द्वारा गैर मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं के तहत भोजपुरी साहित्य में उनके योगदान के लिए उनको चुना गया है। अकादमी की घोषणा के बाद उनके पैतृक गांव में खुशी की लहर है।पुरस्कार में उन्हें एक लाख रुपए और प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया जाएगा।

पुरस्कार की घोषणा के बाद उनके गांव के निवासी और काशी हिंदू विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर अवधेश प्रधान ने कहा कि यह उनकी दीर्घ साहित्य साधना का सम्मान है।एक बैंक अधिकारी के रुप में अपनी सेवा देते हुए 40 वर्ष से अनवरत भोजपुरी पत्रिका पाती का प्रकाशन अपने संपादन में कर रहे हैं।इसके अलावा भी उनका रचना संसार विस्तृत है।डा. द्विवेदी ने रामजी क सुगना(निबंध संग्रह),गांव के भीतर गांव(कथा संग्रह),फुटल किरिन हजार(गीत संग्रह),बनचरी (उपन्यास),कुछ आग कुछ राग(कविता संग्रह),भोजपुरी रचना आ आलोचना, राम जियावन दास बावला, मोती बीए का रचना संग्रह जैसी महत्वपूर्ण कृतियां हैं।साहित्य अकादमी पुरस्कार से आज गांव और क्षेत्र ही नहीं जनपद और भोजपुरी क्षेत्र व भाषा गौरवान्वित है।

डा. अशोक द्विवेदी को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त कर बधाई देने वालों में आइआइएमसी दिल्ली के प्रोफेसर आनंद प्रधान, धनंजय राय,चंद्रशेखर दूबे,पूर्व ग्राम प्रधान डा.अविनाश प्रधान, धनंजय प्रधान, राधेश्याम दूबे,डा.पीयूष राय आदि शामिल हैं।

कलियन करी पुकार

डॉ0 श्रीमती शारदा पाण्डेय

एने कुछ दिन से मन अनासे उदास हो जात; एने–ओने दउरऽता। ना शांति ना संतोष। एगो दुःख, एगो भय, एगो संकोच। बुझात नइखे मन कहाँ दउरऽता। पाप–पुण्य, जीवन मृत्यु, उचित–अनुचित, आवश्यक–अनावश्यक के विचित्र द्वन्द्व रहि–रहि के मन के कुरूक्षेत्र बना देता। सोचतानी चिन्ता आ चिन्तन के ई संघर्ष हमारा हर पल काहें झेले के परता। कहीं ई निराशा के कवनो रूप त ना हऽ? जवन मन में अवसन्नता के मोट पर्त बिछा देले होखे जहाँ जादू के 'तरल आकांक्षा से भरल आशा के आह्लाद' सूति गइल होखो। बाकिर अइसन गाढ़ विरक्ति के कवनो कारण नइखे बुझात। मन फेरू बिचारे लागता कि अइसन सोच कहाँ से उभरता? बात ई बा कि ई सोचले अपने आप में एगो बड़ काम बा। ऊहो भारत के धरती पर त एकर कुछ विशेषे पैसार बा। एही से कवनो विदेशी दार्शनिक कहले बा कि भारत के बच्चा–बच्चा दर्शन के भाषा बोलेला अरस्तू आ प्लेटो ओकरा जीभ पर चौबीसो घंटा बास करेला। हमरा अक्सर ए बात के सच्चाई अनुभव भइल बा। बुझाला जे गीता ज्ञान एह धरती के कण–कण में राग बनि के गूँजता, नाही त कृष्ण गद्य में उपदेश देले रहितन, गीत थोरिके गवले रहितन? चिन्तन के एह क्रम में आजु के लोगन के स्थिति कतना विकसित हो गइल बा ओकरा के एही से समझल जा सकेला कि आजु लोगन के विचार चाणक्य से प्रभावित बा, सपना रस बिहारी के बा, कीर्ति राम के आ कर्म....? हम सकपका गइनी के ई कर्म कहाँ से आ गइल? मन के काम मनन–चिन्तन हऽ कि कर्म? जहाँ देखऽ विपर्यय आ जाता। बुला एही से मन उदास हो जाता। बाकिर उदास भइला से काम ना चली; कर्म क्षेत्र में आइ के हम अर्जुन के भाषा बोलीं आ आपन अस्त्र–सस्त्र धइ के शांति के गोहार लगाईं त जीवन संघर्ष बेमानी हो जाई। कृष्ण सबके कहाँ भेंटइहें? असत्य में व्यक्ति देह रूप में भलहीं ना रहो काहें कि– 'जातस्य ही ध्रुवो मृत्युः' सत्य बात ईहो सत्य बा कि– 'क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं' त्याग के अर्जुन रूपी ई जीव भा व्यक्ति 'युद्धाय कृतनिश्चयः' होके खड़ा हो जाउ। ई संदेश कृष्ण गीता में दिहलन; ऊ व्यक्ति रूप से जनि भेंटासु प्रेरणा रूप में त हमरा लगिए बाड़न। एसे उदासी आ दिग्भ्रांतता ई दूनू अवरोध हमरा जीवन में हरे के ना चाहीं। बाकिर परिणाम के उत्सुकता छोड़ल कठिन होला; ओहू खातिर तुरन्ते उत्तर मिलि गइल बा कि कर्म कइल आपन अधिकार बा, बाकिर फल प्राप्ति में ना। तब एनियो से अदिमी अपना के मुक्त जानि के बस कर्म करो। ई सोच के फेरू मन जइसे अपने भस्म से उठि के खड़ा हो जाता। नियति के स्वीकार कइके जीए लागता। ईहे बुला प्रकृति ह चाहे मानवीय चाहे निसर्ग सिद्ध।

ओह दिन फूल तूरे लगनी त बाहर भीतर दूनू ओर से प्रश्न उठल कि का ई हिंसा ना हऽ? त बहरा से आवे वाला के समझवनी कि 'नायंहन्ति न हन्यते' आ भीतरी मन के कहनी कि 'जीवः जीवस्य भोजनम्' माने दूने ओर से हम आपन साधुता

आ शुचिता प्रमाणित कऽ दिहनी, सुने वाला मौन हो गइल। बाकिर हमरा चैन ना मिलल आ तबसे आजु तक जब–जब फूल तूरतानी ओकर 'चट्' से टूटला के ध्वनि जइसे मन के अशांत बना दे तिया। अपना आनन्द खातिर एगो हँसत जिनिगी के ओकरा पारिवारिकता से बिलगा दीहल कहाँ तक उचित बा? ओह स्थिति में ई चिन्तन धारा अवरू बहत चलि जातिया काहें कि ई पुष्प योनि हमरा जीवन में जतना गहराई, आत्मीयता आ विविधता से आपन स्थान बनवले बिआ ओतना कवनो अवरू उपादान उपमान के स्थिति महत्वपूर्ण नइखे। बुझाता कि झोंप के झोंप भाव आ स्थितियन के रूप आँखि में लहरा जाता काहें कि जिजीविषा के आ समर्पण के जइसन ललक आ सम्पूर्णता एजू बा ओइसन कतो अवरू नइखे लउकत। जीवन अनेक रूप में हिलोर जाता। स्वार्थ जइसे एजू वस्त्रहीन होइ के लउक जाता। जवना के समय निअरा गइल बा ऊ अपने चुपचाप निःशब्द हाथ में आ जाला बाकिर जवना के जिनिगी में अवहिंए विकास आइल ओकरा के छूईं त तुरला के प्रयास पर ऊ 'चट्' बोलेला। सोचतानी कि अतना कोमल शांत ई फूल.... बाकिर असमय टुटला पर ओकरा क्षोभ भइल का! खिलला पर जवन गुलाब कामदेव के शिशु बसंत के अपने चटकारी देके खेलावता, जागरण के संदेश देता; हँसि के सुगंध में वातावरण के महका देता बाकिर तुरला पर ऊहो अपना अधिकार खातिर जागता, भलहीं ओकर प्रतिरोधक क्षमता कतनो कम होखो। एही से कादो भगवान गुलाब के संगे काँट के संयोग बना दिहले। कतना सुन्दर कोमल गंधमय गुलाब आ कइसन भाला नियर काँट! ना रूप सराहे जोग ना साथ सहे जोग। बाकिर सुरक्षा ओकरे से मिली अइसन कुछ विधाता के विधान बा। 'दीने दई गुलाब की इन डारन वे फूल' के व्यथा सभे अनुभव करेला बाकिर 'समरथ के नहिं दोष गोसाईं' अइसहीं नइखे लिखा गइल। तनी अखर एहू से जाऽता कि ई ओकर स्थिति बाऽ जे अपने में डूबल बा, मगन बा। हवा के हर झोंका से झूमता, ओस के मोती नियर सहेजता, राति के लोर अपना पँखुरी पर आड़ि लेता। अनगुताह होते सुरूज के अर्घ्य नियर समर्पित कऽ देता, ओकर किरिन के कुल्ही रंग से ओह एगो ओस कण के सजा देता जइसे राति के भरोसा देत होखो कि तहार अंजोर के लालसा के हम पूजा रूप में प्रिय तक पहुँचा देले बानी। अइसन भावधनी गुलाब के रूप में सम्हारे खातिर, अवांछित तत्वन से बचावे खातिर जतना कठोरता आ प्रखरता के आवश्यकता बा ओकरा के ओह विधाता ले अधिक के जानी? फूल के जिनिगी कतना? मात्र, एक दिन के पूर्ण विकास, कुछु घण्टा के भरपूर साँस.... ओकरा बाद जइसे जीवन के अर्थ जोहे के व्याकुलता, बुझाता जइसे डाढ़ि पर भार बढ़ि गइल। राति तक हवा के एगो लहर भा अतनो ना आ एक ब एक पंखुरी छितरा जातिया; धूरि में मिल जातिया। का जानी ऊ ओही पौधा के जड़ में समा के खाद बनि जाई कि कऽतो अवरू उधिया के केहू के गोड़ तर रउँदा जाई कि कवनो मंदिर के दरवाजा तक जाके थथम जाई, कि प्रभु के चरण पर न्योछावर हो जाई? एक ही फूल के छितरा के गिर गइला पर हर पँखुरी के आपन अलगा नियति बनि जाले, ओकरा पर आपन बस नइखे। ई गुलाब कवनो वसीयत ना कइ पावे कि हमरा के कवनो खेत में डालल जाउ, कि गुलाब जल बनाइ के आरोग्यता के आधार बनावल जाउ कि गुलबन्द बनाई के आस्वाद के नया रस दिहल जाउ, आ कि कवनो नदी में प्रवाहित कऽकइके सागर तक पहुँचे के सुविधा बना दीहल जाउ। अतना कुछु सोचे आ करे के ओकर आपन सामर्थ्य नइखे। ई कुल्ही जतना परिणति हो सकेले ई समर्थ आ विचारशील मानव जाति के उद्योग हऽ। काहें कि कर्मयोनि त ईहे हऽ अवरू योनि त भोग योनि हऽ। पूर्णतः पराश्रित एही से जइसे फूल आपन जीवन सूत्र कमो बेसी मानव के हाथे सउँप देले बा। ओइसे एह कुल वितर्कन से बाँचे के एगो अवरू उपाय बा कि निर्यात पर भार डाल के निश्चिंत हो जाइल जाउ एह स्वीकृति के संगे कि मुअला के बाद भस्म भइला पर के स्वर्ग नरक देखले बा? जबले जीअऽ सुख से जीअऽ, बस अतने। बाकिर का ई सम्भव बा? ऊहो फूल के संदर्भ में। जवन कतो से हमरो जीवन के प्रतीकित करऽता! काहें कि जवन भाषा फूल साहित्य में बोलि गइल ओमे प्रारब्ध, क्रियमाण आ संचित कुल्ही के कवनो ना कवनो रूप समाहित बा। ढेर दूर ले गइला के कवनो काम नइखे जदि कबीर से तनिकी भर बतकही हो जाउ त जइसे अंतर्दृष्टि जागि जा तिया। जीवन के संबंधन के, स्वार्थ के अइसन यथार्थ आ कटु अनुभूति कि ओने से मुँह मोड़ि के गइल सम्भव नइखे–

"माली आवत देखि के कलियन करी पुकार।
फूली–फूली चुनि लई काल्हि हमारी बार।।"

जीवन दाता के हाथ से पारिवारिक विच्छेद के अइसन चेष्टा, विकास के अइसन परिणति, स्वार्थ आ

उपयोग के बेदी पर अपने कृति के व्यापार–प्रयोग! ई कइसन संयोग बा? रचयिता के अतना बड़ अधिकार आ कृति के अइसन नियति विवशता! एले बढ़ि के सच्चाई का होई! कली के पुकार चेतावनी अइसन स्वर बनि के उभरता जवन विकास के संगे विनाश के भाषा के मूर्तित कऽ देता, बिछोह के आगम जना देता। हर विकास जीवन के अवधि सीमा घटावल जाता। माली के आहट मृत्यु आ आतंक के पहिचान बनि जाउ त स्नेह के संवेदना आ जनकत्व के वात्सल्य संकुचित होके निर्ममता के चित्र बनि जाई। मन कसमसाए लागता। हर सुन्दरता आ सुगंध के काहें कबीर अइसन रूप दे देतारन। कहीं वानस्पतिक विवशता त नइखे बोल गइल! नाहीं त दशरथ त राम के बिछोह में आपन प्राण दे दिहलन् ओइसे कबीर चहितन त ऊहो कहि देले रहितन कि–

'मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें अनेक।।'

तब बुला माली के प्रति कृतज्ञता–भाव उपजित। माली जीवन साध्यता के साधन, माध्यम बनि जाइत। स्वैच्छिक जीवन दान के संतोष आ आनन्द के मूर्त्तन के आधार बनित। फूल ओकरा हाथे आपन जीवन–डोरी, आकांक्षा के अपेक्षा सौंपि के निश्चिंतता के सुख पाइत एह भरोसा के संगे कि राष्ट्र–भक्तन के चरन छुवला के अवसर मिली भा क्षण भर खातिर उनुका गोड़ के सुख देबे के सुलभता होई। एले बढ़ि के ओह स्वतंत्रता संघर्ष के युग में अवरू कवनो सुख के कामना केहू में रहबो ना कइल। फूल कइसे एसे विरत हो सकत रहे। ओकरा दृष्टि में देवांगना के शृंगार, देवता के मस्तक के शोभा के सौभाग्य प्रेमी के उरमाला बनल भा सम्राट के अर्थी पर चढ़ल कवनो स्थिति सुअवसर आ तृप्ति के साधन ना रहल। जइसे पूरा देश के वातावरण एह फूल के अभिलाषा से आंदोलित हो गइल रहे, नाहीं त उर्मिला अपना सखी से काहें कहिती कि– "छोड़–छोड़ फूल मत तोड़ आली, देख तेरा हाथ लगते ही ये कैसा कुम्हलाए हैं।"

अइसन फसल हर ओह नारी के भीतर भइल होई जे आपन पति पर न्यौछावर कऽ देले होई बाकिर संतान ना रहल होई जवना के राष्ट्र हित खातिर बलिदान कइ के ओकर करेजा मातृ गौरव से फूलि उठित। अपना आत्मज के दान सृष्टि के विकास में युग के निर्माण में सहयोग के एगो सहज अभिव्यक्ति हऽ। चउदह बरिस तक कइसन कचोट उर्मिला के मन में भइल होई जहाँ हर साँस पर मर्यादा के पहरा लागल होई। ई फूल उनुका कसक के व्यक्त करे के साधन बनि गइल। फूल के प्रति अइसन भाविक विभिन्नता जवन कबीर के आ आधुनिक कवियन के बीच में झाँकतिया ई अपना अपना युग के प्रतिनिधित्व करे में सहज समर्थ भइल बा।

फूल अइसन भावात्मक विविधता के माध्यम प्रकृति के अवरू कवनो उपादान बनल होई हमरा नइखे बुझात। जीवन के प्रारम्भ से अंत तक; पूजा से शवदाह तक जतना क्षण बा, कार्य–व्यापार बा सुख–दुःख से समन्वित ई फूल जइसे हर पल के साक्षी बनल बा। 'पृथ्वीत्व' के जइसन विकास आ प्रकाशन एह फूल में बा ओइसन कतो नइखे। यदि नारी सृष्टि के सुन्दरता निमित्त हऽ, त ओकरा सौंदर्य के विभिन्न रूपता के अविकल पाण्डुलिपि बा ई फूल। प्राकृतिक सौन्दर्य के अनुपम चितेरा कालिदास के त समग्र साहित्य एह दृष्टि से दर्शनीय बा, कतना रूप! कतना भाव! उनुकर पार्वती कऽतो "पर्याप्तपुष्प स्तबकावनम्रा संचारिणी पल्लविनी लता" नियर पूर्ण तरूणाई के शोभा के भार से नवल बाड़ी त कतो सुगंध सुवर्ण कमल नियर लउकतारी जेकरा साँस के गंध के टोहत भँवरा मँड़राए लागता। सीता के प्रस्फुटित आंगिक सौंदर्य खातिर 'पुष्पस्तबल' के संकेत करके 'रघुवंशम्' में कवि राम के विरह व्यथित रूप के लोर से अइसन सींचि देता कि लक्ष्मण के हृदय के धैर्य छूटे लागता। कालिदास "अलूनं पुष्पं" नियर शकुन्तला के कौमार्य के प्रमाण पत्र फूले से देले बाड़न आ उनुका वर्ण के साम्य केतकी गर्भपात्र के पाण्डुता से देके कोमलता आ नसृणता के चाक्षुष बना दिहलन। कदाचिते कवनो कवि होई जे फूल के रूप का भाव चित्रण के आधार ना बनवले होई। गोस्वामी तुलसीदास कंजकली रूप में सीता के सौंदर्य के सम्पूर्ण प्रतिमान के मर्यादित संकेत करऽतारन। सीता के मृग नियर सहज दृष्टि जहाँ–जहाँ पड़तिया, श्वेत कमलन के पंक्ति बरिस जातिया। भावशुचिता का दृष्टि के निर्मलता के अइसन समायोजन जल्दी ना भेंटाला।

अब ई ना माने के चाहीं कि खाली नारिये के सौंदर्य पुष्प से उद्घाटित बा बलुक पुरुषो के सौंदर्य 'फूल' के आश्रय लेले बा। जइसे राम, लक्ष्मण, कृष्ण जइसन शौर्यशाली लोगन के लाल अधर खातिर बन्धूक सरसतम उपमान बनल बा। राम–कृष्ण विष्णु के

शारीरिक शोभा 'नीलकमल' से सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में अभिव्यंजित बा। तुलसी के अवरू संतोष ना भइल तऽ राम के अंग–प्रत्यंग खातिर नव कंज, कमल, नीरज, अरविन्द का जानी कतना बेर मूर्ताधार के रूप में ग्रहण कइलन। अइसहीं कालिदास के काव्य में कमल कतना रूप में आइ के वातावरण निर्मिति में सहायक बनल बा ई शोध के विषय बा। श्रीराम के दर्शन करत स्त्रियन के नेत्र कमल पँखुरी के वन्दनवार बनल बा तऽ इन्द्र के हजारन नेत्र के सक्रियता हिलत कमलवन के अद्भुत सौंदर्य रचि गइल बा। अइसहीं कौशल्या के लगे सूतल बालक राघव अइसन बुझा तारन जइसे गंगा जी के तीर पर श्वेत सैकत पर नीलकमल सुशोभित होखो। राधा के लोर में डूबल आँखि के हरिऔध पानी में बूड़ल कमल दल से रेखांकित करऽतारन। अइसन का जानी कऽतना रूप चित्र खाली कमल संदर्भित संस्कृति हिन्दी साहित्य में से दीहल जा सकेला। बाकिर का कहीं कबीर के कि ऊ कमलिनी के अइसन आत्मा के प्रतीक रूप में लिहलन जहाँ खिन्नता का उदासी के डेरा रहल। जइसे उनुकर जिनिगी आत्ममंथन के अइसन प्रक्रिया रहल जहाँ खाली प्रश्न रहल। मुरझाइल कमलिनी जइसे भौतिकता के प्रति आकर्षण के ताप से पीड़ित भाव के समानान्तर खड़ा हो गइल। अंतर्वाह्य जीवन में असंतुलन के सांकेतिक भाषा एह फूल से समझा दीहल कबीरे के क्षमता में रहल। "ना तल तपत ना ऊपर आग। तोर हेतु कहु कासनि लाग?" जइसे आत्मावलोकन के निर्देश दे दिहलस आ निदान अवरू स्पष्ट बनि के उभरल कि "कहैं कबीर जे उदित समान, ते नहिं मुए हमारी जान।" एले ढेर समागम आ सहागम के भाषिक अभिव्यक्ति सम्भव नइखे। बस तनी मन में एगो टीस ईहे होऽता कि तनी रूप आ सुगंधियो पर संत के आँखि ठहरित त का जानी कवन मौलिक दृश्य उभरल रहित। बाकिर लहरतारा के तीर पर साँस लेबे वाला कबीर जइसे प्रकृति के सौंदर्य के ओर से बुला उदासीने रहि गइलन।

साँच कहीं त इ फूल जइसे मानव समाज के साँस–साँस में रचल–बसल बा। कवन अइसन भाव होई? संकोच आ अविकास खातिर कली त मादकता खातिर "मधु–मुकुल नवल रस गागरी" बनल बा। प्रसन्नता आ हँसी खातिर खिलल प्रस्फुटित पुष्प त दुःख खातिर मुरझाइल फूल, धोवल मुँह खातिर तुषारित फूल तऽ वेदना से खिन्न मुँह के रूप खातिर बजाहत फूले के आधार लिआला। प्रेम के रोमांच, कदम्ब के फूल से व्यंजित होला त काम पीड़ा "मुझे फूल मत मारो" से तर्जना के आधार पावेले। विरह के दाहकता में किंशुक–कचनार आ अनार के लाल–लाल फूल जइसे डाढ़ि पर डोलत अंगार बनि जाता आखिर बन–बन में बनवारी के जोहत गोपी कहाँ जा सँ? कइसे आपन प्राण बचाव सँ? एह फूलन के चरित्र कहाँ तक बखानल जाउ! रतिक्रीड़ा में बेला आ चमेली के फूलन के सेज पर आवते शीतलता आ सुगंधि के जवन हिलोर उठेले ओसे पूरा संसार चाँदनी के अमृत में नहाइल लउके लागेला। एकर लोक जीवन में जइसन महत्व आ प्रभाव बा ऊ अद्भुत बा। लोक दृष्टि कहेले कि 'बेला फूले आधिराति चमेली भिनुसारे' आ राति से लेके भिनुसार तक के पूरा काल खण्ड रूप–रस–सुगंध से भरल अन्हार में प्रकाश के व्यवस्था के जइसे गतिमान रचना बोध बनि जाले। एही से एकात्म अनुभूति के ब्रह्मानन्द सहोदर आनन्द से व्याख्यायित कइल जाला। लोक नायिका के अभिलाषा फूल बनला खातिर, प्रिय संस्पर्श खातिर कतना आतुर बिआ देखे जोग बा कि "जो मैं होती राजा बेला चमेलिया, महक रहती राजा तोरे बंगले पर।" अपना अस्तित्व, समर्पण आ साँस के सुरभि के उपस्थिति के एले मादक व्यंजना का हो सकेले? ईहे मादकता कबीर के 'मैं रनिरासी जे निधि पाई' में रूपायित भइल बा।

चेतना के चिति जीव के क्रियात्मक भाषा हऽ, ऊहे फूल के विकास के कारणो हऽ। आत्मा के ई पुष्पात्मक भावारोप जीवन के प्रकृति के उद्घाटित कऽ देता ऊ जइसे दर्शन के सरलतम भाषा बा। डा0 रामकुमार वर्मा पुष्प के विकास देखि के जीवन के सार स्पष्ट कइ दिहलन–

"धूल हाय बनने को ही खिलता है फूल अनूप।
यह विकास है मुरझा जाने ही का पहला रूप।।"

एही संदर्भ में आश्चर्य होता प्रसाद के अदम्य जीवनी शक्ति पर जे प्रकृति के नित नवीन शोभा के विलास खातिर पुष्प के नवोन्मेषशाली जीवन रूप के कामना कइले बाड़े। जीवन के निरंतरता के साक्षी रूप में फूल के जीवन ले सार्थक उपमान ऊहो ना जोहि पवलन। जीर्ण शरीर के त्याग के उत्सुकता आ परमसत्ता में एकलयता के आकांक्षा प्रसाद के अभिव्यक्ति धन भाषा के चमत्कार हऽ। हुकुर–हुकुर कइ के जिअला ले मृत्यु के अभिनन्दन करत ध्रुव परिणति के वरणेच्छा

प्रशंसनीय हो जाले। एही संदर्भ में फूल के भाव ओकरे जबानी जनला में एगो विचित्र अनुभव बा— "मैं सुमन हूँ"

कहत फूल सभले पहिले त अपना मन के सरलता—निष्कपटता के आत्म संस्तुति करता। बिना मन के 'सु' से जोरले जीवन में समत्व भाव के अभिगमन नइखे। सुमन एही से जइसे साधक के सोझा अपना के खोलि के राखि देता कि जाड़ा में मारूत के मार, गर्मी में सूर्य के ताप, बरसात में बादल से झरल बून्द के आघात— अतने ना रातिदिन काँट के संगे जिनिगी बितावल; हँसतो—चुभे, करवटलो गड़े तऽबो प्रसन्न रहल— ईहे हमार साधना बा— "शूल का दिन रात मेरा साथ किन्तु प्रसन्न मन हूँ।" जदि पराते सूर्य के सोना नियर अँजोर के देखि के मन के हुलास ना रोकि पवला के कारण खिल जानी त राति में अन्हार से बिना डेराइल मुस्कात रहीले, अपना प्रेम के सुबासित पराग समत्तर बिना भेदभाव के बिखेरत रहीले। जे तूरेला ओकरो सिंगार करीले ओकरा गर के हार बनि जाइले, जेसे ओकर भाव सद्भाव बनि जाउ। चाहे केहू राह में बिछा देउ तबो कवनो दुःख ना, देवता पर चढ़ावो त अगराइल कइसन ई त आपन जीव धर्म हऽ। सुगंध बाँटल हमार कर्त्तव्य हऽ चाहे ऊ शव के अर्थ में होखो। धर्म पर्यन्त में मानापमान के कवनो महतव नइखे। जीवन हमरा खातिर क्रीड़ा क्षेत्र हऽ। जहाँ आवश्यकता भइल अपना के समर्पित कऽ देनी। अइसन समग्र जीवन दृष्टि अवरू कवनो उपमान में कहाँ लउकता? प्रकृति के अपूर्व वरदान बा ई फूल।

बिना बोलले फूल से कतना भावन के प्रतीकन हो जाला एकरो तनी चर्चा हो जाए के चाहीं जइसे—पुष्प वर्षा से अभिनन्दन स्वागत, समर्पण से प्रेम, बिछवला से मादकता, मरला से प्रेमोच्छ्वास (फूल गेनवा न मार) के भाव प्रकट होला। ई फूल पौराणिक से आधुनिक काल तक अनेक कथा प्रसंग के आधार बनल बा। चित्रकूट के एकांत में मर्यादा पुषोत्तम के प्रेम के सुगंध पहुँचावे वाला ई पुष्पाभूषणे रहल जवना से श्रृंगारित सीता के अपना लीला में सहचरी बना के श्रीराम छाया सीता के आह्वान कइलन। अपना प्रियतमा के छाँहो परपुरुष के स्पर्श से दूषित ना होखो एकर पृष्ठभूमि तेयार कइ लिहलन। पुष्प पहिरा के भगवान राम, सुग्रीव आ बालि में भेदे ना कइलन अपना संरक्षण के संकेतो भेजि दिहलन। अइसहीं बालि के शांति से निस्पृह भाव से देह त्याग के मन स्थिति के हाथी के गर से खिसकल माला से गोस्वामी जी व्यंजित कइके पुष्पहार के सर्वव्यापकता, सर्वभावाभिव्यक्ति क्षमता के प्रतिपादन कऽ दिहनी। एह फूल के चर्चा के संगे रामकथा के एकाध गो अवरू मार्मिक प्रसंग मन परि जाता। राघवेन्द्र के आजी इन्दुमती के स्वर्गवास उनुका ऊपर पुष्पहार के गिरला से भइल रहे, जेकरा वियोग में उनुकर बाबा अज के जीअल कठिन हो गइल आ अंत में ऊ दस बरिस के बेटा दशरथ के राज—पाठ सँउपि के दोआब में आई के बुला जल समाधि ले लिहलन। फूल अइसन प्राणघातक हो जाई, पीढ़ी दर पीढ़ी आपन प्रभाव छोड़ि जाई ई बात एक दृष्टि में भलहीं ना बुझाउ बाकिर संस्कार आ जातीय प्रभाव के त आधनिको विज्ञान अस्वीकार नइखे कऽ पावत। बुझाता अइसने संक्रमण के प्रभाव रहल कि देवी अर्चना खातिर भगवान राम आपन नेत्रदान करे के तेयार हो गइलन। निराला जी कृतिवास से आधार लेके एकर मार्मिक दृश्य देले बानी।

कतने प्रसंग एह फूल के कृशतन में गंध रस में बोथाइल बा। देखल जाउ त हमरा देश आ संस्कृति के प्राणतत्व फूल हऽ। बुझाता कि फूल के बिना हमार अस्तित्व अधूरा बा। प्रत्यय काल में बाल मुकुन्द कमल—दल पर अँगूठा—चूसत क्रीड़ा करेलन। त्रिदेव में भगवान विष्णु के हाथ में कमल, स्वयं पद्मनाभ, पत्नी लक्ष्मी कमलासना; ब्रह्मा कमलासन पर पद्मयोनिसम्भव, सरस्वती श्वेत पद्म पर विराजमान। जइसे कमल आधारभूमि बा सृष्टि के उद्भव—विकास, अभ्युदय आ वैचारिक प्रसार के भगवान विष्णु के पुत्र कामदेव के पाँचो बाण पुष्पबाण हऽ— अरविन्द, मल्लिका, आम्रमंजरी, अशोक, नीलोत्पल, जेकर प्रभाव होला द्रवण, शोषण, तापन, मोहन आ उन्मादन रूप में। पुष्पीय प्रभाव के अइसन व्याख्या अन्यत्र ना लउकी। हमनी के धार्मिक कृत्यन के कल्पना पुष्प बिना सम्भव नइखे। ईश्वरीय अर्चना में एकर कतना सहयोग बा, देखे लायक बा— "पुष्पैर्नामाविर्धदिव्यैः कुमुदस्य चम्पकै। पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पानि गृह्यताम्।।" सुगंधि दान ईश्वर के प्रति आत्मा के प्रतिवेदन हऽ। सावन में भगवान शिव के एक सौ एक से एक हजार एक तक नील श्वेत कमल चढ़ावल जाला। शिवरात्रि पर मदार के फूल चढ़ावल शिव प्रसाद के महत्वपूर्ण अंश हऽ। अइसहीं गुड़हल—जपा—कलहार देवी के चम्पा विष्णु के चढ़ावे के यत्न होला। ईहे ना जदि अपना शरीर के "यत्पिंडे तत्ब्रह्माण्डे" के प्रतिरूप मानि लिहल जाउ त एह फूल के विभिन्न रूपन के जतना

विकास एह पिंड में बा रूप–भाव आ प्रभाव रूप में ऊ आपन सानी नइखे राखत आ यौगिक साधना के पूर्णत्व के भाष्य बनि जाता। एकरा माध्यम से सूक्ष्म जगत के तात्त्विक स्वरूप चिन्तन के अनन्य प्रकाशन भइल बा। द्विदलीय कमल से सहस्रदल कमल तक के अवधारण के समाहिति अणु से महत के तादात्म्य के अभिव्यक्ति एमे बा। आज्ञा चक्र में द्विदलीय, मूलाधार में चार दलीय, स्वाधिष्ठान में षट्दलीय मणिपूर में दस दलीय, अनाहत में बारह दलीय, विशुद्ध में सोलह दलीय आ शून्य शिखर पर सहस्रार के परिकल्पना यौगिक साधना के चरमोत्कर्ष हऽ। एह विद्या खातिर आजू पूरा विश्व भारत के प्रति ऋणी आ विस्मय विमुग्ध बा। का जाने काहें हमरो मन बेर–बेर एह कमल के फूल पर बेलमि जाता। एकर कारण ईहो हो सकऽता कि जतना महत्व एह फूल के दीहल बा ओमे अवरू कुल्ही फूल समा जइहन। चाहे ईहो हो सकेला कि एकरा में एके संगे अनेक गुण बा। रंग के विविधता, जल के रसमयता, सूर्य से मैत्री, पृथ्वी के महक आ मिठास, संग ही भँवरन के ढेर आसक्ति बा जवना के संगे अपनो मन डोले आ गुँजारे लागता। ई भँवरो अपना ढंग के अलगे प्रेमी हऽ। विशेषतः कमल के संदर्भ में। चम्पा के लगे ऊ अक्सर नाहिए जाला ओकरा में तेज गंधो बा आ रंगो मोतिया बा। एसे बुझाता कि ई खाली रूपे–गंध के लोभी ना हऽ बलुक "अतिप्रियता" के भावो से दूर रहे वाला हऽ। चम्पा के तेज गंध एकरा ना भावे। कमल के संतुलित रूप–गँध ओकरा के खींचेला। एह वृत्ति के संगे बंधनों मधुर रहेला तबे नू राति में कमल के बन्द भइलो पर ओकरा मन में सुरक्षा के प्रति संदेह ना रहेला। अपना देश में एही कुल भाव के चलते कमल के राष्ट्रीय फूल मानि लिहल गइल। एकरो ले पहिले कमल के एगो अवरू महत्वपूर्ण भूमिका रहल। अंग्रेजी शासन काल में "कमल आ रोटी" के स्वतंत्रता संग्राम के मानक संकेत चिह्न बनावल गइल, जवना से पूरा देशवासी संचालित होके आत्मबलिदानी बनि गइल।

मन कहाँ से कहाँ दउर जाता। फूल पर से चलत राजनीति के कीटाणु कहाँ से साँस के संगे पहुँच गइल। बाकिर एक ही समय समाज में जीए वाला अदिमी एह विचार आ स्थितियन से कइसे भागि सकेला। आजु जगह जगह कमल के फूल लउकता। कपड़ा पर, कागज पर, दिवाल पर, दूरदर्शन पर। एह फूल के संगे हरिअरे ना जोगियो रंग बा। त्यागमय जीवन राष्ट्रीय समृद्धि शस्य श्यामला धरती के संगे स्वार्थ से निःसंगता के प्रतीक ई चिह्न सांस्कृतिक गौरव के प्रतिध्वनित करऽता। जवन होखो अपना देश में ई पुष्पराज अनादिकाल से चलता। तबे नू एकरा से मोह नइखे छूटत? एगो फूल हाथ में लेके, देखा के अदिमी कतना कुछ बिना बोलले बोलि जाता बिना छुअले छू देता– "हाथों से छीनकर किताब। होठों पर रख दिया गुलाब" रस से सराबोर ई पँखुरी संयोग के मुद्रिका हऽ। नेहरू के गुलाब–रंगमय जीवन–खिलल मन–गंधमय वृत्ति के पर्याय बनि के उभरल। अतना कुछ ले के ई फूल जीअता, झूमता, तुरलो पर खिलखिलाता त बुझाता कि एकरा के छोड़ि के चलल आ जीअल दूनू बेमानी बा। फूलल सरसो हरदी लागल धरती श्वेत वस्त्र धारिणी विरागिनी वनवासी विधवा नियर अपना सुंगधि से जंगल के कोना–कोना में प्रिय के जोहत व्याकुल घूमतिया; अइसन राग आ विराग, उत्सव आ उजाड़ के सैकड़न दृश्य के रचे वाला एह फूल से जइसे हमार पूरा राष्ट्रीय जीवन संस्कार, संस्कृति, परम्परा, रीति कुल्ही बन्हाइल बा। एकरा पुकार से, सोहाग से हम कइसे विलग हो सकेनी।

तऽ मन फेरू व्याकुल हो जाता कि अतना बुझलो पर फूल के तूरे के स्थिति काहें बनता, का एह नीयत के बदलल ना जा सके? काहें ना ओकरा के डाढ़िए पर हँसे दिहल जाउ। पूजा के नाम पर एकरा जीवन से खेलवाड़ काहें? जापान के साम्राज्ञी कोमा त कहली कि "हे महाबुद्ध! तहरा पर चढ़ावे खातिर हम जीवन–रस से भरल कली के जवन अबहीं संसार के भर आँखि देखलहूँ नइखे, मुग्धाबिआ ओकरा के डाढ़ि से बिलगावे में समर्थ नइखीं काहें कि ईहो एगो हिंसा हऽ जवन तहरा नियर अहिंसक के ना भाई। एसे बिना तूरल, बिना छुअल हम पूरा रूप में ओह कुल्ही पुष्पन के ओकरा स्थाने से समर्पित करऽ तानी।" हमरा बुझाता प्रकृति प्रेम, जीवन प्रेम आ पर्यावरण सुरक्षा के ई अद्भुत उदाहरण बा जवना से पूजा भाव के अँजोर चारो ओर पसर जाता।

अपना हृदय के "बिधवा" के "हार" बने वाला ई फूल त्याग के जवन संवाद बोलि जाता ओकरा खातिर ईहे कहे के मन होता कि– "विश्व भर सौरभ से भर जाए, सुमन के खेलो सुन्दर खेल।" सौमनस्य ले बढ़ि के शांति आ विकास के दोसर आधार ना हो सकेला। एवमस्तु!

– 142, बाघम्बरी गृहयोजना, भारद्वाजपुरम् प्रयाग–211006 ("पाती", अंक–28, 1999)

गूलर के फूल

✍ राजेश्वरी शान्डिल्य

एक दिन हम अपना बेटी, नाती, नातिन के संगे पिकनिक पर गइल रहलीं त ओहींजा हमनी के एगो बड़ा भारी गूलर के फेड़ के नीचे बइठ के खइलीं–पियलीं जा आ घंटन गपशप होत रहे। हमनी के अपना गपशप में मशगूल रहलीं जा नातिन–नाती पल्लवी, सिद्धार्थ, झूला खेल–कूद आ भाग दउड़ में मस्त रहलन। हमनी के गपशप के विषय कवनो गम्भीर ना रहे बाकिर तब्बो हमनी के विचार–विमर्स अपना पुरखन से लेके साहित्य, राजनीति आ अपना दुःख–सुख ले खिंचा गइल। ई केतना अजीब बात बा कि हमनी के पिकनिक मनावे घर छोड़के एह नीयत से गइलीं जा कि घंटा–दू घंटा घर से बाहर रहल जाई त घरबारी काम से फुरसत मिली आ हमनी के दिलो बहली बाकिर घरवां के भूत ओहूजां पीछा ना छोड़लस आ पिकनिक स्पाटो पर हमनी के चूल्हे–चक्की, घरे–दुआर आ अपना सुख–दुःख में घेराइल रहलीं जा। खुसी एही बात के रहे कि दूनो लइका दीन–दुनियां के सुख–दुःख से दूर अपना बालपन के मस्ती के मउज लेबे में मसगूल रहलें। बातचीत के सिलसिला जब तनि माधिमाइल त हमरा बेटी के नजर ओह फेड़ पर गइल जवना के नीचे हमनी के बइठल रहलीं जा। ऊ गूलर के एगो बहुत बड़ फेड़ रहे जवना के छाया करीब सौ डेढ़ सौ फीट क व्यास में रहल होई। फेड़ में छोट–छोट गोल–गोल फल लागल रहे आ ओह फल के सुग्गा, कौआ खा–खा के भुइयां गिरावत रहलं। हमार बेटी कहलस कि अम्मा गुलरो के फेड़ में केतना रहस्य छिपल बा कि आजले केहू एकर फूल के सुग्गा, कौआ खा–खा के भुइयां गिरावत रहलं। इ प्रकृति के केतना बड़ करिश्मा बा कि कवनो फेड़ में फल आवे के पहिले फूल जरूर लागेला बाकिर गूलर एकर अपवाद बा। हम कहलीं ना बेटी गुलरो में फूल जरूर होत होई। कांहें की पराग सिंचन फूले से होला आ बे पराग सिंचन के फूल में फल के बीजारोपण ना होई। हमनी के विचार–विमर्श के दिसा बदल गइल गूलर के फूल के तुलना भगवान से करे लगली जा कांहे कि भगवान के अस्तित्व बहुत लोग मानेला आ जे ना मानेला ऊहो कवनो स्वचालित भा अनायास शक्ति के संवेदना महसूस करेला। जे मानेला ऊहो आजले भगवान के दर्शन ना कइ पावल। हमनी के सोचे लगलीं जा कि जइसे गूलर के फूल एगो सच्चाई बा बाकी आजले ना लउकल आ ना त कबो लउकी, का ओइसहीं भगवानों के माया बा जवन हमेसा हमसे अदृश्य रही बाकिर ओकरा बिना एह संसार कऽ संचालन संभव नइखे।

गूलर के फूल गोल–मटोल कंचा मतिन होला। अंक एक से नौ तक लिखल जाला ओकरा आगे शून्य के विकास हमरे देश में भइल ह जवना के जोड़ के नौ के बाद दस आ ओकरा आगे अउरि बड़–बड़ अंक बनावल गइल बा। हमनी के गूलर के फूल शून्य के एगो प्रतीक लागल। सारा अंतरिक्ष, सारा ब्रह्मांड शून्य में बन्हल बा।

स्वामी विवेकानन्द सन् 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद के अवसर पर शून्ये पर तीन दिन ले भारतीय दर्शन के बारे में बतावत रहि गइलीं जेकर प्रभाव ई पड़ल कि विश्व में भारतीय दर्शन आ स्वामीजी के धाक जम गइल। शून्य के महिमा केतना बढ़ गइल ई हमनी कि गूलर के फल देखके आभास भइल। कांहे कि ऊ भगवान के सृष्टि के प्रतीक बा, भगवान के शक्ति के प्रतीक बा आ मनुष्य के कल्पना के प्रतीक बा।

एगो जमाना रहे जब ई धरती गूलर के फेड़न से भरल रहे। आज जवन हमार लौकिक धरम में बर आ पीपर के पूजा होत बा ऊ आजसे पांच–सात हजार बरिस पहिले गुलरे के पूजा से शुरू भइल। ई सोचके हमनी के अपना लघुतो पर बड़ा अफसोस भइल कि असभ्य आ बनइला कहे जाए वाला हमार पुरखा लोग के ज्ञान–चक्षु केतना पैना रहे कि ऊ लोग गूलर के फेड़, फूल आ फल में भगवान क दर्शन कइल। ओके भगवान के शक्ति के प्रतीक मानल तब्बे त पूजा शुरू कइल गइल आ एगो हमनी के बाड़ीं जा जे अपना ज्ञान–विज्ञान, सभ्यता के गरब से दबलो पर गूलर के फूल आ फल के रहस्य ना जान पवलीं जा आ ना त कवनो कोशिश कइलीं जा। एह विचार से हमनी में खिन्नता के भाव आइल आ हम अपना बेटी से कहलीं कि ठीक बा हम गूलर के फूल के बारे में जानकारी करे के कोशिश करब आ तोहरा के बताइब। एह लेख के ईहे उत्प्रेरणा शक्ति ह। अनेक बड़–बड़ विद्वान लोग तरह–तरह के फेड़न क बारे में साहित्यिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक आ आध्यात्मिक अध्ययन कइले बा आ ओकरा बारे में लिखलहूं बा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपना ज्ञान के गहराई, शैली के विविधता आ रोचकता के बारे में बेजोड़ बानी। आ ऊहां के अशोक, सिरीष, कुटज, देवदार, आम वगैरह कईगो फेड़न के बारे में बड़ा ज्ञानवर्द्धक आ रोचक लेख लिखले बानी। हमरा ईयाद बा कि एगो निबन्ध 'अशोक के फूल' हमरा इंटर के पाठ्यक्रम में सम्मिलित रहे। ओह घरी ना त एतना समझ रहे आ ना त एतना चाव रहे कि पढ़ के एह लेख के रस लिहल जाव काहें कि विद्यार्थी लोग त ओही पढ़ाई पर जोर देला जवन परीक्षा में संभावित बा आ बढ़िया अंक मिले। आज के नवका संदर्भ में हमके फेनु द्विवेदी जी के ई कुल लेख पढ़े के इच्छा जागल आ हम घर पहुँचके पढ़े में जुट गइलीं। द्विवेदी जी के लेखन के एगो अलगा महिमा बा एह लेख में बड़ाई कइल उचित नइखीं समझत बाकिर ई जरूर कहब कि जे द्विवेदी जी के निबन्धन के जेतनी बार पढ़ीं ओके ओतने बार नया–नया स्वाद शैली, नई भाषा आ नया विचारन के भण्डार मिलत जाई।

एगो जमाना रहे जब गूलर के फेड़ से हमार देस भरल रहे बाकिर आज त गूलर के फेड़ लउकते नइखे। गँवइयों में एक्के–दुक्के बा। पहिले सड़क पर आम, महुआ, इमली क संगे बर, पीपल आ गुलरो क फेड़ छांह खातिर लगावल जात रहल ह। अब ऊहो जमाना नइखे। अब त सफेदा, अशोक, सीसो अइसने दूसर–दूसर फेड़ लगवल जात बा जवन जल्दी होखे आ ओकरा से आमदनिओ बढ़े। एही के कहल जाला समय के परिवर्तन– "पुरुष बली नहीं होत है, समय होत बलवान"। जवन गूलर के फेड़ पूजल जाय ओही के गाँव निकाला भइल त बेचारा आपन ठाँव सड़क के किनारे खोज लिहलस अब ओके बनवास दे दिहल गइल। हमनी के केतना मूर्ख बानी जा कि ना त फेड़े पहचनलीं जा आ ना त भगवाने के आ ना ता भगवान के सृष्टियों के। हम एगो अंगरेज, एच. हटन के पुस्तक 'भारत की जाति प्रथा' के हिन्दी अनुवाद पढ़त रहलीं ओम्मा मिलल की हिन्दू लोग गूलर के फेड़ के ओइसन पवित्तर माने जइसन अब पीपल के मानल जात बा। हटन जी के राय बा कि भारत के आदिवासी जन जाति निग्रेटो जे सम्भवतः अफ्रीका से आइल रहे, आ एह देश के सबसे पुरान बासिन्दा रहे ऊ लोग गूलर के फेड़ के पूजा शुरू कइल आ ऊ परम्परा आज हमरा लौकिक धरम में आँवला, केला, तुलसी आदि के पूजा क रूप में जीयत बा। महाभारतकाल आवत आवत पीपर फेड़न में सर्वश्रेष्ठ हो गईल। कृष्णजी अपना के फेड़न में पीपर बतवले बानी पीपर में वासुदेव जी के बास मानल जाला। वनस्पति विज्ञानी लोग के धारणा से जेतना आक्सीजन पीपर से निकलेले ओतना कवनो दूसरा फेड़ से ना। पीपर के ई गुण महाभारतकालीन ऋषि लोग जान गइल रहे तब्बे त पीपर के कृष्न जी अपनवले बानी। नृशास्त्रियन के ई कहनाम बा कि एह लोगन में अब्बो जाति के शुद्धता खंडित नइखे भइल। जे0 एच0 हटन अपना ग्रन्थ में लिखले बानी कि गूलर के फेड़ के रस दूध मतिन सफेद आ पौष्टिक होला एही से अफ्रीका, इटली, न्यूगिनी आ भारत में एके उर्वरता से जोड़ल बा आ एह फेड़ के संबंध मृतात्मो से मानल गइल बा। हमरे धरम में ई विस्वास ह कि

ईश्वर आ जीवन में कवनो अंतर ना ह दूनो के निवास आत्मा में ह। कृष्ण जी गीता में बतवले बाड़ी कि आत्मा अमर ह खाली शरीर नाशवान ह। गूलर के फूल के जब मृतात्मा से जोड़ल गइल बा त ओहीमा ईहे दर्सन काम करत बा कि शरीर त नष्ट हो गइल बाकिर आत्मा परमात्मा से मिलके एक होके अदृश्य हो जाई। ई एगो केतना विचित्र आ गूढ़ दर्शन बा जवन गूलर जइसन उपेक्षित आ जंगली फेड़ हमनी के दे रहल बा। गूलर के फेड़ छोट ना होला, जहाँ रही तन के खड़ा रही। अपना आस–पास झाड़–झंखाड़ के पैदा होखे के अनुमति त देई बाकिर फेड़ कहाये वाले कवनो पउधा एकरे पास फटक ना सकें एकरा फल के आयुर्वेद में बड़ी महिमा गावल बा आ पेट खातिर ई रामबाण ह। आ एकरा फल के तरकारी आ चोखो बनेला। बाकिर एह फल के मुख्य उपयोग, सियार आ लोमड़ी जइसन जीवन–जन्तु करेला।

जब हम एह फेड़ के बारे में अउर जाने क कोसिस कइलीं त हमरा के एकर वानस्पतिक अध्ययन खातिर लखनऊ के वनस्पति उद्यान में जाके 'भारत की सम्पदा' पुस्तक के पांचवां खण्ड देखे क पड़ल जवना के सम्पादन जोगराज चढ्ढा जी कइले बाड़ी। एह फेड़ क संरचना, एकर वैज्ञानिक अध्ययन एगो बड़ा रोचक विषय बा। हम जानत बानी कि रउवां एह वैज्ञानिक अध्ययन से सरोकार नइखी राखल चाहत बाकिर हमके अपना बेटी के बतावे खातिर ई कुल करमकाण्ड कइल जरूरी रहे आ हम चाहत बानी कि रउओ के हम आपन एह संचित ज्ञान के एकाध बूंद रसपान करा देई जेसे कि रउओ हमरा अज्ञानरूपी ज्ञान के दबले मन से सही लोहा माने के तइयार हो जाईं। तब हमरो के तनि महसूस होई कि हमार नाँव भोजपुरी साहित्यकारन में आवे लागल। रउरा सभे हमरा के माफ करब कांहे कि हम राउर धियान विषय से हटाके एनी–ओनी भटकाके रउरा सभे के झटका देवे के कोसिस करत बानी जवन हमरा के ना करे के चाहीं। अब तनि मुख्य विषय पर आईं। वनस्पतिशास्त्र में 'फाइकस' नांव क एगो फेड़न क प्रजाति ह जवना में मुख्य रूप से रस वाले फेड़ हउअं। एह प्रजाति में कई प्रकार के झाड़ी, चढ़े वाली तलो पूरी दुनियां में पावल जाले बाकिर फाइकस के बहुलता ऊष्म कटिबन्धीय जलवायु में विशेष रूप से बा। दुनियां में फाइकस के करीब सौ गो किसिम पावल जात बा। जवना में 65 गो हमरा देस में बाड़ी स। एकर मुख्य प्रजाति में गूलर, बरगद, पीपर, रबर, आ अंजीर के नांव बा। फाइकस तेजी से बढ़े वाली प्रजाति ह आ एकर जड़ दूर–दूर तक फइले ले काहें कि एके अपना के स्थिर करे खातिर एगो सुदृढ़ आधार के जरूरत पड़ेले। फाइकस में जवन दूध पावल जाला ओके रबर क्षीर कहल जाला। एह प्रजाति में फाइकस कैरिस, अंजीर के फल बड़ा स्वादिष्ट आ गुणकारी ह। फाइकस जाति के फल अंदर से खोखला होला बाकिर ओकरी बाहरी आवरण आ नीचे क परत गूदादार होले आ फल के भीतरे सिरा पर अनेक सूक्ष्म छेद होले। ओहीमा पिटिका के समान नर आ मादा फूल के भ्रूण दिखाई देला। अब रउआं सभे हमार इसारा समझ गइल होईब कि गूलर के फलवे में ओकर फूल रहेला आ ओकरा अंदरे ओकर पराग सिंचनो होला। कांहे कि पराग सिंचन बिना त फल लगबे ना करी। गूलर के फेड़ के डाल में ओकर फल आ फूल दूनों संगही अवतरित होला बाकिर फूल पर आवरण चढ़ल रहेला एसे ऊ दिखाई ना देला। आ अनादि काल से गूलर के फूल एगो रहस्य बनल रहि गइल ह, एही से 'गूलर' के 'फूल' लोकभाषा के एगो कहावत हो गइल बा। फल विज्ञान के मोताबिक गूलर के फूल के प्रकृति आ ओकरा पराग सिंचन क्रिया के अनुसार ओके चार भागन में बांटल बा– 1. एकाकी फूल– स्त्री केसर जवन प्रायः बारहो महीना फरेला, 2. जंगली अंजीर– जवना में पुंकेसरी आ स्त्री केसरी दूनो प्रकार के फूल मिलेला बाकिर एकर वर्तिका छोट होले आ फलन क्रिया के उद्दीपन खातिर ब्लैटोफेग ग्रोसोटम द्वारा अंध निक्षेपन आ लारवा के विकास के प्रक्रिया आवश्यक होले, 3. आस्मिनी अंजीर– एह प्रजाति में फल के विकासखातिर फूल पूरी तरह जंगली अंजीर से परा परागन करेला, 4. सैन पेट्रो अंजीर– जवन एगो कुल्हिन के बीच फेड़ ह। वनस्पति सास्त्र में गूलर के नांव फाइकस ग्लोमेराटा बा। हमारा देस के अलग–अलग क्षेत्रन में गूलर के अलगा–अलगा नांव बा। एके डूमुर, जझू डुम्बर, उम्बर, मेड़ि, बोड्ड, पैदी, उदुम बाल, मल्ल डिमरी वगैरह अनेक नामन से पुकारल जाला। गूलर के पत्ता अंडाकार होला आ फल पकला पर अंदर से लाल रहेला जवना के व्यास ढाई से पांच सेन्टीमीटर तक होला। बिना पत्ती के डाली पर गुच्छा में फल फरेला। जवना क्षेत्र में बरखा जियादा होत बा ओहीजां पानी के निकासी भा नदी नाला के

किनारे जमीन में ई फेड़ बहुतायत से पावल जाला एकरा फरे के मउसम फागुन से लेके आषाढ़ तक होला। पकला पर फल के स्वाद आ गंध साइडर सेब से मिलेला। एकर फल सामान्यतः छोट–छोट रेशा के पैकट से भरल रहेला। एके सुखा के पिसानो बनावल जाला आ फल भूंज के जलपान में प्रयोग आवेला। गूलर के फल के वैज्ञानिक विश्लेषन कइला पर एम्मा निम्नलिखित तत्व पावल गइल बा– पानी क अंस 13.6, एल्बूमीनाइट 7.4, वसा 5.6, कार्बोहाइड्रेट 49. 00, रंजक पदार्थ 8.5, रेसा 17.9, राख 6.5, सिलिका .25 आ फास्फोरस 7.1। गूलर क पत्ती में नाइट्रोजन .915, फास्फोरस .163, चूना 5.7 पावल जाला। गूलर क लकड़ी सफेद आ मुलायम होले बाकी मजबूत ना होले। पानी के नीचे टिकाऊ जरूर होले। एकर लकड़ी के प्रयोग कुँआ क जाखन, खिलौना, हल, जुआठ, बैलगाड़ी क बकली बनावे क काम में आवेले। गूलर के छाल में 14 प्रतिसत टेनिन मिलेले जवना से घाव धोवल जाले आ अस्पताल में एकर दवा बनेलें। गूलर के पत्ती से आयुर्वेद में चूरन बनावल जाला जवन पित्तनासक ह। गूलर के फल खइला से भूख बढ़ेले। आ बात के रोग में कमी आवेले। हम केतना अनाड़ी बानी कि बिच्छी के मंतर नइखी जानत आ सांप के बिल में हाथ डाल दिहली। आज ले हमरा के विज्ञान के, क, ख, ग, ना आइल आ हम रउआं सभी के विज्ञान पढ़ावें लगलीं। घबराई मत रउआं नाहियो सीखब तबो दुनियां अइसहीं चली आ कुछ सीख लेइब त हमरे मतिन रउओं के गाहे–बे–गाहे रोब झाड़े में काम आई।

गूलर के दयनीय स्थिति से हमरा के कविवर रहीम जी के एगो दोहा याद आवत बा जवना के बुझात बा, उहाँ के बड़ा झुंझला के लिखले बानी–

वे रहीम अब बिरछ कहँ, जिनकर छाँह गंभीर
बागन बिच–बिच देखियत, सेहुड़ कुटज करीर।

हम रउआं सभे के पहिलहीं बता चुकल बानी कि गूलर जइसन काम के उपयोगी फेड़ के वनवास देके अब नवा–नवा फेंड़ लगावल जात बा। आ एही से अब फेड़न के छाँहो दुर्लभ हो रहल बा। जदि रहीम जी आज फेनु जनम लेती त उनका के ई देखके बड़ा उदासी होइत कि जवन दुख के दृस्य ऊहाँक चार सौ बरिस पहिले देखली ओकर अवरी विस्तार हो रहल बा। महापुरूषन के ईहे निसानी ह कि ऊ लोग भविष्यद्रस्टा होला। हम गूलर के फूल के एह ब्रह्मांड से मुकाबल कइली हं आ हमरा समझ से ऊ ब्रह्मांड के खाली प्रतीके नइखे बाकिर खुदे मिनी ब्रह्मांड बा। 'शून्य' क बारे में पहिले ही लिखलीं हँ। ईहो एगो अंक ह आ एकर स्थान कुल अंकन में पहिले मानल बा बाकिर एकर खास बात ई बा कि एकर स्वतंत्र प्रयोग ना होला। ई आपन चमत्कार एक से नौ तक के कवनो अंक के दाहिनी तरफ बइठके दिखा सकेला, बाई तरफ बइठी त हवा हो जाई। शून्य के कवनो निश्चित मूल्य ना ह। एक के बाद शून्य लिखाई त ऊ दस हो जाई, सौ क बाद सून्य लिखाई त हजार हो जाई आ एक लाख क बाद सून्य लिखाई त दस लाख हो जाई। सून्य शब्द क व्युत्पत्ति 'स्वि' श्वि. धातु में 'वत' प्रत्यय लगवला से होला आ 'स्वि' का अरथ फुलला–फइलला से होला। भारतीय ज्योतिष में सून्य खातिर पूर्णांक प्रयोग भइल बा। पूर्ण शब्द सून्य के चिन्ह पर सांकेतिक रूप से प्रकास डाले में समक्ष बा। सून्य के लिखाई गोलाकार आ बिन्दू दूनो तरह से होले। एकरा के श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव जी अपना पुस्तक 'उत्तर भार में अंको का विकास' में विस्तार से लिखले बानी। "सुबंधु कृत स्पप्नवासवदतता" में आकासीय पिण्ड यानी नक्षत्रन के संदर्भ में सून्य के एगो बिन्दू बतावल बा। भारतीय गणित में सून्य के बड़ी विवेचना भइल बा आ 12वीं सताब्दी के गणितज्ञ भास्कर द्वितीय लिखले बानी कि "जदि सून्य के अंक में जोड़ल जाव भा कवनो अंक के सून्य में जोड़ल जाव चाहे सून्य में कवनो रासि के घटा दीहल जाव त ऊ धन रही त ऋन हो जाई आ ऋन रही त धन हो जाई।" जथा– "खयोगे वियोगे धनर्ण तथैव च्युतं शून्य तस्यद्विपर्यासमेति।"

एही तरह से सून्य के कवनो अंक में जोड़ला से कवनो अंतर ना पड़ी बाकिर घटवला में अंतर पड़ जाला। ईहे सून्य के विसेष परिचायक ह। भास्कर जी आगे लिखले बानी कि "गुना कइला में जदि सून्य के कवनो राशि से गुना करी भा कवनो रासि के सून्य में भाग देईं त ओकर फल सून्य आई जबकि कवनो रासि के सून्य में भाग दिहल जाई त ओपर कवनो प्रभाव ना पड़ी। सून्य एगो अइसन अंक ह जवन कवनो अंक से ईहां तक कि अपनो से विभाजित ना होला ई हमेसा धनात्मक रहेला। गो कि एकर स्वतंत्र रूप से कवनो मान नइखे तब्बो गणित में ई विभाजक रेखा भा चिन्ह

के रूप में प्रयोग आवेला। सून्य के ऊपर के संख्या धनात्मक आ नीचे के ऋणात्मक होले। सून्य संख्या के आपन एगो समूह होला जवना के 'रिक्त समूह' के नाव दिहल बा। एकर सबसे बड़ विसेषता ह कि अपने आप में ई एकाकी ह आ एह समूह के केहू अउरी सदस्य नइखे।"

रउरो सभे कहब कि फेनू हमरा के उलझावे क कोसिस कइल जात बा कांहे कि कहाँ गूलर के फूल आ कहाँ अंक गणित, कहाँ पूर्ण आ ब्रह्मांड। हम रउआं सभे के भरमावत नइखीं हम एतने करत बानी कि चटनी–अचार मतिन राउर स्वाद बदलत रहे के चाहीं जेसे कि रउआं गूलर के फूल के विराटता नीके समझ लेईं। ई खाली एगो फूल ना ह, ना खाली एगो फले ह, ई विश्व के प्रतीक बा, ब्रह्मांड के उद्‌घाटक बा। रउआं एगो किस्सा त सुनलहीं होईब कि कुल देवतन के जमावड़ा क के जब विष्नु भगवान पूछे लगले कि हम ई तय कइल चाहत बानी कि एगो कवनो देवता अइसन निश्चित कइल जाव जेकर पूजा धरती के प्रानी लोग कुल्हि सुभ काम में पहिले करे। आ एकरे खातिर विष्नुजी निर्देश दिहलीं कि जे देवता पृथ्वी के चक्कर लगाके सबसे पहिले आ जाई, ओही के पूजा सबसे पहिले होई। कुल्हि देवता दउड़े के तइयारी करे लागल। केहू क पास गरून के सवारी रहे, केहू के पास बाघ रहे, केहू क पास हंस रहे, केहू के पास उल्लू आ अनेक देवतन के पास अउरी सवारी रहे। गणेश जी के पास मूस के सवारी रहे। ऊ त केहू से अंटबे ना करी। गणेश जी एगो युक्ति लगवलें। गणेस जी धरती पर एगो बड़ सून्य बनवलीं जवन एह ब्रह्मांड, एह विश्वात्मा आ आत्मा के प्रतीक रहे आ अपना चूहा पर चढ़िके ओही के चक्कर लगा के सबसे पहिले विष्णुजी के ईहाँ पहुँच गइलीं। कुल देवता लोग एतराज कइल बाकिर विष्नुजी के विश्वास हो गइल कि गणेश जी अनुचित नइखी कइले कांहे कि सून्य परमात्मा के स्वरूप ह, आत्मा के प्रतीक बा, ब्रह्मांड के चिन्ह ह। गणेस जी के जीत हो गइल आ ऊहाँ के पूजा–पाठ कुल्हि धरम–करम में सबसे पहिले होखे लागल। ई त सून्य के महिमा भइल आ गूलर के फल ऊहे सून्य ह जवन निर्जीव ना सजीव बा त ओकर महिमा केतना होई एकर अंदाज लगाईं। "ईसावास्योपनिषद्" के पहिले स्लोक ह–

ऊ पूर्णमिदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

एकर मतलब ई बा कि परम ब्रह्म परमात्मा सदा सर्वदा परिपूर्ण रहेला। ई जगत ओही से परिपूर्न बा काहें कि परम् ब्रह्मरूपी पूर्न से ई पूर्न जगत उत्पन्न भइल बा। पर ब्रह्म के पूर्णता से जगत पूर्न बा आ एही से जगतो परिपूर्न बा पूर्न ब्रह्म में से पूर्न के निकाल दीहल जाव तब्बो ऊ पूर्णे रहि जाई जइसे सून्य से सून्य निकाली भा सून्य जोड़ीं त सून्ये रहि जाई। गूलर के फूल हमरा के एह दार्शनिक सिद्धान्त के अर्थो समझावत बा की सून्य भइल भा सून्य मतिन भइल ना त कवनो छोटाई के आभास करावेला आ ना त ओकर महिमा घटेले। गूलर के फल आ ओकरा अंदर ओकरा फूल में सम्पूर्ण भारतीय दर्सन समाहित बा। एकर विवेचना मुण्डक उपनिषद् (2/9) में कइल बा–

हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम्।
तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः।।

एकर अर्थ ई बा कि निर्मल परब्रह्म प्रकाश पूर्ण कोशरूपी परमधाम में विराजमान बा ऊ एकदम विसुद्ध कुल्हि ज्योति के ज्योति ह आ ओके आत्मज्ञानी लोग जानेला। गूलर के फूल ऊहे कोश ह जवना के अन्दर परमात्मा के बास बा आ हमनी क ओके जानू के अंजान भइल बानी जा। तुलसीदास जी लिखले बानी– "ईश्वर अंश जीव अविनाशी" ओइसहीं गूलर के फल आ फूल एक–दूसरा में अइसन समा गइल बा कि ओके फरका कइल संभव नइखे, ओकर फरका अस्तित्व नइखे। एगो पुरान कथनी ह कि "सारी में नारी है कि नारी में सारी है" ई भेद केहू ना पा सकल। कृष्न जी जब जसोदा जी के आपन मुँह खोल के ब्रह्मांड के दरसन करवलीं त ऊहो एगो सून्ये क आकार में रहे आ ओतने में ब्रह्मांड के कुल्हि रहस्य ज्ञात हो गइल। गूलर के फूल ब्रह्मांड के एगो छोटे रूप बा आ ओकरे में ब्रह्मांड के कुल्हि रहस्य समाइल बा। धन्य हो गूलर के फूल की तू अपना कोस में केतना बड़–बड़ विद्या, ज्ञान–विज्ञान समेट के बइठल बाड़ऽ, जवना के आर–पास नइखे। कहल जाला कि मन के तीन गो दसा होले– चेतन, अवचेतन आ अचेतन। ईहो सिद्ध बा कि संसार के कुल्हि ज्ञान–विज्ञान अचेतन मन के उपज ह। हमरा त बुझात बा कि गूलर के फूल अचेतनो मन से परे कवनो वस्तु बा जवना के पहिचान अचेतन मन ना कय पवलस आ ईहे कारन बा कि ऊ कालजयी हो गइल आ अनादि काल से ओइसही टांठ

बा। ठूंठ ना भइल तनले रहि गइल। हमरा त गूलर के पेड़ देख के महाभारत के शान्ति पर्व में भीष्म पितामह के अवधूती भाषा में कहल ई श्लोक इयाद पड़त बा–

सुख वा यदि वा दुःख प्रियं वा यदि वाऽप्रियम्।
प्राप्तं प्राप्तमुपासीत हृदयेनापराजितः।।

एकर अरथ ई बा कि चाहे सुख होखे भा दुःख, प्रिय होखे भा अप्रिय जे मिल जाए ओके हृदय खोल के अपराजित भाव से उल्लासपूर्वक ग्रहण कइल जाय कबो हार ना माने। ई बात सही बा कि विकट परिस्थिति झेलू के गूलर के फेड़ हार ना मनलस आ हमरा के ऊ दिव्य संदेस दे रहल बा जवन वेदो पुरान से साक्षात् ना मिल पवलस। हम गूलर क फूल आ ओकर प्रनेता ओकरा फेड़ के सामने श्रद्धावनत् बानी।

"ईसावास्यमिदम् सर्व" एगो ई औपनिषदिक वाक्य ह जवना क मतलब बा कि ई सारा ब्रह्मांड ईस्वर क परिधान है। प्रसिद्ध जर्मन कवि गेटे एही तरह के विचार व्यक्त कइले बा। "एको अहं बहुस्यामि"। एहू उक्ति से ईश्वर से विराटता के आभास मिलत बा। भगवान के छवि सम्पूर्न विस्व में दिखाई पड़त बा आ हमार ई कर्तव्य बा कि हम ईश्वर के बनावल प्रकृति के अंग–प्रत्यंग से जवन दृस्यमान बा प्यार करीं आ ओके प्रेम के संदेस देई। ईसा मसीह ठीके कहले बांड़ कि जे लोग मनुष्य मात्र के, जेके ऊ रोज देखत बा प्यार ना करी त भगवान, जेके हम ना कबहू देखलीं आ ना देख सकब से, हमार कइसे प्यार होई। स्विटजरलैण्ड के प्रसिद्ध मनोरोग विशेषज्ञ डॉ0 कार्लजुंग कइले बानी कि आधुनिक सभ्यता बीमार हो गइल बा, कांहे कि अपना के ई भगवान से अलग कइ के दरिद्रता का ओर अग्रसर बा। जुंग कहले बाड़न कि भगवान जीवनदाता ह, जीवन के रक्षक आ पोषक ह। ओकरा बिना हमके सुख चैन ना मिल सकी आ ओही के प्रेरना से नैतिक आ आध्यात्मिक शक्ति मिलेले। जुंग महोदय केतना सटीक बात लिखले बानी कि हम अपना जीवन के श्रीगणेश ईश्वर के बिना कइ सकीला बाकिर जइसे–जइसे जीवन बढ़ी एगो अनुभूति होखे लागेले कि जिनिगी के मजा समाप्त हो रहल बा। जे ईश्वर में विस्वास करत बा ओके अइसन कवनो एहसास ना होला काहें कि ऊ ई महसूस करेला कि ओकरा पास एगो संबल बा, ओकरा ऊपर केहू क हाथ बा, अन्हारों में ओके केहू राह देखावे वाला बा। हम ई कथन प्रसंगवस ईहाँ प्रस्तुत कइलीं ह। गूलर के फूल का हर दृष्टि भा अकल्पनीय लीला बा ओइसही गूलर के फूल में ओकरा फूल के बास बा आ ऊ ओकरा भीतरे नाना प्रकार के सृष्टि रच रहल बा। जदि हमनी के गूलर के फूल से प्रेरना ग्रहण करीं जा त हमनी के बहुत कुछ सीखे के मिली। भगवान कृष्न के दूत उद्ध व जी गोपिन के जवन संदेस दिहलीं ओहूमा आसक्ति के बदले अनासक्ति आ भोग के बदले जोग क बात बतावल बा। हमरा के बुझात बा कि उद्धव जी के गूलर के फूल क संरचना आ ओकरा रहस्य के बड़ी निम्मन जानकारी रहे कांहे की उद्धव जी जवन प्रतीक अपना संदेस देवे खातिर अपनवले बाड़ी ऊ गूलर क फूल से बड़ा मेल खात बा। ई हम पहिलहीं लिख चुकल बानी कि गुलरे के एगो प्रजाति पीपर ह जवना में वासुदेव जी क वास मानल बा। एह विषय के जेतने बढ़ावल जाई एकर विस्तार होत जाई आ ओर–छोर ना मिली एह से हम संकेत रूप में जवन कुछ कह देले बानी ओपर रउआं सभे विचार करब त रउआं के गूलर के फूल के रहस्य मालूम होई आ हम एह लेख के अगिला अनुच्छेद में समाप्त करे क आज्ञा चाहब।

दू–तीन महीना बाद हमार नातिन जवन बड़ा छर फर आ तेज तर्रार बा अपना मम्मी के याद दियवलस कि मम्मी नानी गूलर के फूल के बारे में बतावे के कहलीं बाकिर आज ले ना बतवलीं। हमार बेटी हमरा के फोन कइलस आ हम ईहे लेख ओकरा के भेज दिहलीं तब ओके ईहे संदेस मिलल की संसार में कबहूं पराजित अनुभव ना करे आ सबसे, चाहे दोस्त हो भा दुश्मन, हँस के मिले, हंस के अपनावे। एह लेख के समापन हम तुलसीदास आ वात्सायन के संदेस देके करत बानी जवन गूलर के फेड़ आ फूल पर बड़ा बइठत बा–

रन बन व्याधि विपत्ति में,
वृथा डरे जनि कोय।
जो रक्षक जननी जठरि,
सो प्रभ, गयऊ न सोय।।

वात्सायन अपना काम सूत्र में लिखले बानी जे वटिका क बहरी किनारा पर अशोक, सिरीश अरष्टि, पुन्नाग, गूलर, वट आ पीपर जइसन छायादार फेड़ लगावे क प्रथा रहे। रहीमो जी अपना दोहा में ईहे लिख दिहली ह। का हमनी के फेनू ओह फेड़न क महत्व समझ के उनके पुरनका आदर दिहल जाई?

– मालएवेन्यू कॉलोनी, लखनऊ

दाढ़ी चरित्तर

डॉ. गदाधर सिंह

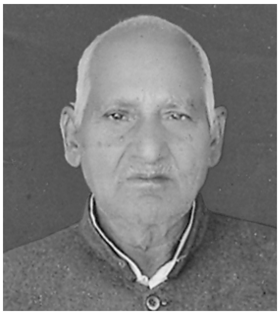

अँग्रेजी आ फ्रेन्च भाषा में 'दाढ़ी' पर *Sermon on Shaving* जइसन कईगो रचना के सूचना प्राप्त बा; बाकी भारतीय–साहित्य में तत्संबंधी कवन ग्रंथ बा, एकर पता हमरा नइखे। वात्स्यायन के 'कामशास्त्र' में केश–विन्यास पर विचार कइल गइल, बाकी दाढ़ी के उल्लेख उहों के नइखीं कइले। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'प्राचीन भारत के कला–विनोद' में चम्पी जइसन उपेक्षित विषय के 64 कला के भीतर समाविष्ट क लीहल गइल बा, बाकी प्राचीन भारत में दाढ़ी–निखार पर कुछ उल्लेख भइल बा कि ना, एकर पता उहों के नइखे। हिन्दी–साहित्य के भारतेन्दु–युग में पं0 प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त प्रभृति लेखक लोग अनेक विषयन पर निबन्ध (लेख) लिखनी– इहाँ तक कि आँख, मुँह, दाँत, नाक के अतिरिक्त 'भौंह' जइसन अंग के उहाँ सब के दृष्टि से ना बाँचल, बाकी दाढ़ी के भव्यता पर उहों सभे के नजर ना गइल। कविकुल गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'काव्य की उपयोगिताएँ' निबन्ध से प्रेरणा लेके आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 'कवियों की उर्मिला विषयक् उदासीनता' लेख लिखनीं आ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के प्रेरित कइके 'साकेत' आ 'यशोधरा' के प्रणयन कराके कैकेयी, उर्मिला आ यशोधरा के उद्धार करवनी। यदि रविबाबू भा आचार्य द्विवेदीजी सदियन से उपेक्षित 'दाढ़ी' के उद्धार कइ दिहले रहतीं, त उहाँ के यशः शरीर के कान्ति प्रोदभासित होइत आ काव्य–जगत के कवनो अमर–रत्न प्राप्त हो जाइत। हमरा जहाँ तक जानकारी बा, प्रताप नारायण मिश्र जी के ध्यान एह तरफ गइल रहे, बाकी उहाँ संगे एगो ट्रेजेडी हो गइल, एह से उहाँ के एह शुभ काम से अपना के अलग क लेनी। भारतेन्दु मात्र नाटककार ना रहीं, उहाँ के रंगमंच पर स्वयं पार्ट लेत रहीं। अपना मंडली के लेखक लोगन के पार्ट लेबे के प्रेरितो करत रहीं। ओह युग के नारी के पार्ट कम उम्र के लइका लेसु, कांहे कि पर्दा–प्रथा के कारण कवनो भल घर के लइकी स्टेज पर आवे, ई केहू सोचिओ ना सकत रहे। एगो नाटक खेले के क्रम में निर्णय भइल कि सुन्दर, सुभेष मिश्र जी लइकी के पार्ट करबि। अभी उहाँ के तनी–तनी मोंछि आवत हरे। मोछि–दाढ़ि सफाचट करावल गइल। जब उहाँ के स्टेज पर अइनी, त इहाँ के केहू ना पहचान सकल, सभे जानल कि कवनो लइकिए ह। गाँव भर में हल्ला हो गइल कि बाप के जियते बेटा मोछि–मुड़ा के लइकी बनि गइल। कुछ अउर–अउर फब्ती कसाए लागल। लाज के मारे मिश्रजी महिनवन घर में लुकाइल रहनी। जब फेनु दाढ़ी–मोछि जामल, त बहरी आवे शुरु कइनीं। एकरा बादे 'दाढ़ी' पर कुछ लिखे के उहाँ के तौबा क लेनी।

जइसे अलंकार काव्य के शोभा कारक धर्म ह, ओसहीं दाढ़ी व्यक्तित्व के सभ्यता प्रदान करे वाला अलंकार ह। छरहर शरीर यष्टि, सिलवट लेखा गज भर के चाकर छाती, चंदन चर्चित भव्य ललाट, विशाल नेत्र आ ओकरा पर घनीभूत दाढ़ी–ई सभी मिलि के व्यक्तित्व में अइसन रोबीलापन भर देलें कि सामने पड़ेवाला व्यक्ति एक बारगी हतप्रभ हो जाला। अइसे केस के कई किसिम के कट होला, ओसहीं दाढ़ियों

के कइ गो भेद होला आ सभ के आपन–आपन खूबी होला। धरती छुअत लमहर बेतरतीब दाढ़ी सन्त के, मध्यम कोटि के बाकी सजल–सजावल दाढ़ी राजपुरुष आ योद्धा के, पायजामा–कुरता पर चन्द्रशेखर कट दाढ़ी नवही नेतन के आ 'कौन बनेगा करोड़पति' सीरियल में अमिताभ बच्चन जइसन दाढ़ी सिने कलाकार के खास पहचान ह। दाढ़ी के कट देखते व्यक्ति के व्यक्तित्व के पारदर्शिता स्वतः झलके लागेला। इहे सभी कारनन से यदि दाढ़ी के व्यक्तित्व के दरपन कहल जा, त कवनो अतिशयोक्ति ना होई।

जब विधाता के सृष्टि–निर्माण के इच्छा भइल, तब अपना हाथ के कला के पूर्णता से जवन पहिलका चीज उहाँ के निर्माण कइनीं, ऊ रहे दाढ़ी आ ओकरा कलात्मक सौंदर्य पर स्वयं ब्रह्माजी अतना मुग्ध भइनी कि ओकरा से स्वयं के अलंकृत क लेनी। अइसन दुर्लभ चीज देखि के सर्वश्री विष्णु जी आ शिवजी ललचा गइनी, बाकी ब्रह्माजी ई लोग के तनिको उपकृत ना कइनी। ई लोग पात्रों ना रहे। क्षीर–समुद्र में छह महीना सूते वाला भगवान विष्णु के दूध मे सनाइल दाढ़ी के समुद्र के जलचर जीव नोचि–नोचि के उनकर हाल बेहाल क देतन आ बेचारे सुतिओ ना पवतनि। एक त उड़िस के डर से उहाँ के समुद्र के तल में सूते गइल रहीं आ ब्रह्माजी दाढ़ी दे देतें, त उहे कहाउत होइत– ननिअउरा गइले दूना दुख।

शिवोजी दाढ़ी जइसन दुर्लभ वस्तु के अवदान से वंचित रहि गइनी, एकर कारण अवरू स्पष्ट बा। कहाउत ह कि दू–चारि दिन खातिर ससुराल स्वर्ग ह, बाकी एकरा से बेसी दिन खातिर श्वसुर–गृह आपत्ति के घर बनि जाला। जवन व्यक्ति जिनिगी भर खातिर ससुरारिये में बसि गइल, ओकर साली–सरहज के हाथे कवन–कवन दुर्गति होई, एकर गणना करे में स्वयं ब्रह्मोजी समर्थ ना होखिहें। ब्रह्माजी कवनो मुरुख थोड़े बाड़े कि शिवजी के दाढ़ी देके उनका खातिर नया कुफुत बोवसु। भगवान राम आ पूर्ण परब्रह्म श्रीकृष्ण के भी दाढ़ी ना नेवाजल गइल। ई लोग के अजन्मा कहल गइल बा। जेकर जन्म नइखे, ओकरा दाढ़ी–मोंछि कहाँ से रही?

दाढ़ी महात्म–तत्व के प्रतीक ह। बिना दाढ़ी के केहू महात्मा बन सके, ना महर्षि, ब्रह्मर्षि, राजर्षि। बाल्मीकि, ब्यास, वशिष्ठ, विश्वामित्र, जनक– सभ केहू दाढ़ी से अलंकृत रहे। आधुनिक युग में राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडनजी के 'राजर्षि' से विभूषित करे में निश्चित रूप से उहाँ के दाढ़ी के योगदान होई। महर्षि अरविन्द, ओसो, महेश योगी, विनोबा सभ केहू के 'महात्मा' शब्द से विभूषित करावे में उहाँ सभ के दाढ़ी के योगदान कतना बा, एकर गणना के कर सकता? विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पहचान उनका दाढ़िये से होला। परम पूजनीय गुरुजी (गोलवलकर जी) के चरण–रज के प्रसाद पाके श्री अटल बिहारी वाजपेयी, विरोधी दल के लाख हिलवला–डोलावला के बादो, भारत के प्रधानमंत्री के कुरसी पर, डटि के बइठि गइनी। उहाँ के सम्मान देबे में अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन स्वयं गौरव के अनुभव करत रहलन।

दाढ़ी के सबसे बेसी मर्यादा देवे के यदि केहू के श्रेय बा, त प्रातःस्मरणीय सिक्ख गुरु लोगन के बा। गुरु नानक से लेके दशम गुरु गोविन्द सिंह जी तक सभे दाढ़ी के आदरपूर्वक अंगीकार कइल। गुरु अर्जुन देव आ गुरु तेग बहादुर जी शहादत स्वीकार कइनी, बाकी औरंगजेब के आज्ञानुसार दाढ़ी राखे के ढंग स्वीकार ना कइनी। दशम गुरु गोविन्द सिंह जी त दाढ़ी आ केश के अतना महत्व देनी कि खालसा–पंथ के अनुयायियन खातिर ई धर्म के अनिवार्य अंग हो गइल। एही पंच ककार के छत्रच्छाया में बन्दा वैरागी, हरि सिंह नलुआ आ महाराणा रणजीत सिंहजी के खालसा सिक्ख सैनिक काबुल तक धावा मारले आ नादिरशाह द्वारा ले गइल कोहेनूर हीरा फेनु अपना देस में ले अइलें। समर्थ गुरु रामदासजी के अन्यतम शिष्य छत्रपति शिवाजी महाराज के विशाल दाढ़ी रहे आ हिन्दुअन के दाढ़ी के लाज राखे खातिर हिन्दू पादशाही के उहाँ के स्थापना कइनी। भूषण कवि लिखलें–

हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की।
कांधे में जनेऊ राख्यो, माला राखी गर में।।

गुरु गोविन्द सिंहजी आ क्षत्रपति शिवाजी के संयुक्त आघात से बाबर द्वारा स्थापित आ अकबर द्वारा संपोषित मुगल साम्राज्य के विशाल महल के धूरि चाटे में तनिको देरी ना लागल। एकर श्रेय, हमरा दृष्टि में, निःसंदेह दाढ़ी के बा।

युग–परिवर्तन सृष्टि–प्रक्रिया के आवश्यक अंग ह। 'संसार' शब्द के अर्थे होला–संचरण करे वाला– सँसरे वाला–परिवर्तित होखे वाला। सृष्टि के ई नियम हर चीज पर लागू होला। दाढ़िओ एह नियम के अपवाद नइखे। एक युग रहे, जब दाढ़ी साधुत्व आ वीरत्व के द्योतक रहे, बाकी आजु के युग ना साधु के रहि गइल बा, ना वीर के। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव आ सिनेमा–दूरदर्शन के प्रचार से प्राचीन आदर्श समाप्त हो

रहल बा आ सीधापन, ईमानदारी, सतीत्व जइसन शब्दन के अर्थ–गर्भत्व परिवर्तित हो गइल बा। आजु के संदर्भ में दाढ़ी एगो विशेष प्रकार के फैशन में परिगणित हो गइल बा। इंग्लैंड के राजा–रानी, राजकुमार–राजकुमारी जइसन वस्त्र पेन्हे लागेलें, ऊ इंगलैंड में फैशन बनि जाला। भारत में गाँधी टोपी, जवाहर जैकेट, जयप्रकाश कट कुरता आदि एही भावना के प्रतीक ह। ई दोसर बात बा कि एक जमाना में गाँधी टोपी आ जवाहर जैकेट के जवन चमक रहे, ऊ आजु नइखे। आजु एह समय के यंग तुर्क चन्द्रशेखर कट दाढ़ी के महत्व हो गइल बा। टाई, कोट, पैंट से हाकिम, गाँधी टोपी से पुरनका नेता, स्टेनगनधारी अंगरक्षक से एम.एल.ए., एम.पी., लाल बत्ती वाली गाड़ी से वी0आई0पी0, पैंट पर कुरता से जे.एन.यू. के छात्र, जीन्स पैंट से, विश्वविद्यालय छात्रा ड्राइंग रूप में बइठि के राजनीति पर बहस करे से बुद्धिजीवी आदि के पहचान होला, ओसहीं अलीगढ़ी पायजामा पर घुटना के नीचे तक कुरता आ चन्द्रशेखर कट दाढ़ी से नवही तुर्क नेता के पहचान हो जाला। चन्द्रशेखर के दाढ़ी अइसन पासपोर्ट ह कि ओकरा के धारण करे वाला नवहीं के ब्लॉक ऑफिस, कलक्टरी, सिनेमाहॉल, रेलगाड़ी आदि में केहू रोक–टोक ना करि सके। चुनाव के बेरा बूथ–कब्जा कइके नेता–मंत्री के जितावल–हरवावल, शरणागत ऑफिसर लोग के ट्रान्सफर–पोस्टिंग करावल, खूसट अधिकारी के डेरवावल–धमकावल, रेला–महारेला के बेरा स्वामी के आदेश पर आदमी जुटावल, भक्त–जनन के कल्याण खातिर लाइसेंस–परमिट के जोगाड़ करावल, गाहे–बेगाहे स्कूल–कॉलेज बन्द करावल, प्राचार्य, शिक्षक पर पथराव करावल आदि–आदि जइसन सामाजिक कार्य द्वारा कल्याणकारी, समतामूलक समाज–निर्माण के दिशा में देश के घिसियावल–एह नवही नेता लोग के पुण्य कार्य–कलाप ह।

एह संसार के विधाता ना जाने कवना–कवना चीज के मिश्रण से बनवले बाड़े कि एह में नीमन–से–नीमन आ जबून–से–जबून आदमी मिलि जइहें। कवनो चीज कतनो अच्छा होखे, ओकर निन्दक जरूर निकल अइहें। कहाउत ह कि एक बेर लछिमीजी अपना हाथ से भोजन बनवनी। उहाँ के घमण्ड रहे कि एकर शिकायत केहू करि ना सके। निन्दक महाराज जी लाख मुड़ी पटकनी, बाकी ओकरा में कवनो कमी ना लउकल, त अंत में कहनी कि अतना अच्छो अच्छा ना होखे। गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरितमानस' आजु घरे–घरे पुजाता आ विदेसियो विद्वान एकर प्रशंसा करत अघात नइखन, बाकी काशी के दिग्गज संस्कृत पंडित लोग एकर भयंकर निन्दक निकलि गइलें आ गोस्वामीजी पर जातिगत तोहमत लगवले– 'धूत कहे अवधूत कहे रजपूत कहे जोलहा कहे केऊ'। ऊ त भलऽ मनाईं हनुमानजी के, नाहीं त पंडित लोग के पेसल चोर, पोथिये चोरा ले जइतन। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'गीतांजलि', प्रेमचन्द के 'गोदान' – सभ पर 'क्रिटिक' लोग भुक्खड़ लेखा अच्छर–अच्छर कुतरल। 'क्रिटिक' ऊ कीड़ा ह कि जेकरा पीढ़ी लागि जाई, उनका के साफे समुझीं। एह कीड़ा के चलते ना जाने कतना उदीयमान साहित्यकार अकाल मृत्यु के ग्रास बनि गइलें। सरकार पक्ष कतनो बढ़िया कानून बनावे, विरोधी दल ओह में कुछ–ना–कुछ नुख्स निकालिये लीही। क्रिटिक–कीड़ा के कृपा पावे खातिर तुलसीदासजी ई 'खल' लोग के खूब निहोरा कइलें। बाकिर एह लोगन के मन कहाँ पसीजल? एह वर्ग के कतनो खुशामद करीं, बाकी निर्लिप्त भाव से इहाँ सभ अपना प्रकृति के अनुसरण करबे करबि; बकौल गोरखनाथ–

'दूधैं धोया कोइला, उजला न होइला।
कागा कंठे पहुप माल, हँसला न भैला।।'

दाढ़ी के सबसे जादे निन्दा–नारी वर्ग द्वारा होला। दाढ़ी के प्रति ऊ लोग के शब्दकोश में सबसे प्रिय शब्द होला– दाढ़ी जरना, मुँह झँउसा आदि–आदि। एगो पति नामधारी जीवन बारह बरिस पर परदेश से घरे लवटलें। ओकरा से ई ना पुछाइल कि कइसे रहनी हाँ, का खात–पियत रहनी हाँ, काहे दुबरा गइल बानी, बेमार रहनी हँ का, बस दाढ़ी–गलगोंच्छा देखते उनकर देहि जरि के कोइला हो गइल आ लगली अग्नि शिखा बनिके उनका गलगोछा में लुत्ती लगावें–

बारह बरिस पर पिया मोर आइल,
आइल गलगोछवाँ बढ़ाई के।
एहि गलगोछवाँ में लुतिया लगइबो,
आइल मोरा समय गँवाई के।।

एगो हमार प्राध्यापिका मित्र बानी। उहाँ के अपना पति के दूनो–बेरा दाढ़ी बनावे के कठोर हिदायत देले बानी। यदि पति बेचारे गलती भा अति कार्य–व्यस्ततावश आदेश के पालन ना कइ सकले, त घर में तूफान आ जाई आ कुछ सुन्दर–सुन्दर विशेषण पति महोदय के नाम के आगा–पीछा जोड़ाये लागी। दाढ़ी–मूँछ के प्रति नफरत के कारण पुछला पर मुसुका के उहाँ के चुप्पी साधि लिहींला।

दाढ़ी से वितृष्णा राखे वाला दोसर वर्ग

कलाकार–वर्ग ह। संगीतज्ञ, नर्तक, नाटककार, चित्रकार–सभे बे–मोछि–दाढ़ी वाला होखेला। सिने–जगत में दाढ़ी वर्जित क्षेत्र मानल गइल बा। बाकी कला के पूर्णता जतना दाढ़ी–मूँछ में प्रत्यक्ष होला, ओतना बेदाढ़ी में ना होखे। 'सिकन्दर' आ 'यहूदी' फिल्म में पृथ्वीराज कपूर आ सोहराब मोदी के अभिनय आजुओ अविस्मरणीय बा। 'कौन बनेगा करोड़पति' सीरियल में अमिताभ बच्चन आपन विशेष प्रकार के दाढ़ी–कट के साथ जब उतरलें, त सिने जगत में 'बिग बी' कहाए लगलें।

दाढ़ी के विरोधी राजनीतिज्ञ–वर्ग रहल बा। महान राजनीतिज्ञ चाणक्य के दाढ़ी ना रहे। उहाँ के 'कुटिल' रहनी, एह से उहाँ के अभिधेय 'कौटिल्य' भइल। उहाँ के नीति रहे कि यदि हाथ केहू के गर्दन रेति रहल बा, त मुँह पर मुसुकान रहे के चाहीं। अन्तर के भाव यदि बाहर प्रत्यक्ष हो गइल, त अनीति के सृजन होई, कौटिल्य मानत रहीं कि अन्दर से दुरभिसंधि के पता बाहर केहू के ना लागे, एह से राजनीतिज्ञ लोग दाढ़ी–मूँछ सफाचट क लेला। बाबर आ हुआयूँ के दाढ़ी रहे, बाकी अकबर के कुटिल राजनीति दाढ़ी राखे के अनुमति ना देलसि। ऊ 'ना हिन्दू' 'ना मुसलमान' के बाना धारण कइले रहलें। उनकर 'दीन इलाही' धर्म के राजनीतिकरण के अलावे, अउर कुछ ना रहे। इहे कारण से ऊ 'महान अकबर' बने में समर्थ हो सकलें। औरंगजेब राजनीतिज्ञ से बेसी 'जिन्दा पीर' कहाये के फेर में रहि गइलें। एकरा चलते ऊ ना पीरे बन सकलें आ ना राजनीतिज्ञे। परिणाम ई भइल कि महान मुगल साम्राज्य के नींव में घुन लागि गइल आ एक दिन भरभरा के गिरि गइल।

आधुनिक भारत में जवाहरलाल नेहरू आ जयप्रकाश जी दूनो बेरा दाढ़ी बनावत रहीं जा। नेहरूजी राजनीतिज्ञ से बेसी कल्पना–जीवी व्यक्ति रहीं। कल्पना के कोमल कोकिल राजनीति के कठोरता के स्पर्श होते मूक आ मूर्च्छित हो जाला। इहे स्थिति नेहरूजी के भइल इहाँ के मि0 जिन्ना के मुकाबला ना क सकनी आ चारो खाने चित्त हो गइनी। मि0 जिन्ना अन्तर से असाम्प्रदायिक व्यक्ति रहलें। ऊ ना मजहबी दाढ़ी राखत रहन आ ना नियम से नमाज अदा करत रहलें। उनकर कहनाम रहे कि उनकर चले त सभ मुल्ला–मौलवी के दाढ़ी मुड़वा दीहीं। ऊ मुल्ला लोग से अन्तर से घृणा करसु, बाकी कुटिल नीतिज्ञ होखला के चलते, इस्लाम के नाम पर मुल्ला–मौलवी के अस्त्र बना के, देश के बँटवारा कराके नया राज्य पाकिस्तान के सर्वेसर्वा बनि गइलें। हमरा विश्वास बा कि नेहरूजी के स्थान पर यदि ओही तर्ज के केहू दोसर नेता के हाथ में काँग्रेस के कमान रहित, त जिन्ना साहब के नानी इयाद परि जाइत आ ऊ बँटवारा के नाँव ना लेइतन, काहेकि ऊ जानत रहलें कि एगो ढेला चलावला के बदला ठीक नाकि पर दूगो ढेला लागी। आजादी के बाद भारत के जे भी प्रधानमंत्री भइलें, ओह में चंद्रशेखर के छोड़ि के केहू के दाढ़ी ना रहे। इहे कारण रहे कि युद्ध में पाकिस्तान के करारी हार होला के बादो, लोग टेबुल पर जीतल दाव हारि गइलें।

प्रत्येक युग के आततायी शासक, धर्मान्ध राज्याध्यक्ष आ अविवेकी सम्राटन द्वारा सत्य, धर्म आ मनुष्यता पर जइसे आघात होत आइल बा, ओसहीं इन्हनी के अत्याचार के शिकार समय–समय पर दाढ़ियो भइल बा। औरंगजेब जइसे क्रूरतापूर्वक गुरु तेग बहादुर के मरववलसि, ओसहीं लम्बाई के एक सीमा के बाद दाढ़ी बढ़ावे पर रोक लगा देलसि। औरंगजेब दाढ़ी के लम्बाई निश्चित क देले रहे आ नियम बना देले रहे कि निर्धारित लम्बाई से बेसी दाढ़ी बढ़ावल दण्डनीय अपराध मानल जाई। औरंगजेब के शासन–काल में एगो स्वतंत्र 'दाढ़ी विभाग' रहे, जेकर अधिकारी के काम रहे कि ऊ घूमि–घूमि के पता लगावसु कि राजाज्ञा के उल्लंघन त नइखे होत। ई कहे के जरूरत नइखे के भ्रष्ट अधिकारी खातिर ई विभाग कतना शुभ रहे। गुरू नानक मुगल–युग के शासन–व्यवस्था पर टिप्पणी करत कहले बानी–

> *There is none. Who receives or gives not bribe.*
>
> *Even the king distributes Justice. And when his Palm is greased.*
>
> उद्धृत : *Sikh Gurus : Their Lives and Teachings by K.S. Dugal, Pp-6*

दाढ़ी के प्रति अत्याचार खाली भारते में नइखे भइल, सउँसे दुनिया में कवनो–ना–कवनो रूप में एकरा विरूद्ध अभियान छेड़ल गइल बा। पवित्र बाइबिल में एगो प्रसंग आइल बा कि बेजूढ़िया के राजा दाउद के राजदूत राजा हन्नान के दरबार में गइल। हन्नान राजदूत के जासूस समझ गइल आ आव ना देखलसि ताव, दूत के आधा दाढ़ी मुड़वा देलसि। राजा दाउद राजदूत के अपमान आपन आ अपना देश के अपमान समुझलें आ हन्नान पर आक्रमण क देलें। दाढ़ी के अपमान कइला के चलते खून के नदी बहि चलल।

एक समय इंग्लैंड में एगो कानून बनल, जेकरा

तहत दाढ़ी राखल गैर–कानूनी घोषित क दीहल गइल आ एह कानून के उल्लंघन करे वाला के समस्त नागरिक अधिकार छीन लेबे के प्रावधान कानून में कइल गइल।

सन् 1705 ई0 में रूस के शासक पीटर एगो फरमान निकललें कि या त दाढ़ी राखल छोड़ द या यदि दाढ़ी जइसन वाहियात वस्तु से प्रेम बा, त जजिया लेखा टैक्स द। परिणाम ई भइल कि कुछ लोग त दाढ़ी मुड़वा लिहल, बाकी अइसन लोग के संख्या अधिका रहे, जे टैक्स दीहल मंजूर कइले, बाकी दाढ़ी ना कटवलें।

रोम के प्रसिद्ध सम्राट सिपियाँ एफ्रीकेंस के दाढ़ी के प्रति बड़ा भारी एलर्जी रहे। एकर कारण रहे कि ओकर रसोइया भोजन बनावे में त बड़ा कुशल रहे, बाकी ओकरा दाढ़ी में के एकाध गो बाल खाये में राजा के मिलि जा। बस सम्राट अतना खिसिअइलें कि रसोइया के दाढ़ी में आगि लगा के जरवा देलें आदेश निकाला के हुकुम दे देलें। दाढ़ी के प्रति उनकर क्रोध अतने से ना बुझाइल। राजभर में डुग्गी पिटा गइल कि केहू दाढ़ी ना राखी, जे राखी उनका दाढ़ी में आगि लगा दीहल जाई। परिणाम ई भइल कि दाढ़ी के प्रेमी लोग राज्य से पलायन कइके दोसरा राज में बसि गइलें। योद्धा, सन्त आ सज्जन लोग के राज्यछोड़ देला से ओह देश के कतना क्षति भइल होई, एकर अनुमान एही से कइल जा सकता कि एगो आइंस्टीन के जर्मनी छोड़ला के परिणाम जर्मनी–जापान के कतना भुगते के परल।

सभ्यता के विकास–क्रम में ना जाने कतना सम्राट, सेनापति, आततायी राज्याध्यक्ष अइले–गइले आ दाढ़ी के उन्मूलन के हर संभव प्रयास कइले, बाकी एह धरती के बालुका–राशि पर ऊ लोग के चरण–चिन्ह के आज अता–पता नइखे। दाढ़ी के जिजीविषा–शक्ति अतना प्रबल बा कि अनेक झंझावाते के बीच–

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।।

– पूर्व अध्यक्ष, भोजपुरी विभाग,
वीर कुंवर सिंह वि.वि. आरा

लघुकथा

निर्बल वर्ग के घर

विनोद द्विवेदी

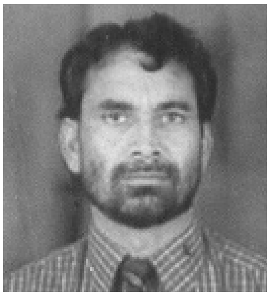

निर्बल बरग के घर वाली योजना में परधान फेकू सिंह सोनमतियो के नाँव दे दिहले। सरकार का ओर से सबके दस हजार मिलत रहे।

जहिया सोनमतिया के चेक मिले के रहे फेकू सिंह सबेरहीं ओकरा घरे पहुँचले, 'एह सरवन खातिर हमार कवन करम ना हो गइल बाकि ई कुछ समुझँ स तब नऽ। धावत–धावत गोड़ खिया गइल।'

– का बाति हऽ बाबू साहेब? सोनमतिया मड़ई से निकलल।

– तोरा के दस हजार मंजूर करा दिहनी, बाकि दउर धूप में हमरे लग से दू हजार लागि गइल।

– ऊ काहें साहब?

– 'अरे ससुरी, बे कुछ दिहले–लिहले ए घरी कवनो काम होता? चल जल्दी बलाक पर तोरा के चेक दियवा दीं।' फेंकू सिंह कहलन।

उनका पाछा पाछा चलत सोनमतिया के कहाउति मन परल 'जनमते जम दुअलस।'

– 'अरे गरीब गुरबा जानि के हम दू हजार दे देले बानी ना त दोसरा लोग के अभिन लटकले बा। तें रुपया पावते, हमार लवटा दीहे। सेकरेटरियो बड़ा हरामी हऽ सरवा। हजार–पाँच सौ ओकरो के दे दिहे ना त अड़ंगा डाली आ ईंटा गिरा के एगो छोट घर जरुर बना लिहे। ना त बीडीओ के चेकिंग होई त तोरे फजिहत होई।'

सोनमतिया से ना रहाइल। ऊ आखिरस फूट परल, 'ए बाबू साहेब, त घरवा कवना चीजु के बनीं? आधा त एही तरे खउरा गइल।'

– भारतीय खाद्य निगम, मडुवाडीह, वाराणसी

अंचरा में अंगार रखले क कोशिश : अथ गाली-विवेचन

✍ राम प्रकाश शुक्ल 'निर्मोही'

सोहागिन के रजाई कऽ पैताना हमेशा 'ललछऊँ' होला आ गाली क सिरहाना हमेशा 'करछऊँ'। एह बदे कि गाली में केहू के करिखा पोतले कऽ भावना नुकीली होके बइठल रहेले। ई नुकीलापन कभी बघनखा एइसन करेजा फारि देवै वाला तऽ कभी अंगुरी एइसन गुदगुदी करै वाला होला। गाली कमजोर आदमी क सस्ता–मतबूत आ टिकाऊ हथियार होले। एसे ऊ आत्मरक्षा भी कय सकैला अउर दोसरे पर वार भी। अपनी मानसिकता के चुअत खपड़ैला के आदमी गाली से फरउटी करैला। अचरज ई हौ कि भीड़–सड़क से लेके एकदम एकांतो में गाली रामबाण औषधि कऽ निःशुल्क काम करैले– एही गुणन के कारण ई मानव स्वभाव कऽ अनिवार्य अंग रहलि हौ। आदिम सभ्यता कै तत्कालीन इतिहास ना मिलैला; नाहीं तऽ लिखित उल्लेख मिलित की सांकेतिक गाली ओह युग में पेड़ चढ़वा के स्वभाव कऽ अनिवार्य अंग रहलि। जइसे–जइसे भौतिक–सामाजिक क्षेत्र से सभ्यता के उदय भइल कुण्ठा (फ्रस्ट्रेशन) कम होत गइलि आ आदमी नागर संस्कार के सांचा में ढलत गइल– गाली साथ छोड़ति गइलि, अंततः फूहर आ अश्लील करार देइके एके बिरादरी से बाहर कइ देहल गयल।

गाली पर अश्लीलता कऽ आरोप एह कारण मढ़ल गयल हौ कि एकर पीठिका (पीढ़ा) सेक्स क मूल प्रवृत्ति होले, जेकरे प्रकाशन कऽ सहज स्वरूप एकान्तिक होला – सार्वजनिक ना। एके सड़क पर उतारल एक प्रकार से कानून तोड़ले एइसन होला – तब कौनो न कौनो दफा लगबै करी। अब विचारणीय ई हौ कि का ई परिभाषा सार्वकालिक हौ? विवाद में कन्या पक्ष से मुखरित गाली सार्वजनिक आ निरावरण सेक्स प्रकाशन वाली होले मगर ऊ बुरी ना लगैले– गुदगुदावैले। जानीला कांहे? एह बदे कि 'गाजीमियां' के 'मुजावर' कऽ गाली असरदार ना होले। नतीजा ई निकरल कि वैज्ञानिक आइन्सटीन के 'सापेक्षवाद' के अनुसार गाली 'सापेक्षवादी' होले।

'गाली' अथवा 'गारी' के प्रत्यय बतावैला कि 1. गाली = गाल के उत्पाद हौ। 'गाल' लोक व्यवहार में 'झूठ' के अर्थ में व्यहहृत होला जइसे– 'का गाल बजावत हउवा?' गाली क नीव अउर दीवार झूठ पर खड़ी रहैले काहें कि जेके गाली में पात्र बनावल जाला ऊ कोसन दूर होला। हो सकैला, का–अक्सर होला कि गाली पात्र के ऊ देखले भी ना होय लेकिन झूठमूठ में गाली देके ऊ अपने के चढ़बाँक 'नादिरशाह' सिद्ध करैला। कुछ लोग मानेले कि 'गाली' के मतलब ऊ जौन मुद्दई के 'गलाय' दे शर्म से। 2. गारी = जेकरे में गार (निचोड़) देवे के गुण होय। गारी से गारी पात्र के शब्द आ संकेत से नीबू एइसन निचोड़ देहले क कोशिश होले। गाली कै उत्पत्ति हीनभावना से होले जौन दुसरे में हीना भावना के इंजेक्शन लगावै कऽ कोशिश करैले। मनोविज्ञान के अनुसार आदमी प्रत्येक क्षण एक विशिष्ट मानसिक

प्रक्षेत्र (सॉइकिल फील्ड) में जियैला, ई प्रक्षेत्र बड़ा चंचल होला। विभिन्न अनुभव अपने उद्दीपन मूल्य (स्टिमूलस वैल्यू) से एके घटावल–बढ़ावल करैला। अगर कही 'घटाव' उत्पन्न भयल त हीन भावना (इन्फीरियॉरिटी काम्प्लेक्स) क गड्ढ़ा बनि जाला। अपने मानसिक संतुलन (सॉइकिक इम्बीलिब्रियम) खातिर तुरंत अधिक शक्तिशाली प्रतिक्रिया करैला। आप लकड़ी में कील ठोंकत हई मगर ऊ बार बार टेढ़ी हो जाति हौ एसे हीन भावना उत्पन्न हो गइलि, तब दूनी ताकत से गरिआवत आप ओके ओही में ठोंकि देहलीं। अगर मानसिक प्रक्षेत्र में सहनशीलता से गड्ढा न बनै देवल जाय तब प्रक्रिया अपने आप रूकि जाई (सेल्फ कन्ट्रोल थिरैपी) गाली क आदत ना बनी। मगर ई 'साधना' आ 'परिस्थिति' कै बात होले। भगवान श्री कृष्ण शिशुपाल कै सौ गाली सहि लेहलैं, मगर एक सौ एकवीं में आत्म नियंत्रण क 'परिस्थिति' ना रहलि– सौ तक 'साधना' से हीनता क गड्ढ़ा बनले से रोकि लेहलैं।

गाली क प्राचीनतम रूप 'असुर' मिलैला। समुद्र मंथन अऽ देवासुर संग्राम से पता चलैला कि 'सुर' असुरन के हेय दृष्टि से देखैं। तब केहू के असुर कहले क सेन्स ई रहल कि ओकरी आनुवंशिकता में राक्षसी मिलावट हौ। द्वापर में द्रौपदी कऽ मर्मबेधी चुभति गाली मशहूरै बाय– 'अन्हरे के अन्हरै पैदा होलैं' कलयुग तऽ खैर कलयुगै हौ। 'अनार्य' 'शठ' 'लंपट' क प्रक्षन्न गाली मुगल काल में 'तुरुक' (एइसनि बहिनी तुरुक हाथे बेचतों– मोगल हाथे बेचतों) 'जोलहा' (धूत कहौ अवधूत कहौ रजापूत कहौ जोलहा....) 'हरामी' (ऐसौ नमक हरामी) पर उतरलि। ब्रिटिश काल में गाली पर अंग्रेजी कऽ मुलम्मा चढ़ि गयल – 'यू स्वाईन, डैम, फूल, नानसेन्स'।

लोक पटल सदा से बंधन मुक्त रहल हौ– कानून कऽ रक्षा बाद में मगर आपन सुरक्षा पहिले। गाली के बड़े विवेक से परंपरा कऽ रूप दे देहल गयल फलतः सामाजिक मान्यता भी देवै के पड़ल – नाजायज भी जायज हो गयल – मसलन – बियाह में गारी, होली में फगुवा – जोगीड़ा अउर कबीर, जीजा–साली–सरहज कै संबंध, साला–बहनोई क रिश्ता, देवर–भौजाई कऽ आपस क गरिऔना संबंध। सामाजिक संतुलन आ बिखराव की दृष्टि से ई बात खटकैले मगर यौन–मनोविज्ञान कै पंडित हैवलॉक एलिस मानैला कि अवदमन (सप्रेशन) कै घातक प्रभाव के कम कइले कै ई हितकर परंपरा हौ। यौन भावना के निर्बन्ध प्रकाशन से मन कै मइल ध ुलि जाले–आदमी पहिले से बेहतर संतुलित हो जाला। अश्लीलता के पर्याय–मान्यता के कारण 'साहित्य' एकर बराव करैला। अश्लीलता कऽ एक कामचलाऊ कसौटी ई हौ कि जौन सभ्य समाज में उल्लेखनीय ना होय, जौन स्कूल–कालेज के पाठ्यक्रम में ना रखल जा सकै मगर साहित्य एसे अछूता ना हौ। कबीर एइसन संत–साहित्यकारो अश्लीलता क उहाँ प्रयोग कइले से ना चूकल हवैं जहाँ कत्थ खातिर ओकर अनिवार्यता हो जाय – अथवा 'उपमा' क सटीक उदाहरण हौ, जइसे–

सूम थैली अस श्वान भग, दोनों एक समान।
घालत में सुख ऊपजै, काढ़त निकसै प्रान।।

(कबीर साखी–काम कौ अंग, पृ.–110, प्रकाशन–कबीर संस्थान, इला. 1996)

उर्दू साहित्य मे शायर 'चिरकीन' गाली कऽ प्रबल समर्थक हो गयल हउवैं। आज कै अनेक यथार्थवादी साहित्यकार गाली के अनिवार्यता के स्वीकारैले। स्व0 राही मासूम रजा अपने कई उपन्यासन में खुलेआम गाली कऽ प्रयोग कइलें हवैं। 'ओस की बूंदे' उपन्यास में निर्भीकता से लिखले हउवँ कि वर्णित समाज कऽ वास्तविक चित्रण बिना गाली–उल्लेख के ना हो सकत। अब्दुल बिसमिल्लाह कऽ उपन्यास 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' बनारस के बुनकरन कै दास्तान हौ, ओमे, जोलहिया गालिन कऽ धड़ल्ले से प्रयोग कयल गयल हौ। फिल्म क्षेत्र में भोजपुरी फिल्म 'पान खाय सैंया हमार' अउर फूलन देवी के ऊपर 'बैंडिट क्वीन' में भी गाली कऽ खूब प्रयोग भयल हौ – सेन्सरशिप के बादो।

सतयुग से कलयुग तक के पटल पर फइललि गाली या गारी क कई रूप बा।

1. धनात्मक गाली – गाली पैटर्न क भइलो पर ई गाली कष्ट न देके सुख देलीं। उदाहरण खातिर प्रिया के 'मान' अवस्था में झटकि–पटकि के कहल– 'चल हट रे खड़ा नटखट, न खोल मोरा घूंघट पलटि के तोहें आज दूंगी गारी रे...' 'हमसे न बोला निरमोहिया बलमुवां...', 'भागि जो बेदर्दी....', 'अरे कसाई! दगाबाज बलमा....' वगैरह। मातृत्व लाड़–दुलार में महतारी अपने लड़िका के कान पकड़ि के कहैले – 'तैं बड़ा बदमाश हउवै... भाग चोरकट्ट।'

2. ऋणात्मक गाली – अपशब्द आ कुभाषा से सनलि ऊ गाली जौन हथियार एइसनि चोट करैं–दुसरे की

मानसिकता के घायल करै अउर अपनी मानसिकता के झूट्ठे संतोष देय।

1. पशु आधृत = कुत्ता, भैंस, बैल, कुकुरिया, सांड़।

2. जाति आधृत = भिखमंगा, बाम्हन, चमार, डोमड़ा, धारिकार कऽ पूत।

3. व्यवसाय आधृत = चोर, धूर्त, ठग, चाई, गिरहकट्ट।

4. रिश्ता आधृत = साला, साली, ससुर।

5. हीनता बोधक = हिंजड़ा, जनखा, रंडी, पतुरिया, भतरखइनी, चांडलिन, कोखजली।

6. प्रचलन आधृत = इ गाली प्रचलन में दूसर रूप धाई लेलीं–

बूड़जली = जलि के चाहे बूड़ि गइले के कामना

लौंड़ी कऽ पूत = दासी पुत्र

च्यूतिया = कम बुद्धिलब्धि वाला, बेवकूफ

गाली क प्रयोग एक तरह क 'कला' हौ। साम–दाम–दण्ड आ विभेद में ई महज विभेदै के ना कुलि में भूमिका कर सकैले– (छूरा) उस्तरा की तरह, जौन हजामत भी बना सकैला अ गला भी रेत सकैला। 'गाली', 'काहे', 'कब', 'कइसे' उपयोग कइल जाय एके कुशल विवेक से जांचि लेवल जाय, नाहीं त एक छिन कै गलती सदियन कऽ सजा दे देई। समाज में एइसन बहुत मर्द–औरत मिलैलैं जौन सस्ती लोकप्रियता आ ध्यान खींचे खातिर 'गाली' के तकिया कलाम अपनावैलें। उनके हर बात में अश्लीलता कऽ दुर्गन्ध आवैले। एइसन लोग लेट्रिन कऽ फँसल कमोड मतिन होलैं जौन गंदगियै उलटि के बहिरावैला। स्वभाव से लज्जालु मगर वाकपटुता में सिद्ध नारी समाज लोकगीतन अथवा कथन में प्रकारांतर शैली कऽ गाली विवेक से प्रगट करैला। गोरखपुर से एक बारात आजमगढ़ आइल रहै। कन्या पक्ष के दीवार पर गेरू से लिखल रहै–

रामपुर में हाथी बिकाले, सीतापुर में घोड़ा।
गोरखपुर में बहिनी बिकालीं, रुपया में दुइ जोड़ा।

एक सोहर में ननद भउजाई क बातचीत देखीं–

.... केकरे संगे भउजी सुतलू, होरिलवा बड़ सुन्नर हो?
सुतलीं तऽ सुतलीं हम अपने बलम संग
सपने में देखीं ननदोइया तऽ होरिलवा बड़ सुन्नर हो?

कुछ अउर दिव्य प्रकारांतर प्रयोग–

तोरी बोलिया सुनै कोतवाल तूती बोलैले
ऊँचे चउतरा बइठँय 'कवन' राम, करै बहिनियन क मोल
बड़की कऽ मागै नौ सो रुपइया, छोटकी क मोल अनमोल
तूती बोलैले–
....
मोरी भउजी, तोरी बहिनियां कऽ हउवै दुई तल्ला मकान
अगवां तऽ हउवै बनारस कै थाना, पिछवारे हउवै डीह बाबा क थान
उपरां कचउड़ी गली क कचउड़ी निचवां त हउवै सफाचट्ट मैदान
मोरी भउजी....

में गाली आ प्रतीकात्मक प्रयोग में भाँड़ बड़ा कुशल रहै। उनहन के शैली में गाली आ अश्लीलता के परोसल एक तरह से जरूरी रहल मगर डर ई रहै कि अगर सीधे सीधे बकबका देब त सिर कलम करा देवल जाई। त ऊ फल, तरकारी, अनाज आ कुछ कूट दु अरथी शब्दन से वाक्चातुर्य देखा के अश्लीलता के परिवेश रचि देंय, लोग हंसि के टालि देव – बानगी देखीं –

भांड़– अरे चेलवा! नवाब अजीमुल्ला ना लउकत हउवैं, घरे हउवैं का?

बेवकूफ चेला – ऊ घरवां करत होइहैं?

भांड़– बेगम चक्की में गेंहू डालति होइहैं आ ऊ बेगम की चक्की में खूंटी डालत होइहैं?

बेवकूफ चेला – अच्छा समुझि गइलीं ऊ बेगम की चक्की में खूंटी डालत होइहैं।

– चेला के कथन पर लोग हँसि देंय। बेवकूफ चेला कऽ कथन के उलटल पुलटल स्वाभाविक हौ, का कयल जा सकैला?

तबो सभ्य समाज में ऋणात्मक गाली ओही तरे अभिशाप हौ, जइसे शराब आ सेक्स कऽ खुला प्रदर्शन। बाकिर ई अफसोस कऽ बात हौ कि शराब आ सेक्स के सियासती छूट मिललिं जाति हौ। जौन शराब गाली पैदा कइले कऽ मशीन हौ ऊ गुमटी गुमटी में बिकैला। महिला वर्ग में कपड़ा कऽ अगिला–पिछला हिस्सा क्षेत्रफल में लगातार सिकुड़ल जात हौ। फिल्म – टी0वी0 में अंग प्रर्दशन क टेम्पो हाई हौ, गीतन में उघाड़पन हौ – एइसने में खाली 'गाली' के गाली देत के मन सकुचा जात हौ।

– 178, एलवल, आजमगढ़ ("पाती", मार्च, 2002)

उगे रे मोर सुगना, माटी में सोनवा!

✍ भगवती प्रसाद द्विवेदी

आजु जबकि देश के अन्नदाता किसान आ किसानी प जोरदार बहस हो रहल बा, हम अपना गांव में खेत–बधार के हरियरी का बीचे ठाढ़ होके चारू ओरि टुकुर–टुकुर ताकत बानीं। छोट–छोट पउधा अबोध लरिकन लेखा किलकारी मारत बाड़न स आ मन उमगि–उमगि उठत बा उन्हनीं के निहारिके। सोझा किछु साग–खोंटनी मेहरारू निहुरि–निहुरि के साग खोंटत बाड़ी स आ अपना डांड़ में बान्हल धोकरी में ताबड़तोर धइले जात बाड़ी स। जब से सरेह में बूंट–मटर के साग खाए लाएक हो जाला, ओकर खोंटाई होखे लागेला। फेरु त साग–भात आउर साग–लिट्टी लोग बड़ा चाव से खाला। बूंट–मटर के फुनुगी के खोंटइला से जब मेह बरिसेला, त पउधा बढ़ला का संगें–संगें फइलहूं लागेलन स आ झोंप के झोंप ढेंढ़ी निकलेली स। बस फरे–फर। फेरु त जमिके कचरी खा, कल्हारि के घुघुनी बनावऽ भा आगि लहकाके होरहा लगावऽ!

कतना लहरात बाड़न स ई हरियर–हरियर आल्हर पउधा! हर पल लुटावे के चाहत।

देबे आ खिआवे के भाव। सेवे से नू मेवा मिलेला। सचहूं देबे आ लुटावे में जवन सुख बा, संतोख बा, ऊ लेबे आ पावे में कहां! किसान किसानी–खेती का जरिए अब ले इहे नू करत आइल बा।

विचार के पटरा

खोजी निगाह दोसरा ओरि मुड़ि जात बाड़ी स। सुन्नर के टिउबेल से पानी मोरी के टेढ़–मेढ़ डंड़ार से होके हवलदार काका के खेत में बहत बा। हवलदार काका अपना भतीजा का संगें पटउवा गहूं में पानी पटावे में लवसान बाड़े। किछु बकुला आ कउवा खेत के बहत पानी में निकलेवाला कीड़ा–मकोड़ा के धर दबोचे का फिराक में मंडरात बाड़न स। तलहीं अचके में मोरी एक जगहा से टूटि जात बिया आ पानी उन्हुका खेत से निकलिके दोसरा के खेत में बहे लागल बा। हवलदार काका एकाएक हड़बड़ाके चिहुंकि उठत बाड़न आ काठ के एगो पटरा उठाके धउरकिए प मोरी बन्न करे खातिर लवलीन हो जात बाड़न। हमरो मन के मोरी टूटि जात बिया, बाकिर एने–ओने बहत पानी के रोके खातिर हम विचार के पटरा नइखीं लगा पावत।

कुइआं के बेंग

ओने से निगाह हटाके दूरि–दूरि ले चितवत बानीं।रेलवे लाइन के सामने दरियाव में बटेसर 'छिओराम–छिओराम' के सुरलहरी छेड़त पाट प पटकि–पटकि के कपड़ा धोवत बाड़न। उहवें दरियाव के पानी में किछु चरवाह गाइयो–भइंसि धोवत बाड़न स। घाट पर कवनो राही दिशा–मैदान होके हाथ मांजत बा।

तबे पच्छिम से 'पी–पी–पी' के चीख–पुकार मचावत कवनो स्पेशल रेलगाड़ी आके रुकि जात बिया। बुझिला केहू वैकुम काटि देले बा। गांव के दू–तीन गो नवही फाइल लेले उतरत बाड़न स। खेतन में एने–ओने ठाढ़ गंवई लरिका बुढ़िया आन्हीं नियर गाड़ी का ओरि भागत बाड़न स आ उहंवा पहुंचते टरेन के पौदान प टंगाके खिलखिलात एक–दोसरा के निहारत बाड़न स। किछु त सहमल–सहमल निचहीं ठाढ़ होके जात्री लोगन का ओरि आंखि फारि–फारिके चितवत बाड़न स, ठीक ओह तरी , जइसे कवनो सिनेमा देखत होखऽ स। देश–दुनिया से बेखबर ई

गंवई नवनिहाल कुइआं के बेंगे नू बाड़न स।

बतकूचन

'का सोचत बाड़ऽ, बबुआ?' हवलदार काका खइनी बनावत हमरा बगल में आके खाड़ हो जात बाड़न। ढेर देरी ले पानी में ठाढ़ रहला के कारन उन्हुका हाथ–गोड़ के चाम सिकुरि गइल बा। गमछी के गुलबंद बनाके ऊ कान के ढंपले बाड़न आ तेल में सउनाइल मोटिया के चीकट चद्दर कान्ह प झूलत बिया।

'किछु ना, काका!' हम हड़बड़ी में हकलाए लागत बानीं। फेरु सहज होखे के कोशिश में कहत बानीं, 'चलीं, घरहीं चलबि नू?'

'ना हो! अबहीं हम फराकित होखे जाइबि।'

हवलदार काका खइनी के फटकिके ओठ का बीचे दबावत दरियाव का ओरि बढ़ि जात बाड़न।बाकिर जात–जात ई कहल नइखन भुलात,श्तोहार बतकूचन हमरा बड़ा नीक लागेला,मगर का कहीं, गांव उझंख हो गइल। अब ना केहू नीमन–जबून कहेवाला बा,ना केहू सुनेवाला। हम त बस खेते–बधार में रहेलीं, ए से मन हरियर रहेला।'

हरियर–हरियर महादेव

बूढ़ पुरनिया सुरुजदेव लोहूलोहान होके पच्छिम में ठहरि गइल बाड़न, बाकिर घाम के चेहरा के ललाई अबहुंओं मन में ललक

जगावत बिया। किछु मजूर–किसान माथ प घासि के बोझा लेले अपना–अपना घर का ओरि बढ़त बाड़न। कई गो घसिगढ़िन त अबहुंओं खुरपी से खेत सोहे आ घासि गढ़े में मगन बाड़ी। खरिहान में लइका किरकेट खेले में मशगूल बाड़न स। बाकिर पहिलेवाला कुकुहा–के,चिक्का–कबड्डी आ गुल्ली–डंटा अब कहाँ! त्बहूँ कतना जीवंतता बा इहवाँ। चरवाही से छूटिके रँभात इस्कुलिहा लरिकन–अस गांव का ओरि लवटत गाइयन के झुंड। उछलत–कूदत बाल गोपालन के ओठ से हरसिंगार नियर झरत हंसी–ठिठोली। किलकारी मारत, चहचहात खोंता का ओरि लवटत बकुला, कउवा आउर कबूतरन के जोड़ा।

धोवल कपड़ा गदहा पर लादिके घर के तरफ लवटत बटेसर भाई। बाकिर हमरा एह हरियरी का बीच से जाए के इचिको मन नइखे करत। चारू ओरि इहवां से उहवां ले हरियर–हरियर महादेव साक्षात विराजमान बाड़न। मन करत बा कि एह हरियरी में लोटिआए लागीं आ पुक्का फारिके टांसी मारत गा उठीं – उगे रे मोर सुगना, माटी में सोनवा!

जहाज के पंछी

अपना सोच के सोनहुला जंजीर के तार–तार करत हमहूं अब सरेह से घर का ओरि लवटत बानीं।मड़ई–टाटी से उठत ध ुआं हवा का संगें अटखेली करत बाड़न स। आंतर में विचारन के अटखेली अबहुंओं जारी बा। कबो किशोर मन गांव से नगर–महानगर का ओरि भागत रहे,भागहूं के परल, बाकिर अब ओह मिरिग मरीचिका से दूर हरदम–हरदम खातिर गांवें लवटल चाहत बा– 'जइसे उड़ि जहाज के पंछी, फेरु जहाज पर आवे!' गंवई मन के दोसरा जगह सुख कहां!

चिरई के जियरा उदास

राह में हुलास चाचा के दुआर प एगो गौरैया के जोड़ा देखत बानीं। गौरैया अपना बुतरू के ठोर में दाना खिआवत बिया। पांखि जामते ई बचवा फुर्र–से उड़ि जाई आ दूर देस जाके आपन दोसर खोंता बना ली। फेरु दूनों के कइसन नेह–नाता! हम ओह गौरैए से अपना गांव के तुलना करत बानीं।

कतना असीम लाड़–पियार, सनेह–दुलार देके ई गांव आपन सोन्ह गमक भरल माटी में पालि–पोसिके सेयान कइलस आ फेरु हम नगर–महानगर के भूल–भुलैया में अइसन भटकलीं कि गांव के ऊ पियार–दुलारो भुला बइठलीं। गांव अंकवारी भेंट करे खातिर हमार बाट जोहत रहल। अब लवटलो बानीं, त मशीन बनिके। फेरु मशीन का संगें अदिमी के का रिश्ता!

हीरामन के दुआर प कउड़ का चारू ओरि बइठल लोग किसिम–किसिम के बतकही करत बा। हीरामन के हाथ के हुक्का के गुड़गुड़ी हंसी–ठट्ठा में डूबि गइल बा। परभू बतकही के नया अध्याय खोलि देले बाड़े।

फेरु ऊ अचके एगो फिलिमी धुन छेड़ि देत बाड़े– 'सोनवा के पिंजड़ा में बंद भइले हाय राम, चिरई के जियरा उदास!'

टुटही मड़इया सुन्नर लागे

गीत के ई कड़ी हमरा मन के बरछी–अस बेधत बा। हम भितरे–भीतर छटपटा उठत बानीं। ऊ नगर हमरा सोना के पिंजड़ा लागल बा, जहवां हम एगो चिरई लेखा अपना गांव खातिर उदास होके तड़फड़ात रहींले।

दुआर प परल बंसखट का तरफ बढ़ते कुकुर पोंछि हिलाके हमार अगुआनी करत बा। नाद पर खात गाइ के गरदांव में बान्हल घंटी के टुनटुन के मीठ संगीत तन–मन में रचे–बसे लागत बा। बगइचा से कोइलर के बेमौसमी कूक जइसे हमरा गांवें अइला के खुशहाली में गूंजि उठत बा। खूंटा में बन्हाइल बछरू दूध पिए का लालसा में रंभा रहल बा–'अम्मा!'

फेरु त हम अपना के रोकि नइखीं पावत आ शहरीपन के ओढ़ल लबादा के अपना अस्तित्व से परे फेंकिके लोकगीत के एगो कड़ी गुनगुनाए लागत बानीं–

'तोहरी महलिया के ऊंची अटरिया से डर लागे,/मोरी टुटही मड़इयासुन्नर लागे !

– भगवती प्रसाद द्विवेदी शकुन्तला भवन, सीताशरण लेन, मीठापुर, पटना–800 001(बिहार) 9430600958

'बाकी चइत के झकोर जनि माँगऽ'

✍ बलभद्र

पातर पुलुईं प ललछाँहीं के बीचे मूस के बच्चा के कान अस झाँकत कोंपर तनी थरथराइल। अलसाइल पुरवइया पलखत पावते झकझोर देलस। एही हिल–डोल में ऊ कोंपर उझुक के झट से बहरी झँकलस। सगरी एगो हड़बड़ी लउकल। ओकर मन हड़बड़ा गइल। हड़बड़ी के मनगँवे छिपावे के कोशिश में चेहरा तमतमा गइल। खेत–बधार कान पतले रहे। एगो खबर बाते–बाते उड़ल कि किसान आ मजूर अपना अँगुरी प हँसुआ के दाँत अजमावत बाड़न। मसुरी–खेंसारी झनझना चलल बा। तीसी अपना माथ प औकात भ मोटरी उठवले दूर के मुसाफिर अस मंजिल प पहुँच के तलमला रहल बा। रहर के ढेंढ़ी के खनक पछेआ के पीठे–पीठे सगरो छिछिया रहल बा। जौ आ गेहुम के बाल पियरा चलल बा। हवा के हलुको झोंका से ओकर बाल आपस में लड़ रहल बा। ओकर दाना धरती के गोदी में गिर रहल बा। किसान के आँख के चमक ऊ पुलुईं से देख लेलस। देख लेलस धरती के तेयारी। किसान आ मजूरा के देह के फुर्ती आ मन के हुलास सब देख लेलस। देखते गइल।

भोरहीं निकले के बा, चद्दर लेके निकलीं। बाकी जानीं कि भोरे के जरूरत दुपहरिया के आफत। रात के बेओढ़ना के सुत के त देखीं। बारह बजे के बाद हाड़ हिला देवे वाला जाड़। भितरी मच्छड़ के मारे सुतल मोहाल। मच्छड़दानी कहँवा बा एहिजा! बड़लो बा त देहे–देहे कहाँ। बहरी सूतीं त बारह बजे के बाद गम्भीर ओढ़ना ओढीं। सावधानी जरूरी, लपरवाहियो थोर घरी वाहे–वाह! गँवे–गँवे सब बदल जाला। मनो–मिजाज बिना कुछ कहले–सुनले आपरूपे बदल जाला। एह बदलाव के के ना महसूसे! इहे महसूसल त चइत के भाव ह मोर भाई, छाव ह आपन।

चाव से भोजन ना, भूख में कमी आ जाला। ईया एकरा के चइतार कहत रहली। मंट्ठा के खूबे बखानत रहली। तनिएसा खाईं, लोटा भ पानी से पचाईं। दुपहरिया में तनी अस्थिराह बइठ के त देखीं। नीन के झोंका सम्भरले ना सम्भराला। ओने आम आ महुआ के आपन साइत–संजोग। संगे–संगे कोइलर के अलगे धुमाध।

अतना एके दिन में थोरहीं भइल! ई सब त साल भ के तेयारी के फल ह। बस बुझाला ना। कुछ ना कुछ हरदमे होत रहेला। पूस के संगे माघ आ माघ के संगे फागुन। जाड़ा के भितरे भीतर फागुन के तेयारी। शीतलहरी फगुनहटा हो गइल। सब कुछ कतना बदल गइल। खेत–खरिहान, गाँछ–बिरिछ, आदमी–जन, पशु–परानी। माल–मवेशी आपन रोआँ झार देलन स। सगरो एगो रंग चढ़ गइल। लइकन के उमिर क्लास फान गइल। आ बूढ़वन के जवानी के ओर पलट गइल– 'भर फागुन बुढ़वा देवर लागे।' जे जहँवे बा, मगन बा। एकरा खातिर केकरा का करे के परल? मौसम के मिजाज त अपना ढंग से बदलल आ आदमियो के। हाथ–गोड़ सोझिआवत फागुन बोल बोलत, तान तुरत, सुनत–गुनत, रंगत–रंगात एक दिन बितियो गइल।

तिथि–संवत के मोताबिक फागुन साल के आखिर में आवेला। आखिर में त आवेला, बाकी आखिर अस लागेला का? अतना रंग, अतना उमंग। अपने में शुरुआत के साइत सँगोरत,

छींटत–बाँटत, कपारे चढ़त, नाचत, गावत फागुन बीत जाला चइत से हाथ–माथ मिलावत। फगुआ पुरनका के बिदा करेला आ नयका खातिर जमीन रचेला। चइत पीठ थपथपा के फागुन के माथे विजय के तगमा बान्हेला आ फागुन जिमवारी थमावेला चइत के हाथे– आगे के, अगिला के, दुनिया–जहान के। फगुआ आपन रंग देखावेला आ चइता ओह रंग के चंग प चढ़ा के नया ढंग देवेला। सबके सुमिर के, सबके साथे लेके।

लगले तक सबके कंठ प फगुआ रहे। अबीर उड़त रहे। अब ई का कि 'ए हो रामा'। सभे त गावत–गावत थाक चलल रहे तले लीं ना– 'कंठे सुरवा होखऽ ना सहइया ए रामा।' 'आहो लाला' प 'ए रामा' पिठियाठोक हावी हो गइल। नया–पुरान सरमेर हो गइल। फगुए प ताल ना टूटल–गोल ना उठल। सृष्टि में हमेशा नया–पुरान होत रहेला। रात के बारह बजे के बाद फगुआ गावत लोग चइता गावे लागल। आधा रात के बाद उहे साज–समाज नया ढंग से गहगहाये लागल। ढोल, झाल, डंफ, किलाट आ छिटिका प छटके लागल।

फगुआ आ चइता गाँव–गिराँव के ह, सीजनल आ समूह के। गाँव के लोग के लगे आपन काम–धाम बा। खेती–गिरहती आ अपना किसिम के बेचौनी बा। एहिजा जतने काम बा, ओतने बइठकी बा। काम–धाम के बीचे भा बइठकी में गीत–गवनई के जरिए गाँव के लोग आपन मन बझावेला। दुःख–सुख बतियावेला, गावे–सुनावेला। काम के थकइनी मेटावेला। एह में गवइया–बजवइया के संगे सुनवइयो अनघे रहेलन।

परंपरागत चइता में लमहर दास्तान ना चलेला। बस दू लाइन भा तीन लाइन आ इहे देर तक। चइता के संगे चइती गवाला जवना के लचका कहल जाला। लचका चइता से लमहर होले। चइता के जोरदार झलकूटन के बीच–बीच में लचका के लचकदार लचक। ई ठेका प चलेला। साज–बाज सब कंट्रोल में। चइता तीन बार चढ़ेला आ तीन बार उतरेला। आ अंत में हुहकार बान्हत– 'शंकर भगवान की जय।'

चइता के धुन जो पहिले धरात रहे त उतरले ना उतरत रहे। भूख–पियास आ रात–दिन के कवनो ताप ना रहत रहे। लोग कोस–कोस भ के दूरी गपे में नाप देत रहे। कबो कतो दू गोला त कबो तीन गोला। एके गाँव के दूगो गोल के बीचे, कबो दू गाँव के बीचे त कबो जिला–जिला में भिड़ंत। सीमा–सीवान रोपउवल। कबो–कबो त कपार फोरउवलो तक पहुँच जात रहे।

गाँव के आपन कुछ रीति–नीति होले। एहिजा सभे के जरूरत सबसे परेला, काहे कि एहिजा जादे लोग अभाव में रहेला। एहिजा के लोग देबियो–देवता प विश्वास तनी जादहीं करेला, एहू से कि किसानी करेला। खेती अबो एक लेखा सरग–आसरे बा। कब बूनी परी, कब सूखा, कब बाढ़, आन्ही–पानी– नइखे ठीक। कवनो तरह के हरस–बिस्माद आ जय–पराजय के पीछे लोग दबी–देवता के हाथ मानेला। सीमित सुविधा–साधन के चलते लोग के मन हमेशा संकाइले रहेला। लोग राम–राम भा मालिक–मालिक गोहरावत रहेला। हर काम के शुरू करे के पहिले लोग देबी–देवता के सुमिरन करेला। खेती के काम शुरू करे से पहिले लोग समहुत करत रहे। धरती के पूजा करत रहे। अदरा नछत्तर में। लोग देबी–देवता के संगे 'ठंइयो–भुंइयो' के सुमिरत रहे। ई सुमिरन चइता में एह तरे बा–

'सुमिरी ले ठँइया सुमिरी माता भुँइया ए रामा एही ठँइया, आज चइत हम गाइब रामा एही ठँइया।'

ठँइया–भुँइया के बाद शंकर, गनेस आ कुल्हि दिशा के सुमिर के आगे बढ़ल जाला। सुमिरन के बाद दू–चार ताल राम आ कृष्ण से जुड़ल चइता चलेला। एकरा बाद प्रेम–सिंगार के, मान–मनुहार के। चइता में प्रेम के मरजाद के संगे–संगे प्रेम के जतना ले रूप आ भंगिमा होला, सबके अभिव्यक्ति बा। मर्यादित के संगे बेपरदो। सब अतना वेग से जिनगी के भीतर के होला कि कुछो अखरेला ना। गोर–गोर बाँह में 'हरियर–हरियर चूड़ी' आ लिलार के 'ईंगुर के बूना' सगरो गवाला–

'गोरी–गोरी बँहिया में हरी–हरी चूड़िया ए रामा लिलरा प, सोभेला ईंगुरा के बूनवा ए रामा लिलरा प।'

एहिजा जिनगी अपना रफ्तार में रहेले। अपनो मन के बात केहू प लगा के, फेंक के कहल–सुनल जाला। राध ा–किसन त सुमिरन के बहाना होलन। उनकर नाँव ले आपन बात गवाला। खेते–बधारी कतने राधा होली, मरद के संगे काम–धाम करत। कतने किसन होलन हर–हेंगा करत। सभे के आपन–आपन मन–मिजाज होला। ना त बध ार में अचके केनियो से 'पिया परदेसे देवर घरवा लरिका ए रामा, केकरा से' ना सुनाइत। खूबी के बात बा कि एहिजा के किसन अर्जुन के सखा ना होके राधा प्यारी के होलन–

'कहेलें कन्हइया सुनऽ हो प्यारी रधिका ए रामा तोरा–मोरा, भेंट भइलें मधुबनवा ए रामा तोरा–मोरा।'

आपस में बात–विचार, टोका–टाकी, रोका–रोकी, हँसी–मजाक के एह जगहा प छिप–छिपाव त बा, बाकी ऊ चल ना पावे। एक–दूसरा के देखे–देखावे के खूबे मोका रहेला। खेत–बधार, तीज–तेवहार, काज–परोजन एह मोका के अउर सुगुम बना देला। सम्बन्धन के लेके एह मेहनती समाज में कुंठा बहुते कम रहेला। एह लोग

के लेवा आ गुदरी बड़–बड़कवन के सोफा आ गद्दा के मोकबिला करेला। भूसा के पाम्हा से एहिजा के लोग के कवनो तरह के परहेज ना रहेला। एह पाम्हा में मेहनती किसान आ मजूर के मन के सहजता आ सुंदरता देखल जा सकेला। आँख के ऊपर बरौनी प पाम्हा, माथ के बार प पाम्हा। सब एहिजा ठोकल–ठेठावल होला। एहिजा छुछमाही कम चलेला। चलेला त चिन्हा जाला, लोग से कहा जाला। प्रेमी अपना प्रेमिका के 'तंदूर' में ना झोंकेला। बाकी फुहड़ई एहिजो दखल जमा रहल बा। बाजार आ 'सब कुछ बिकाऊ बा' के एह समय में सब डँवाडोल बा। एहिजा सिगरेट धरा के घन्टन प्रेमिका के इंतजार के जगह नइखे। छिप–छिपा के मिले आ हँसी–ठिठोली के जगह त बा, संगे–संगे टोकाहूँ के पुरहर जगह बा। मजाके–मजाक में टोक बा। ननद–भउजाई के ई बात देखल जाए–

'हम तोसे पूछीले ननदी सुलोचनी ए रामा तोरा पिठिया, धूरिया ई कहँवा से लागल ए रामा तोरे पिठिया।'

भउजाई के बात प ननद के जबाब–

'बाबा के दुअरवा आरे नाचेला नेटुअवा ए रामा भितिया सटले, धूरिया ई पिठिया में लागल ए रामा भितिया सटले।'

चइता में सवालो–जबाब चलेला। एक आदमी एक ताल त दोसर आदमी दोसरका ताल। एके गोल के आदमी दूनो बेर गावेलें। सवाल जे करेला उहो जबाब देवे वाला के साथ देला। आ जबाबो देवे वाला सवाल करे वाला के साथ देला। ऊपर वाला चइता के एकर उदाहरण मानल जा सकेला।

चइता गावत गोल के बीच से एगो मेहीं आ चनकदार आवाज गूँजत रहेला। एह के 'टाँसी' कहाला। हम अपना बगल गाँव उड़ियान टोला के शिवजी महतो के टाँसी नइखी भुला सकत। ई टाँसी लागेला जइसे गोल के माथ के ऊपर से आकाशे खिल रहल बा। चइता के बीच–बीच में 'लचका' हम सुनले बानी। लचका के कवनो शास्त्रीय समझ त नइखे हमरा लगे, बाकी अतना जरूर बुझाइल कि ई चइता अस झझकार के ना गवाला–

'चुनरी रंगा द पिया चोलिया सिया द आरी–आरी गोटवा लगा द बलमुआ, चइता हो मासे।'

तासा, नगाड़ा, ढोलक, झाल, हुडुका के बोल प पाल तनले जोगिन। जोगिन मतलब नाचेवाला। वाली ना। दूगो–तीन गो जोगिन। अस छाव धरत, भाव बनावत कि का कहल जाए। गवनई जब पूरा उठान प होले त ई नाचेवालू लोगो साड़ी के पल्लू लहरावत कमाल क देला। ई नाच देखे खातिर मेहरारुओ कुल्हि जेने–तेने बइठल रहेली। केहू पुअरा के गाला के आड़ से त केहू खिड़की–जंगला से देखेला। एगो आपन सरस आ दिलचस्प छाप रहे चइता के। चइता कटनी के दन (फिकिर) से शुरू होके दनदनात दवनी–मिसनी करत–धरत आपन चढ़ती–चढ़ाँत, उतरती–उतराँत गँवा–गुजार देला। ई गँवावल एक लेखा बटोरल ह। फागुन लुटावे के ह आ चइता लूटे के। लूटे के मतलब बटोरे के, जोगावे के। फागुन जात–जात सब उड़ा देल चाहेला। का करी अपना लगे राख के। मन के सब उछाह सभे में बाँट देला। चइता अइसे करो त कइसे। ओकरा माथ प साल के बारहो महीना बा, पूरा साल बा। फागुन सबके ह। चइत आपन–आपन। आपन–आपन से शुरू होके सबकर ह। चइत अपना में फागुन के तेयारी के प्रथम चरण ह।

फागुन के आपन ताव आ चइत के आपन। जे परदेस गइल बा ऊ फगुआ में जदी ना आ सकल त चइत में जरूर आई। बहरा के कमाई घरे ले आई आ घरे आके खेत के अनाज काट–दाँइ सँगोरी। फगुआ में जदी आ गइलें त चइती के कटिया–पिटिया बेकइले ना जइहें। फागुन के फगुनहटा के आपन मोल बा आ चइत के झकोर के आपन। फगुनहटा से तनिको कम नइखे ई झकोर। बलुक ओह से बढ़िए के बा। तबे त–

'जवन–जवन मँगबू तवन हम दे देब बाकी नयनवा के लोर जनि माँगऽ

कहबू त सँउसे फगुनहटा लुटा देब बाकी चइत के झकोर जनि माँगऽ।'

'नयन के लोर' आ 'चइत के झकोर' के महत्व समझल जरूरी बा। लोर आ झकोर गँवा के ऊ खाली नइखन भइल चाहत। लोर आ झकोर में गति बा, जीवन बा। जुड़ाव के तड़प आ आवेग बा। ई तड़प आ आवेग अपनन से आ अपना जमीन से जुड़े के लेके बा। आदमी के संवेदना के मूल पूँजी ह ई लोर आ झकोर।

चइता में आदमी के संगे–संगे पेड़–पालो, काँट–कुश, बेइल, कोइल–सब बा। संजोग के साथे वियोग बा। जिद बा आ जिद के मरजादो बा। गाँछ–बिरिछ, काँट–कुश कुल्हि पतइयन से लदल रहेला। बनबेइल झाड़ी–झूटी में लहसल रहेले आ उज्जर–उज्जर फूल के जरिए गमक बिखरले रहेले। ई महक केकर मन ना मोह ली। एक जानी लोभा के गइली फूल लोढ़े। हाथ बढ़वली तले झाड़ी के कवनो काँट गड़ गइल। चइत के एह सुगन्धित छल के ऊ अंदाज ना लगा पवली। भौंरन से ना सिखली ऊ कला कि फूल के कइसे आपन बनावल जा सकेला। चइता एहू के सधले बा–

'काँटवा गड़ेला जिउवा साले ए रामा ना जइबो बगिया केई निकलिहें मोरा अँगुरी से काँटवा

केई हरि लीहें मोर दरदिया ए रामा ना जइबो बगिया।'

कॉंट के गड़ल, जिउ के सालल आ दरद हरे के आत्मीय पुकार एहिजा सहजे सुनाई परत बा। एह पुकार के ई भरोसा बा कि 'सँइया मोर हरिहें दरदिया ए रामा।'

दुःख–दरद भुलावे के होला। बाकी जब ऊ सुख देवे लागे त जोगवे जोग हो जाला। खेते–बधारे, बागे–बगइचा, मेला–ठेला के नखरा, हँसी–बात कबो दोसरो रूप ले लेला। दिन त धावते–धूपत बीत जाला, बाकी रात धनिया के संगे। कबो–कबो सेज प के हँसी–मजाक के बीचे रूसा–फूली हो जाला। सेज प रेर हो जाला–

'सूतल रहलीं बलमू संगे सेजिया ए रामा बाते–बाते, बढ़ि गइलें पियवा से रेरिया ए रामा बाते–बाते।'

एहिजा सेज के बात त होला, बाकी सेज ऊ कइसन होला, केहू से छिपल थोड़े बा। किसान के घर आ बिस्तर के अनुमान केकरा ना होई। बाकी सेज के कल्पना बा। सेज प के बात हो सकेला कुछ के फरमाइश होखे। हो सकेला घर के हालात के होखे। बाल–बच्चन के कपड़ा, खान–पान के होखे। मुँह से निकलल बात लाग गइल ठाँव–कुठाँव–

'मुँह में से निकलेला बोलिया कुबोलिया ए रामा ओही बोलिये, पियवा भइलें फकीरवा ए रामा ओही बोलिये।'

बस चले त खोज–खबर में ऊ जोगिन बन जास। पाँख लाग जाए त चिरंई। अपना बोली प भारी अफसोस। एक देने एह तरह के बात त दोसर देने एह बात के फिकिर कि ऊ कइसे होइहें। आ जइतें कसहूँ त फेर कबो कतो जाए ना देती।

चइत में कोइलर बोलेले। कब बोली कवनो ठीक ना। दिन–दुपहरिया, रात–बिरात। कोइलर के बोली से लगन शुरू हो जाला। मेहरारू लोग बिआह के रसम के मोका प अपना गीतन में कोइलर के गोहरावेली। साइत मटकोड़ के गीत में–

'कवना बने रहलू ए कोइलर कवना बने जालू
केकरा दुअरिया ए कोइलर उछहत जालू।'

कोइलर के बोली केकरा ना भावे! बाकी ओह मेहरारू के ई बोली ना सुहाए जेकर पिया परदेस होलें। आधी रात के कोइलर के बोली से ओह वियोगिनी के नीन टूट–उचट जाला। नीन त ओकरो टूट–उचट जाला जेकर पिया संगे होलन। खाली ओकरे ना बलुक ओकर बलम जी के भी नीन टूट जाला। अपना से बेसी बलम जी के नीन टुटला के चलते ऊ दुखी होली आ कोइलर के सबक सिखावे के बात कहेली–

'सुतल बलमु के जगावे हो रामा, तोरी मीठी बोलिया होखे द बिहान कोइलर खोंतवा उजरबो
जरी से कटइबो घनी बगिया ए रामा तोरी मीठी बोलिया।'

देखे में त मन एगो लागेला, बाकी एगो होला ना। एगो मन के भीतर कतने मन होला। कबो, कत्तो सुतावेला–कबो, कत्तो जगावेला। कोइलर के जवन बोली कबो भावेला ऊहे कबो कटावन लागेला। कबो कोइलर के बोली सुन पिया के जाग जाए के डर सतावेला त कबो रसे–रसे पुरवइया के चलते नीन में मातल पिया के ना जगला के चलते पुरवइया जनमिया के बइरी कहाले–

'बहे पुरवइया जनमिया के बइरी ए रामा नइखे जागत
नइखे जागत पियवा अभागा ए रामा नइखे जागत।'

ना जगला के चलते ऊ अभागा कहालें। कमाल के ई बात बा। नीन के चलते ऊ जिनगी के एगो खास सुख से वंचित रह जालें। अतना प्रेम–सिंगार, हाव–भाव चइता–गीतन में मिल जाला।

फगुआ–चइता पुरुष–गीत ह। बाकी एह में मेहरारुअन के रूप–गुन, बात–विचार, नाज–नखरा खूबे जगह पवले बा। ई दूनो गीत महीना भ गावल जाला। आजकाल एकर रूप बदल गइल बा। सिस्टम में जब बदलाव आवेला त गीतो–गवनई बदलत जाले। एक जगह बइठ के गावे–बजावे के अवसर अब समेटात जा रहल बा। आ इहो साँच बा कि बदलाव के रोकल नामुमकिन बा। फगुआ–चइता के पारंपरिक रूप अब नइखे रह गइल आ ना रह पाई। तब जरूरी बा कि एह गीतन के इकट्ठा कइल जाए। कर्मेंदु शिशिर जी एह दिशा में नीमन काम कइले बाड़न।

फगुआ–चइता के जे अपना मेहनत–माटी से एगो मतलब देवेला– जेकरा मटमइल चुनरी में सृष्टि के सरस गीत बा– तबला आ तासा बोल बोलेला– जे देश–दुनिया के अन्न देला–अपना रंग में रंग देवे के कूबत राखेला– जे मौसम के मतलब बूझेला– एह सोगहग समाज के हालत आज ठीक नइखे। एह समाज के साथे क्रूर मजाक कइल जा रहल बा। ई बेवस्था एह समाज के हित के अनदेखा कर रहल बिया। आपन उपेक्षा कब ले केहू सही! ई हिस्सा खड़ा हो रहल बा। आपन हक–अधिकार खातिर आवाज उठा रहल बा। फागुन के रंग आ चइत के झकोर बेकार ना जाई। धूर से गुलाल तक के हउवे ई सफर। गावे से ललकारे तक के। एहिजा पुरवइयो ललकारे ले, पछेओ झकोरेला।

पुलुईं प के कोंपर बार–बार झकझोरात रहल। ओकर ललछौंहीं हरियरी में बदलत गइल। ऊ आपन पूरा धज ध लेलस। चइत अब बइसाख भ गइल। बइसाख हो जाई जेठ। देस–दुनिया के मतलब त ई बदलाव ह। ई बदलाव बहुते संगीतात्मक बा।

(समकालीन भोजपुरी साहित्य, जून 1998)

भाव, अभाव आ भोजपुरिया समाज

प्रमोद कुमार तिवारी

अमीर भा संपन्न शब्द कहते जादातर लोग के मन में बड़ मकान, गाड़ी, झकझक कपड़ा आदि के छवि बने लागेला। धीरे धीरे हमनी के एगो अइसन संस्कृति के ओर बढ़ गइल बानीं जा कि चिक्कन सड़क आ शीशा जड़ल बड़का बड़का मॉल से सभ्यता आ जिनगी के नापे लागल बानीं जा। का सांचो अमीरी के रिश्ता खाली धन से होखेला? का सांचो पइसा रूपिया हमनी के जिनगी के सबसे बड़ मूल्य रह गइल बा? जेकरा लागे सब कुछ होखे बाकिर पइसा ना होखे ओकरा के 'अभाव' में मानल जाला। का सांचो 'भाव' के मतलब खाली पइसा रूपी भाव होखेला?

अभी हाले में भारत सरकार के नीति आयोग के एगो रिपोर्ट आइल हऽ जवना में बतावल गइल हऽ कि बिहार देश के सबसे गरीब राज्य हऽ, उत्तर प्रदेश आ झारखंड एह मामिला में बिहार से एकदम सटले बा। देश के सबसे बड़ राज्य यूपी के आंकड़ा के अगर इलाका के अनुसार बांटे के सुविधा होखत तऽ पता चल जाइत कि बहुत सारा मामिला में पश्चिमी यूपी आ पूर्वी यूपी में जमीन आसमान के अंतर बा। कुल मिला के भोजपुरिया इलाका के देश के सबसे अभाव वाला क्षेत्र कहल जा सकेला। कहे के जरूरत नइखे कि एह रिपोर्ट के बहुत शोर बा जवन कुछ दिन तक भा चुनाव तक रही आ ओकरा बाद लोग एकरा के भुला जाई। एह रिपोर्ट के तमाम पक्ष पऽ आ भोजपुरिया समाज के एह बदहाली पऽ नीमन ढंग से विचार होखे के चाहीं। एह इलाका से होखेवाला पलायन पऽ आ सामाजिक राजनीतिक अपसंस्कृति पऽ खाली विचारे ना बहस होखे के चाही आ एह हालात के बदले के तरीका खोजे के चाही। बाकिर एह लेख में हम कुछ अउर मुद्दा पऽ बात कइल चाहत बानीं जवना के चर्चा ना के बराबर होखेला।

ढेर पुरान बात नइखे, कुछ दशक पहिले तक अदिमी के पहचान ओकरा विचार, ओकरा व्यवहार, समाज खातिर ओकर योगदान आदि से होत रहे। जादातर बड़कवा लोग जीवन मूल्य के सोझा पइसा के सबसे कम महत्व देत रहे। बाकिर विकास के अइसन आन्ही आइल कि हमनी के हर चीज के खाली पइसा से तोले लागल बानीं जा। त्योहार, परिवार, रिश्ता, मूल्य, संगीत, प्रकृति से लगाव आदि के जिनगी में का भूमिका होला एह पर विचार करे के आदत धीरे धीरे छूटत जा रहल बा। इहां खाली एगो पक्ष के उदाहरण ले रहल बानीं। हर साल देश में आत्महत्या करेवाला लोगन के सूची जारी होखेला। नीचे दीहल चित्र में 2019 के आत्महत्या करेवाला लोगन के राज्यवार सूची दीहल गइल बा।

एह सूची के तनी ध्यान से देखीं, आ देश के सबसे गरीब बिहार राज्य पऽ नजर डालीं। भारत में एक लाख लोगन पऽ आत्महत्या करेवाला लोगन के राष्ट्रीय औसत साल 2020 में 11.3 रहे। बिहार के ई औसत 0.5 रहे। उत्तर प्रदेश के 2.4 रहे। आ हमरा के पूरा विश्वास बा कि अगर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के नोएडा, मेरठ ओरी के बसल अमीर लोगन

के हटा दीहल जाव तऽ ई औसत अउरी कम हो जाई। सवाल ई बा कि देश के सबसे गरीब लोग मन से अतना मजबूत काहें बा आ सबसे विकसित आ तथाकथित सभ्य लोग अतना कमजोर काहें बा कि सीधे आपन जाने के दुश्मन बन जात बा। एह मुद्दा पऽ गंभीरता से विचार कइला पऽ संस्कृति आ अपसंस्कृति के अंतर समझ में आ जाई।

हर समाज के एगो जीवन दर्शन होखेला। समय बदलला आ नौकरी पइसा आदि अइला के बाद अदिमी के संस्कृति बदले ले बाकिर अगर ऊ अपना समाज आ माटी से जुड़ल रहेला तऽ ओकर मूल सत्व बांचल रहेला।

एगो सामान्य समझ अइसन हो गइल बा कि हमनी के उत्सवधर्मिता आ सौंदर्यो के संबंध आर्थिक संपन्नता आ तथाकथित पद, नौकरी आदि के सफलता से जोड़ लेत बानीं सं। लोगन के मन में ई बात बइठ गइल बा कि जेकरा लगे पइसा बा, जेकरा लगे समय बा उहे उत्सव मनावेला, बाकिर सच्चाई आ हाल के अनुभव एकरा उल्टा जा रहल बा। खासतौर से भोजपुरिया समाज एकर बड़ उदाहरण प्रस्तुत करत बा। दिवाली, छठ से ले के बियाह गवना के तमाम मौका पऽ जवना तरीका से निम्न मध्यवर्ग आ निम्नआय वर्ग के लोग एह सब के महत्व देबेला आ जवना हुलास से एकरा में शामिल होखेला, दूसर समाजन में ओकर जोड़ ना मिले। पारिवारिक आ सामाजिक रिश्ता के जवना तन्मयता से गरीब लोग निभावेले ऊ एह बात के प्रमाण बा कि आर्थिक सुख से सामाजिक सुख के ना कीनल जा सके। एकदम खराब हालत में रहे वाला लोग, जइसे तइसे दू चार रुपया बचावे वाला लोग जवना ढंग से कष्ट सह के, ट्रेन–बस में लटकत आ हर प्रकार के जोखिम उठावत अपना गांवे–घरे चहुंपेले ऊ बहुत कुछ संकेत कर रहल बा। ई सही बा कि एहू लोग में आपस में छोट–छोट बात के ले के भरपूर राग द्वेष रहेला, बहुत नीचला दर्जा के खींचतान चलत रहेला बाकि एक तरह के मरजाद के ई लोग निभावेला। संबंध आ रिश्ता के जइसन सम्मान इहां लउकेला ऊ दुर्लभ बा। पीठ पीछे सास के जमके गरियावे वाली दुलहिन के सोझा जब ओकर सास भा चचिया सास आ जाली तऽ चार हाली गोड़ लगिला के बादे कवनो दूसर बात होखेला। भले पटिदारी में जमीन के ले के केस चलत होखे बाकिर बियाह गवना भा मरनी में बड़ भाई के सम्मान देबहीं के पड़ेला। एह भाव के सीधा संबंध भोजपुरिया जीवन दर्शन से जुड़ल बा। भागम भाग वाला जिंनगी जीये वाला लोग, पइसा के बल पऽ सब कुछ के ठुकरावे वाला लोग धीरे धीरे प्रकृति आ माटी से कटत जा रहल बा। ई लोग अतना बिजी हो जात बा कि मोबाइल आ टीवी खातिर तऽ इनका लगे समय होखेला बाकिर पुरान रिश्ता खातिर भा परब त्यौहार खातिर इनका लगे एकदमे समय ना होखे। आजकल एगो नया रोग स्टेटस के लागल बा जवना में जे असल में ना होखेला उहे देखावे के भरपूर कोशिश करेला। अपना के बड़कवा साबित करे के चाहेला। ई सामान्य अनुभव बा कि शहर में चार कमरा वाला बड़ घर में रहेवाला आदमी के लगे गांव से आइल कवनो दूर के रिश्तेदार के जगह ना मिले बाकिर ओही शहर में एक कमरा में रहे वाला कवनो गरीब व्यक्ति के घर में ओकरा के आसरा मिल जाला।

असल में एह प्रवृत्ति के संबंध आमदनी आ घर दुआर से बेसी संस्कृति आ जीवन दर्शन से जुड़ल बा। भोजपुरिया संस्कृति तब तक बांचल रही जब तक ऊ प्रकृति से, पारिवारिक संबंध से आ रिश्ता से अपना के जोड़ले रही। छठ आदि त्योहार एह सब के बचावे के एगो सीधा उतजोग हऽ जवना पऽ बाजार आ स्टेटस आपन कब्जा जमावे लागल बा। कोई चाहे तऽ बरत पूजा करेवाला एह समाज के पिछड़ा कह सकत बा, दकियानूसी कह सकत बा बाकिर एह पिछड़ापन के सबसे खास बात ई बा कि आजुओ ई समाज अपना जमीन से जुड़ल बा। एही से सबसे मुश्किल समय में एकरा के कहीं ना कहीं से सहारा मिल जाला। बहुत छोट छोट बात पऽ अमीर लोग जहां फंसरी लगा लेला आ नस काट लेबेला उहें तीन दिन उपास के हालत होखला पऽ आ बहुत दुर्दिन होखला के बादो एह समाज के लोग आत्महत्या के बारे में ना सोचेला।

भोजपुरिया जीवन दर्शन में ई बात घुट्टी जइसन पिलावल जाला कि चार लोग से बतिया के गा बजा के अपना दुख के भुलाए के आदत सीख लऽ। जिनगी के रोग दुख के देवी देवता के सिरे डाल के, कुछ भाग्य के लेखा मान के आगे बढ़े के रस्ता खोज लऽ। काली माई आ डीह माई में आस्था आ विश्वास के कुछ सीमा हो सकेला बाकिर बहुत निराशा आ दुख के समय में एगो ताकत देबे में एह आस्था के जवन भूमिका होला ओकरो पऽ विचार होखे के चाही। बड़ से बड़ रोग दुख में मनवती मान के जवन ताकत एह समाज के मेहरारू लोग अर्जित करेली ओकरा के खाली पिछड़ापन कह के ना नकारल जा सके।

नयका संस्कृति के भरपूर आक्रमण के बादो एह समाज

में रिश्ता आ संबंध खातिर समय बांचल बा जवना के संजोए के जरूरत बा आ भावी पीढ़ी तक चहुंपावे के जरूरत बा। एकरा के विसंगतिए कहल जाई कि जेकरा लगे फुर्सत के समय बा ऊ 20 बार देखल सिनेमा के सीन देखे में भा कहीं दूर देश बइठल लोगन के साथे सोशल मीडिया पऽ बतियावे में आपन समय खर्च कर रहल बाड़े। अइसन लोग के व्यस्तता अतना बढ़ जाले कि अपनहीं परिवार के बुजुर्ग आ बचवन खातिर समय निकालल जुलुम हो जाला। सुख अगर खाली पइसे से मिल जाइत तऽ विकसित देश के आ भारते के अमीर राज्य के लोग अतना अवसाद आ दुख में ना रहत लोग आ उहां एतना आत्महत्या ना होखत। अमेरिका से हर साल ई खबर आवेला कि कवनो सनकी बंदूक ले के अनजान लोग पऽ तड़तड़ गोली चला दीहलस। ऊपर जवन आंकड़ा दीहल गइल बा कि भारत के सबसे गरीब राज्यन में से एगो बिहार आ उत्तर प्रदेश में आत्महत्या के दर बहुत कम बा ओकर बहुत बड़ा श्रेय एह समाज के रिश्ता निभावे के आदत के आ एकरा भीतर बसल उत्सव धर्मिता के देबे के चाहीं। गरीबो से गरीब व्यक्ति चाहे गोबरउरा के जनम छोड़ावे के नांव पऽ सही बाकिर उत्सव मनावेला।

ई खाली संजोग नइखे कि आजुओ भोजपुरी में प्रकृति के रस में रचल—पगल बहुत सारा गीत कविता मिल जाला। भोजपुरी संस्कृति के सूत्र रउआ उहां तलाश सकेनीं जहां आजुओ एकादशी, दूज, तीज आ चउथ से जिनगी संचालित होखेले जहां गंगा नहाए आ कवनो माई के चउरा प जाए खातिर लमहर तइयारी होखेला आ 10—20 कोस लोग पैदले नाप देबेला। जहां मेहरारू लोग कठोर व्रत करेली आ प्रकृति से जुड़ेली, चंदा मामा आ सुरूज देव के अरती उतारेली।

हमरा के आनंद संधिदूत जी के एगो कविता इयाद आ रहल बिया—

आवे बसन्त दुअरिया मगन मन नाचले गोरिया।

मधुरे पवन रस बेनियाँ डोलावे नदिया लहरि दरपनवाँ देखावे

धरती पेन्हावेले चुनरिया मगन मन नाचेले गोरिया।

नन्ही मुटी चिरई बजावेले पिपिहरी केहू पीटे थारी लोटा केहू पीटे थपरी

पिपरा बजावेला खजरिया मगन मन नाचले गोरिया।

प्रकृति के मानवीकरण आ मानव के प्रकृतिकरण के प्रक्रिया लगातार चलत रहे के चाही। अइसन रचना सब से लगातार जुड़ल जाव, प्रकृति आ संस्कृति के संजोवल जाव, आर्थिक स्थिति के बदले के कोशिश होखे के चाहीं, बाकिर जवन बा ओकरो के बचावे के जरूरत बा। धने रूपी भाव खाली भाव ना होखेला, हम लगातार देख रहल बानीं कि मर्सिडिज पऽ चढ़ल आ बड़का बड़का महल में रहेवाला लोग बहुत अभाव में रह रहल बा। उनुका परिवार के लोग बंद कमरा में बुढ़ापा आ बेमारी से खतम हो जा रहल बा भा खुद के खतम कऽ लेत बा आ जब पड़ोसी तक लाश के बदबू चहुंपत बा तऽ पता चलत बा कि भाव के केतना कमी से ऊ लोग जूझ रहल बा। अभियो भोजपुरिया समाज के लगे एह धन के कमी नइखे बाकिर ऊ बहुत तेजी से ओरा रहल बा जवना के बचावे के जरूरत बा।

सून अँगना बा

अशोक कुमार तिवारी

गइलू कहँवा पिंजरवा के छोड़ चिरई।
सून अँगना बा अँखिया सलोर चिरई।।

देखि के कवनो नवागत धधइलू,
उछरि - उछरि प्रीत के गीत गइलू - १
रहुवे नर्तन करत पोरे-पोर चिरई।

बीतल रएनियाँ, फरिछ भोर आइल
चहकल सुनिके ई आगम बुझाइल - १
अब त भइल होई बहरी अँजोर चिरई।

कइसे खुली नींद आ के अब जगाई,
रतिया अ दिनवा फरक के बताई-१
उठे मनवा में दुख के हिलोर चिरई।

–सूर्यभानपुर, लालगंज, बलिया

संस्कार संस्कृति अउर आजु के परिवेश

✍ जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

संस्कार देवभाषा संस्कृत से निकसल शब्द हवे। इहे संस्कार संस्कृति के सिरजना के नेव के ईटा हवे। मन,बतकही,करम अउर सरीर के शुद्ध कइला का संगे अपना जिनगी के आदत अउर मन के भावन के सजावे आ सँवारे वाला किछु अउर ना बलुक संस्कारे ह। अगर एही बतकही के कवनो अउर ढंग से कइल जाव त 'संस्कार अतमा के सजावे आ सँवारे वाला आ मनई के धरम–करम के बढ़न्ती के संहतिया हवे।' दोसरा जनम के मानल जाउ त ई कहल गलत न होखी कि जब अतमा एगो सरीर छोड़िके दोसर सरीर धरे ले त पहिलका जनम के परभाव (नीमन भा बाउर) अतमा के संगही दोसरका सरीर में पहुँच जाला। आजु के समय में एह बाति के लो नीमन त नहिये बूझी, बाकि कतने घटनन में अइसन कुछ कई बेर भेंटाइल बा, जेकरा चलते दोसर जनम के बाति के नकारलों नाही जा सकेला। संस्कार के उदेस पहिलका जनम के बाउर प्रभावन के गवें–गवें बिलवा के नीमन प्रभावन के बढ़ावल हवे।

संस्कार के दू गो रूप होला– पहिला भीतरी रूप आ दोसरा बहरी रूप। बहरी रूप के हमनी के रीति रेवाजन का रूप में जानल–मानल जाला। एक ओर रीति–रेवाजन के ईमानदारी का संगे निबाहल हमनी के भीतरी सोच–समझ के मजगुती देत मन के तोष देवेला आ दोसरका ओरी हमनी के समाजिक जिनगी के निखारत सभ्यता के सिरजना में लमहर जोगदान देवेला।हिन्दू धरम में जनम से मउवत तलक के बतलावत ढंग से राखे ला 16 गो संस्कार बतावल गइल बा। जवन एगो सभ्य समाज खाति बहुते जरूरी बा। ओह सोरहो संस्कारन के एह नाँवन से जानल जाला, जवन नीचे दीहल गइल बा–

(1) गरभधान संस्कार, (2) पुंसवन संस्कार, (3) सीमन्तोन्नयन संस्कार, (4) जातकर्म संस्कार, (5) नामकरण संस्कार, (6) निष्क्रमण संस्कार, (7) अन्नप्राशन संस्कार, (8) मुंडन संस्कार, (9) कर्णवेधन संस्कार, (10) विद्यारंभ संस्कार, (11) उपनयन संस्कार, (12) वेदारंभ संस्कार, (13) केशांत संस्कार, (14) सम्वर्तन संस्कार, (15) विवाह संस्कार और 16) अन्त्येष्टि संस्कार।

आजु के एह बदलत समय में हमनी के अपनही में सिकुर रहल बानी सन। ई बाति सभे मालूम बा कि आजु समेत पलिवार के बाति बहुते पुरान हो चुकल बा। मने समेत परिवार (संयुक्त परिवार) एह घरी समाज से गदहा के सिंघ लेखा बिला चुकल बा। अइसना में समाज के बनावट–बुनावट के नीमन होखला के बाति कलपने नु बुझाई। हमनी के अपने पुरखा–पुरनियन के बनाबल आ जोगावल रेवाजन के छोड़ चुकल बानी सन, तबो हमनी के एगो सभ अउर सुसंस्कृत समाज के आस लगवले बानी सन,जवन अब संभव नइखे। आजु के समाज में बढ़ रहल अपराध अउर बाउर चिजुइयन के जड़, हमनी क अपना जड़ से दूर होखल हवे। आजु हमनी के अपने अधिकार के बात त करेली सन बाकि अपना करनी के भुला गइल बानी सन। हमनी

के अपने बपंसी पर आपन अधिकार त जतावेनी सन बाकि मतारी–बाप के खातिर अपना करनी के पूरा ना करेली सन। जवना का चलते रोज रोज नया खुलत वृद्धाश्रम का रूप में देखल जा सकेला।

आजु के समय के हाल देखिके त अइसने लागेला कि अदमीयत मरि चुकल बाटे। हमनी के मनई, समाज आ देश के समान का रूप में बना दीहले बानी सन। जेकरा चलते सभे ओकरा के दुहे में लागल बा, बाकिर सभे कबों न कबों, कतों न कतों एही कुल्हि के शिकार बनि रहल बा। जवन संस्कार हमनी के भीतरि दया,धरम, अपनइत के पहिलका पाठ पढ़ावत रहे, सिखावत रहे, ओहसे हमनी के दूरी हमनी भीतरि एह कुल्हि भावन के मुआ चुकल बा। जेकरा चलते रोज–रोज परिस्थिति बाउर से बाउर हो रहल बानी सन। धिरज अउर माफ कइल आजु के लोगिन का बीचे से बिला चुकल बा। जरी–मनी बातिन में एक दोसरा से अझुराइल आ आपन संतुलन खोवल आदत बनि चुकल बा।

अइसन कुल्हि बातिन के जामल पलिवारन के टूटन आ समाज के करनिहार न होखल बा। आजु के माई–बाबू लो अपना लइकन का संगे समय नइखे बितावत आ घर में बूढ़ –पुरनिया बाचल नइखे, मने एकल पलिवार अपना चारो– ओर खुदे गरहा खोदि रहल बा।आजु घर के बूढ़–पुरनिया लो जेकरा के लइकन के संहत मिले के चाहत रहे, उ लो घर में अकेल पड़ल बा भा वृद्धाश्रम में पड़ल बा। नवकी तकनीक लइकन के अपना लोगन दूर करि रहल बा। आजु के लइका लो फेसबुक,व्हाट्सएप, मोबाइल गेम में अझुराइल बा, ओहू लो के लागता कि बड़ लोगिन के संग नइखे भावत। मने समय अउर अलगाव सभेले लमहर कारन बा जवना का चलते बेगार संस्कार के समाज के सिरजना हो रहल बा। जहवाँ अपनइत, नेह–नाता के कवनो मतलब नइखे। दादा–दादी, नाना–नानी के कहनी अब पुरान समय के बाति हो चुकल बा। आजु के लइका लो चाचा, काका, मामा, बुआ, मौसी जइसन रिस्तन के पहिचानतो नइखे, ओह लो के पहुँच अंकले तक ले बा। जहवाँ अंकल एगो चलताउ बोलहटा के सबद भर बा, उहवाँ हमनी के सामाजिक समरसता के भा अपनइत बातो कइल जाव त कइसे?

आजु जहवाँ लइकन के पढ़ाई–लिखाई हो रहल बा, उ कुल्हि संस्था पइसा बनावे के कारखाना भर बा। नैतिक शिक्षा के कवनो मजगुत उपाय ओहनी लोगिन का लगे नइखे भा होइये ना सकेला। काहें से कि उ कुल्हि संस्था खुदे नैतिकता से ढेर लामे बा। मने ओह कुल्हि संस्थन में संस्कार हइये नइखे। भारतीय संस्कृति में संस्कार सबद के अरथ बाउर चीजु के नीमन बनावल होखेला। अब अइसना में जे खुदे बाउर बा, उ दोसरा के नीमन कइसे बना सकेला।

संस्कार के सोझ अरथ ई बाटे–केहुओ के सुधारल भा ओकर कमी–बेसी दूर क के कामजोग बनावल। कवनो सधारन भा बिगरल चीजु के विशेष क्रिया से उत्तम बनावले ओकर संस्कार बाटे।शास्त्रो में कहल गइल बाटे–

ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णास्त्वाद्यास्त्रयो द्विजाः।
निषेकाद्याः श्मशानान्तास्तेषां वै मन्त्रतः क्रियाः।।

मनई के व्यक्तित्व के सिरजना में संस्कार के लमहर जोगदान होला। संसकारे से नीमन भा बाउर के समझे–बूझ जामेले। संस्कार का चलते मनई आपन करम करेला। फेरु ओकरा कइल करम से संस्कार के सिरजना होला। मने जेकर जइसन संस्कार होखी, उ वोइसने करम करी। मनई के करमे ओकर परसिद्धि आ कुपरसिद्धि सिरजेला।

आजु के समाज में संस्कार ओह जगहा ठाढ़ बाटे जहवाँ से एक ओरी कुइयाँ बा आ दोसरा ओरी खांई। बड़–छोट, आपन–पराया अउर मनई–मनई का बीचे खांई अतना बढ़ चुकल बाटे कि ओकरा पाटल बहुते मोसकिल बाटे। संस्कार के बाउर स्थिति का चलते भारत के संस्कृति के चमक धूमिल पड़ गइल बाटे। जवना भारतीय संस्कृति पर हरमेसा सभे के गरब होत रहे , आजु समाज में जामल विकृतियन का चलते अक्सरहाँ सरम उठावे के पड़ेला। सुरक्षा अउर मेहरारून के सनमान के हालत बहुते बाउर हो चुकल बाटे। सरकारी मशीनरी बेमसरफ के भइल जा रहल बानी सन। रिस्तन के अस्मिता रोजे टूट रहल बाटे। सम्बन्धन के दायरा अतना सिकुर चुकल बाटे कि ओहमें सुई के नोक भर जगह नइखे बाचल। पछिमी सभ्यता के असर बहुते बाउर ढंग से पसर रहल बाटे कि आपुसो के आत्मीय रिसतन के लो नीमन से नइखे देखत। जवना रिस्तन पर कबों समाज के गरब होत रहे, ओहनी पर आजु किछु बोले का पहिले सोचे के पड़ता। स्वतन्त्रता के नाँव पर जिस्मगोई के लंगटे नाच हो रहल बाटे। नगर बर अउर नगर बधु लो आजु सड़के पर खुल्लम–खुल्ला कुकरम में लागल देखा रहल बा। नवहा लो आपन रसता से कबे के भटक चुकल बाटे भा बाउर रसता पकड़ि चुकल

बाटे। सामाजिक रिस्ता अब देहि के रिसता में बदल चुकल बाटे। धन के भुखाइल मनई के आँखि पर अइसन मोटहन चसमा चढ़ चुकल बाटे कि सब किछु देखला का बादो उ अन्हराइल बाटे।

आजु के समय में संस्कार आ समाजिक सरोकार नदी के दू गो किनार लेखा देखाई पड़ रहल बाटे। गम्हिराहे से सोचल जाव त इहे लागेला कि एकरा सोरी में पलिवार के बिखरावे भेंटाला। आजु के नवहा पलिवार के रिस्तन से कवनो लगाव नइखे राखत ओकरा पाछे मतारी–बाप के ओह लोगन से दूरी बा। जवना पलिवार के मरद आ मेहरारू दूनों नोकरी में बाड़न,उहाँ के हाल ढेर बाउर बाटे, छोट लइकन के सम्हारे–खेलावे खातिर दाई भा नोकर आपन धरम नीमन से नइखे निभावत, मतारी–बाप भीरी समय बाचल नइखी कि उ लोग जरिको धियान दे पावस । अइसन हाल में पलल–बढ़ल लइका कबों रिस्तन के महातिम समझिए नइखे सकत। । अइसना में नवकी पउध जवन सोझा आ रहल बा,ओहमें बुराइन के गाँज बाटे। ओकरा नीमन रहता से भटके–बिलाये के उमेद ढेर बाटे। जवना बचवन के उनुका मतारी बाप के नेह–दुलार नइखे भेंटल,उनुका कतों अउर जरिको नेह का मिलते ओह ओर झुक जालें। अगर अबो अइसन कुल्हि बातिन पर धियान ना दीहल गइल त बृद्धाश्रमन के बाढ़ अवहीं के बा। फेर जानवर आ मनई के ब्योहार में अंतर कइल मोसकिल हो जाई। मने मनई फिरो ओही आदिम जुग में चहुंप जाई, जहवाँ से ओकरा निकसे में कई एक सदी लागल बा। एह बातिन से केहुओ अनजान नइखे कि जानवरन में संग–साथ बस देहि के रिस्तन तक के होला, फेरु उहे हाल मानुस समाजो के हो जाई।

रिसी–मुनि लो 'आ पुरुखा–पुरनिया लो' जवन जवन संस्कार गढ़ले रहलें, उ कवनो नीमन समाज के अनुशासन का संगे आगु ले जाये के समरथ रहे। ओह कुल्हि संस्कार आ सरोकारन से दूरी अपना समाज खातिर खतरा से भरल बाटे। जवना के थोर–ढेर परिणाम अजुवो हमनी के भुगत रहल बानी सन। कतने अवसाद आ बेमारी आजु के लोगन के सरीर के आपन घर बना चुकल बाड़ी सन, जवना का चलते मनई अक्सरुवा के जिनगी जिये के मजबूर हो चुकल बाटे। आजु चाहिके भा अनचहले हमनी सभन समेत पलिवार आ कुलीन समाज के जरूरत नीमन से महसूस रहल बानी सन। हमरा त इहे बुझाता कि एहु घरी न जागल जाई त अपना हाथे किछुओ ना भेंटाई। मने अजुवो फेर से संस्कारन के नई जिनगी दीहल जरूरी हो गइल बा, ना त एगो सभ्य समाज के कल्पनो कइल बेमानिये हो जाई।

संपादक, भोजपुरी साहित्य सरिता

जान गइल बा सँउसे गाँव

सत्य नारायण

अइसन बहकल-बहकल मौसम
महकल-महकल छाँव
सुनऽ अचक्के लौट न जाए
मौसम उल्टे पाँव ।

ल, केहू रख गइल मुँड़ेरा प
सूरुज के फूल
जाने कतना रंग रंगल बा
घर अँगना के धूल
अइसन बरजोरी
पुरवइया छेड़े ठाँव-कुठाँव ।

जाने का हो गइल कि मन
उड़ चलल हवा के साथ
रह-रह बाँध रहल बा अब त
मेंहदी वाला हाथ
अब त माँग रहल बा सपना
भूलल-बिसरल दाँव ।

चूक उमिर के होखे भा
कँचगर साँसन के भूल
बात-बात में बात आज त
पकड़ चुकल बा तूल
सुनऽ सुहागिन
अब त जान गइल बा सँउसे गाँव ।

बतकुच्चन के पाती

✍ डा0 ओमप्रकाश सिंह

बात से बात निकलेला आ बात निकले ला कई बेर कवनो बात के जरुरतो ना होला. आ बात त बाते ह, जब निकलिए जाला त अकसरहाँ बहुत दूरले जाला भा बहुत दूर ले जाला. अबले जवन कहनी ह तवना के एक बेर फेरु धेयान से पढ़ी. हो सकेला कि कुछ नया मतलब निकल जाव. पकड़ऽ मत, जाए द, आ पकड़ऽ, मत जाए द में अन्तर बस अतने से हो जाला कि रउआ साँस कहाँ लेत बानी, कहाँ थथमत बानी. एही तरह निकलेला आ निकले ला के मतलब में फरक आ जाई, दूरले जाई आ दूर ले जाई में फरक आ जाई. भोजपुरी में ई फरक अउरी देखे में आवेला. शायद अपना सेकूलर आदत से मजबूर एह भाषा पर उर्दू के कुछ असर आ गइल बा. उरदुओ में कई बेर मात्रा ना डालल जाव आ दरद, दुरद, दरदी पढ़े वाला के तय करे के पड़ेला कि लिखेवाला का लिखले बा.

बात के एगो अउर खासियत होला कि बात चलत रहे, ओकर लर ना टूटे त बात चलत रहेला. एक बेर लर टूट गइल त फेर से बात शुरु होखे में जमानो लाग सकेला. बात बनावे वाला के बतबनवा कहल जा सकेला बाकिर बतबनवा कबो बात बना ना सके. काहे कि बात बने खातिर ओकरा पीछे समर्पण होखे के चाहीं, मकसद भा मतलब का हिसाब से बात बनवला से काम ना चल पावे.

एक जमाना रहुवे जब कोलकाता के हिन्दी अखबार सन्मार्ग में हर हफ्ता बतकुच्चन के एगो कड़ी प्रकाशित होत रहुवे आ ओह चलते हर हफ्ता एगो कड़ी लिखियो देत रहीं. बाकिर कुछ अइसन भइल कि बात बिगड़ गइल आ ओहिजा छपल बन्द हो गइल. फेर त जंगल में मोर नाचल, के देखल ? आ लर टूटल त टूट गइल. जेकरा चलते टूटल उहो ना रहल आ माशूका का फेर में बीबी से बात बन्द हो गइल.

पिछला पखवारा द्विवेदी जी के आदेश मिलल कि पाती खातिर बतकुच्चन के एगो कड़ी चाहीं त लिखे बइठ गइनी. बात बनी कि ना से नइखी जानत. बात नीक लागी कि बेबात हो जाई इहो नइखीं जानत. भोजपुरी के दिशाबोध के पत्रिका का रुप में जानल जाए वाला पाती में छपे वाली रचना ओह जोग होखे के चाहीं, एकरो एगो मानसिक दबाव आइए जाला. अब त रउए सभे तय करब कि जोग लायक बा कि ना आ कि संपादक जी के जोग से जोग बन गइल बा.

बात पर याद आवत बा कि करीब एक साल से देश के किसानन का नाम पर पंजाब के आढ़तियन के आन्दोलल एह जिद पर चलल आवत बा कि बात ना करब बाकिर सरकार हमनी के हर बात मान लेव. ऊ बात जायज बा कि ना एहसे कवनो मतलब नइखे. बतिया पंच के रही कि ना बाकिर खूंटवा ओहिजे रही जहाँ हमनी का ठोक चुकल बानी. किसानन के आन्दोलन पर गोली चलावे लाला गोल–गिरोहो के मुखिया–मुखियाइन आ उनकर लरछूतो सभ एकरा पीछे लाग गइले सँ. काहे कि आपन हर दाँव बेदाँव होखत देख लिहला का बाद ओहनी का सोझा कवनो दोसर राहो नइखे.

छप्पन इँची सीना के दावा करे वाला मोदी के पता ना का भइल कि एक दिन अचके उठलन आ एलान कर दिहलन कि किसानी से जुड़ल तीनो कानून वापस कइल जात बा. बाकिर अपने जिद पर टिकल टिकैत के बुझाइल कि ऊँट पहाड़ का नीचे आ गइल बा. अब ओकरा से आपन हर जिद मनवावल जा सकेला. मकसद किसानन से ना त कबो रहुवे ना आगहूं रहे वाला बा. मकसद त इहे बा कि किसान आढ़तियन का चंगुल से बाहर ना निकल सकसु आ अपना करम के कोसत अपना कर्म से विमुख हो जासु. आ टिकैत एलान कइले बाड़न कि आन्दोलन तबले वापस ना होखी जबले बबुआ के बिआह नइखे हो जात.

से देख लीं. सरकार बात बनावे के सोचलसि बाकिर बात बेहाथ होखत लउकत बा. जबले ई रचना छपी तबले ऊँट कवना करवट बइठी एकर थाह लगावल हमरा बस में नइखे काहे कि बड़ बड़ जने दहाइल जासु आ गदहा थाहे कतना पानी. मौका देखि अब इहो कहाए लागल बा कि लगले हाथ पुरनका नोटो चालू कर देसु मोदी काहे कि बहुते लोग का लगे ऊ नोट आजु ले पड़ल बा. बात के लहर देखे के होखे त कवनो सोशल मीडिया पर चल जाईं. अइसन अइसन बात पढ़े के मिल जाई कि माथ चकरा जाई. हाथी आ सात गो अन्हरा वाला कहानी साँच हो जाई. केहू साँप बताई, केहू सूप, त केहू खंभा. किसानी से जुऽड़ल कानून वापस लिहला पर टिकैत के इहे कहना रहल कि अगर अतना आसानी से ई हो गइल त एकरा पाछा जरुर कवनो ना कवनो दोसर बात बा आ जबले ऊ बात सामने नइखे आ जात तबले एह बात पर कवनो बात कहल ठीक ना रही. एक आ एक कतना होखी के जबाब में चाल्हाक लोग चकरा जाला कि एक आ एक जरुर एगारहे होखी काहें कि सभे जानत बा कि एक आ एक मिल के दू होला. आ जब सवाल पूछल गइल बा त जरुरे एकरा पीछे गहराई बा. निफिकिर आदमी अन्हार राति में राह पर पड़ल साँपो के रसरी मानत लसारत निकल जाई आ फिकिरमंद रसरिओ के साँप मानत धीरे से सँसर जाए में आपन खैर मनाई.

आ हम लसारत निकल पइनी कि सँसरत निकल गइनी, एकर फैसला संपादक जी करी हें. उहाँ के चरण–धूलि मिल गइल त ई तय करे के जिमेवारी रउआ पाठकन के हो जाई. तब रउरा सभे तय करब कि लसारल जाव कि इनका के गँवे से सँसर लिहे दीहल जाव।

– संपादक : 'अँजोरिया डाट काम'

गीत

थिरकत बसंत के

भगवती प्रसाद द्विवेदी

अपना आगी-काठी सुनुगब
धन्हकब, जरत रहब
हम दियना-बाती-अन्हार में
हरदम बरत रहब

राउर दिन सोना अइसन
चानी अइसन रतिया
हमरा खातिर परीकथा-अस
बाटे ई बतिया
आयातित थिरकन वसंत के
महसूसीं-भोगीं
नवपल्लव खातिर पतझर बनि
हम त झरत रहब ।

कोइलिया के कुहू-कुहू में
बिरहिन के बानी
चाहे वासंती बयार में
सिहरन रोमानी
मद-पराग महुआ के
अमरइया के छलकाई
नव संवत खातिर खुद के
सम्मत पर धरत रहब ।

अब आनन्द रही ना
रउरा द्वारे, ई सुनि लीं
नया कबीरा गाइ-गाइ
हम जगरम करत रहब ।

पछिला समय के
कुछ चर्चित कहानी

खण्ड - चार

- **बड़प्पन** / चौ0 कन्हैया प्रसाद सिंह
- **आजादी के दुसरकी लड़ाई** / रामनाथ पांडेय
- **चउका बइठल महादेव**/ डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव
- **आगि** / अशोक द्विवेदी
- **थाती** / नीरज सिंह
- **अकथ कहानी** / तुषारकान्त उपाध्याय
- **नौ हाथ के पगहा** / कृष्ण कुमार

बड़प्पन

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

गनिया टमटम उडवले चल जात रहे। टमटम ढकर–ढकर करत रहे। ओकर पार्ट–पुरजा बुझात रहे कि अलग–अलग हो जाई। सड़कि उभड़–खाभड़ रहे। टमटम पर बइठल डाक्टर मने–मन अनसात रहन। डांटे के मन करत रहे बाकिर चुप रह जात रहने। जानत रहन कि एकर पुरान आदत ह। कत हूँ रोगी देखे जाये के होखी तब असहीं करेला। कुछ कहला पर कहे लागी, डाक्टर बाबू रउआ बाहर के हई। इहां के लोग के नइखीं जानत। तनी मनी कुछ हो गइला पर लोग डाक्टर के पास ना जाय। अब–तब के घरी लाग गइला पर लोग डाक्टर के पास जाला। रवे कहीं कि अइसन में देरी करे के चाहीं? परान छुटे में का कवनो समय लागेला? आ घोड़ा के चाल आउरो तेज कर दी। जबाब देत ना बनी। भर रहता बकत रही।

'चल बेटा। हीरा रे। एक जान के सवाल बा। बहुत पुनि होई। लोग के ओठ पर तोर नांव रही। देख के। गडहा बा। ऊँचा बा। जोर लगा के। बहुत दूध पियले बाड़। आज मलीदा खिआइब। खुदा हो। दया कर रोगी के उमिर द। डाक्टर के हाथ में जस द। तू मालिक हव तोहरे भरोसा बा। गाड़ी से बच के। चल सुग्गा। किनारे से। बच बच के। हाय हाय ई का? अबहिए से थकन? गाँव दूर बा। चाल बढ़ा के। रोगी के बचावे के बा। बेचारा के एके लइका बा। खानदान के दिया बोताय मत। हाय अल्ला! रहम करऽ। नूर दऽ। परवरदिगार हव। ससुरी हवा बढ़हीं नइखे देत। कइसन गर्मी पड़ रहल बा। लोग रहता से हटते नइखे। सुराज नू हो गइल।'

जब गनिया घोड़ा के मनावेला तब डाक्टर के बुझाला कि ऊ उनकरे मनावन करत होखे। सुरु–सुरु में उनका ओकर बड़–बड़ाईल खराब लागत रहे। अब उहो पर धेयान ना देस। तबो कबो–कबो ऊ अइसन बात बोलेला कि डाक के हंसी हवा में पंवरे लागेले।

गनिया स्वभाव के खरा ह। केहु के चुगली करे के हाल ना जाने। डाक्टर ओकरा के अउर टमटम वालन से ज्यादा एह से मानेलन कि ऊ बहुत दिन के अस्पताल के डॉक्टर लोग के चढावत आ रहलबा। चरित्र के अच्छा आदमी ह.

विश्वासघात करे के हाल ना जाने। कवना समय कहल जाय तइयार रहेला। कबो फुरमाईस ना करे। गांव देहात के लोग ओकरा टमटम के सगुनिया मानेला। बढ़ के लेहाज ओकरा नजर में रहेला। महंगा से महंगा सवारी छोड़ के डाक्ट कि हें जाय खातिर तइयार रहेला। कवनों गांव के केहू के घर के होखे ओकरा रहता पुछे के ना पड़े।

गनिया के नजर में रोगी के ना जात होले ना धरम। जवना तेजी से मुसलमान के घर जाला ओही तेजी से इसाई या हिन्दुओं के घर। नांव से मुसलमान होइयों के ऊ हिन्दू ह। ओकरा माई के एगो फकीर पर बड़ी विश्वास रहे। उहे फकीर एकर नांव गनिया रखले रहन।

'डाक्टर साहब! रउआ भगवान पर विश्वास करीला कि ना?'

डाक्टर के धेयान टुटल। पहिले त ऊ ओकरा सवाल के ना समझलना फिर से पूछे के चाहत रहन। तब ले खियाल हो गइल।

'काहे? का बात है?'

'कुछ ना। असहीं पूछत रहीं।'

'हम भगवन के मानीला। ढकोसला के ना। एगो अनजान शक्ति के आगा माथा झुकाइला। ओही शक्ति के भगवान मानीला।'

'ठीक बा। मानी। रउआ मान सकीला। हमा–सुमा के त ढकोसला के मानहीं के पड़ी।'

डाक्टर के दिमाग गनिया के बात के साथ कदम से कदम मिला के ना चल सकल। मन में पूछ के समझ लेवे के लहर आईल। एगो बड़प्पन के चादर ओढ़ले रहन। ऊ घशात बुझाइल। टाई ठीक कइले। कोट पैंट पर के धूर रुमाल 1. से उड़वले। मुँह पर रुमाल गते–गते चलावे लगले। मन में कुदार चलत रहे। अपना के ना रोक सकले– 'काहे?'

गनियो आदमी ह। सब केहू अपना के सबके से बड़ समझेला। हाथी या कार पर चढ़े वाला लोग साइकिलिहन के हटत देख के हँसेला। हमरो से बड़ लोग दुनियाँ में बा, ई भुला जालाय बाकिर अपना से छोट न नांव अंगुरिये पर रहेला। डाक्टर के दिमाग में अपना बात के ना पकड़ात देख के गनियों के खुशी भइल। ऊ खंखार के गला साफ कइलस आ कहे लागल 'केहू कहे कि मिठास होले। सभे कही ऊ कइसन होले? मीठ लागे से मिठास ह। रउआ मान लेब। हमरा दिमाग में ना धँसीं केहू मिसरी खिआ के कही कि अइसन लागत बा उहे मिठास है। हम मान लेब।'

गनिया चुप हो गइल। डाक्टर के डर लागे लागल। ऊ गनिया के एक सवाल से डेरालन ऊ जब पुछेला कि बबुआ लोग कब आई? मेम साहब कब आइब? तब सांच बोले के साहस ना पड़े आ झूठ बोले के पड़ेतला।

आजो उनका बड़का लइका के चिट्ठी आइल रहे। लिखले रहे कि बेबी जाये खातिर रोवेले। ओकरा के पढते बुझ गइल रहीं कि उनकरे लिखावल होई। आगे अठरी साफ लिखल रहे कि छुट्टी मिली तब चल अइह चाहे केहु के भेज दीहऽना त माई बरखा शुरु होते चल आई।

अइसन बात ना रहे कि ऊ ले आइल ना चाहत होखस। कवनो तकलीफ ना होखे, कवनो खर्चा कम होखे, कवनो अपना औरत से प्यार ना होखे, घर के लोग रोकत होखस, सेहू बात ना रहे। सोचत रहन कि ई लोग भा रही तब खुब लिखाइत। अब बुझात बा कि ओही समय ढेर लिखात रहे।

'हजुर रात दू–तीन गो हितलोग आ गइल रहन। दाल–चाउर सब राते में साफ हो गइल रहे। अब लौटब तब खरीदाई। घर में पइसो नइखे मिलवे का करेला कि बांचो? महंगी जान मरले बिया।'

डाक्टर छुटकारा मिलल देख के अपना के हलुक महसुस कइले बलाय टर गइल रहे। दोसर केहु कहित तव बिसवास ना करितन सोचितन कि कुछ मांगे खातिर बहाना कर रहल बा। गनिया पर विश्वास हो गइल। ऊ मांग के कुछ ना ले सके।

'तब अनगुते से असहीं बाड़?'

'आवत खा नथुन साह के दोकान पर चाय पी लेले रहीं । नथुन साह के जानीला नू? अस्पताल के पास उत्तर तरफ दोकान बा बेचारा गरीब आदमी ह। दिल के खराब ना ह। हमरा साथ पढ़त रहे। मयभा मतारी के चलते ओकर ई हाल भइल बा ना त ओकरा कवना चीज के कमी हइस।'

टमटम के रुकते लइका घेर लेले सन। उतर के डाक्टर सीधे रोगी के पास गइले। बक्सा लेले पीछे–पीछे गनिया रहे। डाक्टर के चपरासी टमटम के पास रह गइल रहे। रोगी के खाटी के दाहिने ओर एगो कुर्सी पर डाक्टर बइठ गइले। गनिया खाटी के सिरहाना बायीं ओर जा के खाड़ा हो गइल। डाक्टर रोगी के कलाई देखते रहन आ गनिया उनकर चेहरा। ओकरा चेहरा पर उभरत भाव के ऊ पढ़ के समझ गइल। डाक्टर लोगन के साथे रहत–रहत बहुत कुछ जाने लागल रहे।

'सुसुम पानी चाहीं। जल्दी। हालत ठीक नइखे। गर्मी खातिर सुई देवे के पड़ी।' रोगी के छाती पर आला धुमा के डाक्टर बोलले।

सुसुम पानी तइयार रहे। तइयार ना करें पड़ल। जलदिए मिल गइल। रोगी के दहिना हाथ डाक्टर के आगा उधार पड़ल रहे। उनका हाथ में सूई रहे। एक हाथ में स्पिरिट में भीजल रूई के फाहा रहे। साहस ना होत रहे कि सूई देस। मन संस्कार मुर्दा के खोभे से मना करत रहे। गनिया के तरफ देखलन। ओकरा नजर में घिरना भरल रहे। ऊ दरवाजा तरफ बढ़ल। डाक्टर के बुझाइल जइसे कि ऊ उनका जइसन पापी के हत्या करे खातिर हथियार ले आवे गइल होखे। रोगी मर गइल एह में हमार का दोष? हमरा पास लोग गइल तब हम अइबे कइनी। तनिको देरियो ना कइनी। हम त आइल बानी। हमार समय लागल। हमरा त फीस मिलहीं के चाहों कह देब कि मर गइलन तब के फीस दी? लोग रोवे–गावे लागी। वाबूजी के मुकदमा खातिर, करज चुकावे खातिर रूपया चाहीं। भाई के कॉलेज के फीस चाहीं। लइकी के 8–10 साल बाद भारी तिलक चाही भावुक बनला पर कहां से आई? हाथ प स्पिरिट मलत देर भ गइल। मन कड़ा कर के आंख मूंद के सूई धंसा देले।

दवा के पुर्जा थम्हा के खियावे पिआवे के तरीका बता के. फीस चेटिअवलन आ आके टमटम पर बइठ गइलन। गनिया से नजर मिलते झुका लेलन आ दोसरा ओर देखे लगलन।

डाक्टर के बइठ गइला पर गनिया टमटम बढ़ा देलस। लोग के तरफ देख के हाथ जोड़ के बोलल, 'तब हम जात बानी।'

एक आदमी घोड़ा के तरफ बढ़ल। हाथ में हरियर पांच रुपया के नोट रहे।

'अपना टमटम के भाड़ा ले ले जा।' गनिया सुन के अनसुना कर देलस। घोड़ा के चाभुक मार देलस। हाथ के इसारा से बतवलस कि भाड़ा ना चाहीं।

घोड़ा पर के चाभुक डाक्टर के अपना पीठ पर महसूस भइल। ऊ देखलन गनिया के आँख से झरझर लोर बहत रहे। ऊ ओकरा बड़प्पन के ऊँचाई देखें लगलन।

भोजपुरी कहानियां, वाराणसी जुलाई – 1969

आजादी के दुसरकी लड़ाई

✍ रामनाथ पाण्डेय

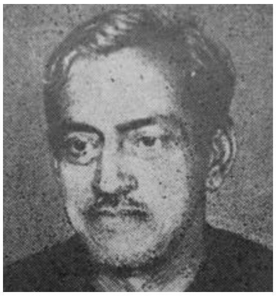

"ना ना ना हमरा अइसन सम्मान ना चाहीं। ना मनबऽ त हम सम्मान देबे आवे वाला के मुँह पर थूक देब। बाप रे बाप! जवन भारत माता के संगे दगा कइलस, आजादी के लड़ाई के तेज धार के भोथर करे के कोशिश कइलस। जवन अंग्रेजन के साथ मिल के देस के धोखा देलस, ओकरा हाथे सम्मान, ना ना हमरा अइसन सम्मान ना चाहीं।" ऊ बुढ़वा आपन दूनो हाथ हिला के आपन असहमति जतावे के प्रयास करत रहे।

बाकिर ओकरा के सम्मान दिआवे ले जाये वाला नेता ओकर बात काटत रहे आ ओकरा पर सम्मान स्वीकार करे के सिकंजा कसले जात रहे।

"तोहरा अइसन बात ना कहे के चाहीं, ओकरा हाथ में आज देश के बागडोर बा। जनता ओकरा के चुन के सांसद बना देलस। देश–रक्षा के भार आज ओकरे पर बा। तोहरा ओकरा पर बिस्वास करे के पड़ी।".... सम्मान समारोह के संयोजक विधायक रामबदल कहलन।

"बिस्वास! ओकरा पर बिस्वास! देसघाती पर बिस्वास! ई तूँ का कह रहल बाड़ऽ? ना ना ना हम ओकरा अइसन अदमी पर बिस्वास ना कर सकीं। हम ओकरा पर बिस्वास ना करब।...." बूढ़ स्वतंत्रता सेनानी रामटहल बड़ी दृढ़ता से कहलन।

"तूँ, ना मनबऽ? हमरो बात के काट देबऽ? जानऽतारऽ एकर कवन परिणाम होखी?" विधायक रामबदन ओकरा के धमका के डेरवावल चहलन।

"जानऽ तानी।".... रामटहल ओही दृढ़ता से कहलन।

"जानऽ ताड़ऽ त अपना जिनगी के डुबला नाव के किनारा लागे द। अपना गर्दन में अपने हाथ से फाँसी मत लगावऽ। ना त तोहरा अपना आखरी साँस ले एहींगा तड़प तड़प के मरे के पड़ी। आजाद के लड़ाई के सिपाही बनला के गुमान अपना मने में पोसत–काटे के पड़ी।".... रामबदन कहलन।

"त का होखी?...." रामटहल कहलन।

"मान जा हमार बात। आज तक दुअरा–दुअरा छिछिआत फिरलऽ। बाकिर आजु ले सरकार तोहरा के स्वतंत्रता सेनानी ना मनलस। आज मोका आइल बा। सरकार खुद तोहरा दुअरा आ के ऊ सम्मान दे रहल बिया। मौका मत चूकऽ।" रामबदन बड़ा मोलायमियत से पोल्हावे के प्रयास कइलन।

"हम ना जायेब। केल्हवा काटत जिन्दगी गुजार देब। बाकिर तोहर दाल ना गले देब। आजादी मिलला पचास बरिस बितलो पर लोग आजादी के रूप ना पहचान सकल। आजादी के कीमत ना आँकल। लोग अपना सहीदन के भुला गइल। आज लोभ के घेरा में घेराइल सासक वर्ग के चरित्र ठीक ओसहीं भइल जाता जइसन देस के गुलाम रहला पर रहे। आपन चरित्र बिगाड़ के अब आमो जनता के चरित्र बिगाड़ रहल बा। ताकि कोई"

रामटहल कुछ आउर कहे के चाहत रहन बाकिर रामबदन बीचे में कहे लगलन,

"हम तोहार बात काटत नइखीं। तू ठीक कहऽ ताड़ऽ बाकिर तोहरा कहला से त कुछ ना होखी। स्वतंत्रता आन्दोलन में तू काम कइले रहलऽ। जेल गइल रहलऽ। तोहरा जाँघ में गोलियो लागल रहे। बाकिर कानून के हिसाब से एह कुल्ही के प्रमाण पत्र त ओकरे देबे के बा, जेकरा के तू गद्दार कहऽ ताड़ऽ। एगो बात कहीं..." रामबदन कह के चुप भ गइलन।

"कवन बात?" रामटहल पूछलन।

"देखऽ हमरा आपन बिधाइकी बचावे के बा। देश के आजादी के पचासवीं बर्षगाँठ पर मंत्री के हाथे अपना क्षेत्र के एगो स्वतंत्रता सेनानी के सम्मान दिलवाये के बा। हम चाहत रहीं तोहरा के सम्मान दिवा के आपन नाक बचा लीं ना त मंत्री हँसे लगिहें। कहे लगिहें, तोहरा क्षेत्र में आजादी के लड़ाई कोई ना लड़ल रहे। हम आपन जग हँसाई ना होखे देब।"

"त का करबऽ?"

"तू ना मनबऽ त हम कवनो आदमी के मंत्री के सामने खड़ा क के सम्मान दिलवा देब। हमारा खातिर ई कवनो बड़ बात नइखे।"

"हमरा जगे दोसरा के खड़ा क देबऽ?...." रामटहल अकबका के बिधायक के तकलन।

"तब का काका, ई नकली आ बनावटी जुग ह। खाँटी आ असली माल के जमाना लद गइल। बोलऽ का कहऽ ताड़ऽ? बिधायक रामबदन मुस्कियात कहलन।"

"नकली नकली होला। असली ना हो सके। देस खातिर आपन परान निछावर करे के चाह रखे वाला लोग कबहीं नकली ना होखे। खाँटी असली होला। आज तोहरा लोगन के हाथ में देस के सासन बा, त भले नकली देसभक्त के माला पहिरा के सम्मान पत्र दिलवा द, आपन कद बढ़ा ल लोग चाहे आपन पद बँचा ल लोग। बाकिर इतिहास तोहरा लोगन के माफ ना करी आ मुँह पर थूकी। आजादी के मटियामेट करे वाला लोगिन के सूची में तोहरो नाम दर्ज हो जाई।...." रामटहल कहलन।

सुनते विधायक रामबदन के देंहि में आग लाग गइल। क्रोध से तमतमात कहलन– "रामटहल तू आपन अवकात मत भुला। तोहरा के चुटुकी में मीसत हमरा देर ना लागी।...."

रामटहल ठठाके हँसे लगलन। "हा हा हा हा, त हमरा के चुटकी में मीस देबऽ। हा हा हा हा तूँ हमरा के चुटकी में मीस देबऽ। हा हा हा हा...." रामटहल के हँसी आउर जोर पकड़ लिहलस।

"बिधायक रामबदन, तोरा चुटकी में कवनो देसभक्त के मीसे के ताकत नइखे। देसभक्तन के हृदय में बहत ओह फौलादी भावना के पहचान तोहनी के नइखे। भुला मत रामबदन जवना के खाली धमक सुन के ऊ राज उधिया गइल रहे जवना राज में कबहीं सुरुज ना डूबत रहलन। आपन–आपन घरौंदा बना के लइकन अइसन खेले वाला तोहरा अइसन लोग भले कुछ देर माटी के घरौंदा के महल मान के अकड़ लेव। गरब से अपना असली चेहरा के भुला जाय। बाकिर काल्ह जब इतिहास लिखाई तब देस के दुबारा गुलामी क कगार तक पहुँचावे वाला लोगन में तोहरा अस लोग के नाम लिखी।..." कहत–कहत रामटहल के साँस फूले लागल।

"बुढ़ऊ, देख ल आपन हालत। तब तक ऊ इतिहास पढ़े खातिर तूँ जीयत ना रहबऽ। बिधायक ताना मारत कहलन।"

"त का होखी? हम त पढ़े खातिर ना बँचब। बाकिर देस के भावी पीढ़ी त पढ़ी। आ तोहरा लोग के मुँह में करिखा पोतत पुतला बनाई आ कवनो मैदान में खड़ा क के रावन अइसन जराई। देसद्रोही के लागल अकलंक के टीका कबो ना मेंटाय। चाहे ऊ भगवान राम के अति प्रेमी बीभीषने काहे ना होखसु।...." रामटहल कहलन।

"चुप रहऽ रामटहल, जादा बोललऽ त तोहार जबान बन्द करे के लूर बिधायक रामबदन के आवेला। चुप...." कहत रामबदन आगे बढ़े लगलन।

"चुपचाप आपना जगे खड़ा रहऽ। आपन भला चाहत होखऽ बिधायक रामबदन त अपना जगे खड़ा रहऽ। आजादी के भावना के अमृत रस चखे वाला देसभक्त के कमजोर मत समुझऽ। अपना जरासंधी ताकत पर गुमान मत करऽ।"

"ना त का करबऽ....?"

"दूनों टाँग चीर के फेंक देब। मथुराधीस बने के कुल्ही साध मेंट जाई।...."

"बुढ़ऊ कहि के हँसऽ मत। हमार उमिर सत्तर बरिस के भ गइल त का? आठ बेर अंग्रेजन के लड़ाई में हरावे वाला बीर कुंअर सिंह त अस्सी बरिस के रहलन। जानऽ ताड़ऽ नू।...." रामटहल कहलन।

"का देखऽ ताड़ऽ लोग। ससुरा के उठा के नदी में फेंकि आवऽ लोग।..." विधायक अपना के ना रोक सहलन त अपना अदमियन के ललकारत कहलन।

"कुछ लोग रामटहल का ओरी बढ़ल।"

रामटहल फेरू जोर से हँसे लगलन।

"बिधायक रामबदन, आजादी के दिवाना एह देस में कबहीं ना मरे। आजो जिअता लोग। हमरा के उठा के नदी में फेंके के सामर्थ तोहरा में नइखे।..." कहके रामटहल फेरु हँसे लगलन।

गते–गते उनकर हँसी अउरो तेज हो गइल। उनकर चेहरा बदले लागल।

देखते–देखते उनका चारो ओर लोग के भीड़ जमा हो गइल। रामटहल अपना चारो ओर के लोग के देखलन। सहमल–सहमल लोग के आँख में विद्रोह के भावना पँवरत रहे। आँख में ऊहे भाव रहे जवन बयालिस में लोगन के आँख में रहे। अन्तर बस एतने रहे कि तब अंग्रेजन के देस से भगावे के भाव रहे। आज पावल आजादी के मटियामेट करे में लागल नेतन से मुक्ति पावे के भाव रहे।

"इन्कलाब जिन्दाबाद–" रामटहल जोर से नारा लगवलन। आ आगे बढ़े लगलन। सुनते जइसे भीड़ में जान आ गइल होखे। सभे एक साथ इन्कलाब जिन्दाबाद के नारा लगावत उनका पीछे–पीछे चले लागल। रामटहल के पूरा देहिं गनगना गइल। उनका लागल सन बयालिस अपना के दोहरा रहल बा।

बिधायक रामबदन भीड़ का ओरी तकलन।

उनकर विरोधी त रामटहल के पीछे रहबे कइल। उनकर खास–खास लागो उनका जमात में मिल गइल। उनका गोड़ तर के धरती घसके लागल। अब का होखी? एगो अज्ञात भय से ऊ काँप गइलन। केन्द्रीय मंत्री के कवन मुँह देखाइब?... ई एगो सवाल उनका के चारो ओर से घेर के बेधे लागल। साँचो उनकर बनावटी घरौंदा एह हवा में उधिया ना नू जाई। जरासंधी ताकत फाड़े फाड़ त ना हो जाई! ऊ थर–थर काँपे लगलन। ऊ देखलन, लोग मंत्री के सभा का ओर ना जाके रामटहल के पीछे पीछे चल रहल बा।

उनकर कवनो आदमी उनका साथे ना लउकल। सभे साथ छोड़ के रामटहल के पीछे हो गइल रहे।

ऊ एक ओर भाग के जाये खातिर आपन डेग बढ़वलन। तबे कुछ लोग उनका के ध के रामटहल के पँजरा ले जा के कहलस – "नेता जी, ई भाग रहल बा।"

"ना ना एकरा के भागे मत द लोग। घसेटत ले चलऽ लोग मंत्री के सभा में। नकली देसभक्त के सम्मान दियावे वालन के पकड़ ल लोग। दूनों के एके पगहा में बान्ह के कवनो किसान के बथान में ले जा के गाय–भँइस के खूँटा में बान्ह द लोग। सामने के नाद में सानी गोत द लोग।" मुड़ी नवा के नाद में डुबा के कहि द लोग– "खा सन चारा। आज देस के आजादी के दुसरकी लड़ाई नधा गइल बा। जब तक हमनी के जीत नइखे होखत एकनी के नाद पर बन्हले रखऽ लोग। कम–से–कम ई अपना आँखी देख त लऽसन कि आजादी के पचास बरिस बादो गाँव के कवन हाल बा!"

समय- संदर्भ

दुखिया घरे भोट माँगे

परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी'

दुखिया घरे भोट माँगे दीनबन्धु आइल बाड़ें
बाह रे, गरीबियो के लगन चरचराइल बा।

चूल्हा के कूल्हा में लवना अलम भइल
धनि भाग, बरिसन पर खिचड़ी छेंवकाइल बा
हवा के रोख बा बेरोख, कुछ न कहल जाता
महँगी के बहँगी प चोला टँगाइल बा
नेता लोग के छीले खातिर, खोजि-खोजि दिल्ली गइल
साँच जानीं, एही से पियाज महँगाइल बा

जनता बेचारी, लाचारी मुँह बवले बिया
पूछि देलन नेताजी त मोंछ फरफराइल बा
छूंछा के कवन पूछा, भोटर लिस्ट में नांवे नइखे
जवन-जवन देखऽ तानी तवने लिखाइल बा

रोजे सरकार गिरो, भोट परो रोजे-रोज
भोटे से सरकार के दुआरे चरन आइल बा
नेताजी के पास कइल सिमेंट सभ बिलेक होता
हमरा छरदेवाली में दाँत चिहराइल बा।

चउका बइठल महादेव

डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव

कंचन सिंह कचहरी से जब घरे लवटले त कुछ भनक मिलल। मन में आइल कि एगो जंगला के पीछे जे हेतना बवाल मचल रहत बा, त अब ओकरो दवा कौनो फाइनले करे के पड़ी।

हाथ–गोड़ धो के चाय के प्याला जइसहीं थमले कि सदानन्द सिंह आके लगे बइठ गइले।

– भइया, रउआ सारा ममिला त मालूमें हो गइल होई। आज दिन में जवन महाभारत अपना दुआर पर मचल रहल ह उ सब देख के हम खून के घोंट पी के रह गइनी ह। नाहीं त लाठी उठा के इनकर कपार फोड़ देतीं। राउरे हैवत खाके हमरा चुप रहे के पड़ल। सोचनीं, कचहरी से आवते कहीं रउआ हमरे के डांटे मत लागीं।

सदानन्द सिंह कंचन सिंह के छोट भाई रहले। गाँव के घर–गृहस्थी के देखभाल उहे करस आ कंचन सिंह तीन कोस दूर शहर के रजिस्ट्री कचहरी में स्टाम्प बेंडरी करत रहले। आमदनी त अच्छा रहबे कइल जवार–पतार में इज्जत–मान भी रहे।

कंचन सिंह बोलले– कुछ हिन्ट मिलल बा, बाकिर का भइल ह तनी साफ–साफ फरिया के बतावऽ।

सदानन्द सिंह दिन के घटना बयान कर देहले। दोसरो लोग से कुछ पता चलल। आज दुपहरिया में दोसरा गाँव के तीन जाना कंचन सिंह के नाम पूछत दुआर पर अइले। आपुसी जर–जमीन के बारे में उ लोग उनका से राय–मशविरा लेबे के चाहत रहे। तीनू आदमी के नाश्ता–पानी करावल गइल। उ लोग विचार कइल कि सांझ के कचहरी से जबले कंचन बाबू अइहें तले बगले के गाँव से भूसा–पेटारी के भाव–ताव जान के आवत बानी सन। एक जाना पान खाएके बड़ा शौखीन रहले। मुँह में पान चबावत बतियावत रहले कि अचानके उठ के पान के पीक अपना ओसारा के जंगला से पक–से फेंक देहले। उ पीक नगेसर लाल बो के पोता के मूड़ी पर जाके गिर गइल। जंगलवे के ओह पार बइठल उ कागज के सिकहर बनावत रहे। पान के पीक मूंड पर गिरते ऊ चिलइलस। पोता के मूंड़ी पोता गइल रहे। उ देखते बिनबिना गइली कौन अभागा हमरा लइका के मूंड़ी पर पान थूकलऽस रे, कौना के आँख में काँचा गड़ाइल हा? इ जगला के लेके एक दिन केहू ना केहू के मूंड़ी कटाई जरूर। अब त इनकर जँगला मूंदवाइए के छोड़ेब। हमरा अंगना का ओर जंगला खोलवा के बड़ा बहादुर बनल बा लोग।

जे पीक फेंकले रहे ओकरा त हत्या लाग गइल। उनकरा इ ना बुझाइल कि ओने पड़ोसी के घर बा। अब गलती त होइए गइल रहे। ओह जनाना के खीस देखके उनकरो हिम्मत ना पड़ल कि माफी माँग लेस।

ओने नगेसर लाल बो के भाषन जारी रहे। दुअरा पर केतना आदमी जुट गइले। कुछ लोग के दोसरा के लड़ाई देखे में बड़ा मजा आवेला। उ कहत रहली–तीन साल से हमनी का भूंकत बानी सन, ए जंगला–खिड़की के बन्द करा द। ओने हमरा अंगना के ओर लोग ताकेला। आ हमरा जमीन में जंगला खोले के हिम्मत कइसे हो गइल। हमार सोनपुर मेला गइल काल हो गइल। चार दिन बाद लउटनी त देखऽतानी जंगला लागल

बा। ओने केहू के बाप के जमीन ना ह। हई खड़ा–खड़ा सउंसे गाँव के लोग देखत बा कि पान के पीक से हमरा बाबू के मूंड़ी आ कमीज के का हाल हो गइल बा। एकर त दगवो ना छूटी। आज पान के पीक फेंकले ह सन, काल्ह कुछ अउरी बिग दीहे सन। नीमन घर से टेंट बेसहले बाड़े सन, आवतानी उहाँ का त टेंटुआ पकड़ के पान के उगिलल निकालीलें।

अब एकरा से आगे सुनल सदानन्द सिंह के बर्दाश्त ना भइल। उ बोलले– ए भउजी! अपना जबान के रास तनी कसिये के रखऽ। तब से बकबकात बाड़ू। लउकत बा कि ना कि दोसरा गाँव के तीन आदमी सामने बइठल बाड़े? तहार बात सुनके इहे लोग जाके अपना गाँव में चर्चा करी कि हरिहरपुर के मेहरारू बड़ चढ़बांक होली सन। हउ जे कोनवा में बइठल बानी, उहें से इ गलती हो गइल।

– "हं ए, सरकार, अब का बताईं; हमरा इ ना बुझाइल ह कि ओने केहू के घर बा। गलती त हमरे बा। माफ कइल जाव" –दोसरा गाँव के आदमी बोलले।

– सुनत बाड़ू कि ना भउजी, उहां के बात? उहों का कवनो बहेतू आदमी ना हईं। अपना गाँव–जवार के एगो इज्जतदार आदमी हईं। अब केहू से अनजाने में भूल–चूक हो गइल त उनकरा के फाँसी ना नूं चढ़ा देबू? उहां के ओर से हमहीं माफी मांग लेत बानी।

इ सब बहस पर सदानन्द सिंह के मेहरारू केंवाड़ी के ओटा में खड़ा होके कान पतले रहली। ओने से टनकारे बोलली– जब देखऽ तब भाई जी बो कवनो टंटा लेके लड़े आ जाइले। इनकरा अंगना के लइका केतना बेर गलती करे ले सन, हमरो घर के केतना सामान जियान कर देले सन तबो हमनी के घर से केहू ओरहन लेके ना जाला।

लइका के मूंड़ी पर तनी सा पान के पीक गिर गइल त धोकछा भेर के मरद–मानुष से लड़े आ गइली। इहो ना मालूम कवना माटी के बनल बाड़ी।

– ऐ सदानन्द बो! आइल बाडू तूँ हमार माटी निहारे! केहू हमार गर्दन रेत देव तबो हम चूं तक ना करीं? वाप रे इंसाफ!

नगेसरलाल बो के एह बोली पर सदानन्द सिंह कहले– ताहार गर्दन के रेती ए दादा। भउजी, तू त एह गाँव के इज्जत बाड़ू। एही मुँह से जब तूं बियाह के गीत गावे लागे लू त बुझाला जे इन्द्रासन झरत बा। हमू कबो–कबो हैबत में पड़ जाइले कि जेकरा मुँह से एतना नीमन–नीमन गीत निकलेला कि सुने वाला सुनते रह जाला, ओही मुख से कबो–कबो अंगारी काहे बरसे लागेला। भउजी, तनी ठंडे मिजाज से बोलऽ बतियाव। सांझ के भइया आएब त फैसला हो जाई।

केंवाड़ी के पीछे से फेन आवाज आइल– 'फैसला अब का दोहरा के होई? जंगला के पीछे हमनी के डेढ़ हाथ जमीन बाटे, सभे जानत बा। तब इहां का कवना मुँह से कहत बानी कि जंगला मूंदवा देब! हिम्मत होखे त मूंदवा के देखाईं। जेल ना भेजवा दिहनी सन त फेर कहेब।' झगड़ा बढ़त गइल। नौबत अइसन आ गइल जैसे सदानन्द सिंह गंड़ासी उठा के अबे नगेसर लाल बो के गर्दन उतार दीहें। गाँव के लोग बीच–बचाव करे खातिर खड़ा हो गइल। सदानन्द लाल–लाल आँख कइले लाठी उठावे खातिर दू–दू हाली हुमकले। लोग कहल– जाये दी छोड़ीं। जनाना पर हाथ ना उठावे के।

कुछ लोग समझा–बुझा के नगेसर लाल बो के हटावल। सदानन्द तबो कुछ ना कुछ बक–बकाते रहले। खीस–पीत में उहो आपन आपा खो देस। एगो पान के पीक पर एतना बमचक मचवले बाड़ी। केतना कुकुर, बिलार, मूस–छुछंदर जाके कई जगह के गंदा कर आवत बाड़े सन त ओकनी के कुछु ना कहिहें। मरदन के देख के आसमान में मूसर चलावे लागेली।

कंचन सिंह के पूरा हाल मालूम हो गइल। बिहान भइला उ नगेसर लाल से भेंट कइले। नगेसर लाल मिजाज से नरम रहले। एक साल के बात ह कि सुतला रात में उनकरा आँखि के आगा से उनकरे साइकिल आ खटिया चोर उठा ले गइले सन। बाकिर उ चुपचाप देखत रह गइले। सोचले एह सुतला रात में बेकारे में हालागुली होई। का धइल बा एगो साइकिल आ खटिया में। भगवान चहिहें त फेर आ जाई। नगेसर लाल एने डेढ़ दू साल से सधुआ गइल रहले। घरवो में मेहरारू रहरह के उनका नटी पर चढ़ल रहस। एह से उ सोचले कि अब सब काम इहे संभालस। नगेसर लाल सत्संग के रास्ता ध लेहले। अभी उमिर त ओतना पाकल ना रहे बाकिर वैराग्य के आवे में उमिर कौनो बाधा ना होला। केतना लोग त पन्द्रहो–बीस साल के उमिर में साधू बन जाला। जंगला के झगड़ा सुन के उ अपना जनाना के समझवले– एगो जंगला के पीछे एतना खिसियाइल बाड़ू। क्रोध से बहुत हानि होला। सबसे पहिले आदमी आपन विवेक खो देला। एक बीता जमीन खातिर मन के शाँति खो दीहल जाव, एह मूर्खता पर भगवानो हँसत होइहें। एगो पान के पीक के पीछे लाठी–लठांव कइल ठीक नइखे। फगुआ में ना जाने केतना लोग रंग से नहा जाला। त का सभे लाठिए चलावेला?

नगेसर लाल बो कल तर बइठल कटोरा–छिपी माँजत रहली। सब फेंक के झपाक से उठली आ नगेसर लाल के मुँह के आगे हाथ चमका के बोलली– तब से रउआ रामायन पढ़त बानी। एतना सधुआइल बानी त घर छोड़के चल जाईं। काहे नइखीं जात? हम सब झगड़ा फरिया लेब। कोर्ट–कचहरी देखा के कंचन सिंह आ सदानन्द सिंह के पोंछिटा ना ढीला कर दीहनी त हमरा नाम पर कुत्ता पोस लेब।

अपना जनाना के खीस पर नगेसर लाल हँसे लगले– हम जानत बानी कि तहरा में पावर के कवनो कमी नइखे। बाकिर तहरो से अधिका पावर ऊपर वाला के पास बा। लंका के लड़ाई आ महाभारत के समर भगवाने के मर्जी से भइल।

– एकर मतलब बा कि केहू हमरा के कुछू कह देव, हरूस–पातर बोल देव, मुँह पर थूक के चल जाव। अपने घर में बइठल संत बनल कंठी–माला फेरत रहीं। अइसन मरद के रहल आ ना रहल सब अकारथ बा। हमरा करम में इहे भंगेड़ी महादेव रहले।

नगेसर लाल बो रोए लगली। नगेसर लाल उठ के बहरा चल गइले। उनकरा मालूम रहे कि कंचन सिंह के बेटी कमलावती के बियाह तय हो गइल बा। तीसरे दिन तिलक जाये वाला रहे। अब बियाह हो जाव त जंगला–जमीन पर बात होई।

बाकिर सदानन्द सिंह के जिद्द पर दोसरकें दिने अमीन बोला के जमीन नपा गइल। गाँव भर के लोग देखत कि जंगला के देवाल से एक हाथ जमीन कंचन सिंह के पड़त बा। फैसला सभे के माने के पड़ल। नगेसर लाल बो के दुःख के सीमा ना रहल। रोवत–गावत नइहर जाएके तैयारी करे लगली, बाकिर केहूं तरे मनावल गइल।

तीसरका दिने फजीरहीं नगेसर लाल बो से हजामिन आके कह गइली कि दिन के दू बजे तिलक जाई। ओ घरे बोलहटा बा। बोलहटा के नाम पर नगेसर लाल बो मुँह घुमा लेहली। हजामिन से कह देहली–जेकरा जाएके बा उ जाव, हमरा त कपार में बाथा बा। हम ना जाएब।

कंचन सिंह के अंगना में चर्चा फइलल कि नगेसर लाल बो तिलक में ना अइहें, उनकरा कपार में बाथा बा।

सदानन्द सिंह टेढुअइले बोलले– हमरा मालूम बा। उ एक हाथ जमीनवा उनकरा नापी में आ जाइत त एह बेरा सब देह–कपार के बाथा बिला जाइत। नाच–नाचके कहती कि अब जंगला मूँदवा द लोग। कुछ मेहरारू सन के चिंता भइल– ए बहिनी, अगर नगेसर लाल बो चाची ना अइहें त गीत गोविन्द कइसे होई। सउंसे गाँव में शिव–पार्वती के बियाह के गीत गावे खातिर उनकरे के बोलावल जाला। लगनौती के मंगल गीत गावेवाली मेहरारू लोग के कमी ना रहे। गाँव में जवन लड़की पढ़ाई में सातवाँ–आठवाँ से बी.ए. तक पहुँचल रहली सन ओकनी के एह बियाह–सियाह के गीत में कवनो रुचि ना रहे। बड़ा कहला पर फिल्मी स्टाइल में ढोलक पर तनी जेवनार गा दीहल लोग भा 'नागिन' आ 'मुगले आजम' के धुन में भोजपुरी हिन्दी मिला के कुछ टेढ़–टाढ़ सुना देहल लोग। बियाह के गीत के समां बांधे वाली त नगेसरे लाल बो रहली। उनकरा तकड़ के केहू ना लउकत रहे।

एक जानी बोलली– कइसन लागत बा उहां बिना?

कंचन सिंह बोलली– भाई जी बो हमनी के भलाई नइखी चाहत। लइकांइए से उहां का कमलवतिया के अपना गोदी में खेलवले बानीं। हमार बेटी के एगो गोड़ उहें के घरे में रहत रहे। ओकरे बियाह में खीस–पीत लेके आज उहां का कोहनाइल बानीं। जंगला के जमीन लेके उहां के मन में बड़ा भारी कलक बा। मनावे खातिर हमार देवर गइल रहलन ह त डाँट के आपन केंवाड़ी बन्द कर लीहली। तू लोग त जानते बाड़ू कि सदानन्द बाबू तनी हरबोलिया हउंए। उहां से कह देहले– गीत गावे ना चलबू त आपन गीतवा हमरे के सिखा द। हमही गाएब। आ ओहीजा पीढ़ा पर बइठके उ भाई जी बो के गीत के नकल उतारे लगले–गाई के गोबर महादेव अंगना लिपाई। चउका बइठल महादेव गइले अलसाई।

उनकरा गीत पऽ उ हँसे लगली। बाकिर हठ उनकर ना टूटल। जाके देख आईं लोगिन– अपना घर में बइठल कमली रह रह के हिकत बिया– चचिया के बोला द लोग। का हमरा बियाह में चचिया गीत ना गइहें?

केहू तरे तिलक बीतल। एह घर से मिठाई भेजल गइल त नगेसर लाल बो लेबे से इंकार कर दीहली। हजामिन से कहली– जाईं मिठाई फेर आईं। एने हम केहू के बयना के भुखाइल नइखीं।

बियाह के दिन निचका गइल। केतना बेरा बोलहटा आइल, केतना–केतना लोग समझावल बाकिर नगेसर लाल बो पर कवनो असर ना पड़ल। इस्पात नियर उ कठोर रहली, तनिको झुके के तैयार ना। एक दिन उनकर पति समझवले– अब खीस–पीत थूक द। कमलवतिया के बियाह में गीत गावे जा। परसों बारात

आवे वाला बा। एगो जंगला के झगड़ा के कबले गाँठ बँधले रहबू। मन के मइल के गाँठ ना बान्हे के चाहीं। चार दिन के जिनगी बा हँ–बोल के काट देबे के चाहीं। जमीन के झगड़ा के पीछे बेचारी कमलवतिया के काहे सजाय देत बाड़ू? ओकर एमे कवन दोष बा। उहो त ओही जंगला से तहरा से केतना बेर पुकरले होई। लगनवती देह बा नाहीं त अबले उ दउड़ के तहरा लगे बीसो बेर आइल रहित।

– अब पानी पीं, पानी। ढेर उपदेश मत दीं। सत्संग में जाके दिमाग उलटि गइल बा। हम त ओह घर में आपन डेग ना डालेब।

नगेसर लाल खाना खाके उठ गइले। अपना जनाना के जिद जानत रहले। हमार गउरा केहू से ना मानेली।

कंचन सिंह के अंगना में मांड़ो गड़ा गइल। हरदी–चुमावन चले लागल। रह–रह अंगना में हँसी के ठहाका उठे लागल। थोड़– बहुत गीतवा त होखबे करे बाकिर ओतना गुलजार ना हो पावे जेतना नगेसर लाल बो के गावला से होखे। दोसरा के पास ना अइसन राग रहे, ना कंठ रहे। उ कवनो गीत कढ़ावस त करेजा काढ़ लेस। सुने वाला कान पात के उनकर पूरा गीत सुने खातिर ललच उठे।

रात के एक बजे जब सभे खा–पी के सूतल रहे, जंगला के लगे से केहू धीरे से पुकारल– ए चचिया? सूत गइलू का?

अभी आँख में अंघी मंडराते रहे कि बोली सुन के नगेसर लाल बो उठ गइली। इ कमलवतिया के बोली बुझाता। सभ लइका उनकरा के चाची कहेले सन बाकिर कमलवतिया लइकाइए से ईहे टूम ध लेहलस। मन में शंका उठल, कहीं झूठो के तऽ ना सुनाई पड़ गइल हऽ। दिन भर ओकरे चर्चा होत रहल हा, एही से तऽ ना। कान पात के ध्यान कइली। कहीं कवनो सुरसुराहट ना। आ एह रात में कमलवतिया का करे आई। ओकरा पर लगन चढ़ल बा। इ हमरे मन के भरम ह। एने ओने देख के उ आपन तकिया सोझ कइली आ फेर ओठंग गइली। कंचन सिंह के घर से हमार रिश्ता का बा। उनकर जंगला हमरा करेजा पर बइठल बा। ईमान–धरम त रह ना गइल एह लोक में। कमलवतियो के कारन लासा लागल रहल हा। उहो अब चल जाई। अब कौनो के मुँह के ओर ताकहू के मन नइखे करत। हम उ औरत ना हईं कि खन रूसीं आ खन मानी। एगो इहे बाड़े जे दुरदुरइलो पर ओकनी से बोलत–बतियावत रहेले। कइसन निर्भेद सूतल बाड़े। केहू के दुनिया उफर पड़ जाव उनकरा कवन फरक पड़े वाला बा। सांचो ए दादा, इ त पूरा महादेवे जी हउवें। गांजा–भांग पीके पड़ल रहेले। सांझ के समझावत रहले– तू आपन आत्मा के शुद्ध रखऽ। केहू से घिनाइल भा डाह–कइल नीमन बात ना ह। हमरा कपार में अइसने मरद ठोकाइल रहले।

अंघी ना आइल त करवट फेर लेहली। बाकिर मन के करवट ना फेरा सकल। मरे के पहिले हम कह जाएब– ओह घर के केहू, आदमी हमार अर्थी मत छूई। भगवानों कीहां हमरा शाँति ना मिली। मन में त आवत बा कि उठ के लूकारी जराई आ कंचन सिंह के घर में आग लगा दीं। सभन के भक्सी झोंक देब तबे हमरा आत्मा के ठंडक पहुँची।

सोचत–सोचत मुँह पर पसीना पसर गइल। उठके बाल्टी से पानी निकाल के पियलीं। अभी गिलास रखते रहली कि कान में फेन आवाज पड़ल– ए चचिया केतना घोर अंघी लागल बा हो! तनी उठबू ना? तनी हेने आवऽ चचिया। हम कमलावती हईं। आव ना तनी जंगलवा के लगे। ए चचिया सुनत बाड़ू? नगेसर लाल बो आग–पाछ में पड़ गइली। तले कमलावती के बोली थम गइल। उ शायद रोए लागल। हिचकी बन्हा गइल। चचिया कान पतले सुने के कोशिश कइली। चुप काहे हो गइलस कमलवतिया। फेर काहे नइखे पुकारत। मन के बेचैनी बढ़े लागल।

फेर आवाज आइल– चचिया! अबो हमरा से दू टूम बात क ल। हम एने दलीची के लगे अपना ओसारा में खड़ा बानी– नगेसर लाल बो के मन भर के गोड़ फूल नियर हलुक हो गइल। जंगला के लगे आके खड़ा हो गइली।

– बोलऽ बेटी। हम आ गइनी। का कहतारू?

रात के आन्हार में उनकर कमलावती के आँख में चमकत लोर लउक गइल। उ सुबकत आवाज उनका मन पर जमल वर्ष के पघिलावे लागल।

–चचिया! हमनी के माँफ ना कर देबू? शादी–बियाह के हँसी–खुशी में भी तहरा बिना हमार मन नइखे लागत। इयाद करऽ चचिया, तू केतना बेर हमरा से कहले होखबू कि तोहरा बियाह में हम खूब गीत गाएब। जब मौका आइल त तू कोहना के अपना घरे बइठ गइलू। तहरा मुँह से गीत सुने खातिर हमनी के कान तरसत बा। हम दोसरा घरे चल जाएब तबो तू हमरा ना भूलइबू। तूं त हमार दोसर महतारी हऊ चाची। केतना–केतना रात हम तहरा गोदी में सूतल होखब। तहरा हाथ के बनावल खायक खइले होखब। एगो जंगला–खिड़की के लड़ाई

में तूं हमरा के अलगा देहलू। जबले तू हमरा अंगना ना अइबू तबले हमरा आत्मा के शाँति ना मिली चचिया।

कमलावती देर ले बोलते रह गइली। रह रहके उनकर गला रोआई से रून्हा जाव। तबो चचिया खामोश खड़ा रहली।

– हमरा त अब इहे बुझात बा कि एगो जंगला हमरा चचिया के रग–रग में जबद गइल बा। उ पत्थर बन गइली। अब हम जात बानी चचिया। केहू जाग जाई त सांसत हो जाई। तहरा लेखे आज हम मर गइनी। अब तू मत....

– चुप रहबे कि ना! –चचिया जोर से बोल पड़ली। आ लगली उहो सुबके। मन के बोझा, घृणा के भार सभ लोर बन के ढरे लागल। दूनू जानी के लोर से जंगला नहा गइल। थोरिके देर ले खामोशी रहे। आन्हार के गोदी में दूगो छाती के धुकधुकी तक लुका गइल रहे।

–हम जाईं चचिया? का कहीं कुछ बुझात नइखे। अपना वश में रहित त हमू कंवनो किरिया खा लेतीं। हम डोली पर ना चढ़ेब जबले तू हमरा घरे ना अइबू।

–अब ढेर मत बोल, कमलवतिया ना त एके चपत लगा देब। एतना दिन से ते कहाँ रहले हा? हमरा के मनावे काहे ना अइले? रात देर हो गइल बा। जो अपना घरे। हमरा के चैन से रहे दे।

कमलावती के लउटत नगेसर लाल बो देखत रह गइली। केंवाड़ी के किल्ली के आवाज सुन के लवटे खातिर मुड़ली कि आँख में लोर के बाढ़ फेर उमड़ि गइल। कमलवतिया हमरा के कहीं के ना छोड़लस। अगिला दिने बारात आवे के हल्ला रहे। गीत–मंगल से अंगना गूँजत रहे। छत के मुंडेर से लाउडस्पीकर के चोंगा बान्हे के उपाय खोजात रहे। लाउडस्पीकर वाला चाहत रहले कि नगेसर लाल के मकान के पछिमारी कोना से एगो रसरी बाँध दीहल जाव। तले केहू बोल पड़ल– ऐ बाबू, ओह छान्ह से कुछ मत बनिहऽ। ओ लोग से हमनी के बोलाचाली नइखे।

–बे महाराज, हे रसरी आ तार के कवनो बतियावे के बा। परसाल त एही कोना से तार बन्हाइल रहे।

लाउडस्पीकर वाला के जवाब रहे। तबो नीचे से केहू मना गइल।

नगेसर लाल बो सुनत रहली। अंगना से बोल पड़ली– कवनो लव ना मिले तऽ हमरे देवाल से बान्ह दऽ।

भर अंगना गाँव के बूढ़–जवान मेहरारू बइठ के गावत रहे लोग कि संउसे घर में हल्ला मच गइल–चाची आ गइली।

पीयर लूगा में लगनवती कमलावती चचिया के देख के खुशी से नाच उठली।

उनकर चाची गीत गावेवाला औरतन के गोल में आके बइठ गइली। मुँह पर मुस्कान नाचत रहे। बिनेसरी लाल के बहिन ढोलक ले लेहली। बजावे में उनकर अंगुरी सधल रहे।

हल्ला–गुल्ला शाँत हो गइल। नगेसर लाल बो शिव वियाह के गीत कढ़वली–

गाई के गोबर महादेव अंगना लीपाई।
गजमोती आहे महादेव चउका पूराइ।
सुनी ए शिव शिवा के दोहाइ।
चउका बइठल महादेव गइले अलसाइ।
बहियां लफाई गउरा देई दिहली जगाइ।
चिउंटी के कटले महादेव गइले रिसिआई।
सुनी ए शिव शिवा के दोहाइ।
के दीहें हाथी से घोड़वा के दीहें गाइ।
के दीहें आपन धियवा अंगुरी धराइ।
बाबा दीहें गाइ–भंइसिया, भइया धेनु गाइ।
अमां दीहें आपन धियवा अंगुरी धराइ।
सुनी ए शिव शिवा के दोहाइ।

गीत के आवाज कान में पड़ते दुअरा से दउड़त सदानन्द अंगना में हँसत आ गइले आ जाके नगेसर लाल बो के लगे बइठ गइले– तहार गीत सुने हमं आ गइनी, भऊजी।

–भगबऽ कि ना। मरद–मानुष के मेहरारू के गोल में ना बइठे के।

–हम मरद–मानुष ना हईं भऊजी। असली महादेव त हमहीं हईं। इयाद करऽ हमरा बियाह में बारात लउटला पर कोहबर घर में तूँही हमरा के चिउंटी काट के जगवले रहलू। हमार गौरा देवी त तू ही हऊ।

–चुप रहबऽ कि ना? तहार आपन गउरा जी अचार पड़िहें का? हमरा के छूअलऽ त जुलुम हो जाई। दुआरे पर ताहार भइया खड़ा बानी। उ एगो दोसरे महादेव जी, हउवें।

देवर–भौजाई के बात पर सभे हँसे लागल। तले नगेसर लाल बो उठके मांड़ो में धइल ढकनी में से हरदी–तेल निकाल के उनकरा मुँह पर पोत देहली।

सदानन्द हँसते दुअरा भगले। नगेसर बो के गीत फेन गूँजे लागल। गीत के हुलास में उनकर सब खीस–पीत गल–बह गइल रहे।

आगि

अशोक द्विवेदी

जाड़े ठिठुरत गाँव के लोग, साँझि होते आड़–अलोत धऽ लेला। दिमाग में घूमल शुरू क देला दुआर–मड़ई, ओसारा, कउड़ा–बोरसी। जे जहाँ बा, आ जइसे, साँझि के देंहिं चीरत–सितलहरी आ घोरियावत कुहेस आ सीत का डरे जौन दू चार कौर गरम–सेराइल मिलल तौन खाइ के जल्दी से, पुअरा क पहल आ कमरा–रजाई के चिन्ता मन के घोरमाठा करे लागेला। ओह दिन, जहिया गया सिंह के परलोक सिधरला के खबर, रात खा नौ बजे गाँव में जहाँ ले पहुँचल, आड़–अलोत, मड़ई–घर, कउड़ा–बोरसी का लगे बइठल लोग, आपन–आपन चद्द, कमर सरिहासत गया सिंह का दुआरे फरज–अदायगी में पुछारि करे जरूर पहुँचल। तय इहे भइल कि होत फजिरहीं परवाहि होई त, जेकरा परवाही जाये के रहे, ऊ ओही बेरा आपन सुइटर, मफलर, गमछी कोट–जाकिट सरिहा लिहल।

जाड़ कहे कि हमहीं रहब, आ लोग कहे कि चाहे जौन होखे, होत फजीरे निकल जाए के। गया सिंह का दुआर पर उनकर बड़का लड़िका बड़का कउड़ा फुँकवा देले रहललन। ओही में गोइँठा–लकड़ी कूल्हि सुनुगत–जरत रहे। ट्रैक्टर दुआर पर खड़ा कइ के ओप्पर लकड़ी–गोइँठा लदात रहे। पाला का मारे गोड़–हाथ सुन्न होखे त लोग आके, आगि का लगे बइठि जात रहे। कइसहूँ देंहि दनाउर कइल जात रहे।

भोरे चार–पाँच बजत रहे, जब ट्रैक्टर गाँव से बहरियाइल, बाकि कुहेस आ सितलहरी का मारे बुझात रहे कि राते बा। ई हाल रहे कि टिकठी चढ़ावत खा, मुँह से "राम नाम सत्त" निकाले में, जइसे जड़वा भितरी पइठि जाई, लोग बोलहूँ में कसरियात रहे। ट्रैक्टर का हड़हड़ाहट में "राम नाम" के सुर एकदमें दबि गइल। बस सत्त रहि गइल। चदरा–गमछा के, के कहो, टोपी, मफलर, कमरा ले बरफ बनल जात रहे। नाक कान मुँह बान्हि के, लोग ट्रैक्टर पर दूनो ओरी गोलियाइल रहे।

बूढ़ तिलकू अंगौछी से कसके मुँह बान्हें के पहिले उदास–बफहरा छोड़लन, "मलिकार के मुवल सुनते हमार परान सूखि गउवे, अधनिनिये कम्मर ओढ़ले, ओही बेरा टीबुल बन क के उनुका दुआर पहुँचुवीं, त छोटका मलिकार आगी का लगे कुरुसी डालि के बइठल मिलुवन। जान जा भइया कि ओही बेरा से, ओह आगी का दम प, फजीरे ले बइठले रहि गउवीं। भूखि आ नीन त उड़िए गउवे।"

– "आ रामकरन कहाँ रहुवन?" जैराम चद्दर से अपना के कसत पुछुवन।

– "ऊ लोग बाँस कटवावे आ टिकठी तेयार करावे में लागि कउवे लोग। कूल्हि कइला–धइला का बाद में ऊहो लोग ओही आगी किहाँ गोलिया गउवे।" सितलहरी में कठुवाइल, नाक से ओठ ले सुरसुरात बहल पानी पोंछत, तिलकू धिरहीं से कहुवन।

– "कुछू कहऽ ए बाबू अगर चइली–गोइँठा आ पुअरा ना रहित त राती खा के कठिन जाड़ कई जाना के ले बीतित।" बूढ़ जुगराती अपना झरल कम्मर में से मुँह निकालत, जाड़े–असहाय भइल अपना हालत के बयान करे क कोसिस करुवन।

जुगराती, तिलकू आ जैराम, बाबू गया सिंह के पुरान अदिमी–जन रहे लोग। तिलकू उनकर खास हरवाहे रहलन। टैक्टर–जुग में हर–फार हेंगा–जुआठ त बन्न हो गइल, बाकि तिलकू बाबू साहेब क टीबुल अँगोरला आ खेती–बारी के फुटकर काम अजुओ निबाहते बाड़न। निबाहे के ना रहित त हे जानलेवा ठार में आ एह बुढ़ारी समय में, ए बेरा उनुका बाहर निकले के हऽ?

गंगा–घाट का ओर जाए वाला कच्चा रस्ता पर टैक्टर उतरते, ऊँच–नीच गड़हा में

हिचकोला मारे लगुवे। नवहा लइका, जेवन पहिले लकड़ी का गाँठ पर बइठल रहुवन स, हाबा–काबा आ पहिराव–ओढ़ाव सम्हारत नीचे उतरि गउवन स, आ नीचे बतियावत–लोगन में आके घुसरे–अँड़से लगुवन स। हरियराइल गेहूँ जौ पर चढ़ल कुहेस के फारत, टैक्टर घाट का ओर बढ़ल जात रहुवे। ओकरा बत्ती का अँजोरे से राह सूझत रहे, ना त बिगहा भर फरका क चीझु लउकतो ना रहे। बिगहा भर के कहो, पाँचे फाल के चीझु ना बुझात रहे।

– "का धकियावत बाड़ऽ जा ए बाबू? अतना सुइटर, कोट, मफलर आ टोपी का बादो तोहन लोग के जाड़ लागऽता। पता ना घाट ले पहुँचत–पहुँचत तोहन लोग के हाल का होई?" जैराम, जुगराती का ओरी घुसुकत बोलुवन। जुगराती अभागत अस दाँत चियार दिहुवन। उनका आँख–नाक से लगातार बहत पानी, उनका बूढ़–झुरियाइल चेहरा प जाड़ के कोप क साफे झलक देखावत रहुवे।

बुढ़ापो अजीब अवस्था हऽ। ऊ धनी–गरीब ना चीन्हें। ओसहीं जाड़ो बा, ओकरो लगे धनी–गरीब के भेद नइखे, बलुक ससुरा लड़िके–बूढ़ प पहिले धावा बोलेला। ना त गया सिंह नियर, सुबिधा संपन्न टाँठ अदिमी, जवन अभी काल्हु ले बोलत–बतियावत, डाँटत–पोल्हावत, खेत में घूमे चलि गइल रहुवन, आज अचके.... जाड़ का एक्के झटका में ना चल जइतन, राम लखन सिंह आपन चुप्पी तूरत सधुआइल–मुँह बना लेहुवन।

बुझावनपुर का मोड़ से परवहिया घाट क रस्ता रहे। ओइजा पकड़ी का फेंड़ तर आगी जराइ के दू तीन लोग बइठल रहे। गंगा का अरार से हटि के एह उंचाह मैदाना में बसल बुझावनपुर गाँव में जादातर आपन जर–जोगाड़ कर लेबे लोग बीने, मलाह आ चउधरी रहे लोग।

टैक्टर नदी का अरार पर घरघरा के खाड़ भइल, त सब कपड़ा–लत्ता सइहारत जल्दी–जल्दी नीचे उतरे लागल। नीचे दू गो घाट रहे। नहाये वाला दहिने आ परवाहि खातिर बायाँ ओर। थोड़िकी दूर आगा। अरार पर खड़ा एगो पुरइंठ पीपर के फेंड़ तर आगी जराइ के दू–तीन गोड़ा बइठल रहलन स। जब बबुआन क टिकठी टैक्टर से उतराये लागल त ओमे से एक ठउरा दउड़त आ गइल। बुझला डोम रहे। ऊ हाली–हाली नीचे उतरि के पहिलहीं लासि जरावे खातिर जगह साफ करे लागल।

टैक्टर से लकड़ी, गोइंठा उतराये लागल। तिलकू, जैराम आ गाँव क दूसर लोग मदद करे लागल। नीचे घाट पर छोट–मोट टोटरम का बाद, लकड़ी–गोइंठा के चिता सजा के बाबू साहब सुता दिहल गइलन। उनकर बड़का लड़िका मुँहे आगि दिहलन, फेरु चारू ओर घीउ गिरावत आगि लहका दिहल गइल। बाबू साहब जबले जरत रहलन, लोग एकोरा खड़ा होके उनके जरत देखत रहे।

जे तनी हिम्मती रहे ऊ नहाए वाला घाट का ओर जाके नहाइल, केहू हाथ गोड़ धोवल, केहू कपार आ देहिं पर गंगाजल छिरिक के हाथ जोड़ल। अरार का ऊपर पहुँचला प फेरू जाड़ से देहिं थरथराये लागल। एगो दुसरका टैक्टर के लोग "राम नाम सत्त है" कहत हाली हाली नीचे उतरि गइल। ओह लोगन के, लासि गंगाजी में बहवावे के जल्दी रहे।उन्हन के एकोर होते, इहो गोल ऊपर चढ़े लागल।

गया सिंह का टैक्टर से ड्राइवर गायब रहे। कुछ लोग एने–ओने निगाह दउरावत भुनुकल, "सरवा, केने चल गइल? हो पिपरा तर आगी नइखे नू तापत?" छोटका मलिकार नहइले रहलन, ऊनी चदरा ओढ़ला का बाद थर–थर कांपत रहलन। उनकर लइका गरमाइले तिलकू–जैराम के इसारा कइलस– "दउरि के देखऽ जा ओके! देखत नइखऽ जा कि जाड़ बढ़ते जाता।"

ड्राइवर सचहूँ ओह पीपरे तर आगी तापत रहे। तिलकू आ जैराम के निगिचा आवत देखते, जोर से बोलल, "हई सरवा मुर्दा जरावे वाला लकड़िये लिया के तापत बाड़े स, आ हइ करीमना स्साला कहत बा कि, तोहन लोग का हटते हऊ जरतो बुतात लकड़ियों में से घींचि ले आइबि जा।"

तिलकू समझवलन, "छोड़ऽ मरदे, लइका हवन सऽ, चलऽ, मलिकार नाराज होत बाड़न, जाड़ का मारे सबकर हालत खराब होता।"

आगी में दोसर लुवाठी डालत करीमना हँसल, "तोहनो लोग के बुझाता सितलहरी? हिनिका के नइखे बुझात। जाये वाला त चल गइल, जे बा ओके त जिये के अलम चाहीं। आ हमहन खातिर त ई अगिये न बा। जवना के तोहनो लोग बेर–बागर तापि लेत बाड़ऽ जा! हुँह, मुरुदा क लकड़ी....." ऊ व्यंग भरल हँसी हँसल।

तिलकू के मन कइल कि ऊहो दउर के, अगिये का लगे बइठि जासु। कठुआइल नोंह करिया होखल जात रहे आ अँगुरी सुन्न। लड़िकवा ठीके कहत बा, हइसन ठार में जीउ बचावे खातिर आगिये नु बा, इन्हनी का पास। आगी त आगी हऽ– चाहे मुर्दा जरावे, चाहे खाना पकावे। फेरु टैक्टर प बइठल लोगन क इयाद आइल आ तिलकू के आगि का लगे जाए क विचार दबि गइल।

ड्राइबर असकतियाते आगी का लग से उठल आ देहिं के चद्दर झारे लागल। रामकरन पारा–पारी आपन गोड़ सेंकत कहलन, "आजा ना तिलकू भाई, तनी तूहऊँ हाथवा सेंकि लऽ! आरे भाई बहरिये का ताप से जिउओ गरमाला।"

– "अब जल्दी चलबऽ जा कि महँटियबऽ जा। का जाने मलिकार, केतना नराज होत होइहें।" आ पाछा घूमि के, फलगरे टैक्टर का ओर चल दिहलन। साँच पूछऽ त ऊ अपना पाछा आवत ड्राइवर आ रामकरन का बहाने अपना मनवे के ललकरुअन, जवन जरत आगि देखि के, ओके तनिकी ताप लेबे खातिर ललचा गइल रहुवे।

थाती

नीरज सिंह

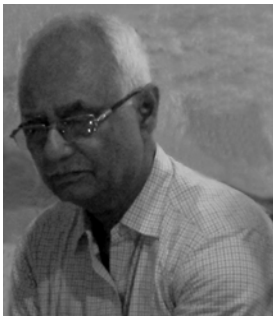

पुरनका शिवाला के पुजारी पं. गोबिन मिसिर के पराती के राग पहिले उठे कि मियाँ टोली के मुरुगवन के बांग पहिले सुनाय– इ केहू ना कहि सकत रहे। ई दुनो बात होखे आ ओकरा संगे–संगे सउँसे जगदीशपुर में जगरम हो जाय। बाग–बगइचन में चिरई चहचहाय लागँसन। कुइयाँ–इनार प पनिहारिन एकट्ठा होके रहि–रहि के खिलखिलाये लागँस, बड़का पोखरा प नहाये–धोआये खातिर मरद–मेहरारू पहुँचे लागस, मंदिरन के घंटी रहि–रहि के बाजे लागे आ चारो ओर रास्ता बहराये लागे। थोरही देर बाद आगे–आगे गरदन में बान्हल घंटिन के मूड़ी झांट–झांट के बजावत बैल आ ओकनी के पाछे कान्ही पर हर आ जुआठ लेले हरवाह लोग। कहे वाला कहत रहे कि एने पंडीजी आ मोलवी साहेब लोग के दुआरी प पढ़निहार जुटस आ ओने कई गो हरवाह लोग कट्ठा–दुकट्ठा जोत–दोखार देत रहे। कहे के माने ई कि सुरुज भगवान के मुसकइला के बाद जवन ललकी किरिनिया फूटँऽ सऽ आ छछाइल– धधाइल धरती माई के कोरा में समाये खातिर दउड़ँ सऽ, ओकनी के जमीन प उतरत–उतरत जगदीशपुर में जिनगी के कार–बार शुरू हो जात रहे।

ओहू दिन त ओइसहीं जागल रहे जगदीशपुर बाकिर देखते–देखते कोहराम मच गइल रहे। जेकरा के देखऽ, उहे गिरत भहरात बाबू के महलिया के ओरे दौड़ लगवले बा। अनजान आदमी केहू के रोक के पूछहूँ के कोसिस करे तऽ ऊ एको सबद बोले के तइयार ना। बतइबो करे त कइसे, अपने एह उड़त खबर के सच्चाई परख लेबे तब नूं केहू के कुछ बताओ। जेकरा के देखऽ ऊहे– 'का भईल? ए भइयवा?... कुछ बताव ना इयार!' कइले बा आ ओकर गोड़ अपने–आप बाबू के महल के ओरे घूम जात बा। देखते–देखते नगर के खास आ आम–सभ केहुए महल के भीरी एकट्ठा हो गइल। पहिले सउँसे दालान भरल, ओकरा बाद बरामदा, फेरु सामने के सहन आ ओकरा बाद गते–गते सउँसे मैदान। अइसन जुटान केहू के दरवाजा प कबहूँ–कबहूँ होखेला। जइसे छोटका बबुआ के तिलका के दिन भइल रहे भा बड़का मलिकार के इंतकाल के दिन भइल रहे, भा उनका सराध आ बबुआन के पगड़ी बन्हइला के दिन भइल रहे। ओह सभ मौकन प लोग चाहे त दुखी रहे भा सुखी रहे। अइसन बिचबिचवा हालत कबहीं ना रहे। जइसे–जइसे भीतर से छन–छन के खबर बहरियात रहे, लोगन के चेहरा प अचरज के रेघारी खिंचात जात रहे। सभ केहू के मन में एके सवाल– ई कइसे भइल भगवान? महीनवन से जेकर सांस टँगाइल रहे, कंठ रुन्हाइल रहे, बउसाव पटाइल रहे, अन्न छूट गइल रहे आ जेकरा जिनिगी के गाड़ी कसहूँ–कसहूँ दूध, फल के रस आ पानी के सहारे खिंचात रहे, ऊ सकलनाथो कुँवर रानी बोले लगली, लोग के बोला–बोला के हाल–चाल पूछे लगली– 'इ कइसे भइल दइब?.... धन्न हवऽ तूं भगवान....' 'जेहि के किरपा पंगु गिरि

लंघै, अंधन के पुनि देत दिखाई.... धन्न हवऽ.... धन्न हवऽ तूँ ए अन्तरजामी!'

'रानी ठीक हो गइली, रानी बोले–बतियावे लगली' –खबर जेने–जेने पहुँचल, खुशी के लहर दउड़ गइल। परजा–पवनी, नोकर–चाकर, गोतिया–देयाद, हितई–नतई गते–गते बाढ़ के पानी जइसन पसर गइल खबर। लोग–बाग दउड़ परल सुनतहीं। भीठहाँ से, दलीपपुर से, नोखा, ससराँव– सगरो से। अइसन अनरीछ पहिले केहू सुनलहीं ना रहे। सतखंडा महल के चउथका अँगनई में रहत रही रानी। पँचवा खंड में पतोह आ ओकरा पीछे वाला खंड में नतिन पतोह– गिद्धौर राज के बेटी, जवना के बियाहे खातिर गइल बरिआत के खिस्सा आजु ले सै–पचास कोस में सुनल–सुनावल जाला। पतोह–नतिन पतोह आ गोतिया–देआद के मेहरारून के झुंड घेरले रहे, रानी के आ ऊ आदमिन के मुँह चीन्ह–'चीन्ह के कमजोर आवाज में ओकरा से हाल–चाल पूछस– 'ठीक से बाड़ू नूं हीरामन बो?... रउवाँ कहवाँ रहत बानी ए पड़िताइन जी? एने कवनो ओह–पता ना मिलल हा राउर!... आ ए चनरिकाबो बहिनी! मलिकार ठीक बाड़न नूं तोहार?।' जेकर नाँव पुकारस रानी, ऊ धन्न–धन्न हो जाव– 'राज के बड़की मलिकाइन आ अइसन नेह–छोह हमरा से!' ओकर आँख लोरा जाय आ ऊ मुँह फेर के लुगा के अंचरा से आपन आँख पोंछे लागे। एही बीच पाछे से कवनो बड़–बूढ़ चिहुँके– 'तनी अगवा से हटऽ बहिनी लोग.... कोइर टोली के मेहरारू आइल बाड़ी स....'

कोइरटोली के बाद हज्जम टोली, अहीर टोली, दुसाध टोली, सोनर टोली, कमकर टोली, चमरटोली– चारो ओर के मेहरारू झुंड बान्हि के रानी के देख गइली स। रानी के देख के, उनका से असीस मांग के लउटत मेहरारून के मुँह से बस भगवान से एके पराथना– 'हे दइब! जइसे हमरा रानी के बोली–बानी लवटवल, उनकर इयाद लवटवलऽ तसहीं कुछ बरिस खातिर उनुकर जिनिगियो लवटा दऽ। बड़ा हुलास रहल हा उनुकरा परनाती खेलावे के.... उहो पूरा हो जाइत त सुखी मन से तहरा लोके जइती हे प्रभु!.... अब जवन बा, सभ तहरे हाथ में बा.... दरबार से त उनका आस उम्मीद ना पहिले रहे, ना आगे रहे के उम्मीद बा....।'

मेहरारून के भीड़ छँटल त मरदन के ठेलमठेल शुरू भइल बुझात रहे। जइसे रानी के गोड़ जे छू लेलस, ओकर बैकुंठ में पक्का–पकी जगहा लिखा गइल– रेहन ना, बैनामा। आ ओतने ना, ओइजाँ से लवटला के बाद का मरद आ का मेहरारू– 'सभ केहुए नहा–ध ोआ के हाथ में भर लोटा जल लेके दरबार माने बाबू माने कुँवरा दादा के बनवावल नयका शिव मंदिर में उमड़ गइल– जय हो भोलेनाथ!... जय हो भोले भंडारी... दरबार के सुख–चैन पहिलहीं अस आबाद कर दऽ प्रभु!... आ खाली ओहिजे ना, बलुक मइयाथान, ठाकुरबाड़ी जइसन सभ देवस्थानन में भगवान के गुन–गान होखे लागल– हरे राम, हरे राम, राम राम हरे–हरे....।' दुघरी दिन चढ़त–चढ़त गढ़ प' के हाल देखला प' बुझात रहे कि जइसे थोरिका देर पहिले कवनो फउजी लश्कर रात्रि विसराम क के आपन रहता ध' लेहले होखे भा गंगिया माई के बाढ़ उतरला का बाद जगह–जगह ओकरा चढ़ती के संगे पहुँचल चीज–बतुस रह गइल होखे।

अपना दलान के बरामदा के पुरबारी हिस्सा में भोरहीं से बइठल बाबू साहब अबहियों आवे–जाये वाला लोगन से पहिलही जइसन बात–बतकही करत रहस। लोग उनुकरा से तरह–तरह के बात कहस, परतुत देस आ जेकर जइसन हैसियत रहे, ओकरे हिसाब से आ अपना तरीका से बबुआन के परबोधे के कोसिस करस। उहाँ के जेकर बात नीमन लागे, मूंड़ी हिला के ओकरा से सहमति जताईं आ नीमन ना लागे त अनसइला अस दोसरा तरफ देखे लागीं। एही बीचे रह–रह के खवास–खवासिन आवँऽ सऽ आ बइठल लोगन से जल–जलखई खातिर पूछ जा सन। जेकरा जरूरत होखे, ऊ परात में धइल पानी के चुक्कड़ आ मिसिरी की ढेला उठा लेबे, खाये, पानी पीये आ बरामदा से उतर के एगो कोना में खाली चुक्कड़ फेंक देबे। ओहिजा बटोराइल चुक्कड़न के टाल के देख के पता चलत रहे कि आजु कइसन जमवड़ा जुटल रहल हा गढ़ पऽ।

जहवाँ बबुआन बइठल रहलन, ओहिजा से थोरिका दूर हट के पच्छिम ओरिया के देवाल से सटा के बिछावल दरी प' बइठल पुरोहित जी, जोतसी जी आ भंडारी जी, बुढ़वा बैद जी से तरह–तरह के सवाल करत रहे आ उहाँ के बहुत गम्भीरता से ओह लोग के जबाब देत रहीं। ओइसे भीतर से खुस सभ केहुए रहे, बाकिर कुछ–कुछ ससंकितो रहे। दिक्कत इ रहे कि अन्दर घुमड़त असली सवाल के ओठ प' ले आवे के कवनो रहता केहू के ना सूझत रहे। खाली एने–ओने के बतकही होत रहे। तबहिएँ पुरोहित जी के मन में

कवनो बात आइल आ उनुकर आँख चमक उठल– सुनीं सभे! हम एगो बात जानल चाहत बानीं। रउआ सभे गुनी आदमी बानी– एह से समझ–बूझ के बताईं जा– रानी अब ठीक हो जइहें नूं? राउर जोतिस का कहत बा जोतिसी जी? आ रउआ त भोरहीं रानी के नाड़ी जँचले रहनी हाँ बैद जी– का बुझाता?

पुरोहित जी के सवाल सुनके बैद जी के आँख पताल ढूँढे लागल आ जोतिसी जी आसमान निहारे लगलन। जब ओह लोग के जबाब देबे में देर भइल त उहे सवाल भंडारी जी माने मुंसी भभीखन लाल दोहरवले– का बुझाता बाबा? कुछ बताईं जा?

भंडारी जी के सवाल सुनि के दुनो आदमी धरती प' लवट आइल लोग आ एक–दोसरा के देखे लागल। आखिर में जोतिसिये जी के जबान खुलल– हमार कवनो विद्या काम नइखे करत ए भाई लोग।... ओह कोठरिया में अकेले बइठके हम रानी के गरहे–नछत्तर बिचारत रहनी हाँ। रातिये के सोचले रही कि अब हिम्मत क के बबुआन से कहब।... कहब कि जे भइल, सेकरा के अब भुला दीहीं। काहे कि रानी के अरदोआय अब खतम बोलऽता।... कब साँस टूट जाई, कहल ना जा सके। एह से रउओ उनुकरा भीरी घरी–दु घरी बइठ के संतोष कऽ लीहीं... बाकिर भोरे–भोरे जवन सुनाइल हा आ ओकरा बाद अपना आँख से रानी के देखला के बाद से हमार अकिले काम नइखे करत....।

'इहे हाल त हमरो बा ए महाराज।' बैद जी कहलन– 'हम तऽ आजुओ रानी के नाड़ी देखनी हाँ त पहिले से कुछ खास अन्तर ना लागल हा। हँ, नाड़ी तनिका शांत जरूर भइल बिया, जवना से रानी क हाँफ नइखे उठत आ बोले–बतिआवे में कष्ट नइखे होखत। बाकिर हतना दिन के कंठरुन्ही के बाद अइसे एक ब एक टनमना गइला के बाद त हमरो बुझात नइखे कुछ। .... का कहीं हम?'

'जब रउआ सभे लेखा पचास कोस में मानिन्द गुनी लोग के इ हाल बा त अब अलगा से कहे के त कुछुओ रहिये नइखे जात बाकिर हमरा अब कुछ दोसरे बुझात बा', पुरोहित जी कहलन– 'आ हम हिम्मत क के कहतानी कि रानी अब जादे देर ले ना ठहरिहन। उनकर इ टनमनाइल, इ बोलल–बतिआवल– सभ चला–चली के बेरा के चीज ह। जइसे बुतइला के पहिले दियरी के लौ खूब तेज हो जाला, वइसहीं सरीर तेयागे के पहिले जीवो चरफराये लागेला। हमनी के भले इ बात ना बुझाये बाकिर अनपढ़–गँवार कहाये वाला लोग–बाग सभ चीज बूझेला।... अँसहीं का मेला बटोरा गइल हा? जे आइल हा, ऊ इहे सोच के आइल हा कि चलऽ, चलाचली के बेरा में रानी के असिरबाद ले लिआव!'

– 'अइसन बात त बबुआन से रउए कहीं ना? बैद जी, जोतिसी जी आ भंडारी जी एके साथे बोल पड़लन– मिरित भुवन तेयागे वाला जीव से कइसन द्वेस आ कइसन दुसमनी? चल के एक बेर उनुकर हाल–चाल पूछ लेतन।'

– 'कहनी हाँ ना, पुरोहित जी कहलन– कहनी हाँ कि जजमान, तनिका रानीके गोड़तारी जाके खड़ा हो जाईं। मन ना करी त बोलब–बतिआइब मत, खाली खाड़े रहब ऊहाँ के नजर के सनमुख। ऊहाँ के कुछ कहब चाहे ना, बाकिर आतमा जुड़ा जाई ऊहाँ के। चलीं, हमरा साथे चलीं बाकिर काहे के– एके बात– ना बाबा, ना..., ना.... हमरा के ऊ अपना सामने आवे से मना कइले बाड़ी... जाइब त उनका कष्ट होई। एह से ना... छोड़ दीहीं, अब अगिले जनम में...।'

– जान तानी सभे, कहे के त ना चाहत रहे बाकिर पता ना, कइसे त हमरा मुँह से अपने आप निकल गइल हा, पुरोहित जी कहलन– 'मना त ऊहाँ के ना कइले रहीं जजमान... हँ, ई जरूर कहले रही कि आगे से जब आइब हमरा भीरी, त अकेलहीं आइब!... हम रउआ एह दुलरो के देखल नइखीं चाहत। इनका संगे आइब त हमार मुअल मुँह देखे के तइयारी क के आइब। एह से रउआ चलीं। अकेले आवे–जाये के ऊहाँ के तरफ से कवनो मनाही ना रहे सरकार।'

'कतनो समझवनी हाँ, बाकिर काहे के– बस, एके लकीर– जाये दीं महाराज जी! एह गिरत ई उमिर में अब राजपूत के बचन–भंग मत करवाईं। हमहूँ मेहर के हाथ धइले एके बात कह के उनुकरा सामने से हटि आइल रहीं कि आगे तहरा किहाँ हम कबहुओं आइब त अकेले ना आइब आ जबले हमरा के बोलइबू ना तबले तहरा किहाँ अइबो ना करब रानी सकलनाथो कुँवर।' 'रउआ त सभ देखलहीं रही महाराज जी, तब काहे के धरम–संकट में डालत बानीं हमरा के!. .. कहत–कहत बबुआन के आँख लोरा गइल हा। ओकरा बाद हमरो से कुछ कहाइल हा ना। रउआ सभे एही आस–उम्मीद में बइठल बानीं कि का जाने कब बबुआन के मन फिर जाव त उनुकरा संगे जाके कुछ

संकलप–ओनकलप करवा देहब।'

पुरोहित जी के बतकही सुनके बैद जी आ जोतिसी जी दुनो आदमी एकदम चुपा गइल लोग। बैद जी के मन त रोवे के करत रहे, बाकिर मरद रहन, अपना मन के काबू में कइलन आ कहलन– 'एकरे के करम के फेरा कहल जाला। रउओ सभे त भीतर–बाहर अइबे–जइबे करीलें। बाकिर बर–बेमारी का चलते भा असहूँ अपना कर्तव्य के निबाहे के लेहाज से हमरा राजा–रानी दुनो आदमी से बोले–बतिआवे के मोका सुरूए से मिलत रहल बा। एक–दोसरा के इ दुनो आदमी कतना इज्जत करत रहे लोग, ई सऊँसे जगदीशपुर जानेला। बुझात रहे कि इ दूनो आदमी एक–दोसरे खातिर बनल होखस लोग। रानी के बेमारी के हालत जाने खातिर बबुआन के बेयगरियो हम रोजे देखत बानी महाराज जी! एको दिन अइसन ना भइल हा कि हम भीतर रानी के देखि के बाहर आइल होखी आ इहाँ के ऊहाँ के हाल–समाचार ना पुछले होखब। ओने रानियो के हम इहे हाल देखनी हाँ। ... बोले–बतिआवे के शक्ति त भगवान उनुकर छीन लेले रहलन हा, बाकिर जब हम ऊहाँ के सामने जाइब त एक छन हमरा ओरे देखि के मूड़ी हिला के 'ठीक बानीं' कहे के कोसिस करब आ तुरंते हमरा पाछे के ओर देखे लागब। हमरा हमेसा इहे बुझाइल कि ऊहाँ के बबुआनो के आसरा देखत रहनी हाँ।... हम कई बेर बबुआन से ई बात कहबो कइनी आ कई तरह से कहनी, बाकिर ऊहाँ के एके रट– 'इच्छा त हमरो करत बा बैद जी बाकिर हम जानत बानीं कि हमरा गइला से ऊहाँ के खुशी ना होई। काहे कि हम अकेले जाइब ना, आ ऊहाँ के दूनो आदमी के जवरे देखल चाहब ना...।'

केहू से कुछ कहल–सुनल बरते ना रहे। अब आगे बतिआवहूँ के का रहे! ना ओहिजा से हटहीं के सवाल रहे। बबुआन भीरी अबहियो भीड़ लागल रहे। लगले छोटका बबुआ अमर सिंह के ससुरार से दु बैलगाड़ी भरल मरद–मेहरारू पहुँचल रहे लोग। ओने जितौरा तक लेके गाँवन में बात पहुँच गइल रहे। एह से खास जगदीशपुर के लोगन के अपना घरे लवटि गइला के बादो भीड़ में कवनो कमी ना आइल रहे। जल–जलखई करावे के सिलसिला वोसहीं चलत रहे। भंडारी जी ई सभ देखतो रहन आ कुछ सोचतो रहन। अचनके उठि गइलन– 'हतना दिन चढ़ गइल महाराज जी आ रउआ सभे बिना कुछ खइले–पियले बइठल बानीं। ठहरीं, हम कुछ फल–फरहरी के इंतजाम करत बानीं।'

भीतरा से छोटका बबुआ अमर सिंह जब आँख पोंछत–उदासल बहरा अइले त पहिले त लोग के बुझाइल कि ऊ मतारी दाखिल भउजाई के ढेर दिना के बाद देखला आ उनुकरा से कुछ बोलला–बतिअवला के चलते माया में पड़ि गइल बाड़न बाकिर जब ऊ झटके में एह कोना–बैद जी आ पुरोहित जी ओरे बढ़लन त सभ लोग कवनो अनिष्ट के आशंका से मने–मने काँपि गइल। सभ केहुए अपना जगहा पर उठि के खाड़ हो गइल– 'कुछ हो गइल का बबुआ जी?'

– 'अबहीं तकले त भइल नइखे महाराज जी, बाकिर बुझाता कि अब होइबे करी–, वोसहीं आँख पोछत अमर सिंह कहलन– 'हमरा किहाँ के गोल जुटल हा आ मलिकाइन के बोलत–बतिआवल देखल हा त कुछ जादहीं खुश हो गइल हा। नवरंगी के रस पियावे लागल हा लोग त मलिकाइनो ओह लोग के मन राखे खातिर पी लिहली हा आ बुला रोज से अधिका पी लिहली हा।... पी त लिहली हा महाराज जी, बाकिर आन दिना लेखा पचल हा ना.... तुरतले ओका दिहली हा। आ ओकरा बादे उनुकर आँख तरेराये लागल हा, देह अइठाये लागल हा। हाथ–गोड़ दबावल हा लोग त अब कुछ राहता प' आइल बा तबीयत...।'

– 'आहि दादा, बैद जी हड़बड़ा गइलन– अतना सब कुछ हो गइल छोटका बबुआ जी आ हमरा के कवनो खबर ना? एही नीमन–बाउर खातिर नूं हम भोरहीं से अगोर के बइठल बानीं इहवाँ...' कहत–कहत ऊ आपन झोरा उठवलन आ सीधे अन्दर दरबार में।

– आ एगो बात अउरू महाराज जी, अमर सिंह पुरोहित जी से कहलन– हमरा ठीक से बुझात नइखे, का कइल जाव!... मलिकाइन के हालत–देखके लोग–बाग फेरू एगो बाछी छुआवे के सलाह देबे लागल हा त ऊहाँ के हाथ के इसारा से मना कर दिहनी हाँ आ कुछ देर ले आसमान ताकत रह गइनी हाँ। एही बीच में ऊहाँ के आँख से लोर ढरक गइल हा। हमरा घरे के अपना अंचरा से मलिकाइन के आँख पोंछे लगली हा त ऊ उनुकर हाथ ध' लेहली हा आ कहली हा – 'अब इ कुल्हि छोड़ द दुलहिन... बहुत दिन कइलू लोग, अब हमरा के जाये दऽ! जिनिगी के दाँव हम हार गइनी... अब आना–'आनी के कुछ नइखे।... उनका के बोलवा द तनिका....'

– कहनी हाँ– ई बात रानी अपना मुंह से कहनी हाँ छोटका बबुआ? पुरोहित जी आ जोतिसी जी– दुनो आदमी चिहा गइल लोग– त अब देर कवना बात के जजमान! बबुआन के जल्दी ले चलल जाव मलिकाइन के सोझा...

– 'इहे त हमरा बुझात नइखे महाराज।... ऊ जइहन?'

– 'जइबे करिहन। काहे नाऽ जइहन?'

– 'अकेले जइहन?'

– अब अकेले–दुकेले के बात कहाँ रह गइल छोटका बबुआ? बोलवला के मतलबे इहे बा कि राजा आवस– अकेले आवस चाहे जइसे आवस।.... रउआ ढेर सोचीं मत, पुरोहित जी कहलन– हम कहत बानी नूं बबुआन से...

बबुआन से कहाइल त उहो अचकचा गइलन– 'हमरा लागता कि तहरा लोग के ऊहाँ के बात सुने–समझे में कवनो गलतफहमी भइल बा... हमरा विसवास नइखे होत कि ऊहाँ के अइसन बात कहले होखब...'

– कवनो गलती नइखे भइल भइया, अमर सिंह कहलन– ऊहाँ के अपना मुंह से कहनी हाँ आ हम अपना कान से सुननी हाँ, तबहिए हम रउरा भीरी आवे के हिम्मत कइनी हाँ। ... ऊहो होत ना रहे एह से महाराज जी लोगन से सलाह कइला के बादे रउरा से निहोरा करत बानीं।... चलीं, हमार बात मानी भइया.... जल्दी से चलीं।

– छोटका बबुआ के बात प' भरोसा करीं बबुआन, पुरोहित जी कहलन– देर कइला से कवनो फायदा नइखे।

– त ठीक बा अमर, बबुआन कहलन– "तू जल्दी से फिटिन भेज के नयका बंगला प' से मेहरून्निया के बोलवा लऽ ऊहो बेचैने बाड़ी। सबेरे से कई बेर खबर भेजवा चुकली आवे खातिर। हमहीं मना कर देनी हाँ। जा, जल्दी करऽ!"

'अमर सिंह छन भर बबुआन के चेहरा निहरलन, फेरू उनुकर नजर महाराज जी लोग ओरे गइल। आँखिन–आँखिन में तनिका संवाद भइल आ ऊ बरामदा से उतर के सहन प' खाड़ हो गइलन.... "भरत सिंह, जरूरी से फिटिन लेके नयका बंगला प' चल जा आ..."

दिन तीन पहर से अधिका बीत चुकल रहे। सुरुज के ताप में धीरे–धीरे कमी आवे लागल रहे आ ऊ अब रात्रि विसराम के तइयारी में पच्छिम दिशा में तेजी से सरके लागल रहन। जगदीशपुर गढ़ के सामने के मैदान में लोगन के भीड़ त अबहियो रहे बाकिर पहिले जतना ना। दूर–दराज से आइल लोग अपना–अपना घरे लवटे लागल रहन बाकिर खास जगदीशपुर आ आस–पास के लोगन के आवा–जाही अबहियों लागल रहे।

जब नयका बंगला से लवटि के फिटिन आइल त मैदान में तनिका हलचल अस भइल बाकिर राज के सिपाही आ महल के पहरुआ सभ; केहू के भीरी ना ठेके देलन स। घर–परिवार के रहनगर मेहरारुन लेखा सुन्दर, गुलाबी रंग के हल्का जरीदार साड़ी पेन्हले, लिलार प' लाल बिन्दी लगवले आ चांद जइसन दपदपात गोर मुखड़ा प' तनिका घूंघट गिरवले लाम–लहकार,पातर छड़ी जइसन खाड़ मेहरुन्निसा के देख के केहू सपनो में ना सोच सकत रहे कि ऊ कुछ बरीस पहिले ले नाचत–गावत रही। कवनो साज–सिंगार ना कइला के बादो उनकर रूप अपरूप लागत रहे।

मेहरुन्निसा जब सहन में पहुँचली त अमर सिंह उनुकर अगवानी कइलन आ बरामदा के सीढ़ी चढ़त खानी अपने से बबुआन। ओकरा बाद तनिको देर ना भइल। आगे–आगे पुरोहित जी, जोतिसी जी, भंडारी जी आ छोटका बबुआ बाबू अमर सिंह आ ओह लोग के आगे–पीछे बबुआन आ मेहरुन्निसा। रानी के अंगनई में पहुँचला के बादो मेहरुन्निसा के गोड़ तनिका थथमल, बाकिर, उनुकरा कोठरिया में ढुके के त उनका हिम्मते ना पड़ल। उ दुअरिये प' खाढ़ हो गइली। इ देख के रानी के पलंग भीरी पहुँचे–पहुँचे भइल बबुआनो थथम गइलन आ पाछे मुड़ि के आँख के इसारा से उनुकरा के भीतर आवे के कहलन। पता ना कइसे, रानी के बबुआन के धरमसंकट के पता चल गइल। ऊ कहली– 'आवल जाव... हम दुनो आदमी के बोलवनी हाँ... ।'

बबुआन मलिकाइन के पलंग भीरी आके खाढ़ भइलन आ ठीक उनुकरा पीछे मेहरुन्निसा के इसारा से अपना भीरी बोलवली– 'दोषी त तूं बाड़ी हमार... हमार सवांग हमरा जीयते अधिया लेलू, एकरा से बढ़ के दुसमनी आ घात हमरा संगे दोसर का होई?... बाकिर जा, हम तहरा के माफ करत बानी।... एह से माफ करत बानी कि लोग–बाग हमरा से आजु ले तहार बड़ाइये कइले बा।... केहू तहरा सील–सुभाव के खिलाफ कबहियों

कुछ नइखे कहले। खाँटी गिरहतिन बन के रहत बाडू।... तूँ हमरा के हरा देलू बबी।... तहरा के छोड़ के एको छन खातिर हमार मलिकार हमरा घरे झांकियो पारे ना अइलन हाँ...।'

— अइसन मत कहल जाव मलिकाइन, जेकरा दहाड़ से छछात बाघ के करेजा काँपे लागत रहे, ऊ बबुआन बाबू कुँवर सिंह एकदम लइका लेखा फफकि पड़लन— 'अपनहीं के हमरा के मना कर देहले रहीं। हम छत्री एक बेर एह मेंहरारू के हाथ थाम्हि लेला के बाद छोड़ कइसे सकत रहीं? ई हमरा धरम के, जात के आन के आ पुरुख के सुभाव के उल्टा बात होइत कि ना? रउवें बताईं मलिकाइन, खाली एगो एह बात के, हम रउआ से कबहीं—कवनो गलती कइले बानीं? गीत—गवनई आ नाच के महफिल में त हम लइकइये से आवत—जात रहीं, बाकिर एने—ओने के कवनो बात रउआ इनका से पहिले सुनले रहीं, कबहीं?... हम जान—बूझ के कबहीं कवनो गलती नइखीं कइले मलिकाइन, जवन भइल तवन परिस्थितिवश भइल।... तबहुओं हम रउआ आगे हाथ जोड़त बानीं— अब हमरा के.... इनका के....'

एकरा आगे बबुआन के कुछुओ ना बोले दिहली रानी— 'अब अइसन मत करीं... हमार ऊहो लोक मत नासीं मलिकार!...' बाकिर एक बात कहब रउआ से— 'जइसे आज ले आपन बचन निभवनी हाँ, तसहीं आगहूँ निबाहब! इनका के कवनो हालत में कबहीं छोड़ब मत... इनकर इज्जत—हाल के ओसहीं खेयाल राखब— आ हरमेसा राखब, जइसे आज ले रखनी हाँ।... अपना घर—परिवार के आदमी बुझब इनका के, जइसे थोड़—बहुत कमी—बेसी के साथ हमरा के बुझत रहनी हाँ।... अउरू एगो बात इ कि बाबू उदवन्त सिंह के खानदान के एक रखे के कोसिस करब आ सभ केहू के मान राखब।... आ बबी! तूं तनिका हमरा भीरी आव, बबुआन के पीछे खाढ़ मेहरुन्निसा के रानी अपना भीरी बोलवली। ऊ जइसहीं आगे डेग बढ़वली, उनुकरा दुनो आँख से गंगा—जमुना बहे लगली।

— रोवऽ मत बबी, अब रोवला में कुछ बा ना, रानियो के आँख लोरा गइल रहे आ बोलिओ भहराये लागल रहे— 'तू त रहलू हा हमरा बेटी—टाटी के उमिर के, बाकिर हमार करम—किस्मत तहरा के हमार बहिन के दरजा दिला दिहलस।... अब जवन भइल तवन त होइये गइल, आगे खातिर हम तहरो से इहे बात कहब कि निबहिहऽ तुहूँ।... तहरा लोग के धरम में तलाक के रेवाज बा, हमनी के धरम में नइखे। एहिजा मेहरारू के परीछ के घर में भितरिआवल जाला आ अन्तिम बेरा ओसहीं साज—सिंगार क के बहरिआवलो जाला हरमेसा—हरमेसा खातिर। ... एही से कहत बानी कि हमरा बबुआन के हाथ धइले बाडू त कबहूँ—कवनो हाल में छोड़िहऽ मत .... दुनिया चित्त से पट हो जाय तबहुओं ना...।'

— ना छोड़ब मलिकाइन, मेहरुन्निसा कलपे लगली—छोड़हीं के रहित त धरिती काहें खातिर? हम त बीच बाजार में बइठे वाली रहनी हाँ, एगो घर के खूंटा से काहे बन्हइतीं मलिकाइन! छोड़े के होई त राउर बबुआने छोड़िहन— हम मरते दम ले ना छोड़ब।'

रानी टुकुर—टुकुर देखत रहली— रोवत—कलपत मेहरुन्निसा के। फेरू उनुकरा मन में ना जाने का आइल— ऊ छोटका बबुआ के मेहरारु— आपन छोटकी गोतनी के भीरी बोलवली आ कहली— 'छोटका बबुआ बो! आपन हाथ द हमरा के... ना छोड़ऽ... तनिका हमार मांग के सेनुरवा अपना अंगुरी से बोर के इनका अँचरा से ठेका द... ठेका दऽ हम कहत बानी नूं...।'

मेहरुन्निसा अपना साड़ी के अंचरा के फाँड़ बना लेली आ छोटका बबुआ बो रानी के माँग के सेनुर में बोरल आपन अंगुरी ओकरा में ठेका देहली। रानी इ देखि के जोर—जोर से सांस लेहली आ आँखिन से ढर—ढर लोर ढरकावत मेहरुन्निसा के ओर देखत कहली— 'ई खाली सेनूर ना छुआवल गइल हा बहिनी, हम आपन थाती तहरा के सऊँपनी हाँ— हम बबुआन के जिनिगी में तहरा के आपन जगह दिहनी हाँ।... इहे तहार एहवात ह, तहार सत आ पत हऽ!... हम इनकर करम के संगी रहनी हाँ, तू धरम के बनिहऽ।... आ सुनऽ छोटका बबुआ बो! तुहूँ लोग इनकर मान रखिहऽ लोग... सभ केहू इनकरा के धरमन कहिहऽ लोग...धरमन बाई ना धरमन बीबी। सुनऽतारू नूंऽऽ...हम...।'

लोग त सुनते रहे आगहूँ सुनल चाहत रहे बाकिर कहे वाला के बोलतवे उड़ि गइल रहे। एकाएक जोर से हिचकी आइल— उहो बस एक बेर आ खेला खतम। रोवन—पीटन लाग गइल, बाकिर ओह में अब का रहे।

रानी गइली, संगे—संगे मेहरुन्निसो गइली।

रह गइलन बबुआन आ रह गइली धरमन।

वीर कुँवर सिंह नगर, कतिरा, आरा, बिहार

अकथ कहानी

✍ तुषारकान्त उपाध्याय

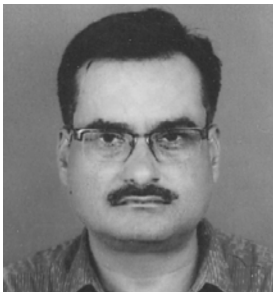

राजधानी के सबसे पॉश कॉलोनी। खूब चौरस सड़कन के दूनो ओर बनल आलीशान बंगला सब, जवना में एगो डॉ0 प्रकाश शुक्ल के हऽ। बड़हन गेट के भीतर बड़े–बड़े फेंड़ आ तरतीब से लगावल गइल फूलन के बगइचा के बीचे तिनमंजिला मकान। भीतर–बाहर देशी–विदेशी गाड़ियन के आवाजाही।

एगो अजीब स्तब्धता आ चुप्पी ओढ़ले वातावरण। चुप्पी टूटत बा डॉ0 मीरा के आवाज से.... – बेटा अभि! जाके ले आवऽ उनका के!

– जी?

– हँ.... का जाने उनके खातिर साँस अँटकल होखे!

– बाकिर माँ....!

– हँ, बेटा! ले आवऽ। देखत नइखऽ सउँसे देह में बेडसोर, बिथा से घरघरात इनकर आवाज आ तबो... जइसे कवनो लालसा में देह नइखे छूटत!

ओही घरी डॉ0 शुक्ल करवट बदले के कोशिश कइले। आँख के छोर भींजल रहे। पीरा से उसिनाइल चेहरा। देह चाम ओढ़ले नर–कंकाल।

सहारा देके करवट बदलवावल गइल। कबो आँख खुले त शून्य में कुछ निहारस आ फेर अर्द्ध –चेतना में डूब जासु। लोग आवे, चुपचाप उनका के कुछ देर देखे आ आपन संवेदना व्यक्त क के चुपचाप चल देइ। अब–तब के हालत रहे। प्रोस्टेट कैंसर। बस प्रतीक्षा रहे पंछी के पिंजरा छोड़ के जाये के। असह्य वेदना आ चिकित्सकीय अनुमान के झुठलावत उनकर आत्मा शरीर ना छोड़ पावत रहे। अभि... उनकर बेटा.... एगो सफल चिकित्सक। एक महीना से सबकुछ छोड़–छाड़ के पिता के सेवा में लागल रहे। ऊ अपना महतारी के बात मान के बहरी निकलल। कुछ अइसन रहे, जवन ओकरा समूचा ज्ञान आ तर्क के झूठ करत लागल।

डॉ0 प्रकाश शुक्ल मेडिकल कॉलेज में बाल रोग के विभागाध्यक्ष। उनकर पत्नी डॉ0 मीरा शुक्ल ओही मेडिकल कॉलेज में मेडिसिन विभाग के प्रमुख बाड़ी। एगो बेटा अभिनव आ एगो बेटी अनन्या।

अभिनव के ओकर मित्र आ परिवार के लोग 'अभि' कह के बोलावेला। महतारी–बाप ओकर बियाह ओकरे कॉलेज में पढ़ रहल अपना पारिवारिक मित्र के बेटी से करा देले बा। शायद ऊ लोग अभि के मन के भाषा पढ़ लेले रहे। बेटा–पतोह दूनो जाना अमरीका में सफल डॉक्टर बा लोग। बेटी अनन्या आइ.ए.एस. अधिकारी बिया आ ओकर बियाह संगही प्रशिक्षण पावत आइ0ए0एस0 अधिकारी से भइल।

मध्यम वर्ग खातिर अइसन परिवार, अइसन जीवन एगो आनन्द–उत्सव रहे आ एही उत्सव आ ओकरा संस्कार के चलते आज बेटा–बेटी दूनो जाना सब कुछ छोड़–छाड़ के पिता के अंतिम समय में उनका साथे बाड़न।

.... बाकिर कुछ रहे!

.... कुछ अइसन रहे जेकरा के पूरा मेडिकल कॉलेज जानत रहे बाकिर सामने केहू कुछ ना कहल।

डॉ0 शुक्ल के गरिमामय व्यक्तित्व, उनकर सादगी, काम के प्रति उनकर समर्पण... हर वर्ग आ खेमा उनुका के बड़ा आदर आ स्नेह से देखते रहे आ मैडम मीरा त तब प्रथम वर्ष में आइल रही, जब डॉ0 शुक्ल असिस्टेंट प्रोफेसर बन गइल रहले। मीरा के पिता ओही कॉलेज में प्रोफेसर रहले। उनका प्रस्ताव के डॉ0 शुक्ल के परिवार अपना खातिर गर्व के बात समुझत रहे।

डॉ0 प्रकाश शुक्ल आ मीरा के बियाह के राजनीति, कला, प्रशासन आदि क्षेत्रन में आपन पहचान रखे वाला अइसन केहू ना रहे, जे हिस्सा ना बनल होखे। उनका अपना चिकित्सकीय पेशा के त बतिए अलग रहे।

देखते–देखत पाँच बरिस कइसे बीत गइल, पते ना चलल। एही बीच शुक्ल दंपति एगो सुंदर बेटा पाके बहुते खुश रहे लोग। डॉ0 शुक्ल अब स्थापित डॉक्टर रहले। कॉलेज में जतना मान रहे, प्राइवेटो प्रैक्टिस में ओतने यश मिलत रहे। उनका से देखवावे खातिर लोग हप्तन इंतजार करे। काम से जइसहीं फुरसत मिले, पति–पत्नी स्वतंत्र पंछी अस फुर्र से कहीं दूर उड़ जात रहे.... सिर्फ एक दोसरा के खातिर, एक दोसरा के संगे। डॉ0 प्रकाश के महतारी–बाप एह बीच मनोयोग से अक्सरहाँ कहसु.... मीरा, मीरा आ कृष्ण देह से त ना नूं मिल सकल रहे लोग, बाकिर देखऽ हमनी के उहन लोग के आत्मा लिहले सशरीर मिल रहल बानीं जा।

मीरा अब डॉ0 मीरा शुक्ल बन गइल रही, बाकिर पोस्ट ग्रेजुएशन में प्रवेश के चिंता उनका के पढ़ाई–लिखाई में अतना व्यस्त क देले रहे कि ऊ आस–पास के दुनिया एकदमें भुला गइल रही। हर दोपहर के, जब डॉ0 प्रकाश के तनी फुरसत मिलत रहे, मीरा उनकरा मेडिकल कॉलेज के चैम्बर में चल आवत रही आ ऊहो ओही तन्मयता से उनका तइयारी में मदत करत रहले।

दिसंबर के काँपत जाड़ के दू पहर! लागत रहे कि बहरी बर्फ के बड़े–बड़े चखान गिरल बा। कई दिन से सूर्य ना लउकल रहले। अइसना समय में मेडिकल कॉलेज कुछ खाली–खाली लागेला। खासकर हॉस्पीटल से अलग वाला हिस्सा।

डॉ0 प्रकाश अपना चैम्बर में, हीटर के गरमाहट में बइठल 'लैन्सेट' के टटका अंक में डूबल रहले कि दरवाजा पर खट्–खट् के आवाज भइल।

'आ जा!' ऊ जानत रहले उनकर पत्नी होइहें। एकदम निर्धारित समय पर। डॉ0 मीरा कबो बिना खटखटवले अंदर ना जात रही। आजु मीरा के संगे सिहइला अस उनकर सहपाठिनी आ डॉ0 प्रकाश के शिष्या सुमन भी रहली।

.... ई हमरा से कई बेर से कहत रहली हा। पी0जी0 के तइयारी में इनको के राउर कुछ मदत मिल जाइत त....!

'.... हूँ!' डॉ0 प्रकाश अपना के तनी असहज महसूस कइले। डॉ0 सुमन के ऊ क्लास में पढ़वले रहले बाकिर चैम्बर में पढ़ावल! पत्नी के बात दोसर बा; भा सब छात्रन के साथ ठीक बा।

'.... देखीं.... ई हमरे संगे आइल करिहें।' डॉ0 प्रकाश के असजता महसूस करत मीरा निहोरा कइली।

'.... ठीके बा!' डॉ0 शुक्ल गंभीर बेबसी के साथ अपना पत्नी के बात सँकारत कहले।

मीरा आ सुमन हाउस जॉब के बाद जवन समय मिले ओके संगे–साथ पढ़ाई में बितावे के कोशिश करे लोग। डॉ0 शुक्ल के चैम्बर भा मीरा के घर। खाली पढ़ाई। डॉ0 शुक्लो के थोर–ढेर, मुश्किल से, जे समय बाँचे, इहनिये लोग के संगे गुजरे।

आज सुबहे से पुलिस के गाड़ियन के तारा–ताती लागल बा। कॉलेज में साइने–डाइ के घोषणा हो चुकल बाटे। आधे रात से पुलिस छात्रन के सामान बान्हे आ सुबह तक छात्रवास खाली करे के सूचना दे रहल बा।

डॉ0 सुमन खातिर अचके बड़हन मुश्किल आ गइल। कहाँ जाईं? गावें गइला से मये संपर्क टूट जाये के खतरा बा। बाबूजी जजमनिका आ तीन बिगहा जमीन के दम पर कइसहूँ घर चलावेले। कई बेर कॉलेज आ हॉस्टल के फीस भरे खातिर सुमन के कतना फजीहत उठावे परल बा, ई त ऊहे जानत बाड़ी। हर बेर उनका के उबारे खातिर मीरा प्रगट हो जासु। सुमन के स्वाभिमानी मन छान–पगहा तुरावे बाकिर लाचारी बेबस कर दे।

एक बेर डॉक्टर बन जाये द.... फेर त मीरा के मये कर्ज चुका देब। एकरा खातिर त ऊ करब, जे केहू ना कर सकल होई। सुमन प्रायः सोचसु।

आ.... आज फेर मुश्किल में! सुमन आपन सामान बान्ह के बालकनी में आके खाड़ हो गइली। अइसन जनात रहे कि उनकरा देह में इचिको जोर ना रह गइल रहे। हतास! ओठे फेफरी परल। गाँवे चल जाइब त पी0जी0 में नाँव लिखावल सपने होके रह जाई। अतना पइसो नइखे कि नगीचा–पासे कवनो प्राइवेट मकान

किरया पर ले लीं।
आ तबे... सामने सड़क पर मीरा के कार आके रुकल। मीरा सीढ़ी लाँघत सीधे सुमन के सामने आके खाड़ हो गइल रहली.... "अरे, ई सब.... सामान बान्ह के एहिजा काहें खाड़ बाड़ू?"
.... का करीं? सोचत बानीं गाँवें चल जाईं.... बाकिर सब कइल–धइल बरबाद हो जाई!
.... "गावें काहें? एहिजा तहार घर नइखे का?" बड़ा अपनत्व से डाँटत मीरा सुमन के अटैची उठा लेहली... "चलऽ! घरे चलऽ! हमार घर तहरा खातिर गैर के घर कबसे हो गइल?"
पूरा पैंतालिस दिन बंद के दौरान सुमन मीरा आ डॉ0 प्रकाश के घरे रहली। सब कुछ सुलभ। खाली पढ़ाई करे के रहे। डॉ0 प्रकाशो अब कुछ बेसिये समय देबे लागल रहले आ प्रकाश के महतारी–बाप खातिर त जइसे सुमन बेटिये अस घरे आ गइल रही।
इम्तहान के दिन नजदीक आवत रहे। तनाव आ दबाव अपना चरम पर रहे।
रविवार के सुबह। लॉन के गुनगुन घामा बइठल मीरा आ सुमन डॉ0 प्रकाश के संगे सवालन के दोहरावे में लागल रहे लोग।
"एक कप चाह हो जाय!" –कहत मीरा उठ के भीतर चल देली।
सुमनो कुर्सी से सिर लगा के सुस्ताये लगली। आँख आधा खुलल, आधा मुँदाइल। तबे उनकर आँख डॉ0 प्रकाश के आँख से मिलल। छन भर खातिर। ऊ उनके ओर देखत रहले। सुमन सकुचा के आँख बन क ले ली। फेर कई बेर छुप–छुपा के देखली। डॉ0 प्रकाश एगो मोट, अध–खुलल किताब के पीछे से एकटक उनकरे के देखत रहले।
ऊ सँउसे दिन सुमन के चैन से ना गुजरल। ऊ बेर–बेर पढ़ाई से भटक जात रही। जनाइ, उनकरा आँख में डॉ0 प्रकाश के आँख बेर–बेर डूबत, बेर–बेर उतरात बाड़ी स।
मीरा आ सुमन ओही मेडिकल कॉलेज से पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा क के ओहिजे सहायक प्राध्यापक बन गइल रही। मीरा मेडिसिन के आ सुमन गायनकोलॅजी के।

....

बेटी के छठियार के मोका पर डॉ0 प्रकाश आ डॉ0 मीरा अपना सब अभिन्न मित्रन के बोलवले रहे लोग। सुमन आजु के पार्टी में मेजबान के हैसियत से अतना तल्लीन रही कि जनात रहे कि उनकरे अपना बेटी के छठी ह।
डॉ0 प्रकाश के बचपन के मित्र डॉ0 नीरज श्रीवास्तव आ उनकर पत्नी डॉ0 मुक्ता विशेष रूप से एह आयोजन में भाग लेबे आइल रहे लोग। डॉ0 नीरज आ उनकर पत्नी लंदन के मेडिकल कॉलेज में प्रोफेसर रहे लोग। मुक्ता बचपन में मीरा के सहपाठी रहली। लरिकाईं के दोस्ती आ ऊहो एकदम खास।
".... मीरा, हम एगो बात कहल चाहत बानीं।"
"हँ.... कहऽ ना! तोहरो औपचारिक होखे के जरूरत पर गइल?"
"ना.... बाकिर बाते कुछ अइसन बा कि...."
मीरा के मन संशय से भर उठल। आदमी के मन नकारात्मक बातन के कल्पना बड़ा जल्दी क लेला।
.... ई सुमन.... बियाह नइखे कइले अब तक?
.... देखऽ मुक्ता! ऊ बहुते सामान्य परिवार के लइकी ह.... ई त तोहरो पता बा। अब ओकर पिताजी ओकरा लायक लइका त खोजे से रहले!
.... ऊ त ठीक बा, बाकिर सुमन अइसन स्थापित लइकी खातिर लइकन के का कमी ओकरे संगे पढ़े वाला कई लोग तइयार बइठल होई!
.... त?
.... कहीं प्रकाश आ सुमन में?
.... पगला गइल बाड़ू?
.... पता ना, भाई।
मीरा के मन संशय के गहिर खाई में डगरे लागल रहे।
.... अरेऽ! तोहर मुँह काहें मुरझा गइल? पता ना, काहें दो त काल्हुए से हमरा कुछ अइसन बुझात बा। हमार भरम होई। तू हमार सखी हऊ, एह के कह देनी हाँ।
एक सप्ताह रह के डॉ0 नीरज आ डॉ0 मुक्ता त चल गइल लोग, बाकिर मीरा के मन आशंका से मुक्त ना हो सकल। कई बेर त उनका ई सब हास्यास्पद लागे आ मुक्ता पर खीसियो बरे अइसन बात करे खातिर, बाकिर दोसरा घरी लागे जइसे सउँसे देह के रकत सुखा गइल होखे।
जात–जात डॉ0 नीरज मीरा के बेटी के नामकरण क गइल रहले।
छव बरिस के बेटा आ तीन महीना के बेटी के साथ मीरा अपना सुखद संसार में भरसक रम गइली। अब ऊ फेर से ड्यूटी ज्वाइन क लेले रही। मेडिकल

कॉलेज के ड्यूटी आ फेर सीधे घर, बाकिर उनका भीतर के सहजता आ शांति जइसे कपूर अस उड़ गइल रहे।

भीतरे–भीतर बेचैन मीरा अपना दाम्पत्य में पहिले वाली उष्णता और स्निग्धता ना पाके अउर बेचैन हो जात रही। जनाइ जइसे प्रकाश दोसरे दुनिया में गुम बाड़े। मीरा एकरा के बेर–बेर अपना मन के वहम कह के मन से निकाले के कोशिश करत रही। अचके कवनो बहाना से घरे आ जासु, फेर अपने पर झुझुआइयो जासु। कबो अचके डॉ0 प्रकाश के चैम्बर में बिना खटखटवले घुस जास आ चाई अस एने–ओने देखे लागसु। डॉ0 सुमनो संगे उनकर व्यवहार पहिले अस सहज ना रह गइल रहे। कुछ खिंचइला–खिंचइला अस। कबो ऊ सोचसु.... कतना पागल बानीं। मुक्ता तनी कुछ कह का दिहलस, शक मन से निकलते नइखे। भला प्रकाश अस पति आ ऊहो हमरा सबसे अच्छा सखी संगे...?! छिः! हमार सोच दूषित हो गइल बा।

डॉ0 सुमन मेडिकल कॉलेज के अपना ड्यूटी के अलावा डॉ0 वंदना मुखर्जी के सहायक के रूप में भी ड्यूटी करे लागल रही। डॉ0 मुखर्जी गायनाकॅलजी के विभागाध्यक्ष रहली आ स्त्री–रोग के समझ आ निदान के मामला में उनकर शोहरत राज्य भर के अन्य हमपेशा लोगन से बेसिये रहे। दुइए साल में सुमन जइसे उनकर अभिन्न अंग बन गइल रही। डॉ0 मुखर्जी, कवनो ऑपरेशन में, जब सुमन ना होखसु त अपना के सहज ना महसूस करत रही। सुमन के पातर–पातर अँगुरी जइसे सर्जरिए खातिर बनल रही स। ऊ कुछ लोन लेके अपना खातिर एगो छोट बंगला खरीद लेले रही। ऊ अपना काम में अतना व्यस्त रहस कि मीरा से कभिये–कभार मुलाकात हो पावे। एह मुलाकातन में मीरा के लागे कि सुमन उनका से आँख चोरा रहल बाड़ी। सुमन के बाबूजी आ उनकर सम्बन्धी लोग कई बार प्रयास कइल कि ऊ बियाह क लेसु बाकिर सुमन हर बेर टार देसु। अब त लोग एह ओर से प्रायः अन्यमनस्क अस हो गइल रहे।

....

.... शंकर जी, पहिले मार्केट चलीं। कुछ सामान कीने के बा। तब घरे चले के!

डॉ0 मीरा आपन गाड़ी अपने चलावसु। डॉ0 प्रकाश के कवनो स्टाफ शायदे घर पर आवत होखे! खाली एगो ड्राइवर शंकरे रहले जे कभी–कभार मीरा आ लइकन खातिर आ जात रहले।

".... रउआ साहेब के कॉलेज आ क्लिनिक से फुरसते नइखे मिलत आ घर के ई सब जरूरी काम हमरे करे के परत बा। ....रोज एगारह बजा देलें!"

".... कहाँ मेम सा'ब! क्लिनिक त साते बजे बंद हो जाला। आ फेर साहेब गाड़ी अपने लेके....।" अचानक शंकर सिहर के चुप हो गइल, जइसे कवनो गलत बात मुँह से निकल गइल होखे।

".... का? गाड़ी अपनहीं चला के?? बोलऽ शंकर!" –मीरा के कपार झनझना उठल... "साफ–साफ बोलऽ. ... साहेब फेर कहाँ. जाले? आँय!"

".... साहेब डॉ0 सुमन मैडम किहाँ चल जाले।"... अब शंकर बात के साफ–साफ कहले में भलाई समुझले।

पति–पत्नी के अइसन मामिला में मये संसार भलहीं सब कुछ जान जाउ, जेकर हक छिना जाला ऊ शायद आखिरी आदमी होला जानेवाला।

मीरा के जइसे देंह के मये खून घींच लिहल गइल होखे!.... जइसे कवनो पातर गली के दोसरा कोना पर बसल झोपड़पट्टी में आग लाग गइल होखे। ना त दमकल के गाड़ी ओहिजा पहुँच सकत बा, ना त ओह बस्ती में अतना पानिये बा कि आग बुतावल जा सके। बस जरले नियति बा। खाली चिरायन गंध फइलत जाई चारू ओर।

डॉ0 मीरा के चेहरा बैक व्यू मिरर में देख के शंकर डेरा गइल।

– "घरे चले के मेम सा'ब! लागत बा, राउर तबीयन ठीक नइखे।" कई बेर दोहरवला के बाद मीरा बस सहमति में सिर हिला सकली।

....

तीन महीना बीत गइल। डॉ0 मीरा पूरा दिन अपना के कॉलेज आ अपना बच्चन में व्यस्त राखसु। घरे आवते जनाइ जइसे कवनो गर्म माइक्रोवेभ ओवन में बइठल बाड़ी। सास–ससुर के प्रति कर्त्तव्यपरायता में कवनो कमी ना रहे। हँ.... डॉ0 प्रकाश से बिना कुछ कहले अइसन जनाइ जइसे दूनो लोग अलग–अलग ग्रहन पर जाके बइठ गइल होखे। प्रकाश पूरा–पूरी कोशिश करसु कि अकेले में कम से कम मिले परे। रात में, बिछवना पर आवते सूत जासु भा सूते के नाटक करसु।

.... आ मीरा खातिर त जइसे बिछवना पर अनगिनत नागिन लोटत रही स। तबो बेड पर गिरते–गिरत जइसे नीम बेहोशी में गोता जात रही आ बेसुध सूत जात रही। बाकिर घंटे–दू घंटा बीतत खुमारी टूटे

त उठके बइठ जासु। मये देह झन–झन करे लागे। तरहथी पसेनन सउना जाई। घंटन घिघुरी मरले बइठल रह जासु। कबो उठ के पानी पियसु त कबो खिरकी तयर खाड़ होके बहरा पसरल सन्नाटा से चुप–चाप बतियावत जनासु। बगल में सूतल पति पर आँख परते आँख के आगे अन्हार छावे लागत रहे। जवना घर के आपन घर समझ के सब कुछ भुला गइल रही, ऊ कब, कइसे दोसरा के हो गइल, पते ना चलल।... हम त किरायदार बानी' एह घर में। कबो जाये के कहल जा सकत बा।.... कहाँ जाइबि? आ फेर ई दू गो बच्चा! काल्ह तब जवना जमीन पर खाड़ होके अपना भाग पर झूमत रहीं, ऊ त पानी पर पँवरत बर्फ के ढोका निकलल। यदि हमरा अस सक्षम स्त्री अपना के अतना असहाय महसूस करत बिया त फेरू पति आ उनका परिवार के सहारे जीए वाली औरतन के दशा का होत होई?

.... मीरा!....।

.... हँ....। अचके डॉ0 प्रकाश के पुकार सुन के मीरा के तंद्रा टूटल।

.... पिछला कई कहीना से हम तहार घुटन आ बेचैनी देख रहल बानीं। जवन साँच बा, ऊ बा। हम जानऽ तानी तहरा सब मालूम बा।.... डॉ0 प्रकाश मीरा के हाथ पर आपन हाथ राखल चहले।

"मीरा उठ के फेर खिरकी भिरी आ गइली.... फेर एह पर बात करे के का मतलब?"

अचके मीरा के लागल कि जइसे "ई कवनो निरीह नारी ना बलुक अपना जिनगी पर नियंत्रण रखे वाली एगो सशक्त आ सक्षम स्त्री बोली रहल बिया। आज प्रकाश के नकार के जइसे ऊ खुद के पा लिहले होखस... सूत जा प्रकाश!" आ मुँह फेर के बाहर लॉन में निकल गइल रही। बाहर ठंढ, रात के अन्हार। कब आके सुतली कुछ होश ना रहे। ढेर देर तक नीन ना परल। जब नीन लागल त दिन चढ़ला तक सूतल रहली।

....

फोन के घंटी से डॉ0 प्रकाश आ मीरा के नीन टूटल। साइड लैम्प जरावत, दोसरा तरफ के आवाज बिना सुनले डॉ0 प्रकाश कहले.... हँ, नीरज.... बोलऽ!

उनका पता रहे रात के एक बजे नीरजे फोन कर सकत बाड़े।

".... नीरज अगिला महीना आ रहल बाड़े। ऊ सिंगापुर में एगो कान्फ्रेंस में आवत बाड़े। फेर हमनी से मिले अइहें। लइकन के बारे में पूछत रहले हा।" कहल मुश्किल रहे कि प्रकाश आत्मालाप करत रहले कि मीरा के संबोधित!

एयरपोर्ट से घरे आवत डॉ0 नीरज डॉ0 प्रकाश के हाथ दाबत कहले.... तहरा खातिर जॉनीबाकर ले आइल बानीं.... ब्लू लेबल! आज साँझ के बइठकी में खूब गप्–सड़ाका मारल जाई!

डॉ0 प्रकाशो के इहे चाहत रहले। पता ना कतना दिन हो गइल रहे घर में घर अइसन रहत! आज हर तरफ से छुट्टी ले लेले रहले।

साँझ खा देश–दुनिया के बात चलत रहल.... दोस्तन के, कॉलेज के।

.... प्रकाश अबकी हम तहरा से कुछ खास बात करे आइल बानीं।

..... हमरा पता बा।.... बाकिर तहरा तक ई बात पहुँचल कइसे?

.... शुतुरमुर्ग अस बालू में आँख लुकवा लेला भर से सच्चाई थोरहीं छुप जाले। पूरा मेडिकल फ्रेटरनिटी एह बात के जानत बा।.... ई तूं का कर रहल बाड़ऽ, प्रकाश? का नइखे तहरा? एगो अइसन घर जवन कई जन्मन के प्रार्थना से नसीब होला। बतावऽ का कमी बा तहरा? ओकरो जिनगी बा.... आ तहार पत्नी, बच्चा सब?

..... कमी? कमी त कुछुओ नइखे, नीरज! तहरा का लागऽता कि प्यार बरसात के पानी हऽ जे जहाँ गड़हा देखलस जमा हो गइल आ मौसम बदलते अइसन सूखल कि एगो निशान तक ना रह गइल? कमी से प्यार के का रिश्ता? प्यार त पहाड़ के छाती चीर के बहे वाला अशेष झरना ह। एकरा सोत के पता के करी? कब, कहाँ, कवना उमिर में हो जाई प्यार, केकरा पता बा?

..... आ जेकरा से तूं बियाह कइलऽ, ऊ प्यार ना ह? फेर सुमन? का ऊ सिर्फ प्यार के भरोसे जिनगी बिता पाई? आखिर ओकरो त आपन परिवार होखे के चाहीं?

..... का करीं? अलचार बानीं। सब जानते बेबस। मीरा के प्रति थोर अपराध–बोध बा। मये भरला के बादो.... बड़ा सुख अनुभूति ह, यार! हँ.... सुमन हमरा खातिर रह जइहें।

"..... ई त कूर स्वार्थ ह।"... अब नीरज के लहजा बदल गइल रहे।

..... जवन होखे!

..... तूं जानऽतार' प्रकाश?.... हर विवाहेतर रिश्ता

देह–लिप्सा में सराबोर होला।

..... विवाहेतर सम्बन्ध सामाजिक वितृष्णा से बनल अघोर शब्द ह। ई साँच बा कि स्त्री–पुरुष के बीच बिना देह के प्रेम नइखे रह सकत, बाकिर ई खाली देंहिये खातिर ना होला। ई अकथ अनुभूति ह।

डॉ0 प्रकाश के चेहरा पर स्निग्ध भाव देखि के नीरजो चुप हो गइल। दोसरा दिने हवाई जहाज से डॉ0 नीरज लवट गइले अपना दोस्त के अजनबी घर के पाछा छोड़ के।

डॉ0 मीरा अपना के अपना पेशा में भुलावे के कोशिश कइली। उनका जनाइ... हर मरीज के दुख उनकर अपने दुख के फइलाव ह। ऊ कॉलेज के सबसे लोकप्रिय आ गरिमामय प्रोफेसर के रूप में जाने जाये लागल रही। दुनिया खातिर डॉ0 प्रकाश आ डॉ0 मीरा आदर्श पति–पत्नी रहे लोग। उहन लोग के संस्कार से लइकन के अपना घर के बोध भइल आ अतना सफल भइला के बादो उहनी खातिर महतारिये बाप सबकुछ रहे।

डॉ0 सुमन सर्जरी में अतना नाँव कमइली कि डॉ0 बन्दनो मुखर्जी अपना प्रियतम शिष्या पर गर्व करसु। लइका लोग कभी–कभार सुमन आंटी से मिले उनका घरे चल जात रहे।

....

अभि के फोन से जइसे सुमन के धड़कन रुक गइल होखे। ऊ बदहवासी में कइसहूँ पहिरन बदलली आ अभि के पहुँचे तक मुख्य द्वार पर तइयार होके खाड़ हो गइल रही। अब ऊ अपना के संयत क लेले रही। भीतर हृदय तार–तार हो गइल रहे। डॉ0 प्रकाश के देखे खातिर वेदनाजनित बेचैनी रहे, बाकिर मीरा के घरे जाके मिले के हिम्मत जुट ना पावत रहे।

सुमन के आवते सब खड़ा हो गइल। बिछौना के बगल के कुर्सी पर बइठत सुमन आपन हाथ डॉ0 प्रकाश के हाथ पर रखली। अपना हाथ से उनकर हाथ दबावत निर्विकार बइठल रही। रेगिस्तान के दुपहरी अस उनकर सूखल आँख अनायास मीरा का ओर उठली स। उनकर हाथ प्रकाश के हाथ अपना हाथ में लिहले मीरा का ओर जुड़ गइले स, जइसे पूरा जीवन मीरा के यातना के वजह बनला खातिर क्षमा मांगत होखऽ स।

प्रकाश कराह के आँख खोलले। कुछ कहल चाहत रहले। ओठ हिलले स बाकिर शब्दन के वाणी ना रहे। सुमन के हाथ पर दबाव बढ़ गइल। आँखिन में कृतज्ञता भर आइल। उहे आँख मीरो देने घुमली स.... क्षमा माँगत अस। सुमन मीरा के हाथ आहिस्ते खींच के प्रकाश के हाथ पर रख देली। सब कुछ शीत.... शांत!

तेरह दिन के गहमा–गहमी। मीरा आ सुमन आमने–सामने पड़त रहे लोग बाकिर कबो कुछ बोल ना पावल केहू। एह घरी शायदे सुमन के बोलत केहू सुनले होखे!

“आवत रहिहऽ!”.... अपना घरे जाये खातिर विदा माँगे आइल सुमन के बस अतने कह पवली मीरा।

डॉ0 नीरज के संगे अभि आ अनन्या कार तक छोड़े आइल रहे लोग। कार के पिछला सीट पर बइठल सुमन के देख के अइसन लागत रहे, जइसे कवनो लाश बइठा दिहल गइल होखे। जड़.... जइसे जीये के कारने हेरा गइल होखे।

..... लागत बा, सब कुछ काल्हुए त भइल हा.... पढ़ाई के बेर के संघर्ष आ हरमेस स्नेह आ सहयोग देबे खातिर खाड़ मीरा।.... सोचले रहीं, मीरा खातिर कबो ऊ कर पाइब जे केहू ना कर सकल। साँचो.... जिनगी के अकेलापन जवन उनका कारण मीरा के मिलल, भला अउर के दे सकत रहे? मीरा.... कबो एको शब्द शिकायत के ना निकलल जेकरा मुँह से! संसार के सामने पति आ परिवार के मर्यादा के हरमेस बना के रखल!...

विचारन के अन्हर–खोह में डूबत–उतरात सुमन अपना घरे आ गइली। लागत रहे जइसे कवनो भूत–बंगला में रहे आ गइल होखसु।... जेकरा खातिर मये जीवन अकेले गुजार दिहनीं। कबो अउर कुछ ना चहलीं.... परिवार, बच्चा.... खाली साँझ के कुछ छन साथ रहे के एवज में मये दुनिया से अलग हो गइल रहीं.... ओह!. ... तबो जिनगी के सार्थकता एही प्यार में बा.... बहुते सुखद आ असीम।

..... प्रकाश तोहरा के पाके हम धन्य हो गइलीं।

सुमन आके ओही लान चेयर पर बइठ गइली, जहाँ प्रकाश बइठ के उनका से दुनिया–जहान के बात बतियावत रहले। सामने के फेंड़ से चिरइन के एगो झुंड उड़ल.... आपन घोंसला खाली क के। फेंड़ अकेले। वीराना चारू ओर। गँवें–गँवें अन्हार छवले जात रहे।

मेन रोड, बुद्धा कॉलोनी, पटना, 8000001

नौ हाथ के पगहा

कृष्ण कुमार

भदोही नयका बनल जिला हिरामनपुर के एगो बड़हन गांव हऽ। आजादी के पहिले जवन हाल एह गांव के रहे उहे हाल आजादी के बादो रहि गइल। नयका सदी के सूरूज उगला पऽ देश भऽ के सभी शहरन, गांवन आ कस्बन के अंजोर भेंटाइल बाकिर भदोही ओरे केहू के नजर ना दउरल। ई गांव ढेर दिनन से अनादर के शिकार रहल बा। नयका जिला बनला के बादो जिला के भीतर आवे वाला सब गांवन में सड़क, बिजुली आ रोग–दुःख हटावे खातिर स्वास्थ सुविधा भेंटाइल बाकिर भदोही कइसे पिछुआ गइल, ई सोचला पऽ अचरज हो जाला।

भदोही जिला मुख्यालय के निगिचे बसल बा। औरत, मरद आ बाल–बच्चन से खचाखच भरल–पूरल गाँव। बाकिर तबो ना कवनो बैंक, ना हाईस्कूल ना इलाज के कवनो सुविधा। गांव के बहरी आवे–जाए खातिर बस एगो पुरान आरि–डँरारि। जवना में मूसन के चालल बीलि आ ओह बीलिन में घुसि के बरिआरी रहे वाला एक से एक पुरनकट गहुअन, करइत आ बंसवारि। रोओ जामल करिआ–करिआ गोटाइल बिच्छी। बरसात के पानी से ऊ डंडारि जब घेरा जाला तऽ सांप–बिच्छी, चूंटा–चूंटी ओकरा के छोड़ि के नियरा के झाड़ी–फेंड़ आ गाँव के खंडहरन में आपन बसेर बना लेलें। ओइसन कवनो साल बरसात के नागा नइखे भइल कि भदोही के दू–चारि गो लोग सांप के काटला से ना मुवल होखे। बरसात के दिनन में गांव भऽ के लोगन के फराकित होखे खातिर आवत–जात लोग आ दोसरा ओर से भइला पऽ थुथुन मारे खातिर भुखाइल–पतौखल सुअरन के टोली....।

बड़टोली आ नन्हटोली के मिला के अंदाजन पांचि हजार मतदाता एइजा बाड़ें। चुनाव के बेरा नेता लोग एह गाँव में आके एक से एक लाम–चाकर भाषण देके चलि जाले।। बाकिर चुनाव जीतला के बाद उहो लोग गुलरी के फूल हो जालें। केहू एह गांव के खबर लेबे वाला ना रहि जाला। भदोही के लोगन के बहला–फुसला के आ जाति–पाति के भेद करा के गांव के दबंग लोग वोट दिलवा देलन जा। बाकिर सांसद आ विधायक बनला के बाद एह गांव के घूमे के बात तऽ दूर, ओह लोगन के सपनों में ई गांव इयाद ना आवे। बाकिर तबो चुनाव में जातिगत, मतदान केन्द्र पऽ कब्जा आ अपराधियन के बर्चस्व के बेमारी जइसन एह गांव में बा ओइसन शायदे कवनो दोसरा गांव में होई। पूरा हिरामनपुर जिला में बहुते जातीय उग्रवादी संगठन बनल आ बिगड़ल बाकिर भदोही में केहू के दालि ना गलि पावल। बेमारी के इलाज खातिर रामगोबिन मिस्त्री आ भूत–प्रेत के हवा–पानी हटावे खातिर गोरेया भगत जगन। पढ़े–पढ़ावे के नाम पऽ एगो टूटल–टाटल खपड़पोस मिडिल इसकूल। जवना से बारह गो माहटर लोगन के रोजी–रोटी चलेला। बाकिर ओइजा पांचि गो से अधिका माहटर कहियो ना लउकसु। ऊ लोग आपुस में भांज बना लेले बा। ढेर माहटर गांवे–जवार के बाड़ें। खाली तीन गो माहटर दूर–दराज से आके ओह इसकूल में पढ़ावेलें....।

ओहि इसकूल में जवारे के एगो माहटर रहन मूटन पाठक। सांवर रंग, नाटा कद, ठेहुना तक धोती चढ़वले अधेड़ उमिर के मरद। कान्ह पऽ जनेव, गोड़ में चमरूआ जूता आ मुंह से फका–फक उगलत बीड़ी के धुँआ। दोहरा माटी के शरीर होखे से तुलु–तुलु चलत रहन। आँखिन पऽ पावर के चश्मा, देहि पऽ खादी के बंडी, कान्ह पऽ कोरदार गमछी आ हाथ में बेंत के बकुली। इहे उनकर पहिनावा रहे।

उनका ओह इसकूल में पढ़ावत अंदाजन बीसहन बरीस गुजरि गइल रहे। ओइसे उनका गाँव के अउर तीन गो माहटर ओहि इसकूल में रहन। जेवना में एगो तऽ उनका गोतिया में के भतीजे रहन जे उनका बाद हेड मास्टर के कुरसी पऽ आके बिरजले रहन। ओह इसकूल के सबसे पुरान माहटर मुटने पाठक रहन। गांव के बगल के इसकूल में नोकरी होखे से उनका एगो ई बड़हन फायदा रहे कि नोकरी के साथे–साथ ऊ आपन घर–दुआर भी सम्हारि लेत रहन। खेत में हर नधवा के दुलकत घरे आवसु आ फटा–फट नहा–खा के इसकूल चलि जासु। जहिया खेती–गिरहथी के काम अधिका रहत रहे, ओह दिन ऊ "फ्रेंच छुट्टी" से काम चलावत रहन। छुट्टी के दरखास लिखि के अपना भतिजा के थमा देत रहन आ धिरावत रहन, "अधिकारी जांच–पड़ताल करे आवे तबे देखइहऽ। बही में चढइह मति। बिहान आके हम हाजिरी बना लेबि....।"

आ सांचो, बिहाने इसकूल पहुँचते ऊ आपन हाजिरी बना लेत रहन। उनका देखा–देखी अउर माहटर लोग भी हेडमास्टर से फ्रेंच छुट्टी के नाजायज फायदा उठावत रहे लोग। बाकिर अउर लोगन के ओइसन दालि ना गलत रहे, जइसन मुटन पाठक आपन गला लेत रहन। जब ले ओह इसकूल में हेडमास्टर दोसर केहू रहे तब ले तऽ ऊ कबो–कबो क्लासो ले–लेत रहन। बाकिर अपना भतीजा के अइला के बाद के तऽ ऊ क्लास लिहल साफ छोड़ि देलें। ऊ दागल साँढ़ हो गइलें।

इसकूल में, अखबार आवत रहे। ऑफिस में बेंच पऽ जब ले मन आवे मुटन पाठक अखबार पढ़सु ना तऽ ओहि पऽ पसरि जासु। अउर माहटर लोग टिफिन चाहे 'लीजर' घंटिन में बइठि के बतकूचन करत रहे लोग। बाकिर मुटन पाठक के छूटा मोहानी रहे– कवन बाति बा डरे के जब मुखिया बाड़ें घरे के....। उमिर में बूढ़–पुरनिया होखे से हेडमाहटर चाहे कवनो माहटर के मुटन पाठक से कुछ कहे के हिआव ना परत रहे। छव–सात गो कुरसी ऑफिस में हमेशा लागल रहत रहे, बाकिर मुटन पाठक कुरसी पऽ बइठे से जइसे किरिआ खा गइल होखसु, ओइसन करत रहन। उनका खातिर ऊ बेंच असालतन हो गइल रहे। जहिया ऊ ना आवत रहन ओहि दिन केहु ओह पऽ बइठत रहे। ना तऽ ऊ बेंच मुटन पाठक के बपौती हो गइल रहे...।

रोज सांझि खा तीन बजत–बजत ऊ इसकूल छोड़ि देत रहन। ओनहीं से खेत–बधारि घूमत अन्हार होत–होत घरे आवत रहन। घरे मेहरारू आ चारि गो बाल–बच्चा रहन सऽ। इसकूल लेखा उनका घरहूँ के हिसाब रहे। अपनो बाल–बच्चन के फेर में ऊ तनिको ना रहत रहन। सांझि होते उनकर मेहरारू लालटेन बारि के किताब–कॉपी के साथे लड़िकन के दलानी पऽ भेजि देत रही, "जा लोग पढ़े। पापा आवत होइहें। लड़ाई–झगड़ा मति करिह जा। ना तऽ आ के मारे–पीटे लगिहें....।"

इसकूल से अइला के बाद गाइ दुहल उनकर पहिला काम रहत रहे। दूध दूहि के घरे लड़िकन से भेजवा देसु आ कहसु, "चाह बनवा के ले आवऽ सऽ....।"

एह बीचे टोला–मोहाला के कुछ लोग आ उनका खेतन के मनीदार उनका दलानि पऽ जुमि आवत रहे लोग। ई रोज के उनका दलानी के नियति रहे। चाह बनते उनकर मेहरारू सिंकरी बजा देसु। आवाज सुनि के लइका दउरल घरे से चाह ले आवऽ सऽ आ दलानी में बइठल सभ लोगन के देत रहन सऽ। चाह पिअला के बाद दिन भऽ के गांव के राजनीति पऽ बतकही छिड़त रहे, जेवना में अगिला हराई मुटने पाठक के रहत रहे। एक ओरे गांव के लोगन के साथे बतकही में मुटन पाठक आ दोसरा ओरे उनकर बाल–बच्चा अपना बतकही में अझुराइल। ओहि में कबो बाल–बच्चा चुटकटउअल मचा देत रहन सऽ तब मुटन पाठक के धेआन ओहनि ओरे जाते रहे। डांटि–डपटि के ऊ अपना बाल–बच्चन के अहथिर करत रहन,"ना मनबऽ स! आ जाईं....?" बाकिर कबो ओहनी के लगे बइठि के ऊ पढ़ावत ना रहन। ऊहो राति के नव बजे तक लालटेन अगोरि के बइठत रहन सऽ। जब ऊ देखसु कि लइका–लइकी झँपाये के शुरू कइलें सऽ तबे कहसु, "जा सऽ घरे, खा के सुतऽ सऽ...।"

दलानि पऽ के सभ लोगन के गइला के बाद पाठक जी दलानि के कोठारी में ताला लगावसु आ सुतली राति खा ऊ घरे जाके खासु–सुतसु। उनकर रोज के इहे नियम–धरम रहे....।

बीतत समय के साथे मुटन पाठक के रोटीन भदोही के लोग से छिपल ना रहल। पहिले तऽ पीठ पीछे

लोग मुटन के विरोध में काना–फूसी बतिआवे के शुरू कइलें जा। जब एह से कुछुओ लाभ ना बुझाइल तऽ एक दिन एगो नवहा महेन्दर के चढ़ा–बढ़ा के इसकूल पऽ भेजल लोग। मुटन पाठक बेंच पऽ सुतले सेन्हि पऽ धरा गइलें। महेन्दर सीधे हेडमाहटर से बतकही शुरू कइलें, "ई ठीक होता नू?"

"का भाई....?"

"लउकत नइखे। आँखिन में माड़ा परल बड़ुए... ।" मुटन पाठक ओरे इशारा करत महेन्दर गरजलें.... "ई चाचा–भतीजा के रवइया ठीक नइखे। का करसु? अचके में लाद में दरद हो गइल हा....।" मइला पऽ माटी डालत हेडमाहटर कहलें।

"दाई के आगा ढ़ींढ़ मति छिपाईं। रोज दरदे हो जाता? कहीं लाद में दरद रहित तऽ नाकि अइसे ना नू बाजित। इसकूल के लइकन से हमनी के रोजे–रोजे सनेस मिलत रहऽ ता। इनका से संउसे गांव आजिज आ गइल बा। नाकों दम कऽ देले बाड़ें। बीस बरीस से एहिजे परल बाड़ें....।" एके साँस में महेन्दर बकत गइलें।

महेन्दर के खीस चरम पऽ रहे। बदरी के गरजला–तड़पला लेखा उनकर बाति सुनते मुटन के ऊंघी टूटि गइल। ऊ लार पोंछत पलहथिया मारि के बइठि गइलें, "का हऽ रे महेन्दरा? हेने आउ, हेने आउ। ढेरि फट–फटा तारे। निकहा हंफले। हम सुतल ना रहनी हां। तोर सभ भाषण सुनत रहनी हां। आऊ पहिले बइठि के सुसता ले...।" महेन्दर कुछ नरमा के बतिआवे लगलें, "हमार रावा साथे बइठे के जोग नइखं नूं। रउआ हमरा के पढ़वले बानी। गुरु–चेला के बरोबर के कुरसी कबो ना होखे...? कहीं, हम सब खड़े–खड़े सुनऽ तानी....।"

"जब अइसन निम्मन विचार तोरा भेजा में रहित तऽ तें अइसन बाति कहबे ना करिते....।" – मुटन नहला पऽ दहला फेंकलें, "एही गांव में पढ़ावत–पढ़ावत बार पाकल। बाकिर केहू आजु ले कुछओ ना कहल। तोहनी के पढ़ा–लिखा के अँखिफोर बना देनी ओकरे ई फल भोगे के परऽता बुढ़ारी में...।"

मुटन पाठक के बात सुनि के नरमाइल महेन्द फेरू गरमा गइलें, "जब बढ़िया विचार गुरु जी लगे रही तबे नु चेलो के अन्दर सोचल जा सकेला। छोड़ीं उपदेश देल आ कान खोलि के सुनि लीं। रउआ आपन रूटीन बदलीं। ना तऽ गांव राउर बदली करवा दी...।"

मुटन सकते में आके अपना के सम्हरलें, "लोग बदली कवनो इसकूले में नू करवाई। माहटरे नू रहबि कि हरवाह–चरवाह बनि जाइबि। बोलु! चुप काहे हो गइले? गांव के लोग तोरा के डबल भकचोन्हर बना के एहिजा भेजले हां...।

मुटन पाठक के डांट सुनि महेन्दर के बोलती बन्द हो गइल। अब मूड़ी हिलवला के अलावे उनका देसर राहे ना लउकत रहे। महेन्दर के चुप होते मुटन आगि लेखा दहकलें, "गांव के लोगन से कहि दिहे मुटन के बदली के कवनो फिकिर–फिकिरात नइखे। इहां रहीं चाहे इलाहाबाद चलि जाईं। जवना इसकूल में जइहें शेर लेखा दहाड़त रहिहें। अनार के लुकार से डेराये वाला ना हवें। घरो–दुआर के अब कवनो फिकिर नइखे। बेटा जवान हो चलल बा। घर–दुआर, खेत–बधारि, हितई–नतई सभ सम्हारि ली, आपन सोचे लोग। चलनिया हँसे सुपवा के...।"

आ, हं! तेंहू सुनि ले। आजु ले अइसन ओरहन लेके मति अइहे। ना तऽ फेरा में परि जइबे। अबहीं पाम्ही आवऽता। लइका बाड़े। सम्हरि जो। गोड़न गिरे के परि जाई। ई सरकारी इसकूल हऽ। 'पराइवेट' ना हऽ कि जवने मन आई कहि के चलि जइबे। दू–चारि गो कागज–पतर हटा के डकइती में नाम डलवा देबि। सभ अइँठल सटकि जाई...।" – ई कहत अपना के बटोरे के शुरू कइलें।

मुटन के करेजा काढ़े वाली अनगराहित आ हरूस बतकही सुनला के बाद महेन्दर भारी–भारी गोड़ लेके इसकूल से निकलि गइलें। सांझि के गांव के चौपाल में मुटन के कहल सभ बात ऊ लोगन के जना देलें। मुखिया जी कहलें, "बानर के आटा देला पऽ लिट्टी ना नू लगाई। एह से छोड़ि दऽ सऽ। ई काम तोहनी से फरिआए के मान में नइखे। हम एकर हल निकालि लेबि....।"

मच्छड़ के बोली, माछी के गोड़ आ उड़िस के दांत जइसे सुतल आदमी के जगा देला उहे हाल मुटनो पाठक के हो गइल। महेन्दर के बतकही मुटन पाठक के भीतरी तक हिला देले रहे। कहे के तऽ ऊ ढेर फिजूल बात महेन्दर से गरमा के बतिआ देले रहन आ कहि के अपना मन में अफसोस करत रहन।

ओह दिन छुट्टी भइला पऽ इसकूल से सीधे घरे अइलें। भीतर से मन बेचैन होखे से ऊ अपना दलानियो पऽ ना बइठि पवलें। गाइ दूहि के गधबेर होत–होत अपना भतीजा हेडमास्टर के दुआर पऽ पहुंचि गइले, "ए ललन! कहां बाड़ऽ....?"

"हं चाचा, आईं, एहिजे बानी....!" – हेडमाहटर कहलें।

मुटन पाठक उनका घर में जाके बइठि गइलें। चाचा–भतीजा के बतकही शुरू भइल।

मुटन पाठक फुसफुसइलें, "देखला हा नु! साला महेन्दरा कइसे बनरघुड़की देखवल स? आजु–काल्हु के लड़िकन के खून के गरमी ठटाते नइखे। तऽ सुनि लऽ लइका के मुअला से अधिका जम्ह के परिकला के डर हऽ। आजु हमरा पऽ बा। काल्हु तोहरा पऽ बरसी। एह से हमनी के पहिलहीं सतर्क हो जाए के चाहीं। ना तऽ सभ गुर गोबर हो जाई। देखत, नइखऽ आफिस में कवनो जाता लोग तऽ बड़ा बाबू से ले–ले चपरासी तक देहे–देहे चटावऽ तारें बाकिर केहू के केहू कुछ कहऽता...? आ हमनी के तनी लेट इसकूल अइला पऽ समझि लऽ ओकरा समय नइखे जाने के। ऊहो हमनी पऽ चुटकी लेबे खातिर अइसन बात करेला। आजु के तारीख में सबसे कमजोर माहटरे बा?"

बेनून वाला तिअना में नून डालत हेडमाहटर कहलें, "का करबि? ई सब जीवन में लागल बा। नोकरी करे के बा तऽ ई सब झेलहीं के परी। रउआ तऽ पुरान माहटर बानी। अइसन–अइसन कतना जालन से पीठि रगराइल होई। अइसन कतना बेयार से भिड़ल होखबि.. .।" कहत–कहत हेडमाहटर चुप हो गइलें।

ओइसे ओह घरी हेडमाहटर के मन में आवत रहे कि मुटन पाठक के साफ समझा देसु, "माहटर साँच मन से आपन काम करे लागे तऽ आजु माहटर से निम्मन आ बरिआर समाज में केहु ना होई। ई राजा के नोकरी हऽ। शाहजहां अपना बेटा औरंगजेब से इहे नोकरी मँगले रहे। अपना काम में कमजोर परि गइला से समाज में आजु माहटर लोगन के ई हाल हो गइल बा। ना तऽ गुरु बसिष्ठ, संदीपनी, द्रोणाचार्य आ कृपाचार्य के, के नइखे जानत...? पुरान जमाना से लेले आजु तक माहटर लोगन के दुनिया पूजा कइले बा। सबसे अगिला कुरसी गुरुये के मिलल बा। राष्ट्रपति से लेले चोर–डकइत तक सभ केहू के सील–सुभाव के चाक पऽ गढ़े वाला कोंहार माहटरे हऽ। बाकिर गुरु से गोरू बन जाए के चलते माहटर के अइसन हाल हो गइल बा।"

बाकिर अपना चाचा के ई बात बतावे में उनकर वजूद ओइजा फेल हो गइल रहे। एह से मन के बात मने में रखलें। ऊ मुटन पाठक के निम्मन लागे वाला बतकही बतिआवल ठीक समझलें।

फेरू चुप्पी तुरत मुटन पाठक हेडमाहटर से सवाल दागे के शुरू कइलें, "तब तुहीं कहऽ का उपाइ होई? अब तऽ गांव में हमार हवा–पानी खराब हो गइल। गांव सुगबुगाए लागल। तब, अब का कइल जाई...। हमार गोड़–हाथ तऽ तुहीं नु बाड़ऽ? बोलऽ...।"

अपना चाचा के धीरज के बान्ह टूटत देखि हेडमाहटर उनकर दिमाग धोवलें, "आरे, कइल का जाई? ई कवनो बड़हन काम नइखे। चनरमा सिंह के हटा के रउआ के इसकूल के 'मैसेन्जर' बना दे तानी। बाद में एरिया अपसर आ इन्सपेक्टर से बतिआ के ओह लोग के भी मेसेन्जरी रउए भेंटा जाई। रउआ पूरा अतरवना ब्लाक के 'मैसेन्जर' बनि जाइबि। ई तऽ अपना हाथ के बात बा। पांचि बरिस के राउर नोकरी रहि गइल बा। सब पार लागि जाई। रोज हिरामपुर ट्रेजरी में जाए के बहाना हो जाई। बिल, एरिअर, बोनस पास करावे खातिर दू 'परसेन्ट' माहटरो लोग देके राउर पाकिट गरम कइले रही। तब राउर जेबो खरच निकलि जाई। गांव के लोग भी राउर खोज–खबर लिहल छोड़ दी आ रउआ अपना खेती–गिरहथी के देखभाल करे के पूरा–पूरा मोहलत मिले लागी....।"

बिलाई के भागे सिकहर टूटे वाली निम्मन राय अपना भतीजा के मुंहे सुनते मुटन पाठक के खुशी के ठेकाने ना रहे। जइसे पछुआ बेयार बदरी फारि के आसमान के बग–बगा देला ओसहीं हेडमाहटर के बतकही मुटन के दिमाग साफ धो देले रहे। मन में खूब अगरात मुटन अपना घरे चलि अइलें।

हेडमाहटर नाता में छोट परि जाए से माहटर के निम्मन गुन के जानकारी तऽ अपना चाचा के ना दे पवलें बारिक दिल खोलि के मदद कइलें। का करसु? मुअल घोड़ा घासि ना नु खाई...।

एको हफ्ता ना बीतल कि मुटन पाठक इसकूल से लेले पूरा अतरावना ब्लाक के मैसेन्जर बनि गइलें। बीड़ी छोड़ि सिगरेट पिये लगलें। उनकर पहिलहूँ से अधिका चानी कटे लागल...।

बाकिर भदोही के लोगन के जागते हेडमाहटर के सब मेहनत बेकार हो गइल। उनकर सभ करावल–धरावल मटिआमेट हो गइल। धोवल–धावल भइस लेवाड़ मारि देलसि। गांव के लोगन के दिमाग में मुटन पाठक के खिलाफ सुनगल चिंगारी धुआँए के शुरू हो गइल रहे। मुखिया जी राजधानी में जाके विधायक जी से मुटन पाठक के बारे में सभ बात बता देले रहन आ उनका विरोध में दरखास देके कहले रहन, "जइसे होखे मुटन पाठक के बदली जल्दी करवा दीं। गांव के लोग उनका खातिर हमार दिमाग गरम कऽ देले बा।

हमार जिअल मोसकिल हो गइल बा....।"

विधायक जी के भदोही के अपना 'कैडर' वोट पऽ विश्वास रहे। ऊ तनिको देरी ना कइलें आ ओही घरी सीधे डायरेक्टर के फोन कइलें, "हम हिरामनपुर के विधायक बोलऽ तानी....।"

"जी सर, आदेश होखे...।" डायरेक्टर कहलें।

"बहुते अन्हेर हो रहल बा...।" विधायक जी डपटलें।

डायरेक्टर पूछलें, "का बात बा, सर....?"

"राज्य के इसकूलन में बहुते माहटर बीसहन बरीस से एके इसकूल में परल अजगर लेखा साँस ले तारें। ऊ लोग इसकूलन के अपना दादा के दलानी समझ लेले बा। पढ़ाई–लिखाई तऽ जवन होता तवन भगवाने जानऽ तारें। ऊपर से अब गांव के लोगन के दबावे के भी लोग शुरू कऽ देले बा। हमरा क्षेत्र के एगो गांव के इसकूल के मुटन पाठक ओइसने माहटर हो गइल बाड़न। ऊ इसकूल के आपन जागीर बूझि लेले बाड़ें। उनका बदली में तनिको देरी ना होखे के चाहीं....।"

विधायक जी के बात सुनते डाइरेक्टर के माथा ठनकल। ऊ ओही घरी अपना सचिव के बोला के आदेश लिखववलें आ कहलें, "आजुए राज्य भर के सभ जिला शिक्षा अधीक्षक के पास एह आदेश के चिट्ठी भेंजवा दऽ कि एके इसकूल में पाँचि साल से अधिका समे तक नोकरी करे वाला सभ माहटरन के एक हफ्ता के भीतर दोसरा इसकूल में बदली कऽ दिहल जाव ना तऽ एह खातिर बहुते कठोर कार्रवाई कइल जाई। साथे अखबार, रेडियो आ टी. वी. ओ पऽ एह आदेश के समाचार भेजवा दऽ, जेवना से सभ लोगन के एह बात के जानकारी हो जाय...।"

बिहाने बदली के समाचार सुनते हेडमाहटर लोगन में तहलका मचि गइल। तब मुटन पाठक के घर–दुआर, खेत–बधारि सभ भूतखापड़ होत बुझाये लागल। गांव के लोगन से अईंठल सटकि गइल। थूक ना घोंटात रहे। गोड़ के नीचे के धरती घसके के शुरू हो गइल। बुढ़ारी में अपने तऽ बदली के दंड भोगबे कइलें साथे अउर लोगन के भोगा देलन। कहाव हऽ, "बांड़–बांड़ गइलें, नौ हाथ के पगहा लेले गइलें....।"

महावीर स्थान के निकट,
करमन टोला, आरा - 802301 (बिहार)

गजल

❑ प्रो0 रिपुसूदन श्रीवास्तव

जबसे गाछ सयान भइल बा पहुँचे लागल गाँव–नगर।
पुलुई पर सुगना बइठल तऽ कउँचे लागल गाँव–नगर।

धरती जब आकाश छुए तऽ घर घर टाटी लागेला
आसमान पथराव करे तऽ नाचे लागल गाँव–नगर।

ढहे पुरान भीत त केहू कानो कान न जानेला
नया भीत जनमे लागल त पाछे लागल गाँव–नगर।

ढाई आखर के पाती जबसे पहुँचल पंचाइत में
आपन–आपन अरथ लगा के बाँचे लागल गाँव–नगर।

बिछिली में धक्का देके, थपरी पीटल नीमन लागे
गोड़ सँभारि चले वाला पर ताके लागल गाँव–नगर।

^iokl*] yu u0&2 iMko ik[kj] vkexkyk] e|t¶Qjij

भोजपुरिया के भारी शोरः लाठी, लिट्टी सतुआखोर

ब्रजभूषण मिश्र

व्याकरण के अनुसार सम उपसर्ग पूर्वक कृ से सुट आगम कके मिन प्रत्यय के योग के संस्कृति शब्द बनल बा। एही से संस्कृति के अर्थ भइल–अलंकृत सम्यक कृति चाहे चेष्टा। जवना रचना आ चेष्टा से मनई अपना जीवन के हरेक क्षेत्र में उन्नति करत सुख–शांति के व्यवस्था करेला, उहे संस्कृति ह। कवनो कवनो कोश में बतावल गइल बा कि संस्कृ धातु ह, जवना में किन प्रत्यय के संयोग से संस्कृति शब्द बनल बा। एकरा अनुसार संस्कृति के अर्थ होई–सजावल सँवारल, पवित्तर कइल, मंत्र से अभिमंत्रित कइल, शिक्षित कइल, सभ्य बनावल, वस्त्र आ गहना से सुसज्जित कइल।' संस्कृति में ई सब बात त जरूर बा बाकिर, संस्कृति एतने से निर्दिष्ट ना हो पावेला।

हिन्दी साहित्य कोश में डॉ0 देवराज जी लिखले बानी कि संस्कृति के अर्थ चिंतन आ कलात्मक सृजन के ऊ क्रिया समझे के चाहीं जे मानव व्यक्तित्व खातिर सीधे–सीधे उपयोगी नाहिंयो होखत ओकरा के समृद्ध बनानेवाली होले। एह दृष्टि से विभिन्न शास्त्र, दर्शन वगैरह में होखेवाला चिन्तन, साहित्य, चित्रांकन कला आ परहित साधन वगैरह नैतिक आदर्श आ व्यवहार के संस्कृति के संज्ञा दिहल जा सकेला।

पं0 गणेश चौबे जी कवनो जाति भा देश में परम्परा से आइल विश्वास, पूजा, पर्व, रसम–रेवाज, रहन–सहन, पहनावा–ओढ़ावा गीत–संगीत, भूत–परेत, जनम–मरन, रोवला–गवला, खेलला–कुदला वगैरह के लोक संस्कृति के अंग मनले बानी। इहाँ तक कि खेती–बारी, दुकान–दउरी, आवा–गमन, तोरीध–बरीध आ तीज–तेवहार सब संस्कृति के रूप ह। मनई के संस्कार आ सभ्यता अब संस्कृतिए के अंग ह।

आज जब यातायात के जल–थल–नभ में बड़ा तेज गति से पँवरे–दउरे आ उड़े वाला साधन–सुविधा में बढ़ती हो गइल बा, अखबार, टी.बी., फोन, फैक्स, टैलीप्रिंटर, इन्टरनेट, वेव–साइट के ईजाद आ विस्तार तेजी से हो रहल बा, दुनिया छोट लागे लागल बा। विज्ञान बड़ा तेजी से आपन साम्राज्य फइलवले जा रहल बा। दुनिया में एह विकास के असर बड़ा व्यापक रूप से पड़ रहल बा। भोजपुरिया संस्कृति आज बड़ा बदलल रूप में देखाई पड़ रहल बा। रीति–नीति, वेष–भूसा, आचार–विचार सबमें बड़ा तेजी से बदलाव आ रहल बा। ग्रामीण संस्कृति आ नगर संस्कृति के भेद–भाव मेटल जा रहल बा। अब एक प्रकार के मिलल–जुलल संस्कृति के रूप उभर रहल बा। भोजपुरिया क्षेत्र में उद्योग में विस्तार नइखे भइल बाकिर भोजपुरिया लोग देश–विदेश के विभिन्न औद्योगिक केन्द्रन तक पहुँच गइल बा। एह से भोजपुरिया संस्कृति पर औद्योगिक संस्कृति के व्यापक प्रभाव पड़ल बाटे।

भारत वर्ष में लमहर इतिहास में भारतीय संस्कृति पर अनेक प्रभाव पड़त रहल बा, एहू से एकरा सांस्कृतिक रूप में बदलाव आ परिवर्तन आवत रहल बा। भारतवर्ष अनेक जातिख, धर्म, आ संस्कृति के संगम स्थल बनल रहल बा। भोजपुरी क्षेत्र भारत में लमहर भू–भाग में फइलल बा। बलुक कहीं त भारत के आउर–आउर जगहन तक

आ विदेशो ले एकर विस्तार हो गइल बा।

लठीधर, सतुआखोर, लिट्टीखोर कहके तिरस्कृत होखेवाला भोजपुरिया आ भोजपुरिया संस्कृति आपन पहिचान अन्तर्राष्ट्रीय मेला बाजार से लेके फाइव स्टार संस्कृति तक कर लेले बा। लाठी के महत्त्व अइसन रहल बा, जे से पहिले रक्षा होखत रहे, अब ई 'जेकर लाठी ओकर भँइस' के चरितार्थ कर रहल बा। सतुआ गरीब लोग के फास्ट–फुड रहे, अमीर लोग खातिर आज औषधि हो गइल बा। लिट्टी–चोखा गँवई मेला–ठेला के भोजन रहे, अब ई अन्तर्राष्ट्रीय मेला–प्रदर्शनी के स्पेशल–मेनू में शामिल हो गइल बा। एही बदलाव के भोजपुरिया संस्कृति के बदलत तेवर के सूत्र माने के चाहीं।

ज्ञान–विज्ञान का नया क्षेत्र के विस्तार से आदमी के पुरान समस्या दूर भइल बा, त नया समस्या उठ खड़ा भइल बा, जवन वर्तमान संस्कृति में साफ–साफ झलक रहल बा। जइसे पहिले के जमाना में रोजी–रोटी के समस्या रहे। एह समस्या से जुड़ल भोजपुरिया मनई पूरबी बनीजिया–बंगाल, आसाम के ओर जात रहे। बलुक फौजी–मॉरिशस तक ले चल गइल। ई बिछोह असहनीय रहे। नारी कंठ के मार्मिक अभिव्यक्ति सुनाई पड़त रहे–

रेलिया न बैरी, जहजिया न बैरी,
पइसवे बैरी हो राम।

बाकिर, जब पति अपना मेहरारू आ बाल–बचन के संगे राखे लागल त नया समस्या के अभिव्यक्ति वाला गीत गवाए लागल–

केहू हाँफि–हाँफि खिंचला
पहाड़ सजना।
केहू पड़से के जोड़ेला,
पहाड़ सजना।

स्पष्ट बा, भोजपुरिया लोग के श्रम–शोषण के समस्या बढ़ गइल। भोजपुरिया लोग के श्रम शोषण के समस्या खाली औद्योगिक नगरी आ महानगर तक सीमित नइखे, बलुक भोजपुर के टप्पा में जादा बा। इहे कारण बा, भोजपुरिया संस्कृति के वर्तमान स्वरूप में वर्ग–संघर्ष आ उग्रवाद के संस्कृति फले–फूले लागल बा।

भोजपुरी संस्कृति के बदलत तेवर पर विचार करीं आ सबसे पहिले भोजपुरिया संस्कार के ध्यान में रखीं त पता चलता कि बहुत कुछ छूट गइल बा। गर्भाधान के पता चलते हमनी किहाँ सोहर गावे के संस्कृति प्रचलित रहल ह। जनम पर छीपा बजावल जात रहल ह। छठिहार पूजात रहल ह। पँवरिया नाचे पहुँच जात रहल ह। बाकिर, अब गर्भाधान से लेके जनम भइला तक अस्पताल के चक्कर लागत बा। टीका वगैरह के बात होखत बा। जहाँ नर्सिंग होम नइखे, उहाँ ट्रेण्ड नर्स आ दाई के देख–रेख से चल रहल बा। अन्नप्राशन, नामकरण, नकछेदी, भाठा–छुई, जनेव आ विद्यारम्भ में से बहुत उठ गइल। जवन बाँचल बा ओकर महत्त्व कम भइल जा रहल बा। कान्वेंट संस्कृति फले–फूले लागल बा।

पहिले लइकन के बाहर से अइला–गइला पर जेठ–सरदार, मात–पिता, गुरू वगैरह के पँवलगी के संस्कार दिआत रहल ह, अब हाय–हलो, टा–टा, बाई–बाई से संस्कार में बड़ा बदलाव आ गइल बा। पहिले पीयरे धोती–कुरता पहिर के लोग बिआह करे जात रहल ह, अब सूट–बूट चढ़ा के जा रहल बा। डोली–पालकी, खरखरिया के बात उठ गइल, दुइयो–चार किलोमीटर के बरियात खातिर जीप आ कार के सवारी कइल जा रहल बा।

भोजपुरिया जीवन में गुल्ली–डंडा, कबड्डी, चीका–बाँसी, दोल्हा–पाती, लुका–चोरी, अन्हा–धोपी वगैरह के खेल उठ गइल। फुटबाल के खेलो कम भइल जा रहल बा गाँवा–गाई क्रिकेट खेलल–देखल जा रहल बा। क्रिकेट का खेल में कमेन्ट्री सुनल जा रहल बा। समृद्ध लोग के घर में विडियो गेम आ कम्प्यूटर गेम आपन स्थान बना लेले बा। ई मनोरंजन आ जन रंजन के सब समृद्ध आ स्वस्थ परम्परा के बिलवले जा रहल बा। पहिले आल्हा गवात रहल ह, अब भुलाइयो के नइखे सुनात। दुअरे–दुअरे फागुआ गवात रहल ह, भाँग छनात रहल ह। रंग–अबीर–धुरखेल होत रहल ह। बाकिर, धीरे–धीरे सब छूट रहल बा।

आदमी आ समाज एतना खाना में बँटा गइल बा कि केहू केकरो दुआर पर फगुआ गावे नइखे जाए के चाहत। भाँग के जगह देशी–विदेशी शराब ले लेले बा। होरी–धमार के बदला दुअथी अश्लील गीतन के प्रचलन बढ़ गइल बा जवन कुत्सित भावना के दबावे के बदले अउर जगा रहल बा।

भोजपुरी क्षेत्र से असली लोक–गीत गायब हो रहल बा। काहे से कि शिक्षा आ लोक के बीच खाई गहिर होत जा रहल बा। नई पीढ़ी परम्परागत लोक संगीत के हेय समझ रहल बा। कहीं पर ई झांकियो रहल बा, त ओह पर पछिमी पॉप के छॉह पड़ रहल बा। फ्यूजन आ रिमिक्स के प्रयोग के साथ नवकी पीढ़ी

एकर दोहन कर रहल बा।

आदमी के पहिरावा–ओढ़ावा के संस्कृति में बदलाव आ गइल बा। लूगा–झूला, साड़ी–बेलाउज, धोती–कुरता, मीरजई–चउबंद, टोपी–चादर के बदले पैन्ट–शर्ट, कोट–टाई, जीन्स, टॉप, मीडी–मीनी आदि ले लेले बा। सर तोप–ढाँक के राखे के बात खतम हो गइल। मरद का देह पर त कपड़ा देखाइये पड़त बा, औरत का माथ से उतरत–उतरत देहो पर से उतरे लागल बा। शरीर के प्रदर्शन जादे से जादे होखो, एह उद्देश्य से पहिरावा–ओढ़ावा पर ध्यान दिआता। भोजपुरी संस्कृति में नारी घर के इज्जत रहली ह, देवी रहली ह। अब नगर–महानगर के नकल में भोग के वस्तु बनल जा रहल बाड़ी। भोजपुरियो क्षेत्र में ओकरा के बाजार के वस्तु भा बिक्री बढ़ावेवाला माध्यम मानल जाए लागल बा।

भोजपुरी समाज में खेती ट्रैक्टर, ह्वीलर, थ्रेसर पर आधारित हो गइल बा। हर–बैल कहीं–कहीं बाँचल बा। गाय–भैंस बा, बाकिर, डेयरी फार्म के रूप में खटाल के संस्कृति अउरी विकसित भइल बा। खेती के विकास खातिर जबसे नहर खोनाइल बा, दहाड़ आ सुखार कहीं ना कहीं बनल रहत बा। नहर के पानी से पहिले सिंचाई के तहदुक मारा–मारी तक पहुँच जात बा। गोबर, खाद, कम्पोस्ट खाद के जगह, केमिकल फर्टीलाइजर आ पेस्टीसाइट्स ले लेले बा।

भोजपुरी संस्कृति के विशिष्ट पहचान में लाठी रहल ह। ऊ अब गन–बारूद के रूप में ध लेले बा। कई गो निजी सेना के गठन भोजपुरिया क्षेत्र में हो गइल बा। दबंग अपराधी चरित्र के पूछ भोपजुरिया समाज में बढ़ रहल बा। राजनीतिक हत्या, अपहरण आ बलात्कार के संस्कृति फले–फूले लागल बा।

ऊपर कुछ अइसन चर्चा भइल बा जवना से भोपजुरिया संस्कृति के बदलत स्वरूप के पता चलत बा। आ ई पता चलत बा कि एह आपा–धापी में भोजपुरी मनई के उन्नति करावत सुख–संतोष देवे वाली संस्कृति धीरे–धीरे अलोपित हो रहल बिया। बाकिर, खाली नकारात्मक पक्ष नइखे। भोजपुरी संस्कृति भक्ति आ शक्ति के आपना मूल संस्कृति के आजो बचा के बिया। भोजपुरी संस्कृति आजो गलत के विरोध आ सही के समर्थन में मुखर हो जात बिया। हर अवसर पर अगुआई करे के ललक के ई बरकरार रखले बिया। संसार के ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हर जगह भोजपुरी मनई आपन भोजपुरियत लेले उपस्थित बा। सब घाल–मेल का बादो भोजपुरिया संस्कृति के पहचान अलग बरकरार बा।

लोक राग

स्व0 कन्हैया पाण्डेय

जेठ के महिनवा में, झुरुके पवनवा,
मड़इया नीक लागे...
आहो छोटी ननदी।

तपि जाला घमवा से, कोठवा-अटरिया
झाँइ-झाँइ करे लागे, दिन-दुपहरिया
कुहू-कुहू बोले जब, काली कोइलरिया
सँवरिया नीक लागे, आहो छोटी....

ठीक निसु रतिया बलमु माँगे पनियाँ
कहें, 'चलऽ अँगना बिछावऽ खाट धनियाँ'
पियवा के सँग सूतीं, हम अँगनइया
जोन्हइया नीक लागे, आहो छोटी....

जाले लसिआइ जब, लस-लस देहिया
रसे-रसे बहे लागे पुरुबी बयरिया
देंहि करे गनगन सुतते सेजरिया
जम्हइया नीक लागे, आहो छोटी.... ●●

❑ आ.विकास कालोनी, बलिया

'भोजपुरी' का संवर्द्धन में 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन' के ऐतिहासिक योगदान

✍ जगदीश नारायण उपाध्याय

'विश्व भोजपुरी सम्मेलन' भोजपुरी भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति के प्रचार प्रसार, संरक्षन आ बढ़ावा देवे खातिर गठित भइल। एकरा जरिये 1995 में देवरिया (भारत), 2000 में मोका (मारीशस) 2003 में कोलकाता (भारत) 2009 में पोर्ट लुई (मारीशस) में विश्व स्तरीय सम्मेलन आयोजित भइल। राष्ट्रीय अधिवेशन 1996 में पटना, 1997 में नई दिल्ली, 1998 में भापाल, 2000 में अँधेरी मुम्बई, 2001 में भिलाई, 2004 में नागपुर, 2006 में थाणे (महाराष्ट्र) 2007 में वाराणसी, 2010 में आगरा आ 2011 ऋषीकेश (उत्तराखंड) में आयोजित भइल। अन्तरर्राष्ट्रीय अध्यक्ष सतीश त्रिपाठी, राष्ट्रीय अध्यक्ष (स्व0) परमहंस त्रिपाठी, महासचिव डा0 अरूणेश नीरन का साथ सचिव डा0 अशोक द्विवेदी (आयोजन) जगदीश नारायण उपाध्याय (कार्या0) अनिरूद्ध त्रिपाठी 'अशेष' (संगठन) कुलदीप श्रीवास्तव (सूचना–प्रसार) सहयोगी रहे लोग। सात गो उपाध्यक्ष प्रादेशिक स्तर पर चुनाइल गइल रहे लोग। राष्ट्रीय इकाई के कार्यालय 4/26, न्यू कालोनी देवरिया उ0प्र0 में खुलल रहे। वर्ष 2010 में सतीश त्रिपाठी जी राष्ट्रीय अध्यक्ष के कार्यभार सँभलनी।

सम्मेलन के मुखपत्र ''समकालीन भोजपुरी साहित्य'' (तिमाही) के अब तक बत्तीस गो स्तरीय अंक प्रकाशित कइला का अलावे विश्व भोजपुरी सम्मेलन, 'भोजपुरी–हिन्दी शब्दकोश', डा0 रामदेव शुक्ल के उपन्यास 'ग्रामदेवता' आ 'हमार गाँव' नाँव के संस्मरण प्रकाशित कइलस। भोजपुरी लोकगीतन के चार खण्ड आडियो–कैसेट (जीवन–चक्र, ऋतुचक्र, स्रमचक्र आ भक्ति–चक्र तइयार कइल गइल)।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के प्रस्ताव आ सहजोग से भोजपुरी भाषा के अध्ययन–शोध आ संरक्षन जइसन अउर महत्वपूर्ण काम भइल बा। क्रमशः (1) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में ''भोजपुरी अध्ययन एवं शोध–केन्द्र के स्थापना (2) साहित्य अकादमी में भोजपुरी साहित्यकारन पचास हजार रूपया के ''भाषा सम्मान'' के प्रस्ताव जवना के चलते अब तक धरीक्षण मिश्र, मोती बी0ए0, आ हरिराम द्विवेदी के सम्मान मिलल (3) महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय में ''भारतीय प्रवासी केन्द्र'' के स्थापना (4) पोर्ट लुई मारीशस में ''इण्डियन डायसपोरा सेन्टर'' के स्थापना (5) उ0प्र0 के पूर्वी क्षेत्र का विश्वविद्यालय में बी0ए0, एम0ए0 के पाठयक्रम में भोजपुरी अध्ययन–अध्यापन के शुरूआत। (6) विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालययन में लोक साहित्य आ भोजपुरी–साहित्य पर शोध कार्य में 100 छात्रन के सहयोग। विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अन्तरराष्ट्रीय आ राष्ट्रीय सम्मेलन में, मुख्य अतिथि, सभाध्यक्ष अउरी विशिष्ट अतिथि का रूप में भारत के महामहिम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल आ मुख्यमंत्री लोग भागीदारी से भोजपुरी भाषा–समाज के सम्मान आ गरिमा बढ़ल। साहित्य, कला, संगीत, पत्रकारिता, समाज आ फिल्मजगत सेवा से जुड़ल कई नामचीन हस्तियन के सहयोगो मिलल। अधिवेशन आ सम्मेलन के अन्य आयोजनन में भागीदारी करे वाला मुख्य अतिथि आ विशिष्ट अतिथियन के ब्योरा गौर करे जोग बा।–

मुख्यअतिथि आ सभाध्यक्ष
डा0 शंकर दयाल शर्मा (माननीय राष्ट्रपति (तत्कालीन) भारत सरकार)
डा0 कासिम उत्तिम (राष्ट्रपति, मारीशस)
श्री चन्द्रशेखर (पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार)
श्री वी0पी0 सिंह (पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार)
श्री पाल वरांजे (उप प्रधानमंत्री, मारीशस)
श्री एस0 आर0 किदवई (राज्यपाल, बिहार)
श्री रोमेश भण्डारी (राज्यपाल, उत्तरप्रदेश)
न्यायमूर्ति प्रभाशंकर मिश्र (मा0 मुख्य न्यायाधीश, उच्चतम न्यायलय, तमिलनाडु)
न्यायमूर्ति के0 एन0 सिंह (मुख्य न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय भारत)
श्री मोतीलाल बोरा (मा0 राज्यपाल, उ0प्र0)
श्री महावीर प्रसाद (मा0 राज्यपाल, मध्यप्रदेश)
श्री मुहम्मद शफी कुरैशी (मा0 राज्यपाल, मध्यप्रदेश)
श्री दिनेश नन्दन सहाय (मा0 राज्यपाल, छत्तीसगढ़)
श्री वीरेन जे0 शाह (मा0 राज्यपाल, पं0 बंगाल)
श्री अजीत जोगी (मा0 मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़)
श्री नारायण दत्त तिवारी (पूर्व मुख्यमंत्री, उ0प्र0)
विशिष्ट अतिथि
सर्वश्री नौशाद, ए0के0 हंगल, शत्रुघ्न सिन्हा, सुजीत कुमार, राकेश पाण्डेय, डा0 कपिला वात्स्यायन, संगीतकार श्रवण, अभिनेता कुणाल, अनूप घोषाल, सौमित्र चटर्जी, डा0 विद्या निवास मिश्र, डा0 पंजाब सिंह (कुलपति बी0एच0यू0), डा0 मैनेजर पाण्डेय, डा0 केदारनाथ सिंह, मंगेश पड़गावकर आदि।
सम्मेलन के विभिन्न अधिवेशनन में 1995 से 2018 तक तेरह गो सुप्रसिद्ध साहित्यकारन आ बारह गो लोकप्रिय गायक कलाकारन के ''सेतु सम्मान'' आ ''भिखारी ठाकुर सम्मान'' से सम्मानित कइल गइल।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के 13 अधिवेशन में दिहल गइल राष्ट्रीय सम्मान

अंगवस्त्र, प्रशस्तिपत्र, स्मृतिचिन्ह सहित ''सेतु सम्मान''– स0 25000/ और भिखारी ठाकुर कला–सम्मान–रु0 15000/–

''सेतु सम्मान'	भिखारी ठाकुर कला–सम्मान
1995– श्री धरीक्षण मिश्र	पद्मश्री विन्ध्यवासिनी देवी
1996– पं0 गणेश चौबे	पद्मश्री शारदा सिनहा
1997– डा0 कृष्णदेव उपाध्याय	हीरालाल यादव
1998– श्री मोती बी0 ए0	शान्ति देवी
2000– ''चन्द्रशेखर मिश्र	पद्मश्री सविता देवी
2001– ''कमलाप्रसाद विप्र	भरत शर्मा, व्यास
2003– ''रामजियावन दास बावला	रामकैलाश यादव
2004– डा0 विवेकी राय	मनोज तिवारी मृदुल
2006– डा0 रामदेव शुक्ल	उर्मिला श्रीवास्तव
2007– दण्डी स्वामी विमलानन्द	रामचन्द्र 'अजेय'
2010– श्री पाण्डेय कपिल	जी. तिवारी (महुआ चैनल)
2011– ''हरिराम द्विवेदी	मालिनी अवस्थी
2018–19– डा0 अशोक द्विवेदी	–––––

दू गो गजल

[एक]

मन के रकबा जदी सिमट जाई
भाव हर आदमी के घट जाई
कवनो मंतर लही ना तोहरा पर
साँप जब काट के उलट जाई
देवता, लोग बन गइल, बाकिर
जाने कहिया ले छल - कपट जाई
लोग सपना रहल बा दिनहीं अब
चान निकलल बा रात कट जाई
हो गइल पलटीबाज ई दुनिया
खा के किरिया कबो पलट जाई
तोहरा थइली में बस वजन चाही
कइसनो मामिला सलट जाई
मेघ बरिसल जो छोड़ दी कहियो
कुल, समुन्दर के शान घट जाई
जाके देखतीं बहार हम, बाकिर
घाव परसाल के उपट जाई

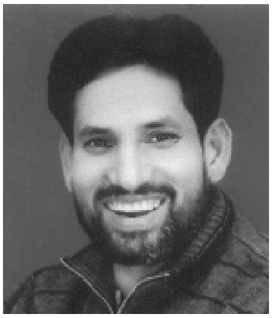

मिथिलेश गहमरी

[दू]

मोम के दिल में नाज पत्थर के
कइसे देखी केहू, ई मंजर के
बाँसुरी पर बहस रहे, बाकिर
बात कुल चल रहल बा महुअर के
चील्ह बाटे मुड़ेर पर बइठल
उड़ न जाए कहीं खुशी घर के
संग सबका जिये-मरे वाला
हो गइल लोग, फूल गूलर के
नेह के बीज कइसे अँखुवाई
मन के माटी बा जइसे बाँगर के
बार्नी हम असमसान में बइठल
राग कइसे कढाईं सोहर के
दूर अपनो से हो गइल जिनगी
घर में पइसल तनाव दफ्तर के
बनिके दीया कबो जरीं रउवा
जान जाइब हवा के सवँहर के ●●

गहमर, गाजीपुर, उ० प्र०-२३२३२७

दू गो कविता

गुरुविन्द्र सिंह

(एक)

सगरी टहलिया से, नीक नेतागीरी
हमरो के छोड़ऽ बलमु अब फीरी।
चूल्हि अउर चउका में मुँहवाँ धुँआँला
डरे-लाजे कुछऊ न कहले, कहाला
बइठल जेठानी मोर खाँय पँजीरी।
निकका चिझुइयन के जीउ तरस जाला
तियना ले कबहूँ ना सुबहित भेंटाला
भितरा से हूलि उठे, आवे तिरमीरी।
मोरा ले नीक बिया भुअरा के माई
लागल बा सेवा में लउँड़ी आ दाई
मरदो परधान बा, करेला दादागीरी।
बियहे के बेरिये से असरा लगवनी
साध मोर एकहूँ ना, रउवा पुरवनी
तहरा भरोसा ले नीक बा फकीरी।

(दू) बदलत समय में...

भइले परदेसी गाँवें लटकल बा ताला।
घरवा बुझाय जइसे ढहत शिवाला !

टुकी-टुकी खेतवा भइल बँअवारा।
खेती का भरोसे इहाँ होई ना गुजारा
अपुसे में निकलेला रोज लाठी-भाला।

जिविका क साधन, बँचल कहाँ गाँव में
लागि गइल पहिया पलायन के पाँव में
आवे एगो गाँवें, सँगे चारगो ले जाला।

भितियो प' जामि गइल बर अउरी पीपर
साँय-साँय करे लागल बहरी से भीतर
भूत-बैताले बाटे बनल रखवाला। ●●

आर.के. पुरम, नई दिल्ली

घायल के बानि

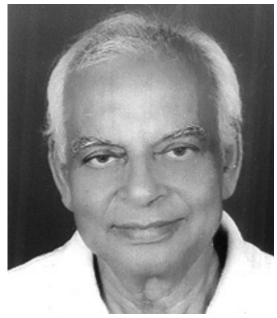

✍ राजगुप्त

बेचारू के कइसे घायल नाव पड़ि गइल। एहू के एगो अजबे कहानी बा। केहू के रोवाई देखि के रोवे लागसु त केहू के हंसल देखि के, दाँत निपोरि देसु। नीक आ सुन्नर मेहरारून के देखि लेसु त करेजा पर हाथ धइ के दरिये बइठि जासु। पूत के पांव पलने में चिन्हा गइल कि इ कवना धान के होरहा होखिहें। गांव–जवार के बाति पर माई–बाबू बबुआ के रहनि चाल पर घायल नाव ध दिहले।

उमिर बीति गइल रहे। झरनाठ–खोरनाठ–लुकाठ–जुआठ भइला पर माथे मउर चढ़ल रहे। ककन छूटि गइल रहे। बाकिर नाऊ जवन गोड़ रँगले रहे ओकर रंग अबे फीका ना पड़ल रहे। भागि–भागि के बाति ह। घायल जइसन बहेंड़ रहले उनकर मेहरारू ओतने चलबिधुर कामकरता रहे। एक बात अउरी रहे कि घायल जेतने अब्बर दिल के रहले उनकर जनाना ओतने करेड़ आ पोख्ता करेजा के रहलि। रहनि–चाल–सोभाव सगरे नीक रहे। तब्बे न अपना सासु के पलंगरी पर बइठा के घर के सज्जी काम अपना माथे ओढ़ि लेले रहे।

एक दिन के बाति ह घायल हरवाही से सेकराहें लवटि अइलें। गाँव के बजार जे रहे। जेठ बइसाख के गरमी से थाकल–मादल आइल रहले। ओसारा में बसखटिहा पर सुस्ताये खातिर बइठि गइले। उनकर जनाना हाथ भर के घूँघट कढले आइलि। घायल के गोड़ धोवा के नइहर से आइल करनी पानी पीये के ध के चलि गइल।

पानी–ओनी पियला के बाद घायल के मन फरहर भइल। बसखटि छोड़ि उठलें। मने मन सोचत घर में जाये लगले कि दिन–दिन में माई का सोझा कइसे पूछबि अपना जनाना से कि अपना खातिर कुछ कीने–बेसाह करे के होखे त बोलऽ। चउकठ अबे लांघही के रहले कि सोझा अँगना के ओसारा में आंखि अचल हो गइल। ओइजा के वाकया जवन देखले कि देखते रहि गइले। बुझाइल जइसे उनका काठ मारि देले होखे। चउकठ की लगे थथमि गइले। आँखि फारि ताके लगले।

घायल अपना माई बाबू के बड़ी मानसु। का मजाल कि अपना माई–बाबू के सोझा नजर उठा देसु। कसम केहू ले लेव, आजु तकले कब्बो ना। माई–बाबू से एतना लजासु कि ओ लोगन के सोझा अपना जनाना से किछु ना बोलसु ना चालसु। लाजे सोझा बोलसु ना। सवादे अन्हे रहियों ना जाव। इहे एगो कारन रहे कि बिआह के एतना दिन बादो सुरुज–चान के अंजोरिया में अपना मेहरारू के सूरति ना देखले रहले। कबो काल्हु जो सोझा पड़ियो जाव त हाथ भर के घूँघ काढि लेव। भेंट होखे तब जब राति खां सासु–ससुर के खिया–पिया के उ खायका ले के अपना कोठरी में आवें। ढेबरी दियरखा पर राखि भूइयाँ बइठि पंखा हांकि–हांकि घायल के खिआवे। दूर के ढोल सुहावन। फरके ढेबरी रखला से मुँह पर का अँजोर पड़ी? तब्बो खात का बेरी घायल अपना जनाना के मुँह के गढ़नि देखि लेसु। ढेबरी त राति भर जरे ना। खएका–पानी के बाद बुता दिहल जाव। होत भिनसारे लाज के मारे घायल अपना कोठरी में से बहरिया जासु। बैलन के सानी–पानी ना त ओसारा में दुआर पर सूति जासु। सोहाग राति के दिने ढ़ेबरिये के अंजोरा में अपना जनाना के मुँह के गढ़नि देखि घायल घवाही हो गइल रहले। आजु दिन के अंजोरा में अपना बेकति के रूप देखि काठ हो गइले।

अंगना में उनकर मेहरारू ओखरि में चाउर छाँटति रहे। बेगर घूँघ के आँचर भुइया लसरात रहे। मिसल खुलल माथ रहे। बन्हले बेगर हवा में लहरात रहे। जइसे करिया–करिया बादर बरफ के पहाड़ पर मेलछत होखे। आधा हाथ आधा मुँह लउकत रहे। हाथ आ गाल के गोराई? हे भगवान, चानो के अँजोरिया फेल रहे। पाँव के पायल आ कान के झुमका अइसे रुन–झून बाजत रहे जइसे सरग के परी धरती पर नाचत होखे। महतारी सूप में चाउर फटकत मुस्की काटत रहली। जनाना महीन राग में गारी गावत चाउर छाँटत रहली। कलाई के चूड़ी राग जइसे मिलावत रहे–

चाउर छाँटू रे नेटुवाँ चाउर छाँटु
ननदी के ओखरी में चाउर छाँटु
छाँटऽतानी रे नेटुवाँ छाँटऽतानी
मूसरा भुलाइल टकटोरत बानी
चाउर छाँटू रे नेटुवाँ चाउर... ...

घायल त घवाही होइये गइल रहले। इ दृश्य देखि के इन्द्रासन के इन्द्र भी डोले लगले। बड़ी देरी ले सरग में बिचरला के बाद घायल होस में आइले। सोचले, इची दायें–बांये हो के दिन के अंजोरा में जनाना के मुँह के गढ़नि भर सीकम का कि हीक भर देखि लेतीं। एतना समुझि चोर की तरे गँवे–गँवे गोड़ धरत चउकठ फानि आगा बढ़लें। सोझा इया कहिहें कि केतना बेसरम बा। बिना आवाज दिहले घर में हलि आइल ह। एतना सोचि के घायल फट् से ना खखारि दिहले।

आवाज पाइ कछुआ आपन मुड़ी सिकोरता में जेतना झटकवाही करेला कि पलक झपकत कही कि फट् से ना

उनकर जनाना आँचर कपार पर ध के घूँघ काढि तकली। अनझिटके में दिन में मुँह के गढ़नि लउकि गइल। फजिर के उगत सुरुज अस लिलार पर भोर के शुकवा जोन्ही अस टिकुली आ समुन्दर में बुड़त सांझि खां के सुरुज के ललाई अस माँगि के टहकत सेनुर अकास में इन्द्रधनुष अस चमकत रहे। एतना देखि के फेरा में पड़ि गइले कि महतारी के सोझा अपनी बेकति से कइसे कहीं कि हो हमरा बजारे जाये के बा। किछु कीने बेसहे के होखे त बोलऽ। बेचारू इया–महतारी के सोझा कहि ना पवले। एतने में शरम का मारे मेहरारू ओइजा से टकसि गइल। अब कहसु त दिल के बाति केकरा से कहसु। मन के बाति मनही में राखि हारि–पाछि अंगना से बहरी आ गइले। ओसरा में टांगल गमछा कान्ह पर राखि पछतात बजारि के रस्ता लिहले।

कुछ सोचत चलत जात रहले कि सोझा मोड़ का किनारा अपना ओसारा में एगो मेहरारू चाउर छाँटति रहे। ओकर रूप अन–मन उनका जनाना अस रहे। माथा खुलल, आँचर गिरल उगत सुरुज अस टिकुली आ इन्द्रधनुष अस ओकरी मांगि के सेनुर चमकत रहे। ओकर रूप देखि घायल मनही मन भुनभुनाए लगले।/धामक–धमक कूटन लागे लट छटकाएँ केस।/हम त चललीं हाट बजरिया कहबू कुछ सन्देस।

घायल के मुँह खुले के खुलि गइल बाकिर लगले पछताये कि कहवाँ इ बाति कहल चाहत रहे कहवाँ कहा गइल। ठांव–कुठाव बुझले बेगर इ का कहि दिहलीं। मेहररुआ मने मने खिसिआत होई।

देखन में छोटन लगे घाव करे गम्हीर। मेहरारू के जात, घायल से दू हाथ आगा निकलल। उनसे ढेर समझदार रहे। एह से जबाबो दिहलसि।

लाता तर के पता लिअइहऽ
गज हन्सी के दन्त।
तीन बेसहिया हमके लिअइहऽ
तू ही रहिहऽ कन्त।।

मेहरारू हमार परीक्षा लेत बिया। हमरा के कुछ बेसहे के कहलसि ह। घायल बड़ा खुश भइले। खुशी–खुशी बजारी में चोहँपले। दोकान–दोकान घुमत अन्मुन्हार हो गइल। बड़ा फेरा में पड़ले। अब का करी? रोज के उहे रस्ता बा। जो सउदा ओकर ना ले जाइब त ओरहन दीही। रस्ता चलल मोसकिल क दी चारू ओरि दिया–लेसान होखे लागल। घायल बेचारू मन मारि के घरे लवटि अइले।

घरे आके खटिया पर चिताने सूति रहलें। पहर भर राति गइल उनका जनाना खयका आ ढ़ेबरी लेके अइली। अपना मरद के रोवाँ गिरल आ उतरल मुँह देखि सकपका गइली।

"उठीं, खा लीं" गँव से कहली।

"आजु कइसन दो मन भइल बा। खाये के मन नइखे करत।"

"मुँह के रोशनी बतावत बा कि जरुर कवनो विपति पड़ल बा। आपन दुख हमरा से ना कहब त केकरा से कहब। हमारी किरिये, बताईं।"

घायल के दुःख पर मरहम बुझाइल। ऊ अँगना से लेके ओइजा तकले के सगरे बाति उगिल दिहले।

पति परमेसर के बाति सुनि घायल के जनाना कहलसि, "उठीं उठीं, खयका सेरात बा। खुश मन से खाईं। इ कवन बड़ बाति बा। फजिरे उनकर समान चोहँपा देऽब। हमरी लगे उनकर तीनो बेसाह बा।"

होत फजिरे घायल के जनाना एगो मोटरी देत उनका से कहली। हई ले जाईं बड़की बहिन के दे आईं। मोटरी ले के घायल चलले। उनका बिसवास ना होत रहे कि जवन बेसाह सउँसे बजार में ना मिलल उ हमरी जनाना के पासे कइसे आ गइल। जरूर दालि में कुछ करिया बा। एतना शंका क के घायल बान्हल मोटरी खोलि के देखले।

ओमे इया के पनबट्टा में के पान, हाथी दांत के चारिगो चूड़ी आ टिकुली रहे। कुछ समुझि–बूझि के फेनु मोटरी जस के तस बान्हि दिहलें। ओ मेहरारू के मोटरी दे ले लवटे लगले। तब उ मेहरारू बोललि। "सुनऽ हो, भल अइलऽ जात काहाँ बाड़ऽ। बइठऽ पानी–ओनी पी लऽ।"

घायल ना नुकुर करते रहले तबले औरत के सासु एक डाली भूजा–गुर आ एक लोटा पानी ध दिहली। ना ना कइला के बादो औरत के सासु के मन राखे के परल। "बड़ के बाति टारी के?" भूजा खात के बेरी औरत पुछलसि। हो, तू त काल्हु बजारे गइल रहलऽ। एह बेरा लवटत बाड़ऽ। घायल बोलले– "साँच बात त इ रहे कि तोहार सउदा सज्जी बजार खोजला के बादो ना मिलल त उदास मन ले के घरे लवटली। लटकल मुँह देखि हमार जनाना कारन जनुवें। हम बतउवीं। तब उ कहुवे कि एतने बाति खातिर हेतना उदासल बानीं। खाईं, सूती–बइठीं फजिरे उनकर सउदा पहुँचा देइब। ओकर बचन सूनि हम निश्चिन्त होई खा पी के सुतली। सबेरे उठनी। बुझला भोरे जनाना मोटरी बान्हि राखि लेले रहुवे। देत खानी कहुवे ले जाईं, बड़ बहिन के दे आईं।"

एतना बाति सुनि औरत के सासु कहुवी, "बड़ भागि बा तोहार बबुआ, जनाना अंगूठी के नगीना पवले बाड़ऽ।"

सासु के बात सुनि घायल मुस्कियात घरे लवटि अइले।

– राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया (उ.प्र.),
मोबा. : 9415659456

लोकतंत्र महिमा भाग-3

हीरालाल 'हीरा'

अउरी मन उबियाइल जाता।
लोकतंत्र अझुराइल जाता।।

जनसेवक से होते खास
तुरलस सबका मन के आस
ओठे फेफरी बा हमनी के-
ऊ अउरी रेंगराइल जाता।

लागत बा अब दागल साँड़
कवनो रोक-छेंक ना डाँड़
हरियर गोंफा कुटुँग-कुटुँग के
भँइसा नियर मोटाइल जाता।

पहिन लोकतंत्र के गहना-
सड़के बइठि करे अब धरना
आपन जिद मनवावे खातिर
नया चलन उपराइल जाता।

अब कइसन आजादी चाहीं
या की बस बरबादी चाहीं
आजादी के नाँव प' साजिश
रोजे नया रचाइल जाता।

कब तक सत्ता ई खनदानी
चलत रही ओकरे मनमानी
नियम जोग्यता दोसरा खातिर
तखतो-ताज बन्हाइल जाता।

आढ़तियन के खेल निराला
टैक्स चुरा के माल-बिकाला
मँहगा-सस्ता इनिके हाथे
मनुष्यता मँहगाइल जाता।

बा विपक्ष के एके नाधा
बनल-बनावल काम में बाधा
हल्ला कइले संसद रोकिहें
चलतो सड़क रून्हाइल जाता।

राजनीति के कठिन बेमारी
खुदगर्जी बा बनल लचारी
मुफ्त के माल उड़ावत नीके-
लोगवो अब भकुआइल जाता।

फिरी दवाई, बिजली, राशन
घरे बइठि के देईं भाषन
आखिर ई सब कहाँ से आई
अर्थशास्त्र गबड़ाइल जाता।

डेढ़ साल से बा लरिआइल
भेस बदल के फेरू आइल
अबहीं कतना अउरी डाही
कोरोनवा लरियाइल जाता।

- भारतीय स्टैट बैंक, बलिया

स्मृतिशेष कन्हैया पाण्डेय के गीत

बुधना से पतिया पठवले बानी हो
ए चइतवे में आ जा।

खेते-खरिहनवा छिटाइल बा सोना
काहें तूँ रोवेलऽ भगिया के रोना
मेंहनत से अन्जा उगवले, बानी हो,
ए चइतवे में आ जा।

उसरा प थ्रेसर गड़वले बा हरखा
रोज गोहराईला होखे जनि बरखा
दँवरी खातिर बतिअवले बानी हो,
ए चइतवे में आ जा।

ठाँवा-ठँई पाकल बा जउवा-गोजइया
भइल हा नवमिया में काली-पुजइया
गोहुवाँ पइँचवा मँगवले बानी हो,
ए चइतवे में आ जा।

भेजे के बा नेवता बबुनिया के ससुरा
बेटा के बियाह घरे नधले बा भसुरा
करनी-कसरवा जुटवले बानी हो,
ए चइतवे में आ जा।

हम त अकेल घरे औरत के जतिया
काटत-ओसावत में होइ जाइ रतिया
छोटकी ननद के बोलवले बानी हो,
ए चइतवे में आ जा।

अइबऽ ना घरवा त चइती बिलाई
सँग सँग लइकन के मुँहवों जबाई
अबकी के किरिया धरवले बानी हो,
ए चइतवे में आ जा।

गजल

डॉ कादम्बिनी सिंह

लोग जेतने सेयान होखेला
नेह ओतने पुरान होखेला

हाथ हरदम रहे करेजा पर
जब नदी पर मकान होखेला

खेत हरियर रहे उहाँ , जहवाँ
बाप-माई के मान होखेला

आंख मुनला प सब हेरइला के
आंख खुलला प भान होखेला

बइठ के खाए वाला का जानी
घर में केतना खटान होखेला

बूझि गइनी कि आन के दुःख में
लोग बिरले हरान होखेला

रात के हाथ - गोड़ जोड़ेनी
तब न जाके बिहान होखेला

घाव सुखलो के बाद हियरा में
ओश दरद के निसान होखेला

काठ - पाथर का आगा रोवला से
लोर आपन जियान होखेला

- मोती नगर कालोनी, बलिया (उत्तर प्रदेश)

स्वतंत्रता के सात दशक आ भोजपुरी कहानी

विष्णुदेव तिवारी

भोजपुरी के पहिली साहित्यिक कहानी सन् 1948 में 'जेहल क सनदि' नाँव के किताब में प्रगट होत बाड़ी स। एह कहानी के किताब में दस गो कहानी बाड़ी स, जेकरा बारे में कहानीकार अवध बिहारी सुमन के कहनाम बा कि ई सब बौद्ध विद्वान नागार्जुन के प्रेरणा से लिखल गइली स। 'सुमन' अपना 'तनिक अरज' में कहत बाड़े– "1941 में हम सुराज का लड़ाई में जेहल गइनीं। ओइजा बउध बिद्वान नागार्जुन जी के साथ भइल। भोजपुरी भाषा में कलम चलावे क पहिला उपदेस उनहीं से मिलल। एह से, आज कहानी के जवन किताबि रउआ लोग का आगा बा, ओकरा के तइयार करावे क असली अहसान नागार्जुन जी पर बाटे।"

डॉ0 विवेकी राय भोजपुरी कहानियन के आलोचना से संबंधित अपना किताब 'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास' में कहत बाड़े कि भोजपुरी के पहिली साहित्यिक कहानी 'जेहल क सनदि' में शामिल पहिली कहानी 'मलिकार' ह, नउवीं कहानी 'जेहल क सनदि' ना। ई बात ऊ अवध बिहारी सुमन, जे बाद में दण्डिस्वामी विमलानंद सरस्वती के रूप में समादृत भइले, से भइल बात–बतकही के आधार पर कहत बाड़े।

'जेहल क सनदि' के दसों कहानी कठोरतम जथारथ के सहज अभिव्यक्ति हई स। संभव बा, एह कहानियन में कला के लेहाजे कुछ कमजोरी लउके, कहीं–कहीं विचार, भाव–सुघराई के दबावतो लउके, बाकिर ई कम महत्वपूर्ण नइखे कि भोजपुरी साहित्य के ई पहिली कहानी वस्तु, चरित्र आ परिवेशे ना, 'दृष्टि' के लेहाजे भी समकालीन जीवन से अलहदा कवनो हवा लोक के बतकही उठावत ना लउकी। एहिजा जवन बा ऊ जिनगी के अंग बा, कल्पना के अचरज–विलास भा अनंग–रास ना। कवनो कहानी, कवनो आदर्श के दोहाई नइखे देत।

संग्रह के दसो कहानी क्रमशः निम्न क्रम से आवत बाड़ी स–

(क) मलिकार :– अइसे त ई कहानी देवकी आ सेवक नाँव के दू भाइयन के कहानी ह, बाकी ई कहानी पूरा भोजपुरी क्षेत्र के धूर्तता, घाघपन, तिकड़मबाजी, बेहयायी आ लंगटपन के जथारथ रूप ह। देवकी अपना भाई सेवक के मए जमीन, गहना–गुरिया आदि के मलिकार बन के, उनुके गुदरी देके टुटही पलानी में रोवे आ कलपे खातिर छोड़ दे तारे। देवकी के कर्मनासा के अंततः सेवक के सब परिचार तहस–नहस हो जात बा।

(ख) आतमघात :– 'आत्मघात' गरीबी आ मुफलिसी में पिता आम आदमी के प्रतिनिधि चरित्र बलिराम नाँव के एगो अभागा युवक के कहानी ह, जे मेहरी के मेहना से आजिज आके, रेलगाड़ी से कट के मू जात बाड़े आ समूचा सभ्य लोगन क`सोझा एगो विराट प्रश्न छोड़ जा ताड़े कि "सेठ–साहूकार, वोकिल–मुंसिफ सब किसिम–किसिम के कपड़ा पहिर के, अतर–गुलाब में सराबोरा भइल, हाथ में बकुली लिहले, एक कोना से दोसरा कोना टहरत, पान खात आ हँसत–बोलत आपन जिनगी अतिशय आनंद

आ उमंग में बिता रहल बा, कब तक गरीब लोग इहन लोग के शोषण–चक्र में पिसात एही तरह आतमघात करत रही?"

(ग) मवनी बाबा :– एह कहानी में बूचे बो पड़ाँइन के संगे गुपुता बाबा के दरसन करे गइल फुलझरिया एगो लंपट साधु के हाथे लुटा जात बिया। धूर्त साधु ओकरा के बीज–बन में रोवत–कलपत छोड़ के परा जात बा।

(घ) कतवारू दादा :– बुढ़ौती में तिसरका बियाह करे वाला कतवारू दादा के माध्यम से कहानीकार व्यक्तिवादी कुकरम आ पूँजीवादी व्यवस्था के बेशरमीपन के मजाक उड़ावत बा। बरात लवटानी के बेरा चोर कतवारू दादा के पानी उतारत, उनकर गहना के बाकस लेके परा जात बाड़े स।

(ङ) किसान भगवान :–

ई कहानी तत्कालीन बिहार के किसान आंदोलन के केन्द्र में राखि के लिखाइल बा, जेमे स्वामी सहजानंद सरस्वती के गंभीर भूमिका के संगे जन–क्रांति के आह्वान सामने आइल बा।

(च) चउर क पूजा :– एह कहानी में उदात्त प्रेम के झाँकी आ ओकर मार्मिक अंत के कथा बा, जेकरा माध्यम से समाज के कुरई, हठधर्मिता, अंध विसवास आ रूढ़ि पर मार कइल गइल बा। अकलू अहीर आ देवकलिया तेलिन के लोग जिअता में नइखे मिले देत बाकिर उहनी दूनों के मुअते उहे लोग उहन के चउर बना के पूजे में आपन धन भाग मानत बा।

(छ) सनकी :– 'सनकी' गुलाब नाँव के एगो नव जवान के मनोगत अझुरहट के चलते पगलइला के कहानी ह। गुलाब के 'विसारद' जी का रूप में एगो अइसन भल–मानुस मिलत बा, जे उनके पढ़े लिखे में काफी मदत करत बा। गुलाब पढ़ाई आ अच्छाई दूनों में गुलाब नियर खिले लागत बाड़े बाकी तबे 'विसारद' जी गुलाब के पंखुरी मसल दे तारे। एह कुकरम के प्रभाव दूनों आदमी पर परत बा। गुलाब पगला जात बाड़े आ 'विसारद' जी जे एक बेर अलोपित हो तारे त अंत तक उनकर थाह–पता नइखे लागत। कहानी में फ्लैश बैक शैली के सहारा लिहल गइल बा आ समलैंगिक अपराध के बड़ा संकेतात्मक ढंग से व्यक्त कइल गइल बा।

(ज) दफा–302 :–

'दफा–302' प्रेमचंद के 'कफन' से भी मर्मांतक बा (डॉ0 विवेकी राय) आ ऊ पाठक के मन के एह तरी झकझोर के रख देति बा कि ऊ अपना के एगो सभ्य समाज में होखे के लेके बेचैन हो जात बा। भूख से मउराइल, हर दुआरी से दुत्कारल जात, रामनाथ नोनिया अपना हिती–मुटी नाती के गटई एह से चाँप देत बाड़े कि ऊ भूख के बेहाली से मुक्ति पा लेव। रामनाथ के बेवा पतोहियो दवाई आ पथ्य के बिना प्राण त्याग देत बिया। रामनाथ के पुलिस पकड़ लेति बा आ ऊ दफा–302 के मुजरिम करार क दिहल जात बाड़े। कहानी जइसे मउअत के चुप्पी से रचाइल होखे। कहानी छोट बा बाकिर संत्रास अछोर। रामनाथ के साँसत आ उद्वेग के वर्णन कहानीकार अइसे करत बा– "अन्हार मइर्ड में गुर्ही से बीनल टुटही बँसहट पर परल–परल रामनाथ अपना जिनिगी के धूँसत रहलन। नाव मँझधार में पहुँचि के चकोह से डूबे–डूबे भइलि रहलि। उनकर एक छन एक जग के बराबर बीते। रहि–रहि के रामनाथ इहे सोचसु..... पनरोह का पिलुआ क जिनिगी बितावल आ घूलि–घूलि के मरला ले एक बेर क मरि गइल.... नी. ..म...न।"

(झ) जेहल क सनदि :–

एह कहानी में बड़ा यथार्थपूर्ण ढंग से तत्कालीन राजनीति के एगो करिया पक्ष उरेहाइल बा। कांग्रेसी तिकड़म के सहारे शोभा तिवारी, जीतत–जीतत हार जात बाड़े। सरकिल सात के बाकस तूर के आपन जीत सुनिश्चित करत–करत ऊ अंततः किसान सभा के उम्मीदवार बनवारी सिंह से मात खा जात बाड़े आ मलगोंफा घोंटे के उनकर सपना जँहे के तँहे तवाँ जात बा।

(ञ) कवि कयलास :–

ई कहानी वैयक्तिक शोषण के आधार बनावत रचाइल बा। मार्क्स आ लेनिन के विचारन के जमीन पर उतारे के सपना देखे वाला एगो सतेज पत्रकार आ करमठ कार्यकर्ता के दारूण अंत के ई कहानी एके साथ कई–कई सवालन के उठा के समाप्त हो जात बिया। ई सब सवाल पूँजीवाद के बाइ प्रोडक्ट होलन। एह कहानी में कयलास जी आत्म–त्याग आ स्वाभिमान के साक्षात् मूर्ति बाड़े। कहानीकार उनका व्यक्तित्व के झाँकी प्रस्तुत करत कहत बा–

"मानसरोवर में कउआ आ हंस क इयारी रहलि। कयलास जी लेहाज करसु त अलगू राय सउदा। लछिमी आ सुरसती में लड़ाई भइलि। कयलास जी पेट पर पट्टी बान्हि के राय साहेब क पोंछि सुहुरावे वाला जीव ना रहलन। विद्यमान पइसा खातिर मान–मरजाद क सउदा ना कइ सके। कलमि चलावे वाला भूखे मरी बाकी मालदार के दाँत चियारल ओकरा से ना सँपरी।"

कहल जा सकत बा कि भोजपुरी कहानी लेखन के शुरूआत 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के नगीचे–पास होखत बा आ प्रकाशन 1948 से।

पत्रिका के माध्यम से पाठकन के सोझा आवे वाली पहिली कहानी विंध्याचल प्रसाद गुप्त के "केहू से मत कहेब" ह। इहो कहानी 1948 से महेन्द्र शास्त्री के संपादकी में छपे वाली पत्रिका 'भोजपुरी' में प्रकाशित भइल रहे। एहू कहानी में जथारथ बा। एहिजा, हमनी के स्वतंत्रता के बीचे कंट्रोल में पिसात आम जन के तबाही देखत बानीं जा। आगे पाण्डेय नर्मदेश्वर सहायक के कहानी 'नवरतन' भोजपुरी कहानियाँ' में प्रकाशित होति बा। ऐतिहासिक कथ्य पर आधारित ई कहानी तत्कालीन भारत के गरीबी के मार्मिक चित्र प्रस्तुत करत बिया।

भोजपुरी साहित्य खातिर ऊ संघर्ष के समय रहे। ओ घरी पटना से निकले वाली "अंजोर" (त्रैमासिक), "भोजपुरी" (मासिक) आ बनारस से निकले वाली "भोजपुरी कहानियाँ" आदि पत्रिका भाषा आ साहित्य के बढ़न्ती में मन–प्राण से लागल रहली स। ओही घरी, वृन्दावन विहारी के आध्यात्मवादी कहानी प्रकाशित भइली स, जेमे संजोगात्मक घटनन के आदर्शपरक अंकन भइल बा। एह कहानियन में "होड़", "दू राही", "साँप के फुफकार", "अकेले" आदि स्मरणीय बा।

आज तक के भोजपुरी कहानियन पर विचार करे खातिर इहनी के निम्नांकित शीर्षकन के अंतर्गत रख के अध्ययन कइल रूचिकर हो सकत बा–

आरंभिक दौर के कहानी (1948–1975), एह दौर के "आधार काल" कहल जाई। मध्य दौर के कहानी (1976–1990), एह दौर के "विकास काल" कहल जाई। आज के कहानी (1990 से आजु ले), एकरा के "आधुनिक काल" कहल जाई। जवना घरी भोजपुरी कहानी, सहित्य के कोरा में आँख खोले शुरू कइलस, ओ घरी ले विश्व–कहानी अपना विकास के कई रंग–रूप देख चुकल रहे। 1950 के बाद हिंदी में बजाप्ता 'नई कहानी' के आंदोलन चल चुकल रहे।

1955 में 'कहानी' पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही 'नई कहानी' आंदोलन के धार चमक उठल। फणीश्वरनाथ रेणु, शिव प्रसाद सिंह जइसन कथाकार जहाँ गाँव के ओकरा लालित्यमय संवेदना में चित्रित करे के जतन कइले, ओहिजे निर्मल वर्मा आ कुछ दोसरो रचनाकार व्यक्ति के, समाज से अलहदा एगो एकात्म सत्ता में विचरण करत देखावल लोग। राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश आ कमलेश्वर 'नई कहानी' के ओकर दर्शन दिहले, जेकर महत्वपूर्ण बात 'अनुभव के प्रामाणिकता' मानल गइल। कहानी के कथ्ये ना, शिल्पों में अनधा प्रयोग भइल। 'नई कहानी' के बाद 'अकहानी', 'सचेतन कहानी', 'समकालीन कहानी', 'समांतर कहानी' आ 'सक्रिय कहानी' जइसन कई गो नाँव अइले–गइले, जे हिन्दी कहानी के विकास–प्रक्रिया में सकारात्मक जोग कइले। इ सब ताम–झाम, एक तरह से, मूल्यन के ह्रास आ लोकतांत्रिक मुखौटन से मोहेभंग के साहित्यिक रूप रहे, जेमे व्यक्तिगत कुंठा, अवसाद आ पीरा से मुक्ति के स्वभाविक–अस्वाभाविक भाव व्यक्त भइल। वाम पंथ के जनवादी कहानी सामान्य जन के पीरा आ आक्रोश के वाणी देबे के जतन कइलस।

भोजपुरी कहानी संसार में हिन्दी कहानी अस कवनो आन्दोलन त ना भइल, नूँ कवनो 'नरे' उछलल, तबो हिन्दी कहानी के विधान आ सक्रियता से भोजपुरी कहानी अप्रभावित रहल, अइसन नइखे कहल जा सकत।

भोजपुरी कहानी के लिखवइया लोगन पर हिन्दी कहानी के प्रभाव तीन तरी परल लउकत बा। पहिला प्रभाव के अंतर्गत भोजपुरी के ओइसन कहानीकार भइले, जे अथ से इति तक प्रेमचंद के परंपरा में आगे बढ़ले, जइसे– पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, रामनाथ पाण्डेय, कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य', अविनाश चंद्र विद्यार्थी, पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह, रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', डॉ0 विवेकी राय, डॉ0 मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा), अक्षयवर दीक्षित आदि। दुसरका प्रभाव में भोजपुरी कहानीकारन के अइसन नाँव बा, जिनका में आदर्श त प्रेमचंद वाला बा बाकिर उनका में जयशंकरो प्रसाद के रूपवादी उजोत झाँकत मिली। तिसरका श्रेनी में अइसन कहानीकार भइले जे हिन्दी से प्रभावित रहले बाकिर भोजपुरी में भोजपुरिया बनके लउकले। दुसरका प्रभाव वाली श्रेनी में आवे वाला प्रमुख कहानीकार बाड़े– ईश्वरचन्द्र सिन्हा, उमाकांत वर्मा आदि। तिसरका प्रभाव के अंतर्गत आवे वाला कहानीकारन में प्रो0 ब्रजकिशोर, रूपश्री, कृष्णानंद 'कृष्ण', तैयब हुसैन 'पीड़ित', सुरेश कांटक, जितेन्द्र कुमार आदि के नाँव प्रमुखता से लिहल जा सकत बा।

एह तीनूँ श्रेनी से अलग चउथी श्रेनी ओह कहाकारन के रहे, जेकरा के विशुद्ध रूप से भोजपुरी कहानीकार कहल जाई। एहिजा हिन्दी से प्रभाव के बात नइखे, बाएन–पेहान लेबे देबे के बात बा, हिन्दी के बरोबरी पर खाड़ होखे चाहे ओकरा से आगे चले के बात बा। एह श्रेनी में आदि कहानीकार सुमनजी, आचार्य

शिवपूजन सहाय, रामेश्वर सिंह 'काश्यप', ऋणीश्वर, डॉ0 अशोक द्विवेदी, डॉ0 रामदेव शुक्ल जइसन साहित्यकार साधक लोग बटुए।

आज भोजपुरी कहानी अपना के हिन्दी जइसन विकसित भाषा सब के दबाव से कमोबेस मुक्त क लेले बा। ध्यातव्य बा कि प्रभाव आ दबाव एके चीज ना ह। साहित्य में प्रभाव से गरिमा बरकरार रहेला जबकि दबाव से त विकासे लथरा जाला। प्रभाव के माने अनुकरण ना होला। भोजपुरी कहानी अनुकरण नइखे कइले। एहिजा अवध बिहारी 'सुमन', शिव पूजन सहाय, रामेश्वर सिंह 'काश्यप' आदि कृती रचनाकार लोग, अइसन बरियार नेंइ डलले बा कि भोजपुरी कहानीकार देश के कवनो दोसरा समृद्ध भाषा के कथा–परंपरा में त आवत बा, कथा–अनुकरण में ना।

भोजपुरी मन–मिजाज के कुछ सुंदर कहानी :–

पी0 चन्द्र विनोद भोजपुरी के नीमन कहानीकार हवन। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के एगो मानक कहानी बा– 'बड़प्पन'। चन्द्र विनोद के 'केरा के टुकी–टुकी पतई'(1990) कहानी संग्रह में संग्रहीत 'दलिद्दर ना खेदाई' नाँव के कहानी, जे 'भोजपुरी कहानियाँ'(जनवरी, 1975) में प्रकाशित भइल रहे, बड़ा सहज बाकिर व्यंग्यात्मक ढँग से राजनीति के जनविरोधी असलियत उजागर करत बिया। सिधवा काकी के माध्यम से कहानीकार, गँवे–गँवे चिउँटी काटत, ई बता देत बा कि देश के नेतृत्व यदि स्वार्थ छोड़ के जनता के समस्यन के दूर करे के जतन करे, त सकारात्मक परिवर्तिन होखे में देरी ना लागी। जनता के बेबसी काकी के शब्दन में एह प्रकार व्यक्त भइल बा– 'माथे मालिक जब अइन कानून तूर देलस, त दलिद्दरवा जाव कइसे?' चन्द्र विनोद के एगो दोसर कहानी 'सुग्गा जइहें मुरछाय' में भी काँग्रेसी भष्टता आ सत्ता के कुरई देखावल गइल बा। एह कहानी के पृष्ठभूमि में जय प्रकाश आंदोलन बा आ एगो अदृश्य भाव–संवेदन बन के जय प्रकाश नारायण मये कथा के संवेदित करत बाड़े।

'बड़प्पन' में एगो आदर्श बा बाकिर प्रेमचंद से अलहदा। कहानी संवेदनात्मक यथार्थ आ संवेदनहीनता के यथार्थ के दंवदंव से रचाइल बा। डॉक्टर साहेब मुर्दा के सूई लगा के फीस अइँठ लेत बाड़े बाकिर गनिया टमटम वाला में आदमियत बाँचल बा। ऊ मृतक के घर वालन से भाड़ा के पइसा नइखे लेत। ओकरा सामने डॉक्टर अपना के बड़ा छोट समुझत बाड़े आ टमटम वाला के ऊँचाई नापत रह जात बाड़े।

चौधरी कन्हैया प्रसाद के आत्मोपरक कहानियन में व्यंग्य आ वेदना हाजिर रहेला, जवन स्वनिर्मित कथ्य के सँगे रह के व्यक्तिगत आदर्श के चिनहासी देत रहेला। उनकरा कुछ अउर कहानियन में 'कटहर', 'तिनका', 'भँवरजाल', 'बुझात नइखे', 'हम बदलीं कइसे', 'देशद्रोही', 'सही मंजिल' आदि प्रमुख बा, जेमे सामाजिक, नैतिक भा कार्यालयीय सड़ाँध पर पोढ़ बाकिर तिक्खर व्यंग्य बा।

प्रेमचंदीय खेमा : पहिल प्रभाव :–

"जेहल क' सनदि" के छोड़ दिहल जाउ त' अपना जनम से लेके 1975 तक के भोजपुरी के अधिकांश कहानियन में प्रेमचंद वाला आदर्श कवनो ना कवनो रूप में लउकिए जाई। एह परंपरा में पिता–पुत्र पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह आ पाण्डेय सुरेन्द महत्वपूर्ण बाड़े। पाण्डेय सुरेन्द्र के कहानी संग्रह "जीए मरे के बेसवी" यद्यपि 1998 में प्रकाशित भइल, इनकर कहानी बहुत पहिलहीं से पत्रिकन में प्रकाशित होत रहली स। पाण्डेय सुरेन्द्र के एगो प्रसिद्ध कहानी ह "जूठ मरद"। एह में एगो नारी के स्वाभिमान, त्याग आ पवित्रता के कहानी ओकरा पति के अड़यास चरित्र के विपरीत गर्हल गइल बा। नारी के नाँवे आदर्शपरक बा– "जानकी"। ओकर मरद जमींदारी ठाट में चारित्रिक रूप से पतित हो जात बा त ऊ ओकरा के त्याग देत बिया। लाख मान–मनउवल के बादो ऊ अपना प्रन से नहीं डिगत। ऊ जूठ पुरुषत्व के अँकवार में जाए से ई कहत इनकार कर देत बिया कि "धोबी घाट से पियास ना नूँ बुताइल, जे आज ले पियासल के पियासले बानीं।" ई दीप्त नारीत्व भारतीय नारी के आदर्श रहल बा।

कृष्णानंद कृष्ण, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहायक के लीगल फिक्शन के पहिला लेखक मानत बाड़े (भोजपुरी कहानी : विकास आ परंपरा, पृ.–24)। "हरताल" आ "मुसलमानिन" इनकर प्रसिद्ध कहानी हई स। डॉ0 विवेकियो राय के "कच्चा गुलाब", "मदारी", "भूखे भजन न होइ भुआला" आदि कहानी निछछ आदर्शपरक कहानी हई स, जेकरा में गँवई चेतना के कुछ शुद्ध रूप अंकित भइल बा। चतुरी चाचा (मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध') के कहानियन में आदर्श सामाजिक व्यंग्य के रूप में देखनउग भइल बा। इनकरा कहानियन में "भइँस के दूध", "ऊपर झापर", "अँकोर" आदि प्रसिद्ध बा। "भइँसि के दूध" में दूबर नाँव के चरित्र के सहारे महाजनी सभ्यता के शोषण के चित्र उकेरल गइल बा। ई कहानी रामबली पाण्डेय के संपादन में प्रकाशित होखे वाला कहानी संग्रह

“भैरवी के साज”(1957) में संकलित भइल रहे।

प्रेमचंदीय आदर्शोन्मुख यथार्थ रामोनाथ पाण्डेय के कहानियन में पावल जाला। रामनाथ पाण्डेय के विशेष ख्याति उपन्यासकार के रूप में बा। इनकरे लिखल उपन्यास “बिंदिया” (1956) भोजपुरी के पहिला उपन्यास ह। “सतवंती”(1977) आ “देश के पुकार पर”(1999) इनकर प्रसिद्ध कहानी संग्रह ह। इनकर “छगन मिस्तिरी”, “अँजोरिया छपिटात रहे”, “सतवंती” आदि कहानी विवेच्य काल के उपलब्धि हई स। “सतवंती”, “भैरवी के साज” में संकलित भइल रहे। एह कहानी में प्रेम आ भूख के दंवदंव के सहारे नारी–शुचिता के बात उठावल गइल बा। पाण्डेयजी के कुछ परवर्ती कहानियन में कठोर जथारथो के दर्शन होखत बा।

आदर्श के छोटे–छोटे गोड़ राखत डॉ0 स्वर्णा किरण के कहानी हमनी के ध्यान खींचत बाड़ी स। कृष्ण ाानंद के विचार बा कि इनकर कहानी घटनन में जाला से अइसन गुहाइल रहेली स कि इहनी से पाठक उबे ना पावसु। “परिवर्तन”, “भूल”, “आग”, “गुलाब आ कँटइला”, “अँगूर” आदि स्वर्ण किरण के प्रसिद्ध कहानी हई स।

गिरिजा शंकर राय ‘गिरिजेश’ के कई कहानी “भोजपुरी कहानियाँ” में प्रकाशित भइली स, जइसे, “पराछित”, “जहाज के पंछी”, “होरी कासो खेलूँ” आदि। ‘गिरिजेश’ के भिरी युग के नापे–जोखे के आपन पैमाना बा आ कहानी कहे के आपन कथ्य, बाकिर अंत दाँव में इहो अपना कहानियन के आदर्श के छाँह में जुड़ाए से ना बँचा पावसु, इहाँ तक कि इनकर अति प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कहानी “बाजल बैरिन रे बँसुरिया” भी आदर्श–मंदिर के सुंदर फूल बन जाति बा।

वीरेन्द्रो नारायण पाण्डेय आदर्शवादी कहानीकार हवन। इनकरा कहानियन के एगो संग्रह “दरबा”, 1977 में प्रकाशित भइल रहे। इनकर “सून माँग”, “चौराहा”, “सिहर उठल मन प्रान”, “जन बिसारेब”, “पछतावा”, “दरबा” आदि कहानी सुंदर बन सकल बाड़ी। “दरबा” में आदर्श त बा बाकिर कटु यथार्थों बा। आदर्श ई बा कि रजनी अपना बूढ़ महतारी–बाप के सेवा करे खातिर आजीवन अविवाहित रहे के फैसला करत बिया आ यथार्थ ई बा कि अच्छा आ हवादार घर में रहे के ओकर सपना चकनाचूर हो जात बा आ ऊ किराया के ओही “दरबा” में रहे खातिर मजबूर हो जाति बा, जहाँ के परिवेश ओकरा मरीज पिता के सूट नइखे करत। वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय के एगो अउर चर्चित कहानी ह– “लोर पसर गइल”। एह कहानी में एगो गरीब मास्टर अपना बेटी के जहर देके एह से मुआ घालत बा कि समाज ओकरा निष्कलंक बेटी के चरित्र के कलंकित मत करे। बाकिर, हत्या भा आत्महत्या के महिमा–मंडन कइल जीवन चाहे साहित्य में, कतहूँ, शुभ सगुन ना मानल जा सके।

आदर्श–स्थापन के अगिली कड़ी के रूप में कामता प्रसाद ओझा ‘दिव्य’ के कहानियन के लिहल जा सकत बा। 1969 में प्रकाशित “चिटुकी भर सेनुर” कहानी संग्रह। इनिकर मए कहानी आदर्शपरक बाड़ी स। डॉ0 रसिक बिहारी ओझा ‘निर्भीक’ के आदर्शपरक कहानियन में रेखाचित्र आ संस्मरण दूनों के आस्वाद मिलेला। बाद में, अपना कुछ कहानियन में (प्रो0) रामेश्वरनाथ तिवारी इहे शैली तनी परिमार्जित रूप में अपनवले लउकत बाड़े। ओइसे, प्रो0 तिवारी के विशेष ख्याति निबंधकार के रूप में रहल बा। डॉ. निर्भीक के प्रसिद्ध कहानियन में “नान्ह के बेटी”, “पगला तिवारी” आदि विशेष प्रसिद्ध बा। डॉ0 बच्चन पाठक ‘सलिल’, दिवाकर लाल अँकुर, अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, राय सच्चिदानंद, श्रीराम सिंह शास्त्री, रामवृक्ष राय विधुर, ब्रज किशोर दूबे आदि कई लोग बढ़िया कहानी लिखले बा। इहाँ तक कि एह काल में गीत आ गजलन के रचवइया जगन्नाथ आ उनकर छोट भाई रामेश्वर प्रसाद सिन्हा (पीयूष) भी कुछ अच्छा कहानी लिखले बा लोग। सलिल के कहानियन में “हाय हमार नीलम परी”, “काठ के हाँड़ी”, “विश्वासघात”, “स्वर्ग में चुनाव” जइसन कहानी सुंदर बन पड़ल बाड़ी स। दिवाकर लाल अंकुर के “ओट के देवता”, राय सच्चिदानंद के “दाग” आ “सपना जे मेटि गइल” आदि कहानी सामाजिक, राजनैतिक अथवा व्यक्तिगत सत्य के आदर्श झलक प्रस्तुत करत बाड़ी स। अलबत्ते, श्रीराम सिंह शास्त्री के कहानियन के लूर–ढंग अलग बा। अनचिन्हार आ शहरी जिनगी के कहानियन के माध्यम से ई समाज के गरीबी आ सामाजिक परिवर्तनन के दयार्द्र चित्र खींचत बाड़े। रामवृक्ष राय विधुर के “केकरा प करब सिंगार”, जगन्नाथ के “राजपाट”, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा के “कहानी : जवन पूरा ना हो सकल” आ ब्रज किशोर दूबे के “सकदम” विवेच्य काल के बढ़िया कहानी बाड़ी स। घनश्याम मिसिर ‘एडवोकेट’ के भी कई कहानी एह काल में भोजपुरी पत्रिकन में प्रकाशित भइली स, जवन बाद में “अमरावती”(1976) नाँव के संग्रह में अइली स।

रामवृक्ष राय ‘विधुर’ के “खैरा पीपर कबहूँ ना डोले”(1964), राय सच्चिदानंद के “बटोही” (1968), गिरिजा शंकर राय ‘गिरिजेश’ के “बैरिन बँसुरिया”

(1968), रुपश्री के "जिनिगी के परछाँही" (1971), ईश्वर चंद्र सिन्हा के "गहरेबाजी" (1971), डॉ. तैय्यब हुसैन 'पीड़ित' के "बिछउँतिया" (1974), कृष्णानंद कृष्ण के "एह देस में" (1975) आ कन्हैया सिंह 'सदय' के "मनसा" (1975) एह काल के उल्लेख्य कहानी संग्रह हवन स।

भोजपुरी कहानियन के क्षेत्र में श्रीमती राधिका देवी श्रीवास्तव आ उमाशंकर सहाय हास्य–व्यंग्य वाली शैली के कहानीकार के रूप में जानल जालन लोग। विजयो बलियाटिक के नाँव एह रूप में महत्वपूर्ण बा। राधिका देवी के "प्रोफेसर" आ "पोल", उमाशंकर सहायक के "मउर के चोरी", "बरात जतरा" आ "तेल मालिस" तथा विजय बलियाटिक के "जै जजमान" जइसन कहानी एह संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेख करे जोग बा।

सन् 1966 से सन् 1975 तक के कहानियन पर विचार करत कृष्णानंद कृष्ण इहनी के "समकालीन कहानी" के भीतर रखत बाड़े। कन्हैया सिंह 'सदय' अपना आलेख "भोजपुरी कथा–साहित्य के उद्भव आ विकास" में 1961 से लेके 1973 तक के कहानियन के "उन्नयन काल" के भीतर राखत बाड़े आ एकरा भीतरी एकर दू गो शाखा "नइ कहानी" आ "अकहानी" के जिकिर करत बाड़े। नई कहानियन में ई "सुखिया" (उमाकांत वर्मा), "दरबा" (वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय), "सिउटहल" (रामनाथ पाण्डेय), "अब ना" (अनिल कुमार आंजनेय), "लीला : एक खंड" (जित राम पाठक), "देवाल" (सुध ाा वर्मा), "लाल निशान" (बिन्दु सिन्हा), "भोर ना भइल" (अरुण मोहन भारवि), "अवतार एगो जिनगी" (ऋषिश्वर), "भुतहा पीपर" (बसंत कुमार), "हम अकेले ना" (कान्ह जी 'तोमर'), "होली के हड़ताल" (रुपश्री), "परम्परा" (प्रो. ब्रज किशोर), "धीम आवाज" (विजय मोहन सिंह), "बड़प्पन" (चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह), "राधा गावत हौ" (ईश्वर चंद्र सिन्हा) जइसन कहानियन के उल्लेख करत बाड़े। डॉ0 विवेकी राय नई कहानियन के अंतर्गत रेखा चित्रात्मकता के उल्लेख करत बाड़े। कन्हैया सिंह 'सदय' के अनुसार रेखा चित्रात्मक कहानियन में "कुंदन सिंह केसर बाई" (शिवपूजन सहाय), "सिकरिया" (प्राध्यापक अचल), "चिखुरा" (अशोक द्विवेदी), "बैजुआ" (प्रियरंजन) आदि बड़ा चर्चित भइल रहे। 'सदय' के मोताबिक रेखा चित्रात्मक कहानियन के शुरूआत 1957 में प्रकाशित "चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियाँ" (मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध') से भइल रहे। रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' के "सुरतिया ना बिसरे" रेखा चित्रात्मक कहानियन के सुंदर संग्रह ह। कृष्णानंद कृष्ण "नई कहानी" के सीमा बीसवीं शताब्दी के सत्तर के दशक के उत्तरार्द्ध से शुरु करत दशक के खतम होखे तक मानत बाड़े। एकरा में जवना कहानियन के उल्लेख ऊ करत बाड़े, ओमे "आगि के लहर" (जितराम पाठक), "सिउटहल" (रामनाथ पाण्डेय), "धीम आवाज" (विजय मोहन सिंह) आ "मुआर" (मधुकर सिंह) जइसन कहानी शामिल बाड़ी स।

कहानी के नामकरण के समस्या :–

भोजपुरी कहानी पर हिन्दी कहानी के प्रभाव परल बा बाकिर एकरा भावबोध आ रचना–विधान पर भोजपुरिया व्यक्तित्व आ परिवेशो के प्रभाव बा। "नई कहानी" के सांकेतिकता, बिंब–विधान, वैयक्तिकता, नारी–पुरुष के बीच भा व्यक्ति आ परिवार अउर व्यक्ति आ समाज तथा परिवार आ समाज के बीच बनत–बिगड़त सम्बन्धन के संश्लिष्टता आदि हिन्दी कहानी अस भोजपुरी कहीन के पहचान ना बन सकल। एही तरह, साइते–संजोगे भोजपुरी के कवनो अइसन कहानी होखी जेकरा में "अकहानी" के संपूर्ण विधान विन्यस्त होखे। भोजपुरी के अधिकांश कहानी आजुओ आदर्श के आँचर पकड़ले बा, त आरंभिक दौर के कहानियन पर त ओकर प्रेम–दुलार बेसिए होई। बाकिर एकर मतलब इहो नइखे कि नई कहानी, अकहानी, समांतर कहानी भा सक्रिय कहानी जइसन कहानी भोजपुरी में लिखइबे ना कइल। एकर मतलब खाली अतने बा कि अइसन कहानियन के नारागत, समूहगत भा खेमागत परंपरा भोजपुरी साहित्य में एकदमे ना चलल।

रेखाचित्रात्मक कहानियन के ले के पूर्ववर्ती आलोचकन से सहमत होखल जा सकत बा, बाकिर भोजपुरी कहानियन में हिन्दी कहानी आंदोलनन से उपजल अन्य नाम वाली कहानियन के खोजल तुलना के लेहाजे भले उचित होखे, परंपरा माने के लेहाजे सही नइखे कहल जा सकत।

प्रसादीय खेमा : दुसरका प्रभाव :–

भोजपुरी कहानियन पर जयशंकर प्रसाद के शाश्वत मूल्य वाली कहानियन के भी प्रभाव परल बा। काव्य के संवेदना से लबरेज, आत्मोत्सर्ग के गरिमाय उपस्थिति, हृदय के भाषा के सामने वस्तु–यथार्थ से परहेजो करत अपना जमीन, परंपरा आ संस्कृति से जुटल रहे के संदेश दिहल–प्रसाद के कहानियन के खास गुण ह। कमे सही, भोजपुरी में अइसन कहानी लिखल गइल बाड़ी स। डॉ0 विवेकी राय के कहनाम बा कि अइसना अवसर पर कहानियन के शिल्पो पर रूपवादी रोमैन्टिक असर झलकत बा। अइसन कहानियन में "कुंदन सिंह

केसर बाई"(आचार्य शिवपूजन सहाय), "भैरवी क साज" (ईश्वरचन्द सिन्हा), "वरमाला" (कामता प्रसाद ओझा), "ऊ कारीगर रहे" (दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह) के सामने कइल जा सकत बा।

डॉ0 विवेकी राय द्वारा बनावल कहानियन के लिस्ट में कवनो छेड़–छाड़ नइखे कइल जा सकत। प्रसाद के कहानी परंपरा कवनो ना कवनो रूप में आध ुनिक काल तक चलल आइल बा, जे के सुंदर रूप "ओह दिन" (डॉ0 श्रीमती शारदा पांडेय) जइसन कहानी में साफा देखल जाा सकत बा। कहानी के आरंभ वातावरण उरेह से होत बा– "गंगा के तिरवाड़ी एगो झंगाठ बरगद के छाँह में बइठल एगो नारी मूर्ति। साँझ उतरल आवत रहे, दिन मरुआत रहे। भगवान आदित्य अस्तोन्मुख होत रहले। बुझात रहे जइसे दिन भर तपला के बाद उनका लिलार पर पसीना चुहचुहा गइल होखो आ उनकर मन गंगा में डुबुकी मारे के करत होखे।" (भोजपुरी कहानी हाल–साल के/सं0 पाण्डेय कपिल/अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पृ0–114)

का अइसन वातावरण उरेहन आ मानवीकरण प्रसाद के "पुरस्कार" कहानी में नइखे भइल? प्रमाण प्रस्तुत बा– "आर्द्रा नक्षत्र, आकाश में काले–काले बादलों की घुमड़, जिसमें देव–दुन्दुभी का गंभीर घोष। प्राची के एक निरभ्र कोने से स्वर्ण–पुरुष झाँकने लगा था। देखने लगा महाराज की सवारी। शैल–माला के अंचल में समतल उर्वरा भूमि से सोंधी बास उठ रही थी।"

प्रसादीय खेमा के कुछ विशिष्ट कहानी :–

(क) कुंदन सिंह केसरबाई :–

आचार्य शिवपूजन सहाय के ई कहानी मातृभूमि के सुतंत्र करावे बदे आपन प्राण निवछावर कर देबे वाला दम्पत्ति के शौर्य में सनाइल करुण कथा ह। आचार्य शिव के सुंदरवती भाषा एह कहानी के उहे उदात्तता देत बिया, जवना उदात्तता में उनकर हिंदी कहानी "मुंडमाल" प्रगट भइल रहे। भोजपुरिया इलाका में लहकल आग के बिंबित करत कहानीकार कहत बा–

"सन् ओनइस स बेयालिस इसवी में भोजपुरियो इलाका अइसन अगिआइल रहे कि जेने देखीं तेने उतपाते लउके। कहीं संडक कटात रहे, कहीं टेसन आ मालगोदाम लुटात रहे, कहीं थाना–डाकखाना फुँकात रहे, कहीं भाला–बरछा–फरसा भँजात रहे, कहीं मल्लू अइसन मुँहवाला टामी लोग के लाटा कुटात रहे, कहीं रेल के लाइन उखड़ात रहे, कहीं कौनो पुलिस–दरोगा ओहारल डोला में लुका के परात रहे, कहीं मकई का खेत में लड़ाई के मोरचा बन्हात रहे, जहाँ सूई ना समात रहे तहाँ हेंगा समवावल जात रहे, सगरे अन्हाधुन्हिए बुझात रहे।"

(ख) भैरवी के साज :–

ईश्वर चन्द्र सिन्हा के "भैरवी के साज" एके साथ उदात्त प्रेम, गुंडई, अहं जनित मूर्खता, मरण आ शौर्य के आवरण में लपिटाइल एगो प्रणय–कथा के मार्मिक अंत के कहानी बा। डॉ महामाया प्रसाद विनोद के अनुसार– "ई कहानी अतीत बोध पर आधारित बिया, जेमे वल्ली बाबू के चलती आ उनकर आतंक जयशंकर प्रसाद के 'गुण्डा' कहानी के स्मृति ताजा कर देता बा।" (भोजपुरी कहानी साहित्य की युगीन चेतना/ कॉनफ्लुएंस इन्टरनेशनल, नई दिल्ली–प्रथम संस्करण, 2007/पृ0–83)

चम्पाबाई बल्ली बाबू के प्रेम में एह तरी सउना जा तारी कि ऊ मुजरा कइल छोड़ के उनके होके रह जात बाड़ी बाकिर सिंह वाहिनी देवी के परंपरागत सालाना जलसा में भैरवी गावे खातिर बल्ली बाबू उनके आज्ञा दे देत बाड़े। एहिजे, बचऊ महाराज चम्पा बाई से भैरवी सुने के क्रम में कुछ बोल देत बाड़े जे अंत दाव में उनका आ बल्ली बाबू के बीचे तलवार युद्ध के कारण बनत बा आ अंत में, बल्ली बाबू, चम्पा के स्तब्ध–अवाक् छोड़ के, बचऊ महाराज के तलवार के एके वार से सुरध ााम पहुँच जात बाड़े।

(ग) वरमाला :–

कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' के ई कहानी एगो पुराण–कथा पर आधारित बिया। ऋषि के साथ सुकन्या के बिआह एगो दुःखद घटना रहे। बूढ़ आ अशक्त च्यवन पति के रूप में सर्वथा अयोग्य बाड़े आ सुकन्या उनका साथे कबो संतुष्ट नइखी। एक दिन अश्विनी कुमार रेवन्त उनका पति के जवान बना देत बाड़े आ सुकन्या के विकल्प देत बाड़े कि ऊ प्रेमी के रूप में आइल रेवन्त आ पति के रूप में स्वीकृत च्यवन दूनों में से केहू एगो के चुन लेस। धर्म, कर्तव्य आ स्नेह के अनासक्त बोध के वजह से सुकन्या युवा च्यवन के गरे वरमाला डाल देत बाड़ी। एह कहानी के अंत बड़ा मार्मिक बड़ुए– "आसरम के पच्छिम, जेने आकास देवदार के पुलुई पर उतरि आवेला, रेवन्त धीरे–धीरे चलल जात बाड़े आ उनका संगे–संगे चलल जात बिया उनकर परछाहीं।"

(घ) ऊ कारीगर रहे :–

दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' के ई कहानी एगो शिल्पी के स्वाभिमान के आगे बादशाह के प्रायश्चित

आ प्रतीकात्मक हार के मार्मिक कथा ह। एह में, दिल्ली दरबार के प्रधान शिल्पी, जनता के हक आ ओकरा प्रतिष्ठा के रक्षा करे खातिर, बादशाह के उनकर सही हैसियत देखा देत बा। बादशाहो शिल्पी के महत्व आ महानता के समुझत, शिल्पी के बात के सकार के नयका महल से मय बोरिया–बिस्तर अपना पुरनका महल में लवट जात बाड़े। सब मजदूर प्रधान कारीगर के जय–जयकार करत बाड़े। नयका महल में ओह बूढ़ कारीगर के अध्यक्षता में एगो शिल्प विद्यालय आ कला प्रदर्शन खोले के तइयारी शुरू हो जात बा।

आधार काल के कुछ खास :–

आधार काल के संक्रमण बेरा में, कृष्णानंद कृष्ण के कहानी 'एह देश में' आदर्श के खिलाफ एगो चुनौती अस बा। ई कहानी मोहभंग के कथा ह। हिन्दी वाली 'नई कहानियों' कई स्तर पर आस्था, निष्ठा आ आदर्श से मोहभंग के कथा ह। 'एह देस में' में बेरोजगारी से बेहाल एगो ना–जवान के जरायम पेशा अपनावत देखावल गइल बा। बेरोजगारी के मार ओकर आदमियत छीन लेति बा। ऊ सोचे पर बिबस बा कि स्वतंत्रता के सत्ताइस बरिस बितला के बादो ओकरा के त गरीबी, महँगाई आ भ्रष्टाचारे मिलल। ओकरा नीक तरी बुझा जात बा कि आज के मए सम्बन्धन के आधार अर्थ बा, जेकरा बिना सब कुछ व्यर्थ बा।

एह काल में राष्ट्रीयता वाली कहानी लिखइली स, जइसे– "बमबूटा पेकिंग प खूँटा" (विवेकी राय), "दूध के लाज" (रामेश्वर प्रसाद वर्मा), "गुमराह" (लव शर्मा प्रशांत) आदि। रामोनाथ पाण्डेय के कई गो कहानी "भोजपुरी कहानियाँ" में प्रकाशित भइली स, जइसे– "देश के पुकार पर" (1965), लोहू के धार (1965), "सिवाना के पहरूआ" (1966), "भारत केकर ह" (1966), "खून बेकार ना बहे" (1967) आदि। एह कहानियन में प्रेम, शौर्य आ संवेदना के स्वाभाविक उद्गार कम, नारा टाइप प्रचार बेसी मिलत बा।

रामेश्वर सिंह "काश्यप" के कहानी "मछरी" नारी मनोविज्ञान के समझे खातिर नया दीठि देति बा। कथ्य, भाषा, भाव, संरचना आ प्रस्तुति हर लेहाजे ई कहानी मील के पत्थर बा। सबसे पहिले ई कहानी "कवनो मछरी त ना ह जे सड़ जाई" शीर्षक से रघुवंश नारायण के संपादकी में निकले वाली पत्रिका "भोजपुरी" (1961) मे प्रकाशित भइल रहे। ई कहानी मयभा के कुरई जनित अनुशासन में पिसात कुंती नाँव के युवती के कहानी ह, जेकरा तन के पावे खातिर गाँव के लफंगा लागल रहत बाड़े स। कुंती के लाचार बाप जब कुंती के बियाह के बात करत बा त कुंती के मयभा ई कहत बात अगिला साल खातिर टार देत बिया कि ऊ कवनो मछरी थोरहीं नूँ ह, जे सरि जाई। एहिजा मछरी बेबस नारी के प्रतीक बा, जेकर केनियो आहि–अलम नइखे। "नई कहानी" में एह तरह के काव्य उपकरणन, जइसे–बिंब, प्रतीक आदि के खूब प्रयोग भइल बा। "नई कहानी" के एगो स्तंभ राजेन्द्र यादव प्रतीक विधान के प्रति ज्यादा आग्रही लउकत बाड़े। ध्यातव्य बा कि "नई कहानी" के दौर प्रायः सन् 1954 से 1963 तक मानल जाला। "काश्यप" के कहानी ओही दौर के कहानी ह। कहल जा सकत बा कि एगो सचेत आ सतेज भोजपुरी कहानीकार हिन्दी कहानीकारन के समानान्तर आपन कहानी गर्हत रहे।

"मछरी" में नारी मनोविज्ञान के गहिर व्यंजना देखनउग भइल बा। कुंती के भय, आशंका आ छटपटाहट के चित्रण करत खा, जनात बा, कहानीकार परकाया–प्रवेश कइले होखे। अइसहीं, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा के कहानी "कहानी जवन पूरा ना हो सकल" (1968) आ ब्रज किशोर दूबे के "सकदम" नाँव के कहानी भी मनोवैज्ञानिक कहानी हटुए। "सकदम" आदर्श स्थापना में समाप्त होति बा। "कहानी जवन पूरा ना हो सकल" (1968) में दू गो समानान्तर कथा साथे–साथ चलत बाड़ी स। हिन्दी कथाकार कमलेश्वर के कहानी "राजा निरबंसिया" (1956) में भी दू गो कथा साथ–साथ चलति बा। "मछरी", "कहानी जवन पूरा ना हो सकल" आ "सकदम" तीनों कहानियन में "मनोलोक में कथा–विस्तार वाली शैली" के कुशलतापूर्वक निर्वाह कइल गइल बा।

क्रमशः ... ...

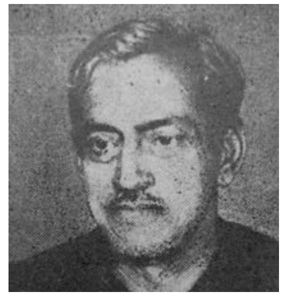

स्व. रामनाथ पाण्डेय के एगो उपन्यास

(संदर्भ- "जिनिगी के राह" द्धउपन्यास 1982, भोजपुरी अकादमी पटना)

'बिन्दिया' उपन्यास का लगभग दू दशक बाद, श्री रामनाथ पाण्डेय जी के दुसरका उपन्यास "जिनिगी के राह" के प्रकाशन भोजपुरी अकादमी,पटना से भइल जरूर बाकि एह उपन्यास के कुछ अंश "भोजपुरी" पत्रिका के दिसम्बर 1963 वाला अंक में छपल रहे। पाण्डेय जी भोजपुरी कथा–संसार के सँवारे वाला समर्पित अगुआ–शिल्पी रहले। 'बिन्दिया' का पहिल संस्करन 1957 में छपल बतावल जाला। एकर दुसरका संस्करन भोजपुरी संसद, वाराणसी से 1970 में प्रकाशित भइल। अपना रचना–यात्रा में पाण्डेय जी कतने चर्चित, मरमस्पर्शी कहानी लिखले, जवना के संग्रह–संकलन आगा निकलल। समय आ परिस्थिति से लड़त–रचनाकार का लेखन में, साँच कहीं त 'गैप' भा लमहर अन्तराल ऊपरी तौर पर भले लउकेला, बाकि ऊ होला ना। 'रचना' त रचनाकार के भीतर चलत रहेले। पाण्डेय जी रुके–थाके आ ठहर जाए वाला कथाकार ना रहले। प्रेमचन्द जी लेखा उनहूँ का भीतर अनगिन जियतार पात्र आ चरित्र जियत–जागत आ जूझत रहले सऽ। सोच–विचार के द्वन्द आ अझुरहट उनका मन में निरन्तर चलत रहे। ऊ समन्वय के आकांक्षी रहले– पुरान आ नया में, प्रगतिशीलता आ मानवता में।

अपना मातृ भाषा से हिरऊ लगाव राखे वाला पाण्डेय जी के भोजपुरी भाषा का बल–बेंवत भा सामरथ पर भरपूर विश्वास रहे। बेलाग–लपेट के बतियइबो करस आ सुनबो करस कि दुसरका का कहत बा! उनकर साफ कहनाम रहे भोजपुरी का बारे में– "ई एगो भासा हऽ, बोली ना हऽ। एकर चाल–ढाल, एकर सुभाव, एकर लय–गति कुल्हि अपने हऽ। केहू से उधार–पाइँच नइखे लेले।" 'जिनिगी के राह' का भूमिका में उहाँ का लिखले बानी एह व्यंगात्मक सिकाइत का साथ कि "अपना भासा के शब्द ना जनला से हम रात–दिन तत्सम आ तद्भव के चक्का में घूमि रहल बानी.... खाली टानिक पर जिनिगी काटे के चाहऽ तानी।" कहे के मतलब अतने कि जवन भासा उहाँ के सहज–सुभाव में उतरल, ऊहे उनका कथन–शिल्प के ठेठ ठाट बनल।

'जिनिगी के राह' भटकाव में जीयत आदिमी के राह के संवेदनशील आ विचारवान खोज हऽ। अदिमी तमाम तरह का संघर्ष, अझुरहट आ भटकाव का बिच्चे, अपना विवेक आ निश्चयात्मिका बुद्धि से निर्णय लेव आ आपन राह बनावे। ओकरा सामने धन आ प्रभाव खातिर समझौता आ छल–बल के एगो राह बा, जवना में मानवता आ नैतिकता बेमाने बा, बटलो बा त देखावटी बा। दुसरका राह मानवतावादी बा– जवना में परहित–चिन्ता बा। अपना सँग दुसरो के जिये आ जियावे के कामना आ उतजोग बा। सहअनुभूति के भाव बा। जिये का राह में..... अमीर–गरीब, छोट–बल बेंवत वाला आ समरथ लोगन के बीच द्वन्द्व चल रहल बा। ऊँच–नीच क विचार अलगा बा। तरह–तरह के समाजिक असमानता आ विषमता बा। विभेद के मूल कारक 'सोच' आ नजरिया बा। आदमी, अदिमिये से लड़ रहल बा– बरोबरी आ न्याय खातिर चलत ई संघर्ष भीतर–बाहर दूनों ओर बा। 'जिनिगी के राह' उपन्यास अपना विभिन्न चरित्रन के स्तर पर एके दरसावत बा।

कथाकार पाण्डेय जी भाव–बिचार से अतिरेक आ हिंसा के विरोधी बाड़न। ऊ अमीर भा गरीब कवनो पक्ष से हिंसा के अनुचित मानत, गाँधी–दर्शन का आधार पर विरोध–प्रदर्शन आ आन्दोलन के राह बनावल चाहत बाड़न। उपन्यास के कथाफलक आ बुनावट में उनका एही बिचार–के प्रतिफलन देखे के मिलत बा। उपन्यास के मुख्य पात्र परमोद (प्रमोद) साधन–सुबिधाविहीन गरीब वर्ग के प्रतिनिधित्व करत बा। कालेज में ओकरा सँग पढ़े वाली

मीरा, इन्दू आ रमेस संपन्न वर्ग के प्रतिनिधि बाड़ें सऽ। सोच–विचार आ पूर्वाग्रह का आधार पर पारस्परिक द्वन्द्व के नेंइ एही कालेज–परिसर में परत बा। भावुकता से भरल युवावस्था में 'प्रगतिशील' शब्द के अलगे रुझान आ आकर्षण होला। कुछ लोगन का नजर में ई तार्किक आ विद्रोही विचार मानल जाला, कल्पनाशीलता आ अतिभावुकता का कारन व्यावहारिक नहिंयो रहला पर एकर प्रभाव युवा–प्रतिभा के बरबस खींचेला। परमोद एही प्रभाव में, अपना स्पष्ट कथन आ खुला हस्तक्षेप का कारन 'तेज' मानल जात बा। संपन्न वर्ग के लड़की मीरा के ओकरा प्रति आकर्षण आ खिंचाव एहीं से बा। हालांकि परमोद आ मीरा का बीच बिपरीत जीवन–शैली आ असमानता बा, बाकिर संवेदनशील भावुकता का कारन, मीरा परमोद का प्रति सहानुभूति आ प्रेम के भाव राखत बाड़ी।

कथाकार एगो सभा के आयोजन में एगो अधेड़ प्रगतिशील वक्ता के खड़ा करत बा, जवन "भूख बेमारी आ गरीबी" के विषय पर भासन देत बा– कि, मुट्ठी भर संपन्न आ धनिक लोग अपना एकपक्षी सोच, पूर्वाग्रह आ अहंकार का कारन एह गरीबी, भुखमरी आ बेमारी के कारन बा। जरि में एही लोग के क्रिया–व्यापार, फैक्ट्री वाली नीति बा। एह साधन–सुबिधा संपन्न लोगन से लड़ाई मोल लिहल आसान नइखे। समाज सुधार भा अन्याय–बिषमता मेटावे खातिर ऊहे प्रगतिशील युवा आगा आई, जे सब कुछ तेयागि के एह लड़ाई खातिर आपन बलि दिहल चाहत होई। काहे कि ई समरपन आ संघर्ष के राह हवे। एम0ए0 में पढ़े वाला प्रमोद सुभाविक रुझान आ प्रभाव का कारन आगा आवत बाड़न।

अब सम्भ्रान्त वर्ग का उनका संगी–सहपाठी मीरा, इन्दू आ रमेस के ई लागत बा कि परमोद के ई कदम, नाहक आपन फ्यूचर (भविष्य) खराब करे वाला कदम बा। मीरा परमोद का एह त्याग वाला साहसिक कदम से अउरी प्रभावित हो जात बाड़ी। परमोद का प्रति सहानुभूति आ खिंचाव त उनका भीतर पहिलहीं से रहे। इहवाँ से कथा मीरा का वैचारिक ऊहापोह, सोच के द्वन्द आ परमोद का प्रति उनका सुभाविक सहानुभूति का रंग में घुलत आगा बढ़त बा। एगो अनकहल अव्यक्त प्रेम के अँखुइला के अनुभव कथा–पढ़वइया के होखे लागत बा। बाकिर इहवें से एगो नाटकीय घटना कथा के दुसरा ओर मोड़ देत बिया। कथा–नियोजन में भूमिधर आ बटाईदार खेतिहर किसानन में आपुसी लड़ाई के प्रसंग आ जात बा आ कथाकार इहवाँ अझुरा जाता। अत्याचार करे वाला आ अत्याचार बरदास करे वाला का पक्ष–विपक्षी में कम्यूनिस्ट बिचार वाला वक्तव्य विचार का जाल में, कथा बोझिल होखे लागत बिया; बाकिर तबो उपन्यासकार अपना सधल हाथ से कथा सूत छूटे नइखे देत। ऊ मीरा का स्वगत–चिन्तन आ प्रेम का ऊहापोह के सहारा से पाठक के बान्हे के कोसिस करत आगा बढ़त बा। ऊ कबो भिखमंगा कबो मजदूर–बस्ती के चित्र–संयोजन से वैचारिक द्वन्द्व के आगा बढ़ावत बा– परमोद का चेतना के झिंझोर में एगो भिखमंगा के ई कथन समय–संदर्भ में, कथाकारे के लागत बा–

"आज सगरी देस भिखारी भ गइल बा। घर–घर से रोटी–रोटी के आवाज आ रहल बा। गाँव–गाँव, नगर–नगर, डगर–डगर जेने नजर उठाईं, भूख से बिलखत लोग लउकत बा.... अब त सुराजो मिल गइल फेरु लोग गरीब काहें भइल जाता? निचहीं काहें गिरल जाता।"(पृ.–27)

अपना कल्पनाशीलता के वैचारिक उड़ान में, कथाकार अमीरी–गरीबी के द्वन्द्व में परस्पर उपजल आक्रोश आ घृणा का उरेह में वक्तव्यन के भरमार लगा देत बा। कहीं–कहीं उपन्यासकार समाजिक विषमता आ व्यवस्था का अन्तर्विरोध के दरसावे खातिर अपना खास टिप्पणियन के छौंक से चौंकावत–झिंझोड़त लउकत बा। जइसे– "अमीरी के परताप जबले रही, गरीबन के सितारा ना चमकी।"(पृ029) "आज के दुनिया धन के दुनिया हऽ. ... जेकरा पइसा बा, से पुजाता।"(पृ029) "धन के अगाड़ी केहू के, किछू ना चली"(पृ030), "आज के नेता हमनी के उजाड़ ना सकसु। हजार खइहें, त लाख के फायदा करइहें। आरे जे खाई, से गाई।"(पृ031) "आज त देस में बहस करे के बेमारी फइलल बा, महमारी अइसन।".....''लूट लऽ। खसोट लऽ। सहोर लऽ। समेट लऽ। हड़प लऽ। समाजवाद का बहत बयार में सभ किछु माफ बा।"(पृ032) अइसन कुल टिप्पनी, समय–सन्दर्भ में कथाकार के निजी वैचारिक उद्‌भावना लेखा लागत बाड़ी स।

दरसल उपन्यासकार के कथा–बिनावट त मिल–मालिक आ मजदूरन का जीवन–संसार पर बा। ऊ मिल मालिक के शोसन आ मजूरन के जागरन आ संघर्ष चित्रित कइल चाहत बा, एही लपेट में देस के समसामयिक बेवस्था आ ओह से उपजल अन्तर्विरोध आ विसंगतियों प्रगट हो जात बाड़ी सऽ। एगो दौर रहे हिन्दी सिनेमा के। ओह समय प्रगतिशीलता में वर्ग–संघर्ष आ मालिक–मजूर वर्ग के चित्रण करे वाली कुछ फिलिम बनल रहली सऽ। हमहूँ बहुत साल पहिले दिलीप कुमार के "नया दौर" आ अउरियो दू–तीन गो अइसने फिलिम देखले रहलीं। ओहू में मिल फैक्ट्री के मालिक आ श्रमिक वर्ग के द्वन्द आ

आगे – शेष पृष्ठ 172 पर

सुभाष पाण्डेय के
दू गो गीत

(एक) नदिया!

पल पल हरखत धरती नापत,
उमड़त-पसरत आगे ताकत,
चलत रहऽ लगतार,
ए नदिया! जालू कवना द्वार?

बाहर से अति शीतल लागऽ
भीतर आगि जरत होई।
देखि धार के धार लगेला
केहू याद परत होई।
बान्ह सरम के तल भहरावत
जालू प्रीतम- गाँवें गावत
कजरी मेघ मल्हार?

नेह-नीर से सींचि धरा के
आँचर भरि-भरि हरियाली,
मोहबंध से मुक्त विरागी
परबत धिय जग-खुशियाली,
कवन रोध पग रोक सकल कब?
बरियारी समने आइल तब
तूरत लहर किनार।

ले गोदी संतान अनेकन
चलऽ देत दानापानी।
घाट-घाट पर करत अर्चना
जोगी तपसी मुनि ज्ञानी।
ना केहू से लेना-देना
ज्ञान बिटोरल देखत के ना
सब पावल रसधार।

बूंद सिंधु में सिंधु बूंद में
ई रहस्य दुर्बोध रहल।
के आइल हऽ के लग भेटे?
जीवन रन प्रतिशोध रहल।
नाम रूप गुन सजी मिटा के
खतम कहानी कहवाँ जा के
सोचे तऽ संसार?

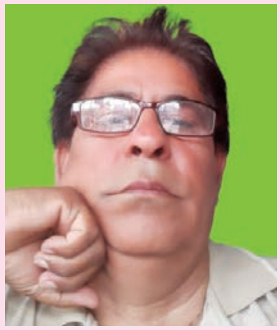

(दू) कुँइयाँ के बेंग!

ना जनलऽ नदिया का होले
कइसन होला धार?
ना देखलऽ सागर के पानी
रहलऽ डूबि इनार।

कइसन ताल तलइया सरवर
कइसन शतदल फूल।
नाइ पाल पतवार होत का
कतना ऊँचा कूल?

छू लिहलऽ एने से उछरत
ओने उठल दिवाल।
बुझि गइलऽ कि आ गइनीं हम
सहजे में नेपाल।

जनमभूइँ पर मरना जीना
खेलकूद रहवाँस।
आँखि उठाइ निहरले रहितऽ
कबहूँ नील अकास?

कई जनम ले पँवरत बीते
तबहूँ दूर किनार।
अइसन रचना रचलें अनबुझ
जग के सिरिजनहार।

मुसकिल मुकुति तबो जो जाइत
ए मारग में जान।
दुनिया गाइत कथा कहानी
करित सदा गुनगान।

परि रहलऽ बजकत पानी में
पइबऽ का तू ठेंग?
अतने ना? बड़हन बा दुनियाँ
ए कुँइया के बेंग।

❑ प्रधान सम्पादक, सिरिजन, भोजपुरी ई पत्रिका।
मुसहरी, गोपालगंज-841426

आनन्द कुमार सिंह के तीन गो कविता

(एक) सरकल गर से फाँस!

निकलल सूरुज चंद्रकांति से
भइल मनोहर प्रात
हल्लुक हवा हिलवलस सबके
छुवलस पीपर पात ।
डोलल मन चिड़िया चुरुंग क
बिखरल सोनउल छंद।
धीरे धीरे तपल रंग में
बहरा जिउ दुख दंद ।
बहल हवा मन पर मद मातल
गिरि बन सहित अपार।
मधुर मंजरी की सुगंध से
खुलल हिया क द्वार।
नथुना फूलल नथुनी झमकल
केकर आइल याद।
के चुपचाप तिमिरवन घूमल
के ओठँगल बरबाद।
मन क अनख ओराइल नाहीं
निंदिया उछरत जान।
लागल आग पिरीत देह में
पसरल धुँआ निछान।
सपना पीछे छूटल कइसे
चलल सत्य की ओर।
नस नस में चैता अझुराइल
फेंटलस गात झकोर।
शब्द थकल वन के गोहरावत
मिलल न अर्थ सुजान।
अलंकार रस में लसराइल
थिर कल्पना विधान।
उठल बवंडर चक्रवात से
लिहलस छान गुबार।
पतई सूखल उड़ल हवा में
टूटल बड़का डार।
चमकल किरिन डार हिलला से
बाहर तमकल धूप।
अँखियन में भर गइल धूल जब
लउकल पतझर रूप।
शिथिल चाल से भरमा दिहलस
अइसन चइता गीत।
साँझ होत कइलस मनसायन
पहुँचल जब मनमीत!
थकल बटोही धइलस गठरी
लिहलस खुल के साँस
पियलस पानी भेली की संग
सरकल गर से फाँस!

दू- बरवै

डूबल दिन चुपचाप परान अधीर
ई चैता का जाने हमरी पीर
चनवा चमकल भइल अकास अँजोर
डरपत चलल अन्हरिया घर की ओर
एक उसांस बियोगिनि के चित पास
गरम पवन से मिलके भइल उदास
चंद्रकिरिन छुवलस चुपके से गात
जरल छन्न से मधुमित सगरो रात
बिहंसल भलुक तरइया कइलस शोर
लचकत चलल डोलावत अँखियन कोर
घूमत चाँद के देखलीं पियरे गोल
सुनलीं ओकरी मन के झिलमिल बोल-
सँहकल मन से कइसे गाइब गीत
ई चइता ह बहकल रही पिरीत!
जेकरा मन से पतझर झरी अपार
ऊहवें झिर से बिथुरी चौत बयार!
नव जीवन के रस बरसी ओहि खान
परल निबौरी देखलीं ऋतु के प्रान!

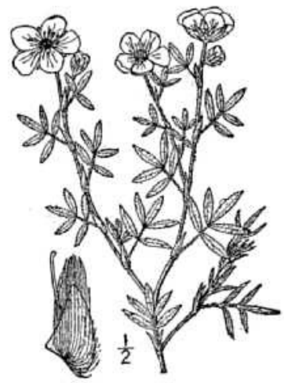

(तीन) धरमजानी

जिन फूँकऽ लड़ाई क सिंघी/हे धरमजानी!
सुत्तल थिरल गंगा नीर में
अधियाइल राति ढेला जिन चलावा धरमजानी
हड़कत ह जिउ कतहूँ जागे न मनमति क -
सिरमउर दरियाव
अउर बढ़ियाइल परलय लादि के बरखा क पानी
चहुंप न जाव हिन्दुकुश के ओहपार ले।

बड़ साँसत कगार प रावी के सुत्तल ह
मन्तर बान्हल बिचार
अबहिने त सिहराइल सुरसती नदी क
लग्गलि ह आँखि
अउर ई हिमालय मूंड़गड़काऊ नीन लेवे बरफ में
हेले के पहिले
धिरा गइल ह सबका के
'पलकि जिन छुइहा मत चलइहा तीर फुलगेना क
ना त सम्भू क खुली आँख जे तीसरी अगियाइल भरपूर
भसम हो जइबा स मोर भइया मनमति क बधी असूर।'

जिन फूंका लड़ाई क सिंघी हे धरमजानी ।
(काव्यकृति 'अथर्वा' से)

- सत्यदेव इन्स्टीच्यूट ऑफ टेक्नालाजी,
गाधिपुरम् बोरसिया, गाजीपुर-233001

संघर्ष के चित्रण रहे। ओहू में मिल मालिक के लइकी आ श्रमिक वर्ग के तेज–तरार, पढ़ल–लिखल नायक का प्रेम–प्रसंग का जरिए जनजागरन आ बदलाव केदेखावे के कोसिस रहे। नाटकीय परिवर्तन आ घटना–क्रम के सुघर संयोजन रहे। मजदूर आन्दोलन के कारण आ कारक उभारत मिल–मालिक आ ओकरा वर्ग के छल–कपट, मरवावल–कटवावल, नोकरी से निकालल आ मजदूर नायक के फँसावे के षड़यन्त्र रहे। नायक–नायिका के आकर्षण आ प्रेम में प्रतिद्वन्दिता आ ईषा रहे। नायिका का संपत्तिलोभी प्रतिनायक के कुचक्र आ दुरभिसन्धि में फैक्ट्री मालिक के भटकावल रहे। बाकिर फिलिम के अंत में जबर्दसत नाटकीय बदलाव का साथ मालिक हार के– अपना पूर्व कुटिल काम पर पछतावा करत लउके। एह हृदय परिवर्तन में ओकरा बेटिए आ नायक के मुख्य भूमिका बुझाय। हृदय परिवर्तन से कथा के 'सुखान्त' तक पहुँचावे वाली शैली के जनक त ओह समय के कथा–सम्राट प्रेमचन्दे जी न रहलन। त उनकर प्रभाव सिनेमा पर काहे ना पड़ित?

ई 'सिनेमाई थाट', कथा–विन्यास आ नाटकीयता पाण्डेय जी का उपन्यास "जिनिगी के राह" में बा। भोजपुरी उपन्यास का प्रारंभिक दौर में, अइसन उपन्यास लिखला के चुनौती श्री रामनाथ पाण्डेय जी जइसन धुनी लेखक स्वीकार कर सकत रहे। ऊ अपना भोजपुरिया–रंग में डुबाइ के कथानक के ठाट रचले बाड़न। उपन्यास में, प्रतिनायक, मिलमालिक सेठ के बेटी मीरा के अपना ओरि झुकावे खातिर, अपना योजना अनुसार सेठ के कान भरत बा। ओकरा भीतर परमोद का प्रति मीरा के झुकाव आ प्रेम देखि के इरिषा आ घृणा के उमड़त ज्वार उमड़त बा। सेठ का जरिए ऊ परमोद के मजा चखावल चाहत बा। एही क्रम में नाटकीय मोड़ आवत बा आ मिल के सेठ, अपना दोसरा मित्र सेठ के अमरीका रिटर्न बेटा से अपना बेटी मीरा के बियाह कर देत बा। प्रतिनायक रमेश के कुटिल चाल आ चतुराई धइल रह जात बा। नायिका मीरा का प्रति पिता दुर्गादास सेठ आ पति दूनों ओकरा हृदय–भावना के दरकचत हठ आ बल प्रयोग के सहारा लेत बाड़न स। मिल में होखे वाला हड़ताल से पहिलहीं मजदूर–नायक परमोद के जेल भेजवा दिहल जाता। मीरा के ई अन्याय भीतर से जगा देत बा, ऊ परमोद के जान त बचावते बाड़ी, खुल के मजदूर आन्दोलन के अगुवाई करे लागत बाड़ी। बन्द मिल के फाटक तूर के जब मजदूर काम करे खातिर जबरन घुसत बाड़न स। तबे सेठ का इशारा पर पुलिस कप्तान गोली चलावा देत बा। ओही में एक गोली, अगुवाई करत सेठ का बेटी मीरो के लागत बा। सेठ फायरिंग बन्न कराके दउर पड़त बाड़न आ मीरा के उठा के अस्पताल ले जात बाड़न।

एह औचक घटना का बाद सेठ दुर्गादास के पछतावा होत बा आ उनकर मन बदल जाता। ऊ मजदूरन के न्यायोचित–माँग मान के 'देवता' हो जात बाड़न आ परमोद के बोलाइ के मीरा से मिलवावत बाड़न। बेटी मीरा उपकृत बाड़ी, बाप का हृदय परिवर्तन से। नाटकीय अन्त तब होत बा जब परमोद ई कहि के आपन त्याग देखावत बा कि "जीत के बाद, जीत के भोग कइल मौत होखेला..... हम अब जिनिगी का ओह राह पर जा रहल बानी, जहवाँ भोग ना होखे, तेयाग होखे।"(पृ0150) एह तरह से 'प्लेटानिक लव' के परिणति होत बा। सनेस ईहे बा कि प्रेम, त्याग आ उत्सर्ग से पवित्र आ महान बनेला।

कवनो कथा–कृति का बिनावट में भाषा–शिल्प के महती भूमिका होले। संदर्भ का अनुकूल वातावरण, परिवेश सिरजन आ संबाद–योजना में सुभाविकता होखे के चाहीं। कथाकार कथा–बिनाव में सिद्ध रही त वातावरण/परिवेश रचला का साथे साथ बोले–बतियावे का अनुकूल सुभाविक संबाद योजना बइठा ली। रामनाथ पाण्डेय त 'बिन्दिया' उपन्यास रचि के पहिलहीं लोकप्रियता हासिल कर चुकल रहले, "जिनिगी के राह" काहे ना सुफल होइत। उपन्यास में मीरा के अन्तर्दशा के चित्र खींचे में ऊ प्रकृति–चित्र उरेहत बाड़न– "आसमान में बदरी के एगो छोट टुकड़ा हवा का झोंका का संगे–संग डोलत रहे... आकास साफ रहे–जमकल पानी का रंग नियर। बदरी के टुकड़ा बुझात रहे कि कवनो झील में दहात होखे, बेअलम के... हवा का काबू का आगा ओकर आपन कवनो जोर ना रहे... खिड़की भीरी ठाढ़ मीरा ओकरा के देखत सोचली.... त का परमोद का आगा, उनको इहे हाल बा!"(पृ019) अँखुवाइल प्रेम का अन्तर्दशा के एसे नीमन सुघर चित्र दोसर का होई। पाण्डेय जी के कबितपूर्ण भाषा में एगो गरीब बस्ती में बरसात के प्रयोगात्मक चित्र देखे जोग बा– "थोड़िकी देर भइल रहे आकास का पुक्का फार के रोवला। ओकरा रोवला के तार ना टूटत रहे.... लोर से बुझात रहे, गबरा–गबरी चित भ गइल बाड़न सन। कवनो कवनो राह पर त ठेहुना ले पानी हेले के पड़त रहे.... कच्ची सड़क पर त बुझाय, कोढ़ फूट गइल बा। पच्च–पच्च मवाद खानी, पाँक पचपचाते रहे...।"(पृ039)

भाषा के व्यंगात्मक इस्तेमाल आ कबिताई के दरसन अइसहीं पात्रन के अन्तर्द्वन्द–चित्र आ आपुसी संवादो में मिलत बा। अपना रचना–समय का लेहाज से पाण्डेयजी के ई उपन्यास नीके उतरल बा। भोजपुरी उपन्यास का विकास–यात्रा में एकर आपन प्रासंगिकता आ जोगदान के नकारल ना जा सके।

समीक्षा–डा0 अशोक द्विवेदी

कुछ अवधी के...

त्रिलोचन शास्त्री

वरवै

उठे चले बइठे ओलरे हर दाइँ
तोहरिन सुधि हमरे आपन कुछु नाइँ
तोहइँ देखि, सब देखे देखेसि आँखि
अब का देखे चित्त अधिक अभिलाखि
काउ करी मन हम्मइँ दिह्यऽ अकेल
मिला न एकर मेल खोइ गऽ खेल
मृतक जियावनि मुसकी देखि तोहारि
बिसरी सम्मइँ चोटि भूल गइ हारि।
चूल्हीं तावा चढ़ा करइ जहँ रोज
तबइ केउ करइ परम तत्त्व कइ खोज।
अगिला भुइँ थाम्हइ तब पछिला गोड़
सम्हरि बढ़ावइ गति कइ इहइ निचोड़।
दुनिया आटइ जइसे मेला लाग
कीनत-बिकिनत जोरत भागाभाग।
जिनगी-जिनगी कइ एस नाता लाग
केतिकउ झटकारे न टुटइ ई ताग।
जिनगी कइ बा अइसन भूँजाभूँज
केउ जरिगा केउ परिगा होइ के लूँज।
होति धरतिआ पइ जउ ई मटिआ न
तउ जिनगी कइ होति न एहिं पहिचान।

पारसनाथ भ्रमर

कहाँ गई निबिया जवान

हमरे अँगनवा न बोलै सुगनवा,
खिया म सिसुकैं परान
कहाँ गई निबिया जवान।
निबिया कै बिरवा कटाइ दिह्यौ बाबा,
घर की चिरैया उड़ाय दिह्यौ बाबा।
उड़िगै मयनवा सयान,
कहाँ गई निबिया जवान।
निबिया कै चिफुरी, चइलवा कै अगिया,
जरि-जरि होइगै कोइलवा से रखिया।
लागैं जहनवा मसान,
कहाँ गई निबिया जवान।
सूनी है पुरई और सूने हैं पुरवा,
सूनी देहरिया है, सूने दुवरवा।
सूने ओसरवा-सिवान,
कहाँ गई निबिया जवान।
हथवा कै खिरिया लै ओखै मंतरिया,
परले से कगवा न बोलै अँटरिया।
जइसै परनवा हेरान,
कहाँ गई निबिया जवान।

आद्याप्रसाद 'उन्मत्त'

धुतू-धुतू

नई भीत उठा थै पुरान भीत गिरै भैया धुतू धुतू,
हो भैया धुतू-धुतू।
बरखा कै रतिया गढ़ानि अँधियरिया,
चारिउँ मूँह से बहीं झकझोरि के बयरिया,
लूटइ लागे पहरू धरम धन दुइनउ,
हे हो राम लागा तुहीं अब तौ गोहरिया।
मारा इ रवनवा क मूड़ उतरइ हो भैया धुतू-धुतू,
हो भैया धुतू-धुतू।।

नकली समाजवाद खोखली अजादी,
पतवा पर परदा महतिमा क खादी,
जेकरे रकतवा से बेदिया गै लीपी,
ओकरे असनवा पर बइठिगे फसादी।
मारि के ढकेलि द्या न सोझे उतरइ हो भैया धुतू-धुतू,
हो भैया धुतू-धुतू।।

डकुआ लुटेरुआ क राज तनी देखा,
झपटै कबुतरी प बाज तनी देखा,
अपुना महिलया म करै रंगरेलिया,
देसवा कै बूड़ा थै जहाज तनी देखा।
होइ जे मरद उ लँगोट पहिरइ हो भैया धुतू-धुतू,
हो भैया धुतू-धुतू।।

देहियाँ उघारि के करावइ नाच नंगा,
हँड़वा बहाइ के मचावै हुड़दंगा,
नवा नवा सपन सुनावइ भिनुसारे,
देसवा क लूटि के बनावइ भिखमंगा।
अपुना अखंड खर खाइ औ चरइ हो भैया धुतू-धुतू,
हो भैया धुतू-धुतू।।

नई नई गीत उठइ नवा खपरइला,
घरा खटै गोरिया सेवरिया म छैला,
ठुमठुम ठुमके औ मारै किलकारी,
अँगना म ललना बगिचवा मुरैला,
खेतवा कियरिया बसंत लहरै हो भैया धुतू-धुतू,
हो भैया धुतू-धुतू।।

चंदा मामा धावइँ लिहे दूध कइ कटोरिया,
हँसिके अँगनवा म उतरइ अँजोरिया,
सास जी क छोहिया ननद कइ ठिठोली,
अपने लिलार पे गुमान करइ गोरिया।
फिर से धरतिया सरग उतरइ हो भैया धुतू-धुतू,
हो भैया धुतू-धुतू।।

रजि० नं० – आर०एन० 3548/79 (वर्ष 1979) ISSN-2456-9372 पाती अंक 99-100 अप्रैल 21-जून 2022

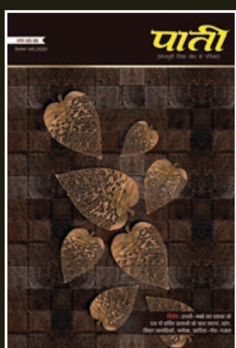

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक, सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ 1118, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-19 से प्रकाशित।